BAOU
Education for All

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी

(गुजरात सरकार द्वारा स्थापित)

NAAC ACCREDITED A++ GRADE 3.55/4

BAOU CATEGORY 1 UNIVERSITY GRADED AUTONOMY UGC

बी. ए. (ऑनर्स)
हिंदी मेजर
(HND MJ-102)
हिंदी उपन्यास

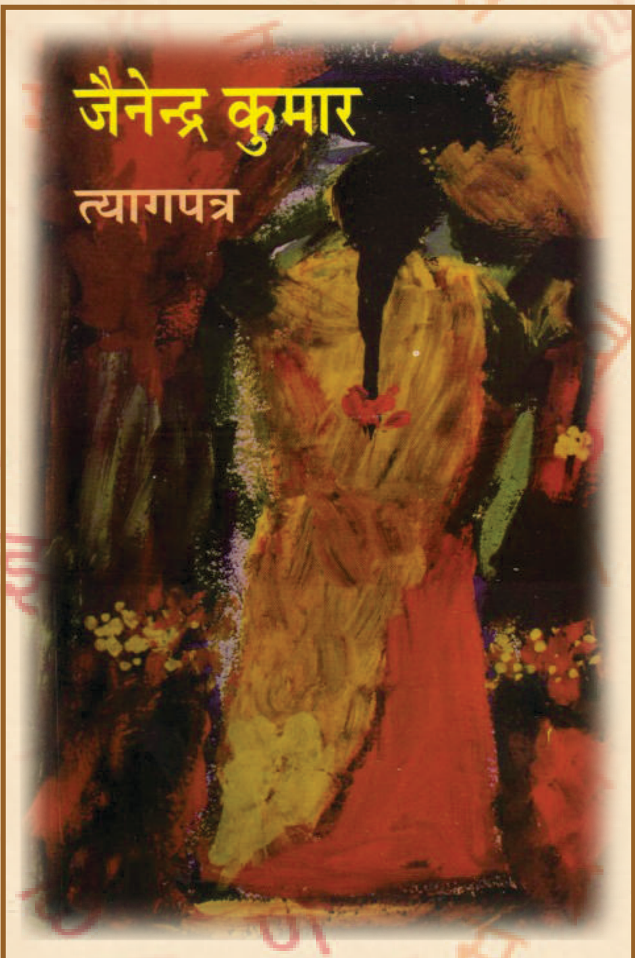

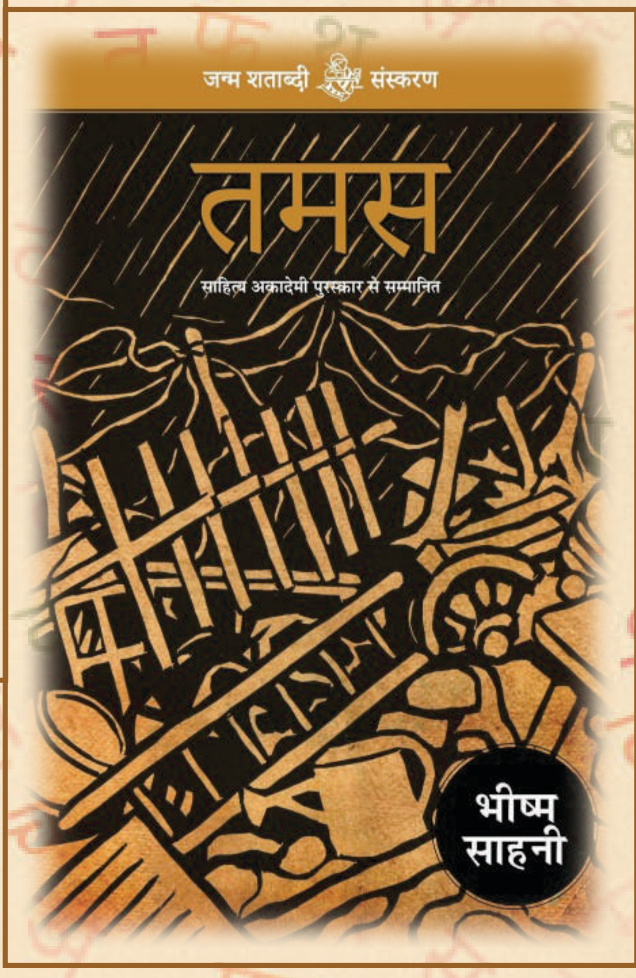

स्वाध्याय का उजास

भारतीय संविधान निर्माता भारतरत्न बाबासाहेब आंबेडकर जी की पुण्य स्मृति में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और डिस्टेंस एजुकेशन काउन्सिल की मान्यता के साथ गुजरात सरकार ने सन् 1994 ई. में अहमदाबाद में गुजरात के एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी की स्थापना की. स्थापना के क्रम में यह देश की सातवीं ओपन यूनिवर्सिटी है. गुजरात राज्य के शैक्षिक गतिविधियों को तीव्रता प्रदान करते हुए यूनिवर्सिटी आज सन् 2025 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (ODL) माध्यम से सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर के 79, यू.जी.सी. मानदंडों के तहत पीएच.डी. स्तर के 16, ऑनलाइन माध्यम से 10 और स्वयं (SWAYAM) माध्यम से 07 पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश आमंत्रित कर रही है.

बाबासाहेब आंबेडकर जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर गुजरात सरकार ने यूनिवर्सिटी को एक सुगम शांत स्थान उपलब्ध कराया और आधुनिक सुविधाओं से लैस इमारतों के साथ यूनिवर्सिटी का अपना परिसर – 'ज्योतिर्मय परिसर' विकसित करने में सहायता दी. यूनिवर्सिटी प्रबंध मंडल के प्रत्येक सदस्य ने संपूर्ण समर्पण और लगन के साथ इस यूनिवर्सिटी को उस मुकाम पर पहुँचाने में अपना पूरा योगदान दिया है और आगे भी देते रहेंगे.

कहते हैं, शिक्षा वह निवेश है, जो बिना व्यवधान के निरंतर लाभ प्रदान करता है और लोगों के जीवन में गुणवत्ता का आधान करता है, बढ़ाता है. मैं स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन का मूल यहाँ उल्लेखित करना चाहूँगी:

"हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं, जो चरित्र का निर्माण करे, बौद्धिक शक्ति का वर्धन करे, मेधा का विस्तार करे और जिसके माध्यम से प्राप्तकर्ता अपने पैरों पर खड़ा हो सके."

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी अपने विद्यार्थियों को उनके द्वार पर ऐसी ही गुणवत्तापूर्ण कौशल और वास्तविक जीवन संकेंद्रित शिक्षा देने के प्रति कटिबद्ध है. गुजरात राज्य के वृहत्तर जन समुदाय को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में यूनिवर्सिटी सतत कार्यलीन है, जिससे वे आने वाली नित नयी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सकें और अपनी पूरी क्षमता के साथ समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए सन्नद्ध हो सकें.

अपने मुख्य आदर्श वाक्य **"स्वाध्याय: परमं तप:"** का अनुसरण करते हुए यूनिवर्सिटी विद्यार्थियों को समृद्ध पाठ्यचर्या उपलब्ध कराने में विश्वास रखती है. इसी आवश्यकता की पूर्ति के क्रम में यूनिवर्सिटी यह नवीन, अधिक सुस्पष्ट पाठ्यसामग्री लेकर उपस्थित हुई है, जिससे विद्यार्थियों की उनके विषय में बेहतर समझ बन सके. इसके माध्यम से यूनिवर्सिटी ने उन विद्यार्थियों के लिए संभावनाओं का विस्तार किया है, जिनके लिए नियमित पारंपरिक शिक्षा पद्धति के द्वार बंद हो चुके हैं. सभी विषयों में विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप स्वाध्याय सामग्री निर्माण के लिए पाठ्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्यों से आरंभ करते हुए, स्वाध्याय सामग्री लेखकों, विषय और भाषा परामर्शकों का एक समर्पित दल गठित किया गया है.

आज की डिजिटल दुनिया की गति से एकरूपता रखते हुए यूनिवर्सिटी ने स्वयं का एक डिजिटल मंच – ओमकार-ई (OMKAR-E) विकसित किया है, जो ICT (इनफार्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी) के माध्यम से शिक्षा प्रदान करता है. जल्द ही योग, प्राकृतिक चिकित्सा और भारतीय शास्त्रीय नृत्य जैसे विषयों पर ऑनलाइन सर्टिफिकेट और डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी यूनिवर्सिटी के माध्यम से उपलब्ध होंगे, जो वैकल्पिक विषय के रूप में चयनित किये जा सकेंगे.

अपने सभी प्रयासों के साथ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी ज्ञान और शिक्षा का प्रमुख केंद्र बनने की प्रक्रिया में है और हम आपको इस पवित्र यज्ञ में सम्मिलित होकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के समरस समाज निर्माण के स्वप्न को साकार करने के लिए आमंत्रित करते हैं.

प्रो. (डॉ.) अमी उपाध्याय

कुलपति

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी (BAHONSHND)
HNDMJ-102 हिंदी उपन्यास

प्रधान संपादक :

प्रो. (डॉ.) योगेंद्र पारेख	निदेशक, स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

संपादक :

डॉ. अर्चना मिश्रा	असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

सह संपादक :

डॉ. आशीष कुमार सिंह	असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

विषय समिति :

प्रो. आलोककुमार गुप्त	प्रोफ़ेसर (सेवा निवृत), हिंदी भाषा एवं साहित्य अध्ययन केंद्र, भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक अध्ययन संकाय, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर.
डॉ. ओमप्रकाश शुक्ल	एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी, गुजरात आट्‌र्स एंड कॉमर्स कॉलेज, अहमदाबाद.
डॉ. अर्चना मिश्रा	असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

इस खंड के इकाई लेखक :

डॉ. धनलक्ष्मी वतनानी	एसोसिएट प्रोफ़ेसर (सेवा निवृत), एस. आर. मेहता आट्‌र्स कॉलेज, अहमदाबाद.
डॉ. धीरज वणकर	एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, जी. एल. एस. (सद्‌गुणा एंड बी.डी.) कॉलेज फॉर गर्ल्स, अहमदाबाद.
डॉ. ज्योत्सना गोस्वामी	एसोसिएट प्रोफ़ेसर, एम. एन. कॉलेज, विसनगर, महेसाणा.
डॉ. शिरीन एम. शेख	एसोसिएट प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, एस. बी. महिला आट्‌र्स कॉलेज, हिम्मतनगर, साबरकांठा.
डॉ. भारती एफ. चौधरी	एसोसिएट प्रोफ़ेसर, एस. बी. महिला आट्‌र्स कॉलेज, हिम्मतनगर, साबरकांठा.
डॉ. सुनील कुमार 'मानस'	विभागाध्यक्ष हिंदी, सरकारी विनयन कॉलेज, बेचराजी, महेसाणा.
डॉ. हुसैनी बोहरा	असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर.
डॉ. अर्चना मिश्रा	असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

इस खंड के परामर्शक :

प्रो. दयाशंकर त्रिपाठी	प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष (सेवानिवृत), हिंदी विभाग, सरदार पटेल यूनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर, आणंद.
डॉ. ओमप्रकाश शुक्ल	एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी, गुजरात आट्‌र्स एंड कॉमर्स कॉलेज, अहमदाबाद.

आवरण सज्जा :

सुश्री मार्मी मकवाणा	ग्राफिक डिजाइनर, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

प्रकाशक : कुलसचिव, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय, अहमदाबाद

ISBN : 978-93-5598-844-7

© अप्रैल, 2025 डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

सर्वाधिकार सुरक्षित : यह स्वाध्याय सामग्री डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी द्वारा मुक्त दूरस्थ शिक्षा के उद्देश्यों को केंद्र में रखते हुए विद्यार्थियों के स्वाध्याय के लिए तैयार की गयी है, जिसका सर्वाधिकार यूनिवर्सिटी के पास सुरक्षित है. इस स्वाध्याय सामग्री का पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी प्रकार डिजिटली या इलेक्ट्रॉनिकली पुनरुत्पादन डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी की लिखित अनुमति के बिना अवैध माना जायेगा.

BAOU
Education for all

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी

(गुजरात सरकार द्वारा स्थापित)

बी.ए. (ऑनर्स) (BAHONSHND)
हिंदी मेजर (HNDMJ-102)
हिंदी उपन्यास

इकाई-1	हिन्दी उपन्यास स्वरुप और विकास	05-16
इकाई-2	लेखक परिचय एवं उपन्यास की कथावस्तु	17-26
इकाई-3	'त्यागपत्र' : पात्र एवं चरित्र चित्रण	27-40
इकाई-4	'त्यागपत्र' : संवाद एवं कथोपकथन	41-47
इकाई-5	'त्यागपत्र' : देशकाल और वातावरण	48-53
इकाई-6	'त्यागपत्र' : भाषा-शैली	54-64
इकाई-7	'त्यागपत्र' : उपन्यास का उद्देश्य	65-70
इकाई-8	'त्यागपत्र' : उपन्यास में मनोविज्ञान	71-79
इकाई-9	'तमस' : भीष्म साहनी – लेखक परिचय और उपन्यास की कथावस्तु	80-96
इकाई-10	'तमस' : पात्र एवं चरित्र चित्रण	97-116
इकाई-11	'तमस' : संवाद और कथोपकथन	117-132
इकाई-12	'तमस' : देशकाल और वातावरण	133-148
इकाई-13	'तमस' : भाषा-शैली	149-165
इकाई-14	'तमस' : उपन्यास का उद्देश्य	166-182

पाठ्यक्रम परिचय

(पाठ्यक्रम आरंभ करने से पहले विद्यार्थी कृपया इसे अवश्य पूरा पढ़ें)

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा निर्देशित चारवर्षीय बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी अध्ययन कार्यक्रम के पहले सत्र का यह दूसरा पाठ्यक्रम – 'हिंदी उपन्यास', पहले पाठ्यक्रम – 'हिंदी कहानियाँ' का ही विस्तार कहा जा सकता है. इन दो पाठ्यक्रमों के माध्यम से हम अपने विद्यार्थियों के लिए आधुनिक हिंदी कथा साहित्य की एक बानगी प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे पहले वर्ष के बाद वे यदि 'यू. जी. सर्टिफिकेट' लेकर निकलना चाहते हैं तो उनके पास आधुनिक हिंदी कथासाहित्य की एक ठोस बुनियाद हो. पहले पाठ्यक्रम में आपने 11 कहानियाँ पढ़ी, इस दूसरे पाठ्यक्रम में आप 2 उपन्यास पढ़ेंगे – (1) जैनेंद्र लिखित 'त्यागपत्र' (2) भीष्म साहनी लिखित 'तमस'. इन दोनों उपन्यासों के चुनाव के पीछे दृष्टि यह रही है कि, सबसे पहले तो ये उपन्यास अपेक्षाकृत छोटे उपन्यास हैं, जिन्हें आप एक सीमित समय में आसानी से पढ़कर पूरा कर सकते हैं. इस स्वाध्याय सामग्री का पूरा लाभ लेने के लिए आपको इन दोनों उपन्यासों को अवश्य पढ़ लेना चाहिए.

जैनेंद्र प्रेमचंद की परंपरा के लेखक हैं, किंतु उन्होंने प्रेमचंद की समाजनिष्ठता को व्यक्तिनिष्ठता में केंद्रित किया था और मनुष्य के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को उपन्यास के दायरे में लाये थे. 'त्यागपत्र' उपन्यास के माध्यम से यह आप अच्छी तरह समझ सकेंगे.

भीष्म साहनी ने 'तमस' के माध्यम से भारत देश की सबसे बड़ी मानव निर्मित त्रासदी के कारणों और प्रभावों की मार्मिक निष्पक्ष पड़ताल करने की कोशिश की है. आज जब लगभग सारी दुनिया धर्म, रंग, जातीयता आदि के नाम पर परस्पर संघर्ष और युद्ध में उलझी है, तब यह उपन्यास धार्मिक उन्माद या किसी भी प्रकार की कट्टरता के दुष्परिणामों को समझने के लिए पुनः प्रासंगिक हो उठा है. इस उपन्यास पर आधारित गोविंद निहलानी द्वारा निर्देशित एक बहुत अच्छी फिल्म यूट्यूब पर उपलब्ध है. आप उपन्यास पढ़ने के बाद उसे भी देख सकते हैं, जो शायद उपन्यास के कुछ गहरे अर्थ खोलने में आपकी सहायता कर सके.

इस पाठ्यक्रम में कुल 14 इकाइयाँ हैं, जिसमें पहली इकाई में हिंदी उपन्यास के उद्भव और विकास का एक संक्षिप्त परिचयात्मक लेखा जोखा प्रस्तुत किया गया है. अगली 7 इकाइयों में 'त्यागपत्र' उपन्यास के लेखक का परिचय से लेकर उपन्यास के मान्य 6 तत्त्वों के आधार पर विश्लेषण दिया है, इसी तरह बाकी 6 इकाइयों में 'तमस' के लेखक का परिचय और उपन्यास का विश्लेषण है.

इन 14 इकाइयों का लेखन अलग अलग अनुभवी प्राध्यापकों ने किया है. ये इकाइयाँ वैसी ही हैं, जैसे पारंपरिक विश्वविद्यालयों में होने वाले लेक्चर. जैसे कुछ लेक्चर बहुत अच्छे लगते हैं और तुरंत समझ में आ जाते हैं, वैसे ही कुछ इकाइयाँ एक बार पढ़ते ही समझ में आ जाएँगी; कुछ को एक से अधिक बार पढ़ना पड़ेगा और कुछ ऐसी भी हो सकती हैं जिन्हें पढ़ने से संतुष्टि न मिले अधूरापन लगे, कुछ प्रश्न खड़े हो जाएँ. तब आप उन प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयत्न कीजियेगा और इस खोज से ही आपकी वास्तविक अध्ययन यात्रा शुरु होगी. जिन प्रश्नों के उत्तर आप स्वयं खोजेंगे, वे ही आपको हमेशा के लिए याद हो जाएँगे और आपके अध्ययन का वास्तविक फल होंगे. आपकी इस अध्ययन यात्रा में यूनिवर्सिटी सदा आपके साथ है. आप अध्ययन संबंधी अपने किसी भी प्रश्न को नीचे लिखी ईमेल आई डी पर भेज सकते हैं. तो अपना अध्ययन आरंभ करें! खूब सारी शुभकामनाएँ!!

बी.ए. हिंदी अध्ययन के लिए संपर्क ईमेल आई डी : hindi@baou.edu.in

इकाई 1 हिन्दी उपन्यास स्वरूप और विकास

रूपरेखा

1.1 उद्देश्य
1.2 प्रस्तावना
1.3 उपन्यास की परिभाषा
1.4 भारतेन्दु युगीन उपन्यास
1.5 द्विवेदी युगीन उपन्यास
1.6 प्रेमचंद युगीन उपन्यास
1.7 प्रेमचंदोत्तर युगीन उपन्यास
1.7.1 सामाजिक उपन्यास
1.7.2 मनोवैज्ञानिक उपन्यास
1.7.3 व्यक्तिवादी उपन्यास
1.7.4 अस्तित्ववादी उपन्यास
1.7.5 आँचलिक उपन्यास
1.7.6 ऐतिहासिक उपन्यास
1.8 साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास
1.9 इक्कीसवीं सदी के उपन्यास
1.9.1 हिन्दी दलित उपन्यास
1.9.2 आदिवासी जीवन पर केन्द्रित उपन्यास
1.9.3 किन्नर विमर्श पर केन्द्रित उपन्यास
1.10 सारबिंदु
1.11 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
1.12 उपयोगी पाठ्यसामग्री

1.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई 'हिन्दी उपन्यास स्वरूप और विकास' से संबंधित है. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- हिन्दी उपन्यास का अर्थ जान सकेंगे.
- हिन्दी उपन्यास के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे.
- हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.
- इक्कीसवीं सदी के उपन्यास से परिचित होंगे.
- प्रमुख हिन्दी उपन्यासकारों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.

1.2 प्रस्तावना

विद्यार्थी मित्रो! हम जानते हैं कि साहित्य पहले पद्य में लिखा गया और बाद में गद्य में. गद्य आधुनिक काल की देन है. साहित्य की कोई भी विधा समाज और युग की परिस्थितियों की देन होती है. आधुनिक काल में विभिन्न विधाओं का उद्‌भव हुआ. 'उपन्यास' भी आधुनिक काल की देन है. साहित्यिक रूप में महाकाव्य प्राचीनतम रहा है जिसके परिष्कार और विकास में सामंती परिस्थिति थी. धीरे-धीरे समाज बदला और उसकी परिस्थितियाँ भी बदली. समाज

अब सामंती की जगह पूँजीवादी हो गया. पूँजीवादी युग में अँकुरित और पल्लवित होने वाला साहित्यिक रूप है - उपन्यास. आधुनिक काल में महाकाव्य की जगह उपन्यास ने ले ली.

'उपन्यास' शब्द 'उप' और 'न्यास' दो शब्दों के योग से बना है. जिसका अर्थ – 'उप' - निकट, 'न्यास' - रखी हुई अर्थात् निकट रखी हुई वस्तु से है. इसका मतलब है ऐसी कृति जो हमें अपने जीवन के निकट प्रतीत हो. उपन्यास को अंग्रेजी में 'नॉवेल' (Novel) कहते है. 'उपन्यास' गद्य साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण तथा लोकप्रिय विधा है. ज्यादा लोकप्रिय बन बैठा है, क्योंकि वह मानव जीवन के व्यापक चित्रण के लिए योग्य सिद्ध हुआ है. उपन्यास को अलग-अलग भाषाओं में अलग-अलग नाम से जाना जाता है. गुजराती में 'नवलकथा', मराठी में 'कादम्बरी' और बांग्ला में 'उपन्यास' शब्द का प्रयोग भी अंग्रेजी 'नॉवेल' के अर्थ में ही किया जाता है. कहा जाता है कि 'उपन्यास' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 19वीं सदी में बांग्ला साहित्यकार भूदेव मुखर्जी ने किया था. आइये अब हम उपन्यास की परिभाषा समझते हैं तथा उपन्यास की विकासयात्रा पर एक नजर डालते हैं.

1.3 उपन्यास की परिभाषा

पाश्चात्य और भारतीय समीक्षकों, विद्वानों ने उपन्यास की व्याख्या और परिभाषा अनेक प्रकार से की है.

- एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में उपन्यास की परिभाषा इस प्रकार दी गई है - "उपन्यास का मूल आधार उसमें निहित यथार्थात्मकता का तत्त्व है. उपन्यास में मानव जीवन के सत्य का वास्तविक चित्रण प्रस्तुत किया जाता है."
- ई. एम. फास्टर उपन्यास की स्पष्टता करते हुए कहते हैं - "उपन्यास कम से कम पचास हजार शब्दों की रचना अवश्य होना चाहिए."
- अर्नेस्ट बेकर ने लिखा है - "उपन्यास गद्य में लिखी गई एक कल्पनाजनित कथा है, जिसके माध्यम से लेखक जीवन की व्याख्या करने का प्रयत्न करता है."
- हेनरी जेम्स उपन्यास को 'कलाकृति' मानते हैं.
- भारतीय समीक्षक डॉ. गुलाबराय ने उपन्यास की परिभाषा इस प्रकार लिखी है - "उपन्यास कार्य-कारण श्रृंखला में बंधा हुआ वह गद्यात्मक कथानक है, जिसमें अपेक्षाकृत अधिक विस्तार तथा पेचीदगी के साथ जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले व्यक्तियों से संबंधित वास्तविक या काल्पनिक घटनाओं द्वारा मानव के सत्य का रसात्मक रूप में उद्घाटन किया जाता है."
- उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने उपन्यास की परिभाषा इस प्रकार दी है – "मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मात्र मानता हूँ. मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूल तत्व है."
- **बोध प्रश्न**

(1) साहित्य में पहले गद्य लिखा गया या पद्य?

(2) 'उपन्यास' शब्द किस के योग से बना है तथा इसका क्या अर्थ होता है?

(3) उपन्यास को अंग्रेजी में क्या कहते हैं?

(4) 'मैं उपन्यास को मानव चरित्र का चित्र मानता हूँ' किसने कहा?

(5) 'उपन्यास' को गुजराती में क्या कहते हैं?

1.4 भारतेन्दु युगीन उपन्यास

हिंदी में 'उपन्यास' नामक गद्य विधा का प्रादुर्भाव आधुनिक काल से ही माना जाता

है. उपन्यास सर्वाधिक लोकप्रिय विधा मानी जाती है. हिन्दी उपन्यास के विकास की दृष्टि से भारतेन्दु युगीन उपन्यास एक प्रारंभ मात्र कहा जा सकता है. उपन्यास निश्चित रूप से पश्चिम की देन है. इस युग के रचनाकारों अंग्रेजी और बांग्ला उपन्यासों से प्रेरित होकर उपन्यास लिखना शुरू किया. 19वीं सदी के अंतिम चरण सन् 1873 ई. में सबसे पहले गदाधर सिंह ने बांग्ला भाषा के दो उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद किया. भारतेन्दु युग में अनेक बांग्ला उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद हुआ. भारतेन्दु युगीन 'श्रद्धाराम फिल्लौरी' लिखित 'भाग्यवती' उपन्यास सामाजिक था लेकिन हिन्दी के प्रथम मौलिक उपन्यास का श्रेय 'लाला श्रीनिवासदास' लिखित 'परीक्षा गुरु' को ही दिया जाता है. इसमें बड़ी साधारण-सी कथा है – 'एक अमीर के बिगड़ने और अपने एक सच्चे मित्र की सहायता से सुधरने की घटना है. इसमें नैतिक उपदेश की अधिकता है.' भारतेन्दु युग के प्रमुख उपन्यासकारों की बात की जाय तो लाला श्रीनिवासदास, बालकृष्ण भट्ट, राधाकृष्ण दास, लज्जाराम शर्मा आदि नाम लिए जा सकते हैं.

बालकृष्ण भट्ट कृत 'नूतन ब्रह्मचारी', 'सौ अजान एक सुजान', लज्जाराम शर्मा लिखित 'धूर्त रसिकलाल' राधाकृष्णदास रचित 'निस्सहाय हिंदू' आदि इस काल के प्रमुख उपन्यास हैं. उपर्युक्त सभी उपन्यासों में सामाजिक रुढ़ियों के प्रति विद्रोह का स्वर होने के साथ-साथ आदर्श समाज की कल्पना का संकेत हैं.

1.5 द्विवेदी युगीन उपन्यास

हिन्दी उपन्यास की विकास यात्रा में द्विवेदी युग भारतेन्दु युग की तुलना में आगे है. इस युग में भिन्न-भिन्न प्रकार के अनेक उपन्यास लिखे गये और पढ़े भी गये. जासूसी, तिलस्म, रहस्य, रोमांच के द्वारा मनोरंजन ही उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य बना रहा. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में - "इन उपन्यासों में अद्‌भुत और असाधारण घटनाओं की ऐसी रेल-पेल है कि पाठक का चित्त धक्का खा खा कर आगे बढ़ता जाता है, उसे कथानक के गठन और चरित्र के विकास की बात याद ही नहीं रहती है." अति प्राकृत, अद्‌भुत और असाधारण घटनाओं से आश्चर्यजनक परिस्थितियों का निर्माण तिलस्माती कथानकों का प्रधान आकर्षण था. वस्तुतः देवकीनंदन खत्री इसी परंपरा के जनक थे. सन् 1900 ई. से सन् 1918 ई. के बीच तीन उपन्यासकार मुख्य रहे हैं. जिसमें प्रथम देवकीनंदन खत्री हैं जिन्होंने 'चंद्रकांता', 'नरेंद्रमोहिनी', 'वीरेन्द्रवीर', 'कुसुमकुमारी', 'काजर की कोठरी', 'गुप्त गोदान' और 'भूतनाथ' (छः भाग) सरीखे उपन्यास दिए. दूसरे पं. किशोरीलाल गोस्वामी और तीसरे गोपालराम गहमरी का उल्लेख किया जा सकता है. किशोरीलाल गोस्वामी ने विविध वर्गो के विभिन्न स्वभाव के व्यक्तियों का चित्रण सफलता पूर्वक किया है. इस काल में प्रसिद्ध कवि अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और बाबू ब्रजनंदन सहाय ने भी उपन्यास की रचना की. उपाध्याय जी के उपन्यासों में भावप्रधानता मिलती है. इस युग के मौलिक उपन्यासों का लक्ष्य केवल मनोरंजन ही है. इस काल में बांग्ला के उत्तम सामाजिक उपन्यासों का हिन्दी में अनुवाद भी पर्याप्त मात्रा में हुआ. बांग्ला से हिन्दी अनुवाद करनेवालों में पं. रुपनारायण पाण्डेय, बाबू गोपालराम गहमरी और प. ईश्वरीप्रसाद अपना विशेष महत्व रखते हैं.

द्विवेदी युग के उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य जाजूसी, तिलस्म, रहस्य, रोमांच के माध्यम से मनोरंजन ही रहा. पूर्वप्रेमचंद युग के इन उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं के गंभीर चित्रण का अभाव रहा है. इस युग में कुछ ऐतिहासिक उपन्यास भी लिखे गये परंतु उनमें इतिहास कम और रोमांच-तिलस्म अधिक है. किशोरीलाल गोस्वामी ने इस परंपरा में 'सुल्ताना रजियाबेगम वा रंगमहल में हलाहल', 'मल्लिकादेवी का बंग सरोजनी' आदि ऐतिहासिक उपन्यास लिखे. सामाजिक उपन्यास भी लिखे गये. द्विवेदी युगीन उपन्यास की बड़ी उपलब्धि यह है कि प्रेमचंद जैसे युग प्रवर्तक कथाकार ने इसी युग में उपन्यास कहानी लिखना आरंभ किया था. 'रुठीरानी',

'सेवासदन' उपन्यास इसी युग में लिखे जा चुके थे.

- **बोध प्रश्न**

(1) हिन्दी में उपन्यास नामक गद्य विधा का प्रादुर्भाव किस काल में हुआ?

(2) प्रथम मौलिक उपन्यास का श्रेय किसको दिया जाता है?

(3) 'चंद्रकांता', 'चंद्रकांता संतति' उपन्यास किसने लिखे हैं?

(4) द्विवेदी युग के उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य क्या था?

(5) 'भाग्यवती' उपन्यास के रचनाकार कौन है?

1.6 प्रेमचंद युगीन उपन्यास

उपन्यास साहित्य का सर्वांगीण विकास प्रेमचंद युग में हुआ. प्रेमचंद ने यथार्थ की भूमि पर चरित्र चित्रण किया और पूर्ण रुपेण ध्यान देकर कृषकों की व्यथा को संवेदनशील शैली में उजागर किया. उन्होंने हिन्दी उपन्यास को एक निश्चित दिशा प्रदान की थी. इसलिए उनके समग्र रचनाकाल को प्रेमचंद युग कहकर पुकारा गया. वस्तुतः हिन्दी उपन्यास को सही अर्थों में सर्वप्रथम प्रेमचंद ने ही परिभाषित किया. मानव चरित्र या मानव जीवन की समस्याओं के यथार्थ निरूपण से उपन्यास को जोड़ते हुए लिखा – "उपन्यास मानव चरित्र का चित्रमात्र है. मानव जीवन की समस्याओं तथा रहस्यों का उद्घाटन उसका प्रमुख उद्देश्य है." उनके उपन्यासों पर नजर डालें तो, 'प्रेमाश्रम', 'सेवासदन', 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'निर्मला', 'कायाकल्प', 'गबन', 'मंगलसूत्र', 'गोदान' आदि मुख्य हैं. 'सेवासदन' से लेकर 'गोदान' तक उनकी उपन्यास यात्रा कई समस्याओं, विषयों और चुनौतियों का सामना करती हुई निरंतर आगे बढ़ती रही है. 'सेवासदन' में वेश्या समस्या, 'निर्मला' में दहेज और अनमेल विवाह की समस्या, 'प्रेमाश्रम' में किसान जमींदार का संघर्ष, 'रंगभूमि' में औद्योगीकरण के खतरों का वर्णन है. 'गबन' उपन्यास में मिथ्यप्रदर्शन के दोष को उजागर किया है. इन उपन्यासों में यथार्थ का निरूपण करते हुए आदर्श की ओर भी संकेत है. प्रेमचंद जमीन से जुड़े हुए रचनाकार थे. उन्होंने गरीब, किसान, नारी, दलित की यातना को उपन्यासों में बख़ूबी निरुपित किया है.

प्रेमचंद का सर्वाधिक चर्चित और श्रेष्ठ उपन्यास 'गोदान' है. इस उपन्यास को कृषक समाज का महाकाव्य कहा गया है. 'गोदान' तक आते आते प्रेमचंद का गांधीवादी सपना टूट जाता है. इसलिए 'गोदान' प्रेमचंद के मोहभंग की चरम स्थिति है. गोदान की मुख्य समस्या है – किसानों का शोषण. गाँव और शहर दोनों की शोषक शक्तियाँ आपस में मिलकर किसानों का शोषण करती हैं. 'गोदान' में नायक होरी के माध्यम से भारतीय किसान की संघर्षगाथा और त्रासदी का चित्रण है. होरी की एक आकांक्षा है - घर के दरवाजे पर गाय हो और अंत समय वह गोदान कर सके. वह गाय उधार लाता है लेकिन उसका भाई ईर्ष्यावश विष देकर उसकी हत्या कर देता है. गाय नसीब में नहीं थी, नसीब में थी करुण मृत्यु. मृत्यु के समय उसकी पत्नी धनिया के पास कुल बीस आने निकलते हैं. और वह पंडित से कहती है – "महराज! घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा. यही पैसे हैं, यही उनका गोदान है." सामाजिक आर्थिक शोषण के तले होरी दिन प्रतिदिन पिसता जाता है. जबकि धनिया खुलकर विरोध करती है. वह साहूकार, जमींदार, दारोगा सभी को साफ-साफ सुना देती है. लेकिन शोषण सहते सहते होरी की हालत इतनी खराब हो जाती है कि उसे जमीन, बैल, घर और यहाँ तक कि अपनी पुत्री को भी बेचने के लिए विवश हो जाना पड़ता है. और एक स्वाभिमानी कृषक दुर्व्यवस्था के चलते अंततः दिहाड़ी मजदूर के रूप में अपनी इहलीला समाप्त करता है. इस प्रकार 'गोदान' का अंत करुण है. 'गोदान' प्रेमचंद की उपन्यास कला की उत्तम उपलब्धि है और हिंदी उपन्यास साहित्य में एक मील का पत्थर है.

प्रेमचंद का अनुभव-जगत बहुत व्यापक था. भोगा हुआ यथार्थ उनकी सबसे बड़ी पूँजी थी. प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज और मुहावरेदार थी. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने प्रेमचंद का महत्व बड़े मार्मिक शब्दों में प्रस्तुत किया है – "प्रेमचंद शताब्दियों से पददलित, अपमानित और उपेक्षित कृषकों की आवाज थे, पर्दे में कैद, पद-पद पर लांछित और असहाय नारी जाति के जबरदस्त वकील थे. अगर आप उत्तर भारत की समस्त जनता के आचार-विचार, भाषा-भाव, रहन-सहन, आशा-आकांक्षा, दुःख-सुख और सूझ-बूझ को जानना चाहते हैं तो प्रेमचंद से उत्तम परिचायक आपको नहीं मिल सकता."

प्रेमचंद युग के अन्य उपन्यासकारों में विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक', पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', चतुरसेन शास्त्री, भगवती प्रसाद बाजपेयी, ऋषभचरण जैन, जयशंकर प्रसाद, प्रतापनारायण श्रीवास्तव, वृंदावनलाल वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सियारामशरण गुप्त, गोविंदवल्लभ पंत, प्रफुल्लचंद ओझा, श्रीनाथ सिंह, उषादेवी मित्रा, जेतरानी दीक्षित, चन्द्रशेखर शास्त्री, गंगाप्रसाद श्रीवास्तव, जैनेन्द्रकुमार, इलाचंद्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा आदि उल्लेखनीय हैं. विश्वंभरनाथ शर्मा ने 'माँ' और 'भिखारिणी' नामक उपन्यास लिखे लेकिन वे अपनी विशिष्ट पहचान न बना पाये. उनके उपन्यास किस्सागोई और उपदेशात्मक से मुक्त नहीं हैं. चतुरसेन शास्त्री ने भी कई उपन्यास लिखे. उसका झुकाव ऐतिहासिकता की ओर अधिक रहा था. पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' के उपन्यासों में 'चंद हसीनों के खतूत', 'दिल्ली का दलाल' और 'शराबी' का उल्लेख किया जा सकता है. इन्होंने समाज की वास्तविकता का चित्रण किया है.

जयशंकर प्रसाद प्रेमचंद युग के उल्लेखनीय उपन्यासकार हैं. उन्होंने कविता, कहानी, नाटक के साथ-साथ उपन्यास क्षेत्र में भी विशेष योगदान दिया. उनके उपन्यासों में 'कंकाल', 'तितली' और 'इरावती' (अधूरा) का नाम लिया जाता है. 'तितली' में ग्रामीण तथा किसान जीवन की कथा है. जबकि 'कंकाल' उपन्यास में समाज की त्याज्य, अवैध संतानों की व्यथा-कथा चित्रित है. प्रसाद की तरह निराला जी ने 'अप्सरा', 'अलका', 'प्रभावती' नामक उपन्यास लिखे हैं. इसी परंपरा के विकास क्रम में भगवतीचरण वर्मा का 'चित्रलेखा' उपन्यास खूब लोकप्रिय रहा. जिसमें मुख्य रूप से पाप-पुण्य की सामाजिक समस्या के साथ साथ प्रेम और सेक्स की समस्या को प्रस्तुत किया गया है. बीजगुप्त, कुमारगिरि, चित्रलेखा, श्वेतांक और विशालदेव जैसे अच्छे चरित्र इस उपन्यास ने दिये हैं. भगवतीप्रसाद बाजपेयी ने प्रेमचंद की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए समस्यामूलक तीन दर्जन से ज्यादा उपन्यास लिखे. उसके उपन्यास हैं – 'निमंत्रण', 'चलते-चलते', 'पुष्पगंधा' आदि. इन पर मनोविश्लेषणवाद का खासा प्रभाव दिखाई पड़ता है. वृंदावनलाल वर्मा ने ऐतिहासिक और सामाजिक दोनों प्रकार के उपन्यासों की रचना की. 'गढ़कुंडार', 'विराटा की पद्मिनी', 'मृगनयनी' उनके चर्चित ऐतिहासिक उपन्यास हैं. इसी युग में जैनेन्द्र ने नई दिशा, नवीन चेतना प्रदान करने का कार्य किया. उनके 'परख' और 'सुनीता' प्रेमचंद युग में प्रकाशित हुए. इस प्रकार प्रेमचंद युग ने हिन्दी उपन्यास को पर्याप्त समृद्ध किया.

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए.**

(1) हिन्दी उपन्यास के विकास को कितने युगों में विभाजित किया गया है?

(2) 'गोदान' को किस समाज का महाकाव्य कहा गया है?

(3) 'कंकाल' और 'तितली' उपन्यासों के लेखक कौन हैं?

(4) 'चित्रलेखा' उपन्यास के लेखक कौन हैं?

(5) 'परख' और 'सुनीता' उपन्यास किसने लिखे?

1.7 प्रेमचंदोत्तर युगीन उपन्यास

प्रेमचंदोत्तर उपन्यास अनेक मोड़ो और प्रयोगों से गुजरता हुआ दिखाई देता है. कथ्य और शिल्प दोनों दृष्टियों से पर्याप्त प्रयोगशीलता, नवीनता और विविधता के दर्शन होते हैं. मनोवैज्ञानिक और सामाजिक उपन्यासों की जो परंपरा स्वाधीनता पूर्व शुरु हुई थी वह स्वाधीनता के बाद भी चलती रही. प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की धाराओं को इस प्रकार रखा जा सकता है.

1.7.1 सामाजिक उपन्यास

हिन्दी में सामाजिक उपन्यासों की अच्छी परंपरा मिलती है. यह परंपरा दो वर्गो में विभाजित है. एक वर्ग वह है जिसमें आधुनिक सामाजिक जीवन से कथानक को चुनकर सामाजिक समस्याओं का चित्रण किया गया है. दूसरे वर्ग में समाज को भौतिकवादी दृष्टि से देखा गया है. पहली धारा सामाजिक उपन्यासों की धारा है, तो दूसरी समाजवादी धारा है. हिन्दी उपन्यास को एक नई सामाजिक राजनीतिक चेतना के साथ नवीन दिशा देने वाले उपन्यासकारों में यशपाल का योगदान महत्वपूर्ण रहा है. 'गोदान' की यथार्थवादी परंपरा का विकास एक विशिष्ट धरातल पर यशपाल में हुआ. यह विशिष्ट धरातल है उनका मार्क्सवादी दृष्टिकोण. 'अमिता' और 'दिव्या' मार्क्सवाद से प्रभावित उपन्यास हैं. किसी भी तरीके से किये जाने वाले शोषण का विरोध इस उपन्यासों का मूल स्वर है. 'दादा कामरेड' उनका पहला उपन्यास हैं जिसमें 'हिंसा' में टूटती आस्था के 'मार्क्सवाद' में दृढ़ होने की कथा है. 'अमिता' में अशोक के कलिंग विजय की कथा के द्वारा अहिंसा, करुणा और शांति का समर्थन किया गया है. अशोक के हृदय परिवर्तन की घटना को बड़े कलात्मक रूप से उजागर किया गया है. 'झूठासच' उपन्यास में यशपाल ने देशविभाजन से सम्बन्धित घटनाओं का विस्तार से वर्णन किया है.

उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ने सामाजिक उपन्यास लिखे हैं. उन्होंने मध्यमवर्गीय समाज की समस्याओं का चित्रण यथार्थवादी दृष्टि से किया है. उनके उपन्यास हैं – 'गर्म राख', 'गिरती दीवारें' 'शहर में घूमता आईना' आदि. 'गिरती दीवारें' में अश्क जी ने मध्यमवर्गीय काम और अर्थ की समस्याएँ निरूपित की है. 'शहर में घूमता आईना' (1963) में अश्क जी ने जालंधर शहर के जीवन का सजीव चित्रण किया है.

अमृतलाल नागर इस धारा के श्रेष्ठ उपन्यासकार हैं. उनके उपन्यासों में सामाजिकता के साथ-साथ ऐतिहासिकता और आंचलिकता का सुर भी है. 'अमृत और विष' उनका प्रसिद्ध सामाजिक उपन्यास है. उनके अन्य उपन्यासों में 'बूँद और समुद्र', 'मानस का हंस' का नाम लिया जा सकता है.

समाजवादी उपन्यासकारों में भगवतीप्रसाद वाजपेयी के 'पतवार' और 'गुप्तधन', प्रतापनारायण श्रीवास्तव के 'बयालीस' और 'विसर्जन'; जैनेन्द्र के 'सुखदा' और 'विवर्त'; वृंदावनलाल वर्मा का 'अमरबेल'; डॉ. रांगेय राघव का 'बौने और घायल फूल'; धर्मवीर भारती का 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' आदि उल्लेखनीय हैं.

1.7.2 मनोवैज्ञानिक उपन्यास

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासों की पहली धारा मनोवैज्ञनिक है. फ्रायड और उसकी परंपरा से प्रभावित उपन्यास मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की कोटि में आते हैं. मनोविश्लेषण प्रधान उपन्यासकारों में जैनेन्द्र, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय और नरोत्तम नागर मुख्य हैं. जैनेन्द्र इस नवीन धारा के प्रवर्तक माने जाते हैं. मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार व्यक्ति के बाह्य जीवन के बदले उसके भीतर की असल गहराइयों में प्रवेशकर अंतर्मन की गुत्थियों-रहस्यों का उद्‌घाटन करता है. जैनेन्द्र व्यक्ति के बाहर के नहीं भीतर के उपन्यासकार हैं. उनके 'त्यागपत्र', 'कल्याणकारी', 'सुखदा', 'विवर्त' प्रसिद्ध उपन्यास हैं. 'त्यागपत्र' उपन्यास में प्रेम और विवाह की समस्या को

नारी मनोविज्ञान की दृष्टि से विश्लेषित किया गया है.

मनोवैज्ञानिक उपन्यास परंपरा के दूसरे महत्वपूर्ण उपन्यासकार अज्ञेय हैं. जीवन संबंधी गहन विचारों का बड़ा ही सुलझा हुआ रूप प्रस्तुत करने वालों में अज्ञेय का नाम आदर से लिया जाता है. उन्होंने हिन्दी उपन्यासों को एक नया मोड़ दिया. उनका 'शेखर : एक जीवनी' (दो भाग) हिन्दी उपन्यास जगत में मिसाल बन गया है. यह मनोविज्ञान के साथ-साथ आधुनिकता के बोध का एक प्रयोगशील उपन्यास है. शेखर को फाँसी की सजा सुनाई जाती है. फाँसी से पहले शेखर के रात्रि भर के मनोचिंतन की अभिव्यक्ति इस उपन्यास में है. 'नदी के द्वीप' अज्ञेय का दूसरा महत्वपूर्ण उपन्यास है जो संवेदना और शिल्प की दृष्टि से एक बेजोड़ रचना है. इस उपन्यास में अज्ञेय जी प्रकृतवादी अधिक हो गये हैं. इसमें सेक्स की भावना अधिक उभर आई है. यह वस्तुप्रधान उपन्यास नहीं, चरित्र प्रधान उपन्यास है. लेखक ने चार पात्रों : भुवन, चंद्रमाधव, रेखा और गौरा को केन्द्र में रखकर उपन्यास की बुनावट की है. 'नदी के द्वीप' आधुनिक जीवनबोध का उपन्यास है. चार पात्रों के माध्यम से चार आधुनिक संवेदनाओं की कुशल अभिव्यक्ति हुई हैं. तीसरा उपन्यास 'अपने अपने अजनबी' है, जिसमें मृत्यु का साक्षात्कार और एकाकीपन, अजनबीपन, घुटन, संत्रास की सशक्त अभिव्यक्ति मिलती है.

मनौवैज्ञानिक उपन्यास की परंपरा की अगली कड़ी इलाचंद्र जोशी हैं. वे अपनी गहरी मनोवैज्ञानिक दृष्टि और फ्रायडीपन के लिए प्रसिद्ध हैं. उन्होंने मन के चेतन और अवचेतन स्तरों को स्वीकार करके अपने उपन्यासों में प्रस्तुत किया है. 'संन्यासी', 'प्रेत और छाया', 'जहाज का पंछी' उनके उपन्यास हैं. इसी परंपरा में डॉ. देवराज के 'पथ की खोज', 'अजय की डायरी' उपन्यासों का उल्लेख किया जा सकता है. दोनों उपन्यासों में विवाहेतर प्रेम की बात है. द्वारिका प्रसाद मिश्र के उपन्यास 'घेरे के बाहर' में यौन कुंठा की बात है. धर्मवीर भारती के 'गुनाहों का देवता' में भी प्रेम का मनोवैज्ञानिक चित्रण है.

1.7.3 व्यक्तिवादी विचारपरक उपन्यास

इस वर्ग के उपन्यासों में व्यक्तिगत जीवन से संबंधित सेक्स भावना, यौन आकर्षण, हीन भावना, प्रेम विवाह और मनोवैज्ञानिक पहलुओं का भरपूर प्रयोग हुआ है. अज्ञेय का 'नदी के द्वीप'; भगवतीचरण वर्मा का 'रेखा', नरेश मेहता का 'डूबते मस्तूल'; जैनेन्द्र कुमार का 'व्यतीत' और 'मुक्तिबोध'; भगवतीप्रसाद वाजपेयी का 'उनसे न कहना'; 'सपना बिक गया'; 'टूटा टी सेट'; डॉ. देवराज का 'पथ की खोज', 'अजय की डायरी'; निर्मल वर्मा का 'वे दिन', 'लाल टीन की छत', 'एक चिथड़ा सुख'; राजकमल चौधरी का 'मछली मरी हुई' आदि व्यक्तिवादी उपन्यास हैं.

1.7.4 अस्तित्ववादी उपन्यास

अस्तित्ववाद मानव जीवन की स्वतंत्रता, उत्तरदायित्व और चुनाव की भूमिका को केन्द्र में रखता है. इसमें पारंपरिक, धार्मिक और सामाजिक रुढ़ियों को चुनौती देते हुए कहा गया है कि जीवन का कोई पूर्व अर्थ नहीं होता, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति खुद अपने जीवन के अर्थ को तलाशता है. यह सिद्धांत मुख्य रूप से व्यक्ति को आत्म-उत्तरदेह और नैतिक दायित्व का बोध कराता है. इस सिद्धांत का उद्भव मुख्यरुप से पश्चिम में हुआ. हिन्दी के साहित्यकार जो इस सिद्धांत से प्रभावित हुए उनमें प्रमुख हैं – मोहन राकेश, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी आदि.

अस्तित्ववादी उपन्यासों में अज्ञेय का 'अपने अपने अजनबी' (1965) इलाचंद्र जोशी की 'ऋतुचक्र' (1969) प्रसिद्ध है.

1.7.5 आँचलिक उपन्यास

आँचलिकता की प्रवृत्ति का विकास स्वातंत्र्योत्तर काल में तीव्र गति से हुआ. आँचलिक

उपन्यास भी मूलतः सामाजिक उपन्यास ही हैं. अधिकतर आँचलिक उपन्यास पिछड़े हुए अँचलों को केन्द्र में रखकर लिखे गये हैं. ग्रामांचल के यथार्थ का फोटोग्राफिक वर्णन इन उपन्यासों की प्रमुख पहचान बनी. आंचलिक उपन्यासों का मूल उद्देश्य आँचल विशेष की संस्कृति का, जनचेतना का उस अंचल की प्राकृतिक पृष्ठभूमि में चित्रण करना है. आँचलिक उपन्यास धारा को हम स्वातंत्र्योत्तर काल की महान उपलब्धि मान सकते हैं. पूर्णतः आँचलिक रूप से लिखे गये उपन्यासों में फणीश्वरनाथ 'रेणु' द्वारा लिखे गये 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' उपन्यास उल्लेखनीय हैं. 'रेणु' द्वारा लिखा गया 'मैला आँचल' (1911) हिन्दी का पहला आँचलिक उपन्यास माना जाता है. इस उपन्यास में बिहार राज्य के मेरीगंज नामक गाँव तथा उसके आसपास के पिछड़े प्रदेश की कथा है. जिसमें अलग-अलग वर्गो का संघर्ष निरूपित है. नागार्जुन इस परंपरा के दूसरे सशक्त रचनाकार हैं. उन्होंने 'बलचनमा', 'रतिनाथ की चाची', 'दुखमोचन', 'वरुण के बेटे' उपन्यास लिखे. उदयशंकर भट्ट का 'सागर, लहरें और मनुष्य', रामदरश मिश्र का 'पानी के प्राचीर', 'जल टूटता हुआ', 'हिमांशु जोशी का 'कगार की आग', राजेन्द्र अवस्थी का 'जंगल का फूल' आँचलिक उपन्यास कहे जाते हैं.

1.7.6 ऐतिहासिक उपन्यास

जैसा कि शीर्षक से स्पष्ट हो जाता है कि इतिहास की पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यासों को ऐतिहासिक उपन्यास कहा जाता है. हिन्दी में मौलिक ऐतिहासिक उपन्यास का आरंभ पं. किशोरीलाल गोस्वामी के सन् 1890 ई. में लिखे 'लवंगलता' से होता है. वे हिन्दी के पहले ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं. उन्होंने ऐतिहासिक आख्यानों का सहारा लिया, यद्यपि इनमें कल्पना की प्रधानता ही अधिक रही. वे इतिहास और कल्पना का सामंजस्य स्थापित नहीं कर सके. वस्तुतः उन्होंने उपन्यासों का उद्देश्य मनोरंजन ही बनाया है. उनके उपन्यास हैं – 'लवंगलता', 'प्रणयिनी प्रणय', 'लखनऊ की कब्र', 'सोना और सुगंध', 'लाल कुँवर', 'पन्ना', 'रजिया', 'हीराबाई', 'तारा', 'राजसिंह' आदि. किशोरीलाल के समकालीन बाबू गंगाप्रसाद गुप्त ने 'नूरजहाँ', 'वीरपत्नी', कुँवरसिंह सेनापति', 'हम्मीर', 'वीर जयपाल', 'कृष्णकांता' आदि ऐतिहासिक उपन्यास लिखे. गुप्त जी ने पहली बार उपन्यासों में पात्र और उनके चरित्र चित्रण को महत्व दिया. हम्मीर, कुंवरसिंह और जयमल राजपूती वीरता के जगमगाते सितारे हैं.

आचार्य हजारीप्रसाद भी इसी परंपरा के उपन्यासकार हैं. उन्होंने 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा', 'चारुचन्द्रलेख' और 'अनामदास का पोथा' नामक उपन्यास लिखे हैं. इतिहास, संस्कृति, कल्पना और आधुनिकता का अपूर्व सामंजस्य उनके उपन्यासों में मिलता है. 'बाणभट्ट की आत्मकथा' आत्मकथन शैली में लिखी गई एक महत्वपूर्ण रचना है जिसमें आत्मकथा, जीवनी और उपन्यास तीनों रूपों का मिश्रण है. बाण के जीवन तथ्यों का सुंदर वर्णन किया गया है. चतुरसेन शास्त्री का 'वैशाली की नगर वधू' और रांगेयराघव का 'मुर्दों का टीला' भी ऐतिहासिक उपन्यास हैं. 'मुर्दो की शक्ति' सर्वोत्कृष्ट ऐतिहासिक उपन्यासों में से एक है. इसमें मोहनजोदाड़ो की संस्कृति का बड़ा ही सजीव चित्रण है. लेखक ने मानो खंडहर को खोदकर उस युग के मुर्दों को पुनर्जीवन प्रदान किया है. अन्य ऐतिहासिक उपन्यासकारों में पं. गोविंदवल्लभ पंत, डॉ. रामरतन भटनागर, वृंदावनलाल वर्मा, गुरुदत्त आदि के नाम लिये जा सकते हैं.

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए.**

(1) फ्रायड से प्रभावित उपन्यास किस श्रेणी में आते हैं?

(2) 'त्यागपत्र' उपन्यास किसने लिखा है?

(3) अज्ञेय के उपन्यासों के नाम बताइए?

(4) 'संन्यासी', 'प्रेत और छाया' उपन्यासों के लेखक कौन हैं?

1.8 साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास

साठोत्तर उपन्यासकारों में उषा प्रियंवदा, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, श्रीलाल शुक्ल, जगदीशचंद्र आदि विशेष उल्लेखनीय हैं. श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी', जगदीशचंद्र के 'धरती धन न अपना', 'नरककुंड में वास' आदि उल्लेखनीय उपन्यास हैं. साठोत्तर की महिला उपन्यासकारों में सबसे चर्चित रचनाकार कृष्णा सोबती हैं. उन्होंने अपने दो उपन्यासों – 'जिंदगीनामा' तथा 'दिलोदानिश' में गाँव और शहर के एक अँचल को संवेदना के धरातल पर चित्रित किया है. लेखिका ने ग्रामीण समस्याओं के साथ भारतीय औरतों की समस्याएँ भी निरूपित की है. इन उपन्यासों के अलावा सोबती जी ने 'डार से बिछुड़ी', 'मित्रो मरजानी' और 'सूरजमुखी अंधेरे के' नामक लघु उपन्यास भी लिखे हैं. इन तीनों उपन्यासों में यौन का नग्न चित्रण मिलता है. 'जिंदगीनामा' पंजाब के एक गाँव पर आधारित होते हुए भी समग्र पंजाब का एक जीवंत दस्तावेज है. 'दिलोदानिश' (1993) भी एक आँचलिक उपन्यास है, जिसमें दिल्ली के एक अँचल का बख़ूबी वर्णन मिलता है.

उषा प्रियंवदा जानी मानी रचनाकार हैं. उनके उपन्यास – 'रुकोगी नहीं राधिका' (1967), 'पचपन खंभे लाल दीवारें' आधुनिकता बोध के उपन्यास हैं. 'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यास में भारतीय और अमेरीकी विचारों-संस्कारों की टकराहट है. नायिका राधिका एक तरफ प्रेम संबधों को काटती है तो दूसरी तरफ उन्हें जोड़ने की कोशिश करती भी दिखाई देती है. मृदुला गर्ग के उपन्यास स्त्री चेतना से संबंधित हैं. उनके तीन उपन्यासों – 'उसके हिस्से की धूप', (1976) 'चित्तकोबरा', 'मैं और मैं' (1981) में विवाह के बाहर प्रेम संबंध की तलाश की गई है.

मन्नू भंडारी प्रसिद्ध कथाकार हैं. उन्होंने 'आपका बंटी', 'महाभोज', 'एक इंच मुस्कान', उपन्यास लिखे हैं. ममता कालिया ने 'बेघर', 'नरक दर नरक', 'लड़कियाँ', 'प्रेमकहानी', 'एक पत्नी के नोट्स' उपन्यास लिखे हैं. स्त्री लेखिकाओं ने धर्मसत्ता और पितृसत्ता के सामाजिक वर्चस्व को नकारा है. साथ ही आर्थिक और मानसिक स्वतंत्रता की बात की हैं. अन्य महिला उपन्यासकारों में चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुष्पा, सुधा अरोड़ा, रमणिका गुप्ता आदि का उल्लेख किया जा सकता है.

1.9 इक्कीसवीं सदी के उपन्यास

नारी विमर्श और दलित विमर्श की शुरुआत बीसवीं सदी में ही हो चुकी थी. इक्कीसवीं सदी में इस प्रवृत्ति ने और जोर पकड़ा. साथ- साथ आदिवासी विमर्श और किन्नर विमर्श भी इसी सदी की देन हैं.

1.9.1 स्त्री विमर्श पर केन्द्रित उपन्यास

20वीं सदी में विमर्शों के क्षेत्र में स्त्री विमर्श का क्षेत्र सबसे अधिक व्यापक रहा है. स्त्री विमर्श एक सामाजिक और साहित्यिक आंदोलन है, जिसके केन्द्र में पितृसत्ता, स्त्री अस्मिता, संघर्ष, आत्मबोध, स्वतंत्रता आदि रहे हैं. स्त्री विमर्श का गहरा प्रभाव हिंदी उपन्यास पर पड़ा. प्रेमचन्द के उपन्यासों में स्त्री-चेतना के उदाहरण देखे जा सकते हैं. गोदान की 'धनिया' उत्पीड़न का विद्रोह करने वाली नायिका है. 'गबन' उपन्यास की जालपा और जोहरा, 'निर्मला' उपन्यास की निर्मला में स्त्री चेतना के विचार मिलते हैं. इसी प्रकार जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र', कृष्णा सोबती के उपन्यास 'मित्रो मरजानी', मैत्रेयी पुष्पा के 'चाक' में स्त्री विमर्श के क्रमिक विकास को देखा जा सकता है. समकालीन हिंदी उपन्यासों में स्त्री-मुक्ति चेतना का रचनात्मक अंकन मिलता है. मृदुला गर्ग के उपन्यास 'कठगुलाब', 'चित्तकोबरा', 'मिलजुलमन' स्त्री-मुक्ति चेतना के उत्तम उदाहरण हैं. नारी जीवन के छिपी हुई सच्चाइयों को प्रभा खेतान ने अपने

उपन्यास 'छिन्नमस्ता' में बारीकी से दर्शाया है. स्त्री-मुक्ति के गंभीर प्रश्नों को मैत्रेयी पुष्पा ने अपने उपन्यास 'इदन्नमम', 'अल्मा कबूतरी', 'चाक' आदि के माध्यम से उठाया है.

पुरुष वर्चस्ववाद को तोड़ने का रचनात्मक प्रयास है स्त्री विमर्श आधारित उपन्यास.

1.9.2 हिन्दी दलित उपन्यास

सन् 1980 ई. के आसपास हिन्दी में दलित लेखन की शुरूआत हुई. दलितों के पास अपना भोगा हुआ यथार्थ है. उन्होंने छुआ-छूत के दंश को झेला है. दलित साहित्य आपबीती का साहित्य है. हिन्दी में दलित और गैरदलित रचनाकारों ने भी दलित उपन्यास लिखे हैं. जगदीश चंद्र ने 'धरती धन न अपना', 'नरककुंड में बास', 'जमीन तो अपनी थी' उपन्यास लिखे हैं, जिनमें चमारों की यातनाएँ उजागर हुई हैं. यहाँ अमृतलाल नागर के 'नाच्यों बहुत गोपाल' का नाम भी लिया जा सकता है. जयप्रकाश कर्दम लिखित 'छप्पर' (1991) को किसी दलित द्वारा लिखित हिन्दी का पहला दलित उपन्यास माना जाता है. इस उपन्यास में नायक चंदन के माध्यम से डॉ. अंबेडकर के सूत्र 'शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो' को प्रस्तुत किया है.

अन्य प्रमुख दलित उपन्यासकारों में मोहनदास नैमिशराय हैं. जिन्होंने 'मुक्तिपर्व', 'आज बाजार बंद है', 'वीरांगना झलकारीबाई', 'जख्म हमारे', 'महानायक डॉ. अंबेडकर' उपन्यास लिखे हैं. उनका सर्वाधिक चर्चित उपन्यास 'सूअरदान' है जिसमें पौराणिक मिथकों को तोड़ा गया है. उमराव सिंह जाटव का 'थमेगा नहीं विद्रोह' (2016); सुशीला टाकभौरे के 'नीला आकाश', 'वह लड़की', अजय नावरिया कृत 'उधर के लोग', विपिन बिहारी लिखित 'एक स्वप्नदर्शी की मौत', कावेरी कृत 'मिस रमीया', डॉ. धर्मवीर लिखित 'पहला खत' आदि भी उल्लेखनीय दलित उपन्यास हैं.

1.9.3 आदिवासी जीवन केन्द्रित उपन्यास

दलित विमर्श की तरह आदिवासी विमर्श भी चर्चा के केन्द्र में है. आदिवासी उपन्यासों में आदिवासियों की व्यथा, विस्थापन निरूपित हैं. औद्योगिक विकास के नाम पर आदिवासियों को उनकी ही जमीन से खदेड़ा जा रहा है. आदिवासी जल, जमीन, जंगल के लिए संघर्ष कर रहे हैं. प्रमुख आदिवासी उपन्यासकारों में डॉ. रांगेयराघव (कब तक पुकारूँ), राजेन्द्र अवस्थी (सूरज किरण की छाँव), शानी (साँप और सीढ़ी, जंगल के फूल), संजीव (धार), वीरेन्द्र जैन (पार), मैत्रेयी पुष्पा (अल्मा कबूतरी), हरिराम मीणा (धूणी तपे तीर), तेजेन्द्र गगन (काला पादरी), रणेन्द्र (ग्लोबल गाँव के देवता), भगवानदास मोरवाल (काला पहाड़), श्री प्रकाश मिश्र (रूप तिल्ली की कथा) आदि उल्लेखनीय हैं. आदिवासी उपन्यासों में महुआ माजी का 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' चर्चा में है. रेडियोधर्मी विकिरण के दुष्प्रभावों पर संभवतः यह पहला उपन्यास है. आदिवासियों के लिए वैश्विकरण खतरा बन गया है. आदिवासी अपनी जमीन, जल, जंगल को बचाने के लिए लड़ रहे हैं.

1.9.4 किन्नर विमर्श पर केन्द्रित उपन्यास

आजकल किन्नर विमर्श की रचनाएँ भी खूब चर्चा में हैं. 'किन्नर' शब्द ऐसे समाज के लिए प्रयुक्त होता है, जिसके सदस्य लैंगिक रूप से न तो पुरुष होते हैं और न तो स्त्री. इन्हें किन्नर, हिजड़ा, मौसी, पवैया, महेला, थर्ड जेन्डर आदि नामों से बुलाया जाता है. किन्नर संबंधी प्रसिद्ध उपन्यास हैं – 'मैं पायल' (महेन्द्र भीष्म), 'गुलाम मंडी' (निर्मला भुराड़िया), 'यमदीप' (नीरजा माधव), 'पोस्टबॉक्स नं. 203 नाला सोपारा – (चित्रा मुग्दल) 'जिंदगी 50-50' (भगवंत अनमोल) आदि उल्लेखनीय हैं.

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए.**

(1) 'सूअरदान' उपन्यास के लेखक कौन हैं?

(2) 'ग्लोबल गाँव के देवता' के रचनाकार कौन है?

(3) 'पचपन खंभे लाल दीवारें' किसकी रचना है?

(4) 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' किस विमर्श का उपन्यास है?

(5) आदिवासी उपन्यासों में क्या निरुपित है?

1.10 सारबिंदु

प्रस्तुत इकाई में हिन्दी उपन्यास का स्वरुप और विकास का गहराई से विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है. आधुनिक युग में उपन्यास विधा गद्य की श्रेष्ठ विधा बन गयी है. यहाँ भारतेन्दु काल से लेकर इक्कीसवीं सदी तक के उपन्यासकारों एवं उपन्यासों का उल्लेख किया गया है. मुंशी प्रेमचंद का उपन्यास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है. भारतीय समाज के यथार्थ को उन्होंने अपने उपन्यासों में चित्रित किया. हिन्दी उपन्यास को ऊँचाई पर पहुँचाने में प्रेमचंद का विशेष योगदान रहा है. इसी जमीन पर प्रेमचंद के परवर्ती उपन्यासकारों जैनेन्द्र, यशपाल, भीष्म सहानी, धर्मवीर भारती, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर आदि ने हिंदी उपन्यास संपदा को अधिकाधिक विविधता के साथ समृद्ध किया. इक्कीसवीं सदी के उपन्यास विविध विमर्श से संबंधित हुए.

1.11 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए.

(1) उपन्यास शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किसने किया?

(2) परीक्षा गुरु के लेखक कौन हैं?

(3) प्रेमचंद युगीन उपन्यास कब से कब तक माने जाते हैं?

(4) कृषक समाज का महाकाव्य किस उपन्यास को कहा गया है?

(5) जयशंकर प्रसाद के किन्हीं दो उपन्यासों के नाम बताएँ?

(2) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में लिखिए.

(1) प्रेमचंदोत्तर युगीन उपन्यास की धाराएँ कौन कौन-सी हैं?

(2) मनोवैज्ञानिक उपन्यास किसे कहते हैं?

(3) प्रमुख सामाजिक उपन्यास कौन कौन-से हैं?

(4) आँचलिक उपन्यास से क्या तात्पर्य है?

(3) निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए.

(1) उपन्यास विधा से क्या तात्पर्य है?

(2) सामाजिक उपन्यासों में किन समस्याओं का चित्रण होता है?

(3) द्विवेदी युग के उपन्यासों का उद्देश्य क्या था?

(4) 'गोदान' को कृषक जीवन का महाकाव्य क्यों कहा जाता है?

(5) आँचलिक उपन्यास किसे कहते हैं?

(4) टिप्पणी लिखिए.

(1) उपन्यास लेखन में प्रेमचंद का योगदान

(2) महिला उपन्यासकार

(3) मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार : अज्ञेय

(4) दलित हिंदी उपन्यास

(5) साठोत्तरी हिंदी उपन्यास

1.12 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास - डॉ. बच्चन सिंह
- हिन्दी साहित्य का इतिहास - आ. रामचंद्र शुक्ल
- हिन्दी साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेन्द्र
- साहित्यिक निबंध - डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त
- www.hindisaitya.com/उपन्यास-novel/

इकाई 2 लेखक परिचय एवं उपन्यास की कथावस्तु

रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 लेखक परिचय

2.3.1 जीवन परिचय

2.3.2 कृतित्व परिचय

2.3.3 पुरस्कार और सम्मान

2.4 'त्यागपत्र' उपन्यास की कथावस्तु

2.5 'त्यागपत्र' कथावस्तु की विशेषता

2.6 मुख्य अंशों की व्याख्या

2.7 सारबिंदु

2.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

2.9 उपयोगी पाठ्यसामग्री

2.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- जैनेन्द्र कुमार का जीवन परिचय प्राप्त कर सकेंगे.
- उनके कृतित्व एवं उनको मिलने वाले पुरस्कारों से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.
- प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु का विश्लेषण कर सकेंगे एवं उसकी विशेषताएँ बता सकेंगे.
- लेखक के सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से परिचित हो सकेंगे.
- मृणाल के माध्यम से स्त्री के प्रेम, त्याग और समर्पण जैसे गुणों से अवगत हो सकेंगे.

2.2 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई जैनेन्द्र कुमार कृत 'त्यागपत्र' उपन्यास से संबंधित है. इस इकाई में आप जैनेन्द्र जी के जीवन-परिचय तथा कृतित्व और 'त्यागपत्र' की कथावस्तु का अध्ययन करने जा रहे हैं. 'त्यागपत्र' की रचना सन् 1937 ई. में हुई थी. उस समय भारत में महिला सशक्तिकरण व महिला साक्षरता दर कम थी. ऐसे समय में 'त्यागपत्र' उपन्यास एक स्त्री की आधुनिक विचारधारा से ओत-प्रोत है. इस उपन्यास की नायिका घर की इज्जत बचाते हुए दम नहीं तोड़ती, न ही जीवन से वह हार मानती है. वह आत्महत्या को अधर्म मानती है. मृणाल घर छोड़कर बाहर हाशिए के लोगों के बीच पहुँच जाती है. यहीं उसका व्यक्तित्व नया आयाम पाता है. उसके पास समाज व लोगों को समझने के लिए तार्किक बुद्धि है जो कथित सभ्य समाज के ढोंगों का पर्दाफाश करती है. जिंदगी के आखिरी मुकाम पर वह शराबी, जुआरी, भिखारियों, वेश्याओं जैसे कथित दुर्जनों के बीच रहती है. मृणाल इनके बीच भी इनकी ऊपरी परत खरोंच कर इन्सानियत पा जाती है. मृणाल समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े

लोगों की सच्ची सहृदयता का सम्मान करती है.

प्रस्तुत उपन्यास मनोविश्लेषणात्मक है तथा जैनेन्द्र जी के चिंतन से लैस है. त्यागपत्र में विवाहपूर्व प्रेम, अनमेल विवाह, विवाह का टूटना और पति द्वारा परित्यक्ता नारी की दुःखद जीवन व्यथा का चित्रण किया गया है. लेखक प्रमोद और मृणाल के माध्यम से नए विचार पाठक के सामने रखना चाहते हैं. इस उपन्यास की कथावस्तु समाज के उत्पीड़न की शिकार मृणाल के इर्द गिर्द घूमती है. प्रमोद की व्यथा कथा को भी बखूबी दर्शाया गया है. प्रस्तुत उपन्यास कई भाषाओं में अनूदित है. आइये, इस इकाई में उपन्यास 'त्यागपत्र' की मार्मिक कथावस्तु को पढ़ते हैं. इससे पहले लेखक परिचय प्राप्त करना आपके लिए उपयोगी होगा.

2.3 लेखक परिचय

2.3.1 जीवन परिचय

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक कथाकार, उपन्यासकार व निबंधकार लेखक जैनेन्द्र का जन्म 2 जनवरी, 1905 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ के कौड़ियागंज नामक गाँव में हुआ था. जन्म के दो वर्ष बाद ही पिता की मृत्यु हो जाने से इनकी माँ और मामा ने इनका संरक्षण एवं लालन-पालन किया. उनके जन्म का नाम आनंदीलाल था परंतु ब्रह्मचर्य आश्रम, हस्तिनापुर में प्रवेश लेते समय इनका नाम जैनेन्द्र रखा गया. जैनेन्द्र विदुषी माँ और विद्वान पिता के पुत्र थे. बचपन से प्रखर बुद्धिमान थे. इनके मामा महात्मा भगवानदीन एक बहुत बड़े चिन्तक एवं आध्यात्मिक व्यक्ति थे. जैनेन्द्र पर उनका गहरा प्रभाव पड़ा था.

जैनेन्द्र ने व्यवस्थित एवं लगातार शिक्षा नहीं पाई थी. सन् 1918 ई. में गुरुकुल से अलग होकर मैट्रिक की शिक्षा पंजाब से पाई. उच्च शिक्षा के लिए बनारस विश्वविद्यालय भेजे गये परंतु काँग्रेस के असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर दो वर्षों में शिक्षा अधूरी छोड़कर वे दिल्ली आ गये. सन् 1921 ई. में तिलक स्कूल ऑफ पोलिटिक्स में प्रवेश तो लिया, परंतु कुछ ही दिनों में उसे भी छोड़ दिया. उन दिनों इनका परिचय श्री माखनलाल चतुर्वेदी, श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान और अन्य कई साहित्यकारों से हुआ.

सन् 1927 ई. में मामा के साथ कश्मीर-यात्रा पर गये वहाँ उनका अनुभव बड़ा सुखद रहा. लगभग तब से इन्होंने अपनी लेखनी चलानी शुरू की और सफलता हासिल करते गये. इससे पहले महात्मा गाँधी से प्रेरित होकर असहयोग आंदोलन के कारण लगभग तीन बार जेल भी गये. बाईस-तेईस की अवस्था तक जैनेन्द्र बेरोजगार और दुनियादारी से अनजान रहे.

पहली बार कहानी लेखन के लिए चार रुपये का मनीऑर्डर पाकर वे अत्यंत प्रसन्न हुए. उनकी लेखनी चलती रही. सन् 1929 ई. में पहला उपन्यास 'परख' प्रकाशित हुआ. इस पर अकादमी पुरस्कार के तहत रु. 500/- उन्हें मिले, इससे उन्हें आर्थिक सहायता के साथ-साथ मनोबल भी प्राप्त हुआ.

जैनेन्द्र का बाह्य व्यक्तित्व बिलकुल सादगी लिए हुए था. अंतर में उनके करूणा, निरीहता और सद्भाव भरा हुआ था. उनके व्यक्तित्व पर गाँधी, मार्क्स और फ्रायड का प्रभाव लक्षित होता है. जैन दर्शन के प्रभाव के अंतर्गत आत्मपीड़न और वेदना तत्व का भी प्रकाशन इनके साहित्य में हुआ है.

2.3.2 कृतित्व परिचय

प्रेमचंद की लीक से हटकर नये उभरने वाले इस लेखक ने अपने जीवन के दौरान लगभग दो सौ कहानियाँ लिखी हैं जो 'जैनेन्द्र की कहानियाँ' शीर्षक के अंतर्गत दस भागों में प्रकाशित हैं.

कहानी संग्रह : 'फाँसी' (1929), 'वातायन' (1930), 'नीलम देश की राजकन्या' (1933), 'एक रात' (1934), 'दो चिड़ियाँ' (1935), 'पाजेब' (1942), 'जयसंधि' (1949) तथा 'जैनेन्द्र की कहानियाँ' (दस भाग).

उपन्यास : इनके कुल दस उपन्यास प्रकाशित हैं. 'परख' (1929), 'सुनीता' (1935), 'त्यागपत्र' (1937), 'कल्याणी' (1939), 'विवर्त' (1953), 'सुखदा' (1953), 'व्यतीत' (1953) तथा 'जयवर्धन' (1956), मुक्तिबोध, अनन्तर आदि.

निबंध संग्रह : 'प्रस्तुत प्रश्न' (1936), 'जड़ की बात' (1945), 'पूर्वोदय' (1951), 'साहित्य का श्रेय और प्रेय' (1953), 'मंथन' (1953), 'सोच विचार' (1953), 'काम, प्रेम और परिवार' (1953), तथा 'ये और वे' (1954) . समय और हम, इतस्ततः, परिप्रेक्ष्य राष्ट्र और राज्य आदि.

इस प्रकार जैनेन्द्र का साहित्य सृजन काफी विस्तृत है. इन्होंने कुछ साहित्यिक अनुवाद भी किये हैं.

अनूदित ग्रंथ : 'मंदालिनी' (नाटक-1935), 'प्रेम में भगवान' (कहानी संग्रह-1937), तथा 'पाप और प्रकाश' (नाटक-1953).

सह-लेखन : 'तपोभूमि' (उपन्यास, ऋषभचरण जैन के साथ-1932).

संपादित ग्रंथ : 'साहित्य चयन' (निबंध संग्रह-1951) तथा 'विचारवल्लरी' (निबंध संग्रह-1952).

2.3.3 पुरस्कार और सम्मान

जैनेन्द्र जी को निम्नलिखित पुरस्कार और सम्मान प्राप्त है :-

(1) 1929 में हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार, 'परख' (उपन्यास) के लिए

(2) 1952 में भारत सरकार शिक्षा मंत्रालय पुरस्कार, 'प्रेम में भगवान' (अनुवाद) के लिए

(3) 1966 में साहित्य अकादमी पुरस्कार 'मुक्तिबोध' (लघु उपन्यास) के लिए

(4) 1970 में उत्तर प्रदेश राज्य सरकार पुरस्कार, 'समय और हम' (वैचारिकी) के लिए

(5) 1971 में पद्म भूषण

(6) 1973 में साहित्य वाचस्पति की उपाधि हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा

(7) 1973 में मानद डी. लिट् दिल्ली विश्वविद्यालय से

(8) 1974 में मानद डी. लिट् आगरा विश्वविद्यालय से

(9) 1974 में साहित्य अकादमी फैलोशिप

(10) हस्तीमल डालमिया पुरस्कार (नई दिल्ली)

(11) उत्तर प्रदेश सरकार का शिखर सम्मान 'भारत-भारती'

(12) विद्या वाचस्पति की उपाधि गुरुकुल कांगड़ी द्वारा

(13) साहित्य अकादमी की प्राथमिक सदस्यता

(14) प्रथम राष्ट्रीय यूनेस्को की सदस्यता

(15) भारतीय लेखक परिषद् की अध्यक्षता

(16) दिल्ली प्रादेशिक हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सभापतित्व

जैनेन्द्र जी ने हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में प्रभूत योगदान देकर 83 वर्ष की अवस्था में 24 दिसम्बर 1988 को अपना भौतिक शरीर छोड़ दिया.

जैनेन्द्र प्रथम उपन्यासकार हैं जिन्होंने हिन्दी उपन्यास साहित्य को मन की ओर उन्मुख किया. मनोविश्लेषण उनका प्रधान आधार है. हिन्दी उपन्यास साहित्य में नवीन पथ के अग्रदूत के रूप में जैनेन्द्र का महत्वपूर्ण स्थान है. दर्शन और मनोविज्ञान का संगम जैनेन्द्र के उपन्यासों में देखने को मिलता है. जैनधर्म से सम्बन्ध होने के कारण वे जैनधर्मियों की आत्मपीड़ा का सिद्धांत अपनाते हैं. अहम् की व्यर्थता दिखाने के लिए उन्होंने आत्मव्यथा का सहारा लिया है. उनकी दृष्टि में "जो शास्त्र से नहीं मिलता वह आत्मज्ञान, आत्मव्यथा से मिल जाता है."

2.4 'त्यागपत्र' उपन्यास की कथावस्तु

'त्यागपत्र' जैनेन्द्र का तीसरा उपन्यास है जो सन् 1937 ई. में प्रकाशित हुआ. यह एक बहुचर्चित और महत्वपूर्ण उपन्यास रहा है. इसे हम उपन्यास के रूप में जीवनी भी कह सकते हैं, यह एक लघु उपन्यास है, इसकी कथा आठ अध्यायों में बाँटी गयी है. कहानी के मुख्य पात्र दो हैं. एक तो है चीफ जज जो जजी त्याग कर हरिद्वार में विरक्त जीवन बिता रहे थे. उनके स्वर्गवास का समाचार पत्रों में छपा था और उसके पीछे कागज़ों में उनके हस्ताक्षर के साथ एक पाण्डुलिपि पायी गई जिसका संक्षिप्त सार इतस्ततः पत्रों में छप चुका था. जज का मूल लेख अंग्रेजी में है - यह उपन्यास हिन्दी में है.

उपन्यास का नायक प्रमोद है, जो जज की कुर्सी पर बैठा है परंतु पाप-पुण्य की समीक्षा करने में वह असमर्थ है क्योंकि उसकी बुआ मृणाल जो कि प्रमोद से चार-पाँच साल ही बड़ी थी, उसके मरने की खबर पाकर वह बेचैन हो जाता है, उसके रोंगटे खड़े हो जाते हैं.

बचपन के साथी के रूप में प्रमोद अपनी बुआ मृणाल की कथा अपने शब्दों में लिखता है. यह उपन्यास प्रथम पुरुष में लिखा गया है. नायक प्रमोद है जो आगे चलकर न्यायाधीश के पद पर बैठता है. बुआ से बिछड़ कर वह चैन नहीं पाता और आखिर अपनी बुआ की कथा लिखते लिखते अंत में वह लिखता है, आज जो असली तराजू है उसमें मैं हलका तुल रहा हूँ... यह सब मैल है जो मैंने बटोरा है. मैल है, जो कि मेरी आत्मा की ज्योति को ढँक रहा है. मैं यह सब नहीं चाहता हूँ...

अंत में वह अपनी जजी छोड़ देता है - "इसी के साथ सही करता हूँ कि जजी से अपना त्यागपत्र मैंने दाखिल कर दिया है." इस प्रकार उपन्यास का प्रारंभ और अंत प्रमोद से होता है.

'त्यागपत्र' में मृणाल नामक एक संभ्रान्त परिवार की नारी की गाथा है. माता-पिता बचपन में ही मर गए थे. बड़ा भाई और भावज (प्रमोद के पिता और माता) उसके अभिभावक हैं, जिनके साथ वह रहती है. बचपन में उसे अपनी भावज से बड़ा कड़ा संरक्षण मिला था. मृणाल के लिए प्रमोद यहाँ 'बुआ' शब्द का ही प्रयोग करता है क्योंकि मृणाल प्रमोद से कोई चार पाँच साल बड़ी होगी. मृणाल के भाई उसे बहुत प्यार करते हैं. उसकी सभी इच्छाएँ वे पूरी करते हैं. किन्तु भावज अपने अनुशासन में सावधान हैं. आर्य गृहिणी का जो उनके मन में आदर्श था वे ठीक उसी के अनुरूप मृणाल को ढालना चाहती हैं. प्रमोद और बुआ की बहुत बनती है. वह तितली की तरह उड़ती फिरती है, नटखट है, स्कूल में उधम मचाती है और घर आकर वहाँ की नई शरारतें अकेले में प्रमोद को सुनाती है.

बुआ धीमे धीमे बुद्धिमती होती जाती है, वह अपनी सखी शीला के भाई के साथ प्रेम करती है, जब भाभी को पता चलता है तो वह उसे बेंत से पीटती है. तब से मृणाल

कभी हँसी ही नहीं थी. मृणाल का आरंभिक आचरण बहुत स्वाभाविक था. उसमें स्कूल की एक लड़की का खुलापन था, चहक थी, शीला के भाई के साथ प्रेम सम्बन्ध होने पर उसके मन की महक भी बड़ी सहज थी, वह एक चिड़िया बन कर उड़ जाना चाहती थी. उसका स्वाभिमान भी बड़ा आकर्षक था. भाभी के हाथों से बेंत से बुरी तरह पिटने पर भी रोती नहीं है. गुमसुम पड़ी रहती है. मृणाल की भाभी अचानक मृणाल का रिश्ता तय कर देती है. उसकी शादी एक अधेड़ वय के विधुर के साथ कर दी जाती है, जहाँ उसकी इच्छा बिलकुल नहीं थी. शादी के बाद बुआ के खत आते, पर उसमें खास कुछ समाचार नहीं होते थे.

शादी के आठ-दस महीने के बाद बिना कुछ खबर दिये बुआ एक नौकर को साथ लेकर घर चली आती हैं, भाई इस बात से अप्रसन्न होते हैं. प्रमोद के लिए पुराने दिन लौट आते हैं किन्तु बुआ में बहुत परिवर्तन नज़र आ रहा था. उनकी तबियत ठीक नहीं थी, उनकी शारीरिक अवस्था भी ठीक नहीं थी. सारी देह पीली पड़ी थी और वह गर्भवती थी. भतीजे प्रमोद के साथ अपनापन होने के कारण बुआ उसे बताती है - “बेंत खाना मुझे अच्छा नहीं लगता.” फूफा उसे बेंत से मारते थे क्योंकि वह खराब थी. तीन महीने बुआ अपने मायके में रही फिर अंत में उसे फूफा के साथ जाने को तैयार होना पड़ा. उसकी सोच के अनुसार कन्या जाति अपने पिता के घर के लिए नहीं होती. और फिर उसके तो पिता भी जीवित नहीं थे. प्रमोद भी बुआ की बातें सुन सुन कर बड़ा होने लगा था और समझदार भी. बुआ से काफी लम्बे समय तक प्रमोद का मिलना न हुआ. कुछ काल बाद पता चला कि बुआ ने एक मृत कन्या को जन्म दिया. बुआ के समाचार उसे कोई नहीं बताता.

बहुत दिनों के बाद प्रमोद को पता चलता है कि पति ने बुआ को त्याग दिया है, बुआ दुश्चरित्र है और फूफा को मालूम है कि वह सदा से ऐसी ही है. उसे एक कोठरी में रख दिया है, उसमें चाहे जैसे रहे. मायके जाने के लिए बुआ तैयार नहीं थी. बुआ को तलाशने के चक्कर में प्रमोद को यह भी पता चला कि अब बुआ उस जगह नहीं है. वहाँ से वह अमुक नगर चली आई है. कोयले की दुकानवाला एक बनिया साथ है. इसी दौरान प्रमोद के पिताजी का देहांत हो जाता है. प्रमोद बुआ को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उस मुहल्ले में पहुँच जाता है, जहाँ बुआ रहती थी. बुआ एक धोती में बैठी अंगीठी पर कोयले की आँच में रोटी सेंक रही थी. देह दुबली थी, मुख पीला था, वह गर्भवती थी. बुआ के साथ बातचीत करके प्रमोद लौटते समय बुआ से कहता है - “यह जगह मुझे बुरी मालूम होती है. तुम इस जगह कब तक रहोगी?” बुआ का उत्तर है - “इस कोठरी में मैं न रहूँगी, कोई और रहेगा, ये कोठरियाँ तो आबाद ही रहेंगी, इनमें रहने लायक आदमी बहुत हैं.”

बुआ जानती थी कि जिस कोयले वाले के साथ वह रहती है, वह उसे ज्यादा दिन नहीं रख सकेगा, तब इस कोठरी से उसके उठने का भी दिन होगा. बुआ प्रमोद से वादा करते हुए कहती है - “वेश्यावृत्ति नहीं करने लगूँगी, इसका विश्वास रखो.”

बुआ के अनुसार उस कोयले वाले ने उसके लिए सब कुछ त्यागा है, उसकी करुणा पर ही वह बची है. वह मर सकती थी लेकिन नहीं मरी. मरने को अधर्म समझकर ही वह बच गई. वह उसे नहीं छोड़ सकती वह पापिनी हो सकती है पर बेहया नहीं.

बुआ कहती है - “जिसको तन दिया, उससे पैसा कैसे लिया जा सकता है?” बुआ स्त्री धर्म को पतिव्रत धर्म ही मानती थी. इसी कारण वह अपने पति से छल नहीं कर सकती थी. शीला के भाई के साथ प्रेम के किस्से की बात बुआ ने अपने पति से कह दी थी और तब से मृणाल अपने पति की आँखों में काँटा बन गई थी. ससुराल छोड़कर मायके नहीं जा सकती थी. स्त्री जब तक ससुराल की है, तभी तक मायके की है. ससुराल से टूटी तब मायके से तो आप ही टूट गई.

प्रमोद चुपचाप कोयले वाले की कोठरी में बुआ की कहानी सुन रहा था. बुआ के गर्भवती होने के बाद उस आदमी को बुआ से विरक्ति हो रही थी और उसे अपने परिवार की याद आ रही थी. अब वह मृणाल से दूर जाना चाहता था. पर बुआ? बुआ के पेट में उसका बालक था फिर भी वह स्वार्थी नहीं थी, उसका मोह उससे टूट गया था. फिर भी मृणाल सोचती है - "जब तक पास है, तब तक वह पुरुष अन्य नहीं है. मेरा सब कुछ उसका है. उसकी सेवा में त्रुटि नहीं कर सकती. पतिव्रत धर्म तो यही कहता है..."

मृणाल की ऐसी अनोखी कहानी सुनकर प्रमोद कुछ समझ नहीं पा रहा था किन्तु कुछ जरूरत हो तो लिखना कह कर प्रमोद उस कोठरी से चल देता है.

रह रह कर लम्बे अरसे तक प्रमोद बुआ को नहीं भूला पाता. वह फिर एक बार बुआ को ढूँढ़ने उसी नगर पहुँच जाता है पर वहाँ कोयले की दुकान भी नहीं मिलती और पता चला कि वह आदमी अपनी औरत को पीट-पाट कर छोड़कर भाग गया है. किसी के द्वारा पता चला कि मर्द के जाने के बाद भी वह औरत एक-डेढ़ महीना तो वहाँ ही रही. कपड़े सीती थी और काम चलाती थी. बड़ी भली औरत थी दु:ख दर्द में ढाड़स बँधाती थी, बच्चों को घर बिठा कर पढ़ाया करती थी और सब के छोटे-मोटे काम को तैयार रहती थी, पर फिर कहाँ गई यह नहीं पता.

अस्पताल में जाकर प्रमोद द्वारा छानबीन करने पर पता चला कि अस्पताल में पाँच महीने हुए मृणाल नाम की स्त्री आई थी. उसके वहाँ एक लड़की हुई. होने के चौथे रोज उस लड़की के माता निकली. वह जनरल वार्ड में थी - पंद्रह दिन में लड़की की चेचक ठीक हो गई होगी क्योंकि उसी रोज से माँ-बेटी का नाम रजिस्टर में नहीं है.

छानबीन करने पर प्रमोद का विश्वास पक्का हो गया कि वह बुआ ही होगी. वहाँ के डॉक्टर के अनुसार वह कुछ काम भी मांगती थी. नर्स बनने को तैयार थी, अंग्रेजी भी जानती थी, अच्छी लड़की थी. पर बच्ची मिशन को देने की और ईसा मसीह को मानने की बात उसे स्वीकार्य नहीं थी. वह एक हिन्दू स्त्री थी.

संयोग से प्रमोद के रिश्ते की बात चलने पर डॉक्टर साहब के घर पर ही प्रमोद की बुआ से भेंट हो गई. बुआ उस समय डॉक्टर के घर छोटे छोटे बच्चे-बच्चियों को पढ़ा रही थीं. बच्चे उनसे खुश थे. वह स्कूल में भी पढ़ाती थीं. डॉक्टर की बेटी राजनन्दिनी को देखने प्रमोद आया था लेकिन बुआ को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वह स्कूल के पास ही क्वार्टर में भी पहुँच गया जहाँ वह रहती थी. पता चला कि मुन्नी दस महीने की हो कर मर गई. इस करुण कथा को दिल में दबाए प्रमोद डॉक्टर साहब से छल नहीं करना चाहता था. रिश्ता तय होने पर, टीका होने पर प्रमोद ने चुनौती के साथ कहा कि मास्टरनी मेरी बुआ है. डॉक्टर साहब ने भी इस हकीकत को सहर्ष स्वीकार लिया. पर राजनन्दिनी की माँ और बिरादरी को उसमें आपत्ति थी. रिश्ता टूट गया. बुआ को भी उस नौकरी पर नहीं रहने दिया गया, ट्यूशन तो छूट ही गई. बुआ वह जगह भी छोड़ गई.

अंतिम बार जब प्रमोद बुआ से मिला, तब वह वकील था. उनकी हालत दर्दनाक थी. वह बीमार थीं और एक कोठरी में पड़ी थीं. इस बार बुआ ने स्वयं प्रमोद को पत्र लिखा था. प्रमोद की माँ का देहांत हो चुका था. बुआ अब समाज की जूठन के बीच रहती थी, दुर्जनता ही मानो वहाँ की कीमत थी. ऐसी जगह वह प्रमोद को नहीं बुलाना चाहती थी. पर प्रमोद से न रहा गया और वह वहाँ पहुँच जाता है. वह बुआ को लेने गया था. पर बहुत बहस के बाद भी प्रमोद बुआ को नहीं ला सका. वह चला आया, फिर नहीं गया. आकर वकालत में ऐसा चिपट गया कि किसी बात के लिए आँखें खुली न रहें, कुछ भी

और न देखें. अपनी इस करनी का प्रायश्चित करते हुए प्रमोद को सत्रह बरसों के बाद अपने आप पर धिक्कार की भावना आती है. अंतिम प्रकरण में वह स्वयं कबूल करता है - "आज जो असली तराजू है उसमें हलका तुल रहा हूँ. यह सब मैल है जो मैंने बटोरा है, मैल कि मेरी आत्मा की ज्योति को ढँक रहा है. मैं यह सब नहीं चाहता हूँ."

अचानक उसकी आत्मा उसे कचोटने लगती है कि वह किस अमानुषिकता के साथ सत्रह वर्ष बुआ को बिना देखे काट गया?... और अब खबर आती है कि बुआ मर गई. बुआ को याद करते हुए वह स्वीकार करता है - "बुआ तुम गई. तुम्हारे जीते जी मैं राह पर न आया. अब सुनो, मैं यह जजी छोड़ता हूँ. जगत का आरम्भ-समारम्भ छोड़ दूँगा. अपने लिए तो उतनी ही स्वत्वता से रहूँगा, जितना अनिवार्य होगा- यह वचन देता हूँ." इसी के साथ वह अपनी कही करता है कि जजी से अपना त्यागपत्र मैंने दाखिल कर दिया है. यही उपन्यास का अंत है - बुआ की मृत्यु और प्रमोद का त्यागपत्र.

'त्यागपत्र' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है. डॉ. देवराज उपाध्याय के अनुसार 'त्यागपत्र' एक ट्रेजेडी है - वज्र हृदय को भी हिला देने वाली ट्रेजेडी. ट्रेजेडी उसके अनाथ होने में नहीं, उसके जीवन में रोटियों के लाले पड़ने में नहीं, उसके तिल-तिल कर मरने में नहीं, बल्कि पति के प्रति समर्पित होकर जीवन व्यतीत करने के कारण पति की उपेक्षिता होकर नाटकीय जीवन को स्वीकार कर लेने पर बाध्य होने में है. परिस्थितियों के नीचे दबकर कब्र में चला जाना तो कुछ नहीं, पर परिस्थिति के चक्कर में पड़ कर एक सती-साध्वी स्त्री का अपवित्र वेश्या जीवन की भयंकर यंत्रणा को स्वीकार करने के लिए बाध्य होना- यह आत्मा की ट्रेजेडी है.

2.5 'त्यागपत्र' कथावस्तु की विशेषता

हम जान चुके हैं कि त्यागपत्र एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है. मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में कथावस्तु का उतना महत्व नहीं है जितना अचेतन मन के संदर्भ का. कथासूत्र को घटनाओं से जोड़कर समझा जा सकता है किन्तु पात्रों - मृणाल और प्रमोद का मानसिक अंतर्द्वंद्व इस कथा में अधिक है. मनोवैज्ञानिक उपन्यास में व्यक्ति की मानसिक स्थिति का यथार्थ चित्र अंकित होता है. इसमें सामाजिक पक्ष अत्यंत गौण होता है. नायक प्रमोद की मानसिकता से बुआ को याद करते हुए उपन्यास का प्रारंभ होता है और उपन्यास का अंत भी. बीच में मृणाल के चरित्र को, उसकी कथा को, उसकी अंतःस्थिति और संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है. 'त्यागपत्र' में सिलसिलेवार कथा कहने की प्रवृत्ति से लेखक का नाता टूट चुका है. कथा को वह गौण समझने लगा है. कुल मिलाकर 'त्यागपत्र' की कथावस्तु की विशेषताएँ संक्षेप में निम्न प्रकार से बताई जा सकती है :-

(1) उपन्यास में कथा कौतुक की प्रवृत्ति नहीं है.

(2) पात्रों की अंतःचेतना के चित्रण के मुकाबले कथा गौण वस्तु बन गई है.

(3) जीवन के प्रति सच्चे दृष्टिकोण की प्रधानता मिलती है.

(4) पात्रों की प्रवृत्ति आत्मोन्मुख हो उठी है.

'त्यागपत्र' उपन्यास में दो विपरीत विचारधाराओं का सजीव चित्रण हुआ है. मृणाल बीसवीं सदी की एक जागृत महिला है. वह मनस्विनी नायिका है. वह दूसरों की आँखों से नहीं बल्कि स्वयं अपनी आँखों से अपने निर्मित पथ को देखती है और स्वयं अपने ही पैरों से चलकर, बिना बैसाखी लगाए, उसे तय करती है. वह आत्मपीड़न से गुजरती है और समाज को तोड़ने फोड़ने की जगह वह खुद ही टूटना चाहती है.

प्रमोद मृणाल से भिन्न विचारधारा वाला है. वह सभ्यता संस्कृति की बनी बनाई दुनिया की व्यवस्था में विश्वास करने वाला व्यक्ति है. जीवन की ओर देखने के लिए उसके पास एक मापदण्ड है, जिसके सहारे वह हर एक चीज की कीमत पहचानता है. उसके जीवन में स्थिरता है, उसके सारे आदर्श स्थिर हैं. परंतु अंत में तो प्रमोद भी बुआ मृणाल की विचारधारा को प्रणाम करता है और अपने जीवन पथ को नया मोड़ देना चाहता है.

कथावस्तु को जज साहब की डायरी से ज्यों का त्यों उद्धृत बताकर इस कथा को अधिक यथार्थवादी बनाने का प्रयत्न किया गया है. डॉ. देवराज उपाध्याय ने 'त्यागपत्र' को हिन्दी उपन्यासों के इतिहास में एक सीमा-चिह्न कहा है. मतलब कि प्रत्येक दृष्टि से चाहे उपन्यास की मौलिक प्रेरणा में, चाहे उसकी अभिव्यक्ति के ढंग में, जैनेन्द्र एक नूतन दिशा की ओर अग्रसर होते हैं.

2.6 मुख्य अंशों की व्याख्या

"इस कोठरी में मैं न रहूँगी, कोई और रहेगा, ये कोठरियाँ तो आबाद ही रहेंगी, इनमें रहने लायक आदमी बहुत हैं.

संदर्भ : प्रस्तुत अंश जैनेन्द्र कुमार के मनोविश्लेषणात्मक उपन्यास 'त्यागपत्र' से लिया गया है. जब प्रमोद मृणाल को पूछता है कि 'वह कब तक इस कोठरी में रहेगी?' तब मृणाल उत्तर देते हुए प्रस्तुत कथन प्रमोद से कहती है.

व्याख्या : प्रमोद जब मृणाल को खोजता हुआ उसके पास पहुँच जाता है तब मृणाल कहती है कि, उसका विवाह टूटने के बाद उसके दुःख भरे जीवन पर पहली बार किसी ने तरस खाया था, वह था कोयलेवाला, जो उसे भगा कर ले जाता है. अलग कोठरी में मृणाल उसके साथ रहती है. जिसे वह छोड़ना नहीं चाहती थी. किन्तु जानती थी कि एक दिन कोयलेवाला उसे छोड़कर चला जाएगा. जब प्रमोद पूछता है कि, 'आख़िर कब तक वह यहाँ रहेगी?' उसे प्रमोद के साथ घर लौट चलना चाहिए. तब वह उसके साथ चलने से यह कह कर मना कर देती है कि स्त्री धर्म ही पतिव्रत धर्म है. मृणाल उसे आत्मसमर्पण करती है उसकी सेवा करना चाहती है. जिसने आश्रय दिया उसे वह छोड़ना नहीं चाहती. वह कोठरी ही अब उसके लिए सब कुछ है.

विशेष :

- प्रस्तुत कथन में मृणाल का समर्पण भाव दिखाई पड़ता है.
- मृणाल अपनी आंतरिक गरिमा व स्वाभिमान से समझौता नहीं करती.
- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित गद्यांशों की व्याख्या कीजिए.**

(1) 'मेरा मन पक्का होता रहे कि कोई मुझे कुचले, तो भी मैं कुचली न जाऊँ और इतनी जीवित रहूँ कि उसके पाप के बोझ भी ले लूँ और सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करूँ.'

(2) 'तुम सब लोगों के लिए मैं पराई हूँ. तेरी माँ ने मुझे धक्का देकर पराया बना दिया है. पर मुझे जहाँ भेज दिया है प्रमोद मेरा मन वहाँ का नहीं है.'

(3) 'आज जो असली तराजू है उसमें मैं हलका तुल रहा हूँ... यह सब मैल है जो मैंने बटोरा है. मैल मेरी आत्मा की ज्योति को ढँक रहा है. मैं यह सब नहीं चाहता हूँ'...

2.7 सारबिंदु

- जैनेन्द्र कुमार विरचित 'त्यागपत्र' प्रथम पुरुष में लिखा गया उच्चकोटि का 98 पृष्ठों का एक लघु उपन्यास है.
- प्रस्तुत उपन्यास आत्मकथन शैली में लिखा गया है.
- इस उपन्यास में हम मृणाल के माध्यम से एक स्त्री के कई रूप देख सकते हैं. वह एक परित्यक्ता, पर-भोग्या और करुणामयी आधुनिक स्त्री है.
- लेखक ने मृणाल की स्थिति के माध्यम से विवाह पूर्व प्रेम और बेमेल विवाह संबंधित प्रश्नों को उठाया है.
- इस उपन्यास की कथा नायिका मृणाल के आजीवन आत्मपीड़न पर आधारित है. उसका जीवन पीड़ा, घुटन, प्रताड़ना, त्याग, समर्पण, करुणा और उत्सर्ग से भरा है.
- प्रस्तुत उपन्यास की कथा दुखांत है. जो हमारी आत्मा और हृदय को कचोट कर रख देती है.
- मृणाल जैसा स्त्री चरित्र तथा कथित सभ्य समाज की 'सभ्यता' पर सवालिया निशान लगाता है, समाज के भीतर दोहरा स्वरुप लेकर विचरण करते लोगों को बेनक़ाब करता है.
- जैनेन्द्र जी का यह उपन्यास बुद्धिजीवी वर्ग को सामाजिक नियम-कानून, नैतिकता, आदर्श की परिभाषाओं पर पुनर्विचार करने हेतु विवश करता है.
- जैनेन्द्र जी ने मनोविश्लेषण के माध्यम से कथावस्तु में नवीनता प्रदान करने का सफल प्रयास किया है.

2.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

(अ) एक वाक्य में उत्तर लिखिए.

(1) 'त्यागपत्र' उपन्यास का प्रकाशन कब हुआ?

(2) 'त्यागपत्र' की कथा कितने अध्यायों में बाँटी गई है?

(3) बुआ प्रमोद से कितने साल बड़ी थी?

(4) बुआ का मूल नाम क्या है?

(5) मृणाल किससे प्रेम करती है?

(6) मृणाल की शादी किससे तय की जाती है?

(7) पति द्वारा त्यागने के बाद बुआ प्रमोद को कहाँ मिली?

(8) प्रमोद ने बुआ को बिना देखे कितने वर्ष काटे?

(ब) लघु उत्तरीय प्रश्न.

(1) पति ने बुआ को क्यों त्याग दिया?

(2) मृणाल कोयलेवाले के साथ क्यों रहने लगती है?

(3) अंतिम बार बुआ से मिलने के बाद प्रमोद ने क्या किया?

(4) 'त्यागपत्र' के मुख्य पात्रों के नाम बताइए.

(5) प्रमोद का रिश्ता राजनंदिनी से क्यों टूट गया?

(स) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए.

(1) 'त्यागपत्र' एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है - स्पष्ट कीजिए.

(2) 'त्यागपत्र' की संक्षिप्त कथावस्तु लिखिए.

(3) सिद्ध कीजिए कि 'त्यागपत्र' में दो विपरीत विचारधाराओं का सजीव चित्रण हुआ है.

(4) मृणाल बीसवीं सदी की एक जागृत महिला है - स्पष्ट कीजिए.

(5) प्रमोद अंत में जजी से क्यों त्यागपत्र दे देता है? - सविस्तार समझाइए.

(द) टिप्पणी लिखिए.

(1) बुआ का स्त्री धर्म

(2) 'त्यागपत्र' शीर्षक

(3) 'त्यागपत्र' का अंत

(4) जैनेन्द्र की उपन्यास कला

2.9 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- जैनेंद्र- साहित्य और समीक्षा- रामरतन भटनागर
- हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास - डॉ. मफ़त पटेल
- 'त्यागपत्र' (उपन्यास)- जैनेन्द्र कुमार प्रकाशन- भारतीय ज्ञानपीठ, लोधी रोड, नई दिल्ली-10003
- जैनेन्द्र के उपन्यासों के पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - बलराजसिंह राणा
- https://bharatdiscovery.org/india/जैनेन्द्र कुमार
- https://www.hindisamay.com/content/3850/1/प्रीति-चौधरी-आलोचना-जैनेंद्र-की-रचनात्मक-दुनिया-में-स्त्री

इकाई 3 'त्यागपत्र' : पात्र एवं चरित्र चित्रण

रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 जैनेन्द्र के उपन्यासों में पात्रों का चयन

3.4 'त्यागपत्र' उपन्यास में चरित्र चित्रण की तकनीक

3.5 'त्यागपत्र' उपन्यास के मुख्य चरित्र
   3.5.1 मृणाल
   3.5.2 प्रमोद

3.6 'त्यागपत्र' उपन्यास के गौण चरित्र

3.7 सारबिंदु

3.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

3.9 उपयोगी पाठ्यसामग्री

3.1 उद्देश्य

'त्यागपत्र'- जैनेन्द्र की यह तीसरी इकाई है. आपने इससे पहले की इकाई 'लेखक परिचय एवं उपन्यास की कथावस्तु' में लेखक जैनेन्द्र कुमार का परिचय और 'त्यागपत्र' उपन्यास की कथावस्तु के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त की है. इस इकाई में हम 'त्यागपत्र' उपन्यास के पात्रों और उनके चरित्र चित्रण के विभिन्न पहलुओं की चर्चा करेंगे. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- उपन्यास विधा में पात्रों के महत्व को समझ सकेंगे.
- 'त्यागपत्र' उपन्यास के मुख्य और गौण पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ बता सकेंगे.
- मुख्य पात्र मृणाल (बुआ) और प्रमोद की चारित्रिक विशेषताओं की समीक्षा कर सकेंगे.
- नारी की पीड़ा और संघर्ष से अवगत होंगे.
- उपन्यास में निहित पात्रों के अंतर्द्वन्द्व से अवगत होंगे.

3.2 प्रस्तावना

पात्र एवं चरित्र चित्रण उपन्यास का महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है. पात्रों के बिना कोई कथानक नहीं चल सकता. उपन्यास मानव चरित्र का चित्र होता है अतः पात्रों के माध्यम से उपन्यासकार जीवन के भिन्न भिन्न रूपों को चित्रित करता है. उपन्यास में पात्रों की सजीवता और स्वाभाविकता सदा अपेक्षित है. पाठकों को उनके संसर्ग में आते समय यह विश्वास बना रहना चाहिए कि वे सत्य हैं, कपोल-कल्पित नहीं. पात्र के अभाव में न तो उपन्यास की कथा का निर्माण संभव है, न संवादों की योजना की जा सकती है, न किसी समस्या को उठाया जा सकता है, न ही उपन्यास के उद्देश्य की सिद्धि हो सकती है. इसीलिए उपन्यास सम्राट प्रेमचंद पात्रों को अधिक महत्व देते हुए उपन्यास को 'मानव चरित्र का चित्र मात्र' मानते हैं. उपन्यास में चरित्र-चित्रण इस ढंग से किया जाए कि पात्र जीते-जागते लोगों की तरह स्वाभाविक रूप में जीवन यात्रा करते हुए प्रतीत हों और पाठक उनके सुख-दुःख के

साथी बन कर ऐसा अनुभव करे कि वह जीवित लोगों के संसार में जा पहुँचा है. आदर्श उपन्यास के पात्रों में सजीवता अथवा सशक्तता के गुण विद्यमान होते हैं, जो कि पाठक के हृदय पर गहरा प्रभाव डालते हैं. इन सभी गुणों को जैनेन्द्र जी के उपन्यासों में देखा जा सकता है.

प्रस्तुत उपन्यास में मृणाल (बुआ) और प्रमोद के चरित्र केन्द्र में है. गौण पात्रों में शीला का भाई, प्रमोद के फूफा, प्रमोद के माता-पिता, कोयलेवाला, डॉक्टर मेम, डॉक्टर साहब, राजनन्दिनी, राजनन्दिनी की माँ इत्यादि शामिल हैं. आइये, इस इकाई के माध्यम से हम जैनेन्द्र के इन पात्रों और उनके चरित्र चित्रण की विशेषता को समझते हैं.

3.3 जैनेन्द्र के उपन्यासों में पात्रों का चयन

हिन्दी साहित्य में जैनेन्द्रकुमार को मनोवैज्ञानिक रचनाकार के रूप में स्थान प्राप्त है. जैनेन्द्र पहले ऐसे लेखक हैं, जिन्होंने हिन्दी गद्य को मनोवैज्ञानिक गहराइयों से जोड़ा है. जिस समय प्रेमचन्द सामाजिक पृष्ठभूमि पर साहित्य सृजन करके जनता को जीवन की सच्चाइयों से जोड़ रहे थे, उस समय इस नयी लहर के मध्य एक बिल्कुल नयी धारा प्रारम्भ करना सरल कार्य नहीं था. बहुत से आलोचकों ने जैनेन्द्र के साहित्य के व्यक्तिनिष्ठ वातावरण और स्वतंत्र मानसिकता वाली नायिकाओं की आलोचना की थी. ऐसी परिस्थिति में विचलित हुए बिना जैनैन्द्र ने हिन्दी साहित्य को नयी राह दिखाई.

जैनेन्द्र के लेखकीय सरोकार के केन्द्र में स्त्री है. उनके साहित्य में स्त्री का जीवन, उसका अस्तित्व, परिवार, उसकी इच्छापूर्ति, समाज में उसकी भूमिका तथा उत्थान के मार्ग में आने वाली समस्याओं का चित्रण मिलता है. जैनेन्द्र का साहित्य स्त्री समस्याओं एवं प्रश्नों से लगातार जूझता रहता है.

जैनेंद्र के उपन्यासों में पात्रों के अंतर्द्वंद्व को विशेष स्थान दिया गया है. उनके उपन्यासों में पात्रों के चरित्र की विशेषताओं को विस्तार दिया गया है परिणामस्वरूप पात्र वास्तविक लगते हैं. जैनेन्द्र की पात्र योजना के विषय में एक आलोचक ने लिखा है - "जैनेन्द्र के उपन्यास में पात्र बाहुल्य नहीं है. थोड़े से चरित्रों को लेकर वे चले हैं. मुख्य चरित्र तीन-चार से अधिक नहीं हैं. शेष पदपूर्ति के लिए हैं. फलस्वरूप यहाँ प्रेमचन्द के उपन्यासों जैसी भीड़ नहीं हैं. पूरक चरित्रों का तो पूरा परिचय भी हमें नहीं मिलता." (डॉ. रामरत्न भटनागर - 'जैनेन्द्र साहित्य और समीक्षा')

उन्होंने अपने उपन्यासों में पात्रों के चरित्र चित्रण में विश्लेषणात्मक शिल्प विधि का अधिक प्रयोग किया है. वह पात्र को विशेष परिस्थिति में उभारते हैं और उनकी व्याख्या करने की बजाय विश्लेषण करते हैं.

जैनेन्द्र के पात्र बने-बनाये सामाजिक नियमों को स्वीकार कर उनमें अपना जीवन बिताने की चेष्टा नहीं करते बल्कि नियमों को चुनौती भी देते हैं. इस संदर्भ में गोपाल राय ने लिखा है - "उनके उपन्यासों की कहानी अधिकतर एक परिवार की कहानी होती है और वे 'शहर की गली और कोठरी की सभ्यता में ही सिमट कर व्यक्त पात्र की मानसिक गहराइयों में प्रवेश करने की कोशिश करते हैं." (गोपाल राय, हिन्दी साहित्य का इतिहास)

वर्तमान समय में स्त्री विमर्श जिस दिशा में गतिमान है उसके आरम्भिक कदम जैनेन्द्र जैसे रचनाकारों के साहित्य की देन है और स्त्री विमर्श की नींव है. जैनेन्द्र की कलम स्त्रियों के तत्कालीन प्रश्नों को शिद्दत से प्रस्तुत करती है.

इस प्रकार अपने उपन्यासों के पात्रों का चयन करने में जैनेन्द्र ने प्रेमचन्द की परंपरा का अनुसरण न करके अपना मौलिक रास्ता चुना है. जैनेन्द्र ने अपने पात्रों को मनुष्य के रूप में देखा जिसमें सद और असद दोनों ही प्रवृत्तियाँ रहती हैं. उन्होंने अपने उपन्यासों में कम से कम पात्रों के साथ कथा को प्रस्तुत किया है.

- **बोध प्रश्न**
- **सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए.**

(1) जैनेन्द्र .... रचनाकार के रूप में प्रसिद्ध है.

(आँचलिक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक)

(2) जैनेन्द्र का साहित्य .... समस्याओं एवं प्रश्नों से लगातार जूझता रहा है.

(स्त्री, पुरुष, बाल)

(3) जैनेन्द्र के उपन्यासों में पात्रों के .... को विशेष स्थान दिया गया है.

(अंतर्द्वन्द्व, रूप-रंग, बाह्य/द्वंद्व)

(4) जैनेन्द्र ने पात्रों के चरित्र चित्रण में .... विधि का अधिक प्रयोग किया है.

(विश्लेषणात्मक, नाटकीय)

(5) जैनेन्द्र .... पात्रों द्वारा कथा प्रस्तुत करते हैं.

(अधिक, कम से कम)

3.4 'त्यागपत्र' उपन्यास में चरित्र-चित्रण की तकनीक

'त्यागपत्र' उपन्यास में जैनेन्द्र ने चरित्र-चित्रण के लिए अनेक तरह की तकनीकों का प्रयोग किया है. पात्रों के चरित्र-चित्रण में मुख्यतः वे विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग करते हैं. पात्रों को विशेष परिस्थिति में उभारते हैं और उनकी व्याख्या करने की बजाय विश्लेषण करते हैं. कहीं-कहीं संवादों के माध्यम से अपने पात्रों का चरित्र उभारने की कोशिश करते हैं. यहाँ हम उदाहरण देकर अपनी बात स्पष्ट करेंगे.

मृणाल की पीड़ा का वर्णन और उसके व्यक्तित्व में आये बदलाव का वर्णन लेखक ने इस प्रकार से किया है - "देखता क्या है कि वहाँ बुआ औंधी हुई पड़ी है. उनकी साड़ी इधर-उधर हो गयी और बदन का कपड़ा बेहद मार से झीना हो गया है. जगह-जगह नील उभर आये हैं, कहीं लहू भी झलक आया है. बुआ गुमसुम पड़ी हैं. न रोती हैं न सुबकती हैं. बाल बिखरे हैं और धरती पर पड़ी दोनों बाँहों पर माथा टिका है."

"सफेद बिना किनारे की धोती थी. बाल ढीले जूड़े में बँधे थे. आँखों की स्निग्धता निगाह को आकृष्ट करती थी. देह इकहरी और वशीभूत. मानो अपने भाग्य से गहरा सौहार्द है, अनबन किसी प्रकार की भी नहीं. जो झेला है सब पी गयी हैं. सबका रस बन गया है. खार कोई नहीं है."

यह वर्णन मृणाल के जीवन का परिचय देते हैं. लेखक मृणाल के हाव-भाव और व्यवहार के द्वारा उसके चरित्र को उभारता है. जैनेन्द्र ने प्रमोद के मुख से मृणाल की दयनीय स्थिति एवं व्यक्तित्व में आये परिवर्तन का वर्णन किया है.

उपन्यास में संवादों के माध्यम से भी चरित्रों को उभारा गया है. मृणाल के संवाद - "वेश्यावृत्ति नहीं करने लगूँगी, इसका विश्वास रखो."

"जिसको तन दिया, उससे पैसा कैसे लिया जा सकता है यह मेरी समझ में नहीं आता. तन देने की जरूरत मैं समझ सकती हूँ. तन दे सकूँगी, शायद वह अनिवार्य हो. पर लेना कैसा? दान स्त्री का धर्म है."

यह संवाद मृणाल के दृढ़ व्यक्तित्व का परिचय देते हैं. विषम परिस्थिति में भी मृणाल अपना स्त्री धर्म निभाकर अपनी दृढ़ता का परिचय देती है.

'त्यागपत्र' उपन्यास में जैनेन्द्र ने पात्रों का चरित्र-चित्रण अन्य पात्रों के माध्यम से या स्वयं पात्रों के संवादों द्वारा सफलतापूर्वक किया है. इन विधियों से चारित्रिक गुण-दोषों, विशेषताओं, अन्य चरित्रों के साथ सम्बन्ध, भाव एवं विचारों को प्रस्तुत किया गया है.

3.5 'त्यागपत्र' उपन्यास के मुख्य चरित्र

3.5.1 मृणाल

'त्यागपत्र' की मृणाल जैनेन्द्र के सम्पूर्ण नारी पात्रों में एक विशिष्ट अविस्मरणीय पात्र है और यही इस उपन्यास के केन्द्र में है. मृणाल (बुआ) के जीवन की पूरी गाथा बताता है उसका भतीजा प्रमोद. संपूर्ण उपन्यास में मृणाल के जीवन में आये उतार -चढ़ाव, संघर्ष और दयनीय स्थिति का वर्णन उपन्यास में किया गया है. मृणाल के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए एक आलोचक कहते हैं - "पूरे उपन्यास में मृणाल का चरित्र अपने असाधारण संकटों के कारण, पाठक की दृष्टि को आकर्षित करता है. मृणाल के चरित्र में उस प्रकार का हल्कापन कहीं भी नहीं है, जिस प्रकार का हल्कापन जैनेन्द्र के अन्य कतिपय नारी पात्रों में मिलता है. जैनेंद्र के अन्य नारी पात्रों में पति की उपेक्षा करके पर-पुरुष के प्रति जो एक प्रच्छन्न आकर्षण मिलता है, वह भी इस उपन्यास की नायिका मृणाल में व्यक्त नहीं है. जैनेन्द्र बड़े कौशल के साथ मृणाल से संबंधित एक के बाद दूसरे, तीसरे पुरुष को हमारे सामने लाते हैं. पर वहाँ वेदना के आधिक्य के कारण पाठक की संवेदना मृणाल को ही मिलती है. इसे हम जैनेन्द्र का रचनात्मक कौशल कह सकते हैं. (डॉ.राजेश 'अनुपम', 'हिन्दी के प्रमुख उपन्यास और उपन्यासकार', पृ. 61-62)

मृणाल का चरित्र वह केन्द्र बिन्दु है जिसके चारों ओर उपन्यास की कथा घूमती है. जैनेन्द्र का समस्त उपन्यास कौशल उसका निर्माण करने में लग गया और उसे इस तरह प्रस्तुत किया कि हम कथा को भूल सकते हैं किन्तु मृणाल के चरित्र को नहीं.

"इस उपन्यास का वातावरण विधेय (दर्शन) तथा विधि दोनों वेदनामय है. यहाँ वेदना का दर्शन भी है, द्रवित करने वाली वेदना भी जो शास्त्र से नहीं मिलता वह ज्ञान आत्मव्यथा से मिल जाता है. यह 'त्यागपत्र' का मुख्य विचार सूत्र है और कथा नायिका मृणाल का जीवन-विकास इसका मूर्त प्रमाण." (डॉ. सत्यपाल चुघ, प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पविधि पृ. 434)

मृणाल एक सुंदर, चंचल और अच्छी लड़की है. बचपन से ही नटखट मृणाल स्कूल में अन्य लड़कियों के साथ तूफान-भगदड़ मचाती है. वह अपने भतीजे प्रमोद को अत्यधिक चाहती है. वह अपने मन की बातें उसे बताती है. मृणाल माता-पिता के स्नेह से वंचित भाई-भाभी के संरक्षण में पलती है. मृणाल नवीं या दसवीं कक्षा में थी तब से उसमें बदलाव आने लगते हैं. वह गुम-सुम रहने लगती है, बहकी-बहकी बातें करती है, खोई-खोई रहती

है. वह चाहती है कि प्रमोद उसे बुआ न कहकर 'जीजी' कहके पुकारे. वह चिड़िया बनकर खुले आसमान में उड़ना चाहती है - "मैं नहीं बुआ होना चाहती. बुआ. छीः. देख चिड़िया कितनी ऊँची उड़ जाती है. मैं चिड़िया होना चाहती हूँ." यहाँ पर बुआ के चरित्र में चंचलता नजर आती है.

जैनेन्द्र ने 'परख' और 'सुनीता' उपन्यास के नारी पात्रों में पत्नित्व एवं प्रेयसीत्व का संघर्ष प्रस्तुत किया है किन्तु इसके पश्चात रचित उपन्यास 'त्यागपत्र' की नायिका मृणाल में पत्नित्व एवं प्रेयसीत्व का पूर्व नारी पात्रों के समान संघर्ष नहीं है. मृणाल के जीवन में पत्नी और प्रेयसी का द्वंद्व नहीं है. हाँ, उसका प्रेयसी रूप उसके जीवन को बदल अवश्य देता है.

मृणाल के मन में शीला के भाई के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है. वह उसके घर जाती है और देर से लौटती है. मृणाल प्रेयसी के रूप में सारे अनुभव प्राप्त नहीं कर पाती कि उसके विलम्ब से आने का रहस्य खुल जाता है. शीला के भाई के साथ मृणाल के प्रेम संबंध का पता चलते ही भाभी उसे बेंत से निर्दयतापूर्वक पीटती है. इतनी बुरी तरह से पीटती है कि बुआ के बदन पर लहू निकलने लगता है. मृणाल खामोश रह कर पड़ी रहती है. उनके जीवन की दयनीयता स्पष्ट हो जाती है.

मृणाल की शादी तय हो जाती है. जिस आदमी के साथ शादी तय होती है उसकी दूसरी शादी है. वह बड़ी-बड़ी मूँछें रखता है. मृणाल की मर्जी के बिना ही शादी हो जाती है. ससुराल से वापस लौटी मृणाल खुश नहीं है. उसके चेहरे का रंग उतरा-सा लगता है. वह भतीजे प्रमोद को सारी सच्चाई बताती है - "सच्ची-सच्ची कहूँ तो मैं ही पराई हो गई हूँ. तुम सब लोगों के लिए मैं पराई हूँ. तेरी माँ ने मुझे धक्का देकर पराया बना दिया है. पर मुझे जहाँ भेज दिया है, प्रमोद, मेरा मन वहाँ का नहीं है."

मृणाल को ससुराल जाना अच्छा नहीं लगता फिर भी जाना पडता है. यहाँ पर मृणाल एक लाचार और विवश नारी के रूप में उभरती है.

मृणाल को शादी के बाद भी सुख नहीं मिलता. मृणाल का दाम्पत्य जीवन तनावग्रस्त और दुःखद है. वह अपने पति के साथ खुश नहीं है. क्योंकि वह उसे बेंत से मारता पीटता है. जानवरों जैसा व्यवहार करता है. शादी से पहले आकाश में चिड़िया बनकर उड़ने कि इच्छा रखने वाली मृणाल का जीवन एक जूते के समान हो जाता है. वह अपने भतीजे प्रमोद के आगे अपना दिल खोलती है - "सच-सच कहती हूँ प्रमोद किसी और से न कहा, तुमसे कहती हूँ. बेंत खाना मुझे अच्छा नहीं लगता. न यहाँ अच्छा लगता है न वहाँ अच्छा लगता है."

गर्भवती हुई मृणाल की तबीयत बहुत खराब रहती है. उसकी सारी देह पीली पड़ जाती है. मायके आई मृणाल पति के पास जाना नहीं चाहती. किन्तु भाई के निर्णय के समक्ष विवश हो जाती है. पति द्वारा प्रताड़ित मृणाल को भाई भाभी पुनः ससुराल भेजकर अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बनाये रखते हैं. मृणाल भी उनको परेशान होते हुए नहीं देखना चाहती - "तुम सब लोग मुझे भूल जाना मैं जैसी गई, वैसी मरी. इसके बाद मैं तुम लोगों को बिलकुल तकलीफ़ नहीं दूँगी."

मृणाल बहुत ही ईमानदार है. वह पति के साथ समूची वफादारी से रहती है. एक दिन शीला के भाई का पत्र आने की बात पति को बता देती है. उसका स्पष्ट मानना है कि झूठ के सहारे जिदंगी नहीं जी जा सकती. वह पूरी ईमानदारी से पहले प्रेम के बारे में पति को बताती है. उसका पति विवाहपूर्व के प्रेमसंबंध को सुनकर उसे घर से निकाल देता है. स्वाभिमानी मृणाल मायके नहीं जाना चाहती. वह अपने हाल पर जीना चाहती है.

पति उसे शहर में एक कोठरी में छोड़कर चला जाता है. मृणाल जहाँ रहती है वहाँ निचले दरजे के लोग रहते हैं.

चाहे उसका प्रेम पूर्णता तक न पहुँच सका था, पर मृणाल को प्रेयसी बनने का दंड भोगना पड़ता है. मृणाल के दुःखमय जीवन में कोई सहारा देता है तो वह है कोयलेवाला.

वह उसकी सुंदरता के प्रति आकर्षित है. मृणाल के लिए वह अपना घर, परिवार, धंधा तक छोड़ने को तैयार हो जाता है. मृणाल भी आत्मसमर्पण करती है. वह उसे भगाकर ले जाता है. मृणाल के कोयलेवाले के साथ संबंध से प्रेम तथा विवाह के अतिरिक्त स्त्री पुरुष सम्बन्ध का एक अन्य रूप प्रस्तुत हुआ है. पतिव्रत धर्म की व्याख्या मृणाल अच्छी तरह समझती है. वह कहती है - "मैं स्त्री-धर्म को पतिव्रत धर्म ही मानती हूँ. उसका स्वतंत्र धर्म मैं नहीं मानती."

मृणाल बिना विवाह और प्रेम के कोयलेवाले के साथ रहती है. यहाँ पर मृणाल रखैल के रूप में हमारे सामने आती है.

प्रमोद मृणाल को ढूँढ़ता हुआ उसके पास पहुँच जाता है किन्तु वह प्रमोद के साथ जाना स्वीकार नहीं करती. प्रमोद को बताती हैं - "मैं तुझे कैसे बताऊँ, मैं घर नहीं आ सकती थी. एक बार घर आकर में समझ गई थी कि मैके जाना ठीक नहीं है. स्त्री जब तक ससुराल की है, तभी तक मैके की है. ससुराल से टूटी, तब मैके से तो आप ही टूट गई थी."

कोयलेवाले के साथ मृणाल के संबंध अच्छे हैं. वह उस पुरुष को छोड़ना नहीं चाहती, जिसने उसको आश्रय दिया है. जब तक वह उस पुरुष के पास रहे, उसकी सेवा करना मृणाल अपना धर्म समझती है. वह पापिनी हो सकती है, लेकिन आश्रय देने वाले के प्रति अकृतज्ञ नहीं हो सकती. मृणाल ने स्वयं पति को भी नहीं छोड़ा. पति जब उसको रखना नहीं चाहता, तब वह उन पर भार बनकर क्यों रहे. इस प्रकार मृणाल ने पतिव्रत धर्म का पालन किया है.

"जब तक पास है, तब तक वह पुरुष अन्य नहीं है. मेरा सब कुछ उसका है, उसकी सेवा में त्रुटि नहीं कर सकती. पतिव्रता धर्म यही तो कहता है."

प्रमोद मृणाल को सभ्य समाज में ले जाना चाहता है, किन्तु वह अपने कर्तव्य के सम्मुख समस्त सुख सुविधाओं को तुच्छ समझती है. वह आत्मविश्वास के साथ प्रमोद को कहती है - "सहायता का हाथ देकर क्या मुझे यहाँ से उठाकर ऊँचे वर्ग में जा बिठाने की इच्छा है? तो भाई मुझे माफ कर दो, वैसी मेरी अभिलाषा नहीं है. प्रतिष्ठा मुझे क्यों चाहिए. मुझे तो जो मिलना है, उसी के भीतर सान्त्वना पाने की शक्ति चाहिए."

मृणाल बहुत ही स्वाभिमानी स्त्री है. वह किसी की भी सहायता नहीं लेना चाहती. वह सामाजिक रुढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह करती है और भावुकता के प्रवाह में बहती हुई अपने ही तर्कों से स्वयं को समझा लेती है - "मैं समाज को तोड़ना-फोड़ना नहीं चाहती हूँ. समाज टूटा कि फिर हम किसके भीतर बनेंगे ? या किसके भीतर बिगड़ेंगे? इसीलिए मैं इतना ही कर सकती हूँ कि समाज से अलग होकर उसकी मंगलाकांक्षा में स्वयं टूटती रहूँ."

मृणाल का यह निरन्तर टूटना और टूटते हुए जीवन को निरन्तर जीने की दुर्दम्य आकांक्षा एवं संकल्प उसके चरित्र का मूल मंत्र है.

कोयलेवाला भी मृणाल को छोड़कर चला जाता है. अस्पताल में वह एक बच्ची को जन्म देती है. जो दस महीने की होकर रोग और भूख से मर जाती है. इस मुकाम पर पहुँच कर बुआ की जिंदगी बिखर जाती है. उसकी जिंदगी में दो पुरुष आये और दोनों ही उसको छोड़कर चले गये. मृणाल जैसे-तैसे अपने आपको संभाल लेती है. मृणाल अपने धर्म

से समझौता करके अच्छी तरह से जी सकती थी. लेकिन वह अपने धर्म के प्रति वफादार और प्रतिबद्ध है. वह हिन्दू धर्म को अच्छे से निभाती है.

इसके पश्चात् मृणाल एक डॉक्टर परिवार में ट्यूशन करने लगती है. संयोगवश प्रमोद इसी परिवार में लड़की देखने आता है. वहाँ उन दोनों की मुलाकात होती है. प्रमोद मृणाल को शादी में बुलाना चाहता है लेकिन वह मना कर देती है. वह प्रमोद को कहती है -

"मैं अपशकुन जो हूँ, भाई. अपशकुन से बनता काम बिगड़ जाता है. अब भी मैं सोच रही हूँ कि क्या चली न जाऊँ? पर सुन, एक बात तुझसे कहती हूँ. यहाँ कोई बेवकूफी मत करना. अब आ गया, फिर मेरे यहाँ मत आना. मेरे कुल-शील का कुछ पता है? इससे मेरे यहाँ आना-जाना ठीक नहीं है."

प्रमोद लड़की के परिवारवालों को उसके और मृणाल के रिश्ते की सच्चाई बता देता है. सच्चाई जानकर लड़की वाले रिश्ता तोड़ देते हैं और मृणाल को निकाल देते हैं. इसके पश्चात् मृणाल भटकती हुई ऐसे लोगों के बीच में पहुँच जाती है जो समाज और नैतिक दृष्टि से बहुत ही गिरे हुए कहे जाते हैं. यहाँ पर वह बीमार पड़ जाती है. वह प्रमोद को पत्र लिखती है - "मैं किसी भी और बात पर अब जिन्दा नहीं रहना चाहती हूँ. उनकी बुझती और जगती इन्सानियत के भरोसे ही रहना चाहती हूँ. दर-दर भटकी हूँ और मैंने सीखा है कि दुर्जन लोगों की सद्भावना के सिवा मेरी कुछ पूंजी नहीं हो सकती."

प्रमोद मृणाल से मिलने जाता है. बीमार बुआ के पास अधेड़ अवस्था की वेश्याएँ, बेकार मजदूर, जरायम पेशेवर, भिखमंगे लोग हैं. मृणाल प्रमोद से पैसा माँगती है क्योंकि उन पैसों से वहाँ की दुर्जनता और गंदगी साफ करने का प्रयत्न कर सके. बीमार मृणाल प्रमोद के साथ चलने या अस्पताल में भर्ती होने तक को तैयार नहीं होती अंत में प्रमोद रोगिणी बुआ के खर्च के लिए कुछ रुपये एक वकील के पास छोड़कर चला जाता है.

संसार की यातनाओं को सहते हुए मृणाल एक दिन अपनी समस्त वेदना को लिये इस संसार से चल बसती है. उसकी मृत्यु का समाचार सुनकर प्रमोद आत्मग्लानि से आक्रान्त होकर अपने जीवन को निस्सार मानता हुआ जज के उच्च पद से त्यागपत्र देकर विरक्त जीवन व्यतीत करने लगता है.

'त्यागपत्र' उपन्यास की मृणाल भाभी के अत्याचार, प्रथम प्रेम भंग, अनमेल विवाह, तनावग्रस्त दाम्पत्य जीवन, दूसरे प्रेम संबंध में असफलता, आर्थिक अभाव और गरीबी में जीवन जीती हुई मर जाती है. गोविंद मिश्र ने लिखा है - "समाज का कुत्सित यथार्थ पूरे उपन्यास में फैली जीवन सम्बन्धी टिप्पणियाँ, मृणाल के विवाह को अपने ढंग से लेना, कोयले की दुकान और निम्नवर्ग की बस्ती में जो सहज जीवन है, उसके सत्य को देखना ... या फिर यह सिर्फ एक नारी की व्यथा कथा है." (गोविंद मिश्र, 'जैनेन्द्रकुमार', पृ.48)

'त्यागपत्र' उपन्यास में मृणाल एक प्रबल चरित्र के रूप में हमारे समक्ष आती है. जो खुद के जीवन में अनेक कठिनाइयाँ भुगतकर दूसरों के सुख की कामना रखती है. मृणाल अपने जीवन में जिससे भी जुड़ी पूरी निष्ठा और सच्चाई के साथ. उन पर अपना सब कुछ लुटा भी देती है. समाज की नजरों में वह दुश्चरित्रा है लेकिन तन देकर धन की आशा करना वह बेईमानी समझती है. जीवन में मिली ठोकरों की प्रतिक्रिया वह केवल मौन आत्मसंघर्ष के रूप में देती है. मृणाल जैसी नारी का चरित्र तथाकथित सभ्य समाज की 'सभ्यता' पर प्रश्न भी खड़ा करता है. समाज के अंदर दोहरा व्यक्तित्व रखने वाले लोगों का पर्दाफाश भी करता है. बुद्धिजीवी वर्ग को सामाजिक नीति-नियमों, कानून, नैतिकता, आदर्श, परंपरा

इत्यादि पर पुनर्विचार करने के लिए विवश कर देता है.

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए.**

(1) 'त्यागपत्र' उपन्यास के केन्द्रीय चरित्र का नाम लिखिए.

(2) मृणाल कैसी लड़की है?

(3) मृणाल क्या बनकर खुले आसमान में उड़ना चाहती है?

(4) मृणाल की सहेली का नाम बताइए.

(5) पति द्वारा छोड़े जाने पर मृणाल को कौन सहारा देता है?

- **कथन सही है अथवा गलत, बताएँ.**

(1) मृणाल की जिस आदमी के साथ शादी तय होती है उसकी यह तीसरी शादी है.

(2) स्वाभिमानी मृणाल मायके जाना चाहती है.

(3) मृणाल पूरी ईमानदारी से पहले प्रेम के बारे में पति को बताती है.

(4) प्रमोद जज के उच्च पद से त्यागपत्र देकर विरक्त जीवन व्यतीत करने लगता है.

(5) मृणाल प्रमोद के पास पैसा माँगती है जिससे उन पैसों से वह अपना गुजर बसर कर सके.

3.5.2 प्रमोद

प्रमोद 'त्यागपत्र' उपन्यास का दूसरा केन्द्रीय पात्र है, जो कथा का सूत्रधार भी है. उसमें आत्मविश्लेषण की प्रवृत्ति, बौद्धिकता, जागरूकता तथा नैतिक संघर्ष को जन्म देने की क्षमता अधिक है. डॉ. राजेश 'अनुपम' ने लिखा है - "इसके द्वारा ही लेखक की दार्शनिक विचारधारा का स्रोत फूट पड़ा है. उसने अनेक स्थलों पर सामाजिक विषमता, वैयक्तिकता और नैतिकता के प्रश्नों का विश्लेषण किया है. इस दृष्टि से यह कथावाहक पात्र है." (डॉ.राजेश 'अनुपम'- 'हिन्दी के प्रमुख उपन्यास और उपन्यासकार', पृ. 62)

प्रमोद मृणाल का भतीजा है. प्रमोद के जीवन की कथा प्रमोद के माध्यम से ही कही गई है. शीला के भाई से मृणाल के प्रेम से लेकर उसके असफल वैवाहिक जीवन एवं दर्द भरी मृत्यु तक की घटनाओं का साक्षी है.

प्रमोद को बचपन से ही अपनी बुआ (मृणाल) के प्रति विशेष लगाव है. प्रमोद का समग्र व्यक्तित्व मृणाल से जुड़ा है. बचपन से ही वह मृणाल पर आती हुई आपत्तियों को देखता है पर सहायता नहीं कर पाता. बुआ को जब घर में बेंत से पीटा जाता था, या फिर जब वह विवाह के बाद ससुराल से पिट कर आती है तब उसका हृदय वेदना से भर जाता था.

माँ के द्वारा बुआ की पिटाई होने पर गुस्सा हो जाता है और कठोर वचन भी बोलता है. मृणाल की शादी के पश्चात विदाई असह्य हो जाती है. वह चाहता है कि बुआ प्रत्येक पल उसके समीप रहे. वह कहता है - "वह (बुआ) सदा इसी घर में रहेगी. देखूँ कौन फूफा होते हैं जो ले जाएँ. ऐसा मत करो बुआ. फिक्र क्या है? यह प्रमोद बड़ा होकर खूब कमाएगा और तुम्हारी खूब सेवा करेगा और तुम्हें कुछ होने न देगा."

बीमारी की स्थिति में फूफा का बुआ को ले जाना उसे अच्छा नहीं लगता. उसे इतनी

तकलीफ होती है कि न वह रो पाता है न कुछ कर पाता है. प्रमोद की स्थिति देखिए -

"मैं बुआ को विदा के समय देखते-देखते एकाएक इतना झल्ला आया कि भागकर बुआ वाली कोठरी में अपने को बन्द करके खड़ा हो गया. किवाड़ बन्द कर लेने से अँधेरा हो गया था, तिस पर भी दोनों हाथों से आँखें ढाँप ली थीं और गुम-सुम कोठरी के बीचों-बीच आकर बस खड़ा रह गया था. मानो आशा थी कि कोई करिश्मा होगा, भूचाल आएगा, कुछ न कुछ होगा और आखिर में सब ठीक हो जाएगा. यहाँ खड़े खड़े चाहता था कि साँस रोक लूँ, बेजान हो जाऊँ."

प्रमोद की यह स्थिति बुआ के प्रति उसके आत्मीय सम्बन्ध को उजागर करती है. प्रमोद बुआ के बारे में जानना चाहता है. बुआ की ससुराल जाकर हाल पूछना चाहता है. घर में बुआ की चर्चा कोई नहीं करता. माँ से पूछने पर वे चिढ़ जाती हैं. धीरे-धीरे उसे बुआ के गृहत्याग की भी बात पता चल जाती है. कॉलेज की पढ़ाई के दौरान वह मन में संकल्प करता है कि मैं बुआ को ढूँढ़ निकालूँगा.

दृढ़ संकल्पवाला प्रमोद बुआ को ढूँढ़ने में सफल भी हो जाता है. बुआ की शारीरिक स्थिति और घर का हाल देखकर प्रमोद दुःखी हो जाता है. वह बुआ को इस स्थिति से निकालना चाहता है.

इस मुलाकात के दौरान भी बुआ प्रमोद को अपने बीते हुए जीवन का हाल बता देती है. शीला के भाई का पत्र, पति का शक, त्याग और कोयलेवाले के साथ सम्बन्ध इत्यादि के बारे में जानकर प्रमोद कह उठता है "तुम घर क्यों नहीं आ गयी बुआ? इस आदमी के साथ बसने के लिए यहाँ क्यों चली आयी?"

प्रमोद के मन में परपुरुष के साथ भागी हुई और समाज की नजरों में दुश्चरित्रा मानी गई अपनी बुआ मृणाल के प्रति तिरस्कार का भाव जागृत नहीं होता, बल्कि वह उलझन में पड़ जाता है - "इन बुआ को मैं क्या बताऊँ? इनकी इस कोठरी में अपना ही क्या बताऊँ? यहाँ संबंध उलट-पुलट गया मालूम होता है. पतिगृह को छोड़कर यहाँ गन्दे व्यभिचार में रहने वाली नारी पवित्र धर्म की बात करती है और उसको सुनता हुआ एक पढ़ा लिखा मुझ जैसा समझदार युवा उस नारी को लांछित नहीं करता बल्कि उसके प्रति और खिंचकर रह जाता है. जो असह्य है."

प्रमोद महत्वाकांक्षी युवक है. सतत प्रयत्नशील रहकर वह बी.ए की परीक्षा में पोजीशन लाने की सोचता है. भावी ससुराल वालों से कुछ भी छिपाना नहीं चाहता. वह डॉक्टर के समक्ष अपने और मृणाल बुआ के सम्बन्ध का उद्घाटन कर देता है, परिणामस्वरुप उसका राजनन्दिनी से विवाह का रिश्ता टूट जाता है.

प्रमोद अपनी बुआ के चरित्र का विश्लेषण करता रहता है. समझने का प्रयत्न करने पर भी वह बुआ को समझ नहीं पाता. वह अनेक बार अपनी बुआ के उद्धार की चेष्टा करता है. समाज की विषमताओं को देखकर उसके बारे में सोचता है, समझने का प्रयत्न करता है दूसरी ओर वह उनकी प्रतिक्रिया के रूप में समाधान की तलाश में बेचैन होता है.

प्रमोद समाज की जूठन एवं अपराधियों के बीच से बुआ को निकालकर सभ्य समाज में लाना चाहता है. बीमार बुआ को अन्तिम बार देखने जाता है तब कहता है - "बुढ़ापे में ही तुम्हें आराम नहीं दे सकूँगा अब फिर कब दूँगा. मैं कुछ नहीं जानता. मैं तुम्हें पक्की बात कहता हूँ कि मेरी वकालत अच्छी चल जाएगी. कोई फिक्र नहीं है बुआ, अफसर दोस्त होते जाते हैं. मैं किसी साले की परवाह नहीं करता."

बुआ बीमारी की स्थिति में निचले दर्जे के लोगों के साथ रहना चाहती है. तब प्रमोद रोगिणी बुआ के खर्चे के लिए कुछ रुपये एक वकील के पास छोड़कर चला आता है. अपने अदालत के व्यवसाय और स्वार्थपूर्ति में लग जाता है.

सत्रह साल के बाद प्रमोद को बुआ की मौत का समाचार मिलता है. प्रमोद बुआ के मौत की खबर सुनकर पश्चाताप की अग्नि में जल उठता है -

"आज महाश्चर्य और महासन्ताप का विषय मेरे लिए यह है कि किस अमानुषिकता के साथ सत्रह वर्ष मैं बुआ को बिना देखे काट गया? वह बुआ जिन्होंने बिना लिये दिया. जिन्होंने कुछ किया, मुझे प्रेम ही किया. जिनकी याद मेरे भीतर अब अंगार सी जलती है. जिनका जीवन कुछ होकर ऊपर उठती लौ की भाँति जलता रहा. धुआँ उठा तो उठा, पर लौ प्रकाशित रही. उन्हीं बुआ को एक तरफ डालकर, किस भाँति अपनी प्रतारणा करता रह गया."

प्रमोद का प्रश्चाताप और आत्म-ग्लानि उसके स्वार्थ और अहं का दमन कर देती है. बुआ की मृत्यु की सूचना प्रमोद के मन पर गहरा प्रभाव डालती है. बुआ के दर्दनाक एवं पीड़ामय जीवन के अन्त के लिए स्वयं को दोषी समझकर जज के पद से त्यागपत्र दे देता है. त्यागपत्र देते हुए प्रमोद संसार में स्वल्पता से रहने का निश्चय करता है.

- **बोध प्रश्न**
- **एक वाक्य में उत्तर लिखिए.**

(1) प्रमोद कौन है?

(2) प्रमोद का विवाह किसके साथ तय होता है?

(3) प्रमोद कौन से व्यवसाय में है?

(4) बुआ से अंतिम बार मिलने के कितने साल बाद प्रमोद को बुआ की मौत का समाचार मिलता है?

(5) बुआ की मृत्यु के बाद प्रमोद क्या करता है?

- **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए.**

(1) .... 'त्यागपत्र' उपन्यास का दूसरा केन्द्रीय पात्र है.

(2) .... द्वारा बुआ की पिटाई होने पर प्रमोद गुस्सा हो जाता है.

(3) प्रमोद .... की खबर सुनकर पश्चाताप की अग्नि में जल उठता है.

(4) प्रमोद .... के समक्ष अपने और मृणाल बुआ के सम्बन्ध का उद्‌घाटन कर देता है.

(5) प्रमोद स्वयं को दोषी समझकर .... के पद से त्यागपत्र दे देता है.

3.6 'त्यागपत्र' उपन्यास के गौण चरित्र

'त्यागपत्र' उपन्यास में कुछ गौण पात्र भी हैं - शीला का भाई, प्रमोद का फूफा, प्रमोद के पिता, प्रमोद की माता, कोयले की दुकानवाला बनिया, डॉक्टर साहब, डॉक्टर मेम, राजनन्दिनी इत्यादि. आइये, इन पात्रों का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करते हैं.

(1) शीला का भाई

शीला का भाई, मृणाल का प्रथम प्रेमी है. यद्यपि लेखक ने उपन्यास में उसके विषय में अलग से कुछ नहीं कहा है, पर प्रसंगवश आये उल्लेखों से उसका जो चरित्र उभरता है,

वह एक प्रगतिशील शालीन युवक का है. मृणाल के विवाह के पूर्व उसकी चर्चा लेखक ने नहीं की है. ऐसा अनुमान लगाया जा सकता है कि भाभी द्वारा मृणाल को पीटे जाने और आनन फानन में उसका विवाह किसी दुहाजू से कर देने की घटना उसे समय से पता ही नहीं चल पाती. विवाहोपरांत जब मृणाल उसे पूरे प्रसंग से अवगत कराते हुए पत्र प्रमोद के हाथ भेजती है तो वह तत्काल उसे उस स्थिति से उबार लेने का प्रस्ताव प्रमोद के हाथ ही भिजवाता है. लेकिन विवाह हो चुकने के कारण मृणाल का पतिव्रत धर्म उसे ऐसे किसी कृत्य के लिए अनुमति नहीं देता. तब वह मृणाल की इच्छा के विरुद्ध कोई भी कदम उठाने से रुक जाता है, भले ही ऐसा न करना उसके या मृणाल के लिए भी कितना ही कष्टदायक क्यों न हो. यहाँ तक कि मरने तक को तैयार बैठी मृणाल को भी उसकी इच्छा के विरुद्ध मिलने नहीं जाता. यह प्रसंग जहाँ एक ओर मृणाल के प्रति उसके प्रेम और सम्मान को व्यक्त करता है, वहीं दूसरी ओर उसकी समाजभीरुता और कुलीन अकर्मण्यता का भी संकेत करता जान पड़ता है. उसका अंतिम उल्लेख उस पत्र के संदर्भ में है, जो वह अपने सिविल सर्जन होने की सूचना देने के लिए मृणाल को उसके ससुराल में लिखता है. वह इस पत्र में अपने विवाह न करने और किसी भी रूप में मृणाल की सहायता करने के लिए प्रस्तुत रहने की बात भी लिखता है. वस्तुतः यह पत्र उसकी एकनिष्ठता और समर्पण की अभिव्यक्ति है, लेकिन तथ्य यह भी है कि मृणाल के जीवन के भूचाल के लिए भी यही पत्र उत्तरदायी है.

इसके बाद पूरे उपन्यास में शीला के भाई की कहीं कोई चर्चा नहीं है.

(2) प्रमोद के फूफा

प्रमोद का फूफा मृणाल का पति है. 'त्यागपत्र' उपन्यास में उसके नाम का कोई उल्लेख नहीं मिलता. मृणाल की अपेक्षा उसकी आयु अधिक है, वह विधुर है, दुहाजू है. सुखी संपन्न परिवार का होते हुए भी वह शंकाशील स्वभाव का व्यक्ति है. पत्नी मृणाल अपने विवाह पूर्व के प्रेम संबंध के बारे में जब बताती है तब वह क्रोधित होकर पत्नी को गालियाँ देता है और घर से निकाल देता है. रुढ़िवादी संकुचित मानसिकता वाला फूफा खुद पत्नी मृणाल को शहर से दूर एक कोठरी में लाकर मरने के लिए छोड़ देता है.

(3) प्रमोद के पिता

प्रमोद के पिता अर्थात मृणाल का भाई, माता-पिता की मृत्यु के पश्चात छोटी बहन मृणाल का पालन-पोषण करता है. मृणाल को अंग्रेजी स्कूल में शिक्षा भी दिलवाता है. अपनी पत्नी की बातों में आकर छोटी बहन मृणाल की मर्जी पूछे बिना उसका अनमेल विवाह करवा देते हैं. सामाजिक प्रतिष्ठा के भय से मृणाल को वापस अपने पति के घर जाने के लिए समझाते हैं - "पति के घर के अलावा स्त्री को और क्या आसरा है. यह झूठ नहीं हैं मृणाल कि पत्नी का धर्म पति है. घर पति-गृह है. उसका धर्म, कर्म और उसका मोक्ष भी वहीं है. समझती हो ना बेटा."

मृणाल के गृहत्याग की बात जानकर भी भाई के रूप में वे कुछ नहीं कर पाते. समय के साथ भीरू और गंभीर बनते जाते हैं. अंततः उनका देहान्त हो जाता है.

(4) प्रमोद की माता

प्रमोद की माता कुशल गृहिणी थी. उतनी कोमल नहीं थी. उनके संरक्षण में प्रमोद के साथ-साथ पिताजी से उम्र में काफी छोटी बुआ भी रहती थीं. वह बुआ को अनुशासन में रखती थीं. उनके पति का अतिप्रेम मृणाल को बिगाड़ न दे, इस बात का विशेष ध्यान रखती थी.

प्रमोद की माँ का स्वभाव बहुत ही गुस्सैल था. वह शीला के भाई के साथ बुआ के प्रेम संबंध का पता चलते ही बेंत से, उसकी पिटाई करती हैं. माँ के स्वभाव में अजीब परिवर्तन आ जाता है. प्रमोद को भी काम-बेकाम फटकारती रहती हैं. मृणाल की शादी भी करवा देती हैं. पति के द्वारा मृणाल का त्याग करने की बात का माँ पर काफी प्रभाव पड़ता है. प्रमोद जब बुआ के बारे में माँ से पूछता है तब वह गुस्सा हो जाती हैं.

(5) कोयलेवाला

कोयलेवाला मृणाल के प्रति आकर्षित है. अपनी इच्छापूर्ति के लिए वह असहाय मृणाल की सहायता करता है. अपने घर-परिवार को छोड़कर वासनापूर्ति हेतु मृणाल के साथ रहता है और जब वह गर्भवती होती है तो विरक्त हो उसे छोड़कर चला जाता है.

(6) डॉक्टर मेम

डॉक्टर मेम अस्पताल में काम करती हैं. वह प्रमोद को मृणाल के अस्पताल में भर्ती होने, लड़की के जन्म, नौकरी माँगना, दूसरा धर्म न अपनाना, वहाँ से चले जाने की सारी बातें बताती हैं.

(7) डॉक्टर साहब

डॉक्टर साहब राजनन्दिनी के पिता और प्रमोद के होने वाले ससुर हैं. जिनके समक्ष प्रमोद उसके और मृणाल बुआ के रिश्ते की सच्चाई बता देता है. डॉक्टर साहब को कोई ऐतराज नहीं है किन्तु पत्नी दृढ़ता से इस बात के प्रतिकूल थीं. अतः प्रमोद का रिश्ता टूट जाता है. रिश्ता टूटने पर डॉक्टर साहब को बहुत ग्लानि हुई थी. प्रमोद के साथ उनके सम्बन्ध बने रहे. वह प्रमोद को पत्रों में सदा अपना पुत्र ही लिखते थे. राजनन्दिनी के कहीं और विवाह पर उन्होंने असन्तोष प्रकट किया था.

(8) राजनन्दिनी

राजनन्दिनी बहुत ही सुंदर थी. पहली नज़र में देखकर प्रमोद निश्चय कर लेता है. वह भी प्रमोद को सामने पाकर शरमा जाती है. दोनों की सगाई हो जाती है. प्रमोद के साथ उनकी गुप्त भेंट भी होती है. प्रमोद और बुआ के रिश्ते का सच उसकी माँ स्वीकार नहीं कर पाती और रिश्ता टूट जाता है.

(9) राजनन्दिनी की माँ

प्रमोद का घर में अच्छे से स्वागत करती है. हर वक्त प्रमोद को घेरे रहती है. उनके बच्चों को मास्टरनी (मृणाल) पढ़ाने आती है, यह जानकारी प्रमोद को देती है. वह बहुत ही बातूनी है. प्रमोद और बुआ के रिश्ते का सच स्वीकारना उसके लिए असंभव है अतः राजनन्दिनी का प्रमोद से रिश्ता टूट जाता है.

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित विधान सही हैं या गलत बताइए.**

(1) क्या प्रमोद के पिता मृणाल के माता-पिता की मृत्यु के बाद उसका पालन पोषण करते हैं?

(2) क्या शीला के भाई के साथ मृणाल का प्रेमसंबंध था?

(3) क्या फूफा जी का स्वभाव शंकाशील है?

(4) क्या प्रमोद की माता मृणाल को बहुत ही प्यार से रखती है?

(5) क्या राजनन्दिनी की माता प्रमोद और बुआ (मृणाल) के रिश्ते को स्वीकार कर लेती है?

- **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए.**

(1) शीला का भाई, मृणाल का .... है.

(2) प्रमोद की माता .... गृहिणी थी.

(3) ....राजनन्दिनी के पिता और प्रमोद के होने वाले ससुर हैं.

(4) .... का प्रमोद से रिश्ता टूट जाता है.

(5) .... अपने घर-परिवार को छोड़कर वासनापूर्ति हेतु मृणाल के साथ रहता है.

3.7 सारबिंदु

- 'त्यागपत्र' उपन्यास में सिर्फ घटनाएँ ही कथानक के भीतरी तनाव को उजागर नहीं करती, बल्कि उसके चरित्र भी संघर्ष का तानाबाना बुनते हैं.
- उपन्यास के सभी पात्र अपनी चारित्रिक विशेषताओं के कारण उपन्यास को मजबूती देते हैं. उपन्यास के चरित्र लेखक के अपने विवरणों से उद्‌घाटित होते रहते हैं. दूसरे स्तर पर कार्य-कलापों से उनका उद्‌घाटन होता है.
- जैनेंद्र के उपन्यासों में पात्रों के अंतर्द्वन्द्व का विशेष स्थान दिया गया है. इन पात्रों के चरित्र की विशेषताओं को विस्तार दिया गया है परिणामस्वरूप पात्र वास्तविक लगते हैं.
- जैनेन्द्र के पात्र बने-बनाये सामाजिक नियमों कों स्वीकार कर उनमें अपना जीवन बिताने की चेष्टा नहीं करते बल्कि नियमों को भी चुनौती देते हैं.
- जैनेन्द्र ने अपनी कृति में सशक्त और प्रभावशाली चरित्रों की सृष्टि की है.
- प्रस्तुत उपन्यास में लेखक अपने सामाजिक दर्शन और अनुभव से उपन्यास के पात्रों को सजीव तथा जीवंत बनाने में सफल रहे हैं.

3.8 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर दीजिए.**

(1) उपन्यास विधा में पात्र योजना एवं चरित्र चित्रण के महत्व को स्पष्ट कीजिए.

(2) 'त्यागपत्र' उपन्यास की पात्र योजना पर प्रकाश डालिए.

(3) मृणाल (बुआ) की चारित्रिक विशेषताओं की चर्चा कीजिए.

(4) 'त्यागपत्र एक नायिका प्रधान उपन्यास है.' प्रस्तुत कथन का विश्लेषण कीजिए.

- **टिप्पणी लिखिए.**

(1) प्रमोद का चरित्र

(2) गौण चरित्रों का परिचय

(3) जैनेन्द्र की पात्र योजना और चरित्र चित्रण की विशेषताएँ

3.9 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- जैनेन्द्र रचनावली (खंड-1) सं. निर्मला जैन, प्रदीप कुमार, भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2008

- हिन्दी के प्रमुख उपन्यास और उपन्यासकार - डॉ. राकेश ‘अनुपम’, मॉडर्न प्रिन्टर्स, जयपुर, सं. 2010
- जैनेन्द्रकुमार - गोविंद मिश्र, साहित्य अकादमी प्र.सं. 2003
- प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों की शिल्पलिपि - डॉ. सत्यपाल चुघ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहबाद, सं. 1968
- हिन्दी उपन्यास का इतिहास - प्रो. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र.सं. 2005
- अद्यतन हिन्दी उपन्यास - बिन्दु मह, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद, प्र.सं. 1993
- हिन्दी उपन्यास : एक अन्तर्यात्रा - डॉ. रामदरश मिश्र
- www.hindivibhag.com
- vikasnainwal.blogspot.com
- www.apnimaati.com
- www.freehindipdfbooks.com

इकाई 4 'त्यागपत्र' : संवाद एवं कथोपकथन

रूपरेखा

4.1 उद्देश्य
4.2 प्रस्तावना
4.3 उपन्यास में कथोपकथन और संवाद का महत्व
4.4 कथोपकथन के गुण और विशेषताएँ
4.5 'त्यागपत्र' उपन्यास में कथोपकथन और संवाद
4.6 सारबिंदु
4.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
4.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

4.1 उद्देश्य

आपने इससे पूर्व की इकाइयों में 'त्यागपत्र' उपन्यास की कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र के साथ-साथ त्यागपत्र उपन्यास में निहित मनोविज्ञान संबंधी जानकारी प्राप्त की. प्रस्तुत इकाई में हम 'त्यागपत्र' उपन्यास के कथोपकथन एवं संवाद के बारे में बात करेंगे. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- उपन्यास विधा में कथोपकथन और संवाद के महत्व को समझ पाएँगे.
- 'त्यागपत्र' उपन्यास के संवाद एवं कथोपकथन का सहज रूप से विश्लेषण कर पाएँगे.
- मृणाल के कथनों को पढ़कर उसकी मन:स्थिति को समझ पाएँगे.
- प्रमोद और मृणाल के संवादों से उनके अंतर्द्वन्द्व से परिचित हो सकेंगे.

4.2 प्रस्तावना

आपने उपन्यास खंड से संबंधित तीन इकाइयों का अध्ययन कर लिया है. आपको अब तक उपन्यास की कहानी स्पष्ट हो गई होगी. कोई भी रचनाकार चाहे वह किसी भी विधा में लिख रहा हो, उसके लेखन के पीछे कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य रहता है. जैनेन्द्र जी साहित्य की उपादेयता मनुष्य बनाने में ही मानते हैं. उन्होंने उपन्यास के मानक तत्वों का सही रूप में निर्वाह करते हुए, प्रस्तुत उपन्यास को हमारे समक्ष प्रस्तुत किया है. परिणामस्वरूप सन् 1937 ई. में प्रकाशित 'त्यागपत्र' श्रेष्ठ लघु उपन्यास के रूप में हमें प्राप्त हुआ. इस उपन्यास के संवाद एवं कथोपकथन को हम निम्न शीर्षकों के अंतर्गत समझने की चेष्टा करेंगे.

4.3 उपन्यास में कथोपकथन और संवाद का महत्व

किन्हीं दो या दो से अधिक पात्रों के वार्तालाप को कथोपकथन (कथन और उपकथन) या संवाद कहते हैं. यद्यपि कथोपकथन संवादों के रूप में मूलतः नाटकों के प्रमुख अंग हैं किन्तु आज साहित्य की अनेक विधाओं में उनका वैविध्यपूर्ण प्रयोग होता दिखाई देता है. संवादों के होने से कथा में रोचकता का तत्व शामिल हो जाता है. उपन्यास में इसकी योजना विभिन्न उद्देश्यों से की जाती है, जैसे-

- कभी कथा विकास के लिए
- कभी पात्रों के अंतर और बाह्य व्यक्तित्व के उद्‌घाटन के लिए

- कभी लेखकीय विचारों की नाट्यात्मक अभिव्यक्ति के लिए इसका उपयोग आवश्यक हो जाता है.

4.4 उपन्यास में कथोपकथन या संवाद के गुण और विशेषताएँ

कथोपकथन या संवाद के गुण :-

स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, सहजता, सोद्देश्यता तथा मनोवैज्ञानिकता आदि गुण संवादों की सफलता के मुख्य आधार हैं.

कथोपकथन या संवाद की विशेषताएँ :-

- संवाद पात्रों के चरित्र-चित्रण में सहायक होते हैं.
- संवाद उपन्यास की कथा को आगे बढ़ाने वाले होते हैं, अर्थात् कथा को गति प्रदान करते हैं.
- संवाद चुटीले, व्यंग्यपूर्ण तथा व्यंजनात्मक हों, तो वे कृति में रोचकता का अतिरिक्त आयाम ला देते हैं.
- संवाद पात्र तथा परिस्थिति के अनुकूल होने चाहिए.
- संवाद की भाषा जीवन की भाषा के समानांतर होनी चाहिए.

वस्तुतः कथानक का अभिन्न अंग बनकर आने वाला कथोपकथन ही सहज हो सकता है. यदि कथोपकथन रोचक, जीवंत और सहज होते हैं तो उससे उपन्यास में नाटक की-सी सरसता, सजीवता और यथार्थता आ जाती है. लेखक का विवेकपूर्ण कला-कौशल ही कथोपकथन को प्राणवंत बना सकता है. यदि कथावस्तु और चरित्र के अनुसार संवाद न हो तो वे सार्थक तथा प्रभावोत्पादक नहीं हो पाते.

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर दीजिए.**

(1) कथोपकथन से क्या तात्पर्य है?

(2) संवाद में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?

(3) उपन्यास में कथोपकथन की क्या विशेषताएँ हैं?

(4) उपन्यास में संवाद-योजना किस उद्देश्य से की जाती है?

4.5 'त्यागपत्र' उपन्यास में कथोपकथन और संवाद

यहाँ हम 'त्यागपत्र' उपन्यास के कथोपकथन (संवाद) की बात करें तो, हम कह सकते हैं कि मृणाल की कथा के माध्यम से भरे समाज में व्यक्ति का अकेलापन किस प्रकार जीवन को पशु जीवन से भी बदतर बना देता है, इसका हृदयद्रावक चित्रण हुआ है. अर्थात् हम कह सकते हैं कि लेखक ने मृणाल की कथा के माध्यम से भारतीय समाज को खोखला करने वाले पारंपरिक मानदंडों और मान्यताओं पर करारी चोट की है. इस मार्मिक कथा को जैनेन्द्र जी ने छोटे-छोटे सहज, संवादों के द्वारा अभिव्यक्त किया है.

उदाहरण - (मृणाल और प्रमोद का संवाद)

"मैंने कहा - बुआ? आज क्या बात है?"

बोली - "मैं बुआ हूँ? प्रमोद! बुआ मुझे अच्छा नहीं लगता." तू मुझे जीजी कहा कर, जीजी. शीला मुझे जीजी कहती है."

मैंने कहा- "मेरी तो बुआ हो."

"मैं नहीं बुआ होना चाहती. बुआ छी:! देख, चिड़िया कितनी ऊँची उड़ती है. मैं चिड़िया होना चाहती हूँ."

मैंने कहा- "चिड़िया?"

बोली - "हाँ, चिड़िया. उसके छोटे-छोटे पंख होते हैं. पंख खोल वह आसमान में जिधर चाहे उड़ जाती है. क्यों रे कैसी मौज है! नन्हीं-सी चिड़िया, नन्हीं-सी पूंछ. मैं चिड़िया बनना चाहती हूँ."

प्रस्तुत संवाद से हम मृणाल के निश्चल स्वभाव और उसके मन के सूक्ष्म भावों से परिचित होते हैं. दूसरा यह कि वह सामाजिक बंधनों से हटकर पंछियों की तरह मुक्त रूप से जीना क्यों चाहती है? इसका कारण है कि, मृणाल अब युवावस्था में पहुँच चुकी है, शीला के घर पर अधिक समय बिताती है, शीला के भाई को चाहने लगी है. इसलिए वह चिड़िया की तरह मुक्त होकर जीना चाहती है.

इतना ही नहीं वह छोटे प्रमोद से पूछने लगी -

"प्रमोद, तू मुझे प्यार करता है?" ....

"प्रमोद, मैं तुम्हें बहुत प्यार करता हूँ."

यद्यपि प्रमोद बचपन से ही जानता है कि बुआ उसे बहुत प्यार करती है. बुआ के बिना उसका जीना ही व्यर्थ है. लेकिन मृणाल के मुख से निकले इस सहज कथन से हम समझ सकते हैं कि मृणाल का मन शीला के भाई के प्रति आकर्षित हुआ है. इसलिए बुआ अजीब व्यवहार करती हुई ऐसी बातें करती है.

बुआ रोजाना घर आकर स्कूल में की गई शरारतों का सारा ब्यौरा प्रमोद को सुनाया करती थी. अब कुछ नहीं बताती. बुआ में आए परिवर्तन से प्रमोद हैरान है. पूछने पर भी "कुछ नहीं, भैया कुछ नहीं." कह कर टाल देती है. वह प्रमोद को कभी बेटा कहती, कभी भैया, तो कभी कुछ भी न कहती, सिर्फ गधा कहती. इससे दोनों के बीच का लगाव स्पष्ट होता है.

शाम के वक्त छत पर उड़ती चीलों को देखना, कटी पतंग को ओझल हो तब तक देखना, प्रमोद का खड़े होने का बोध होते ही चौंकी-सी एकदम कहती - "अरे! प्रमोद तू कहाँ था?"

"क्यों रे, अब तू मुझसे बोलता भी नहीं."

बिना जवाब दिए प्रमोद उसके पास बैठ जाता तो वह उसे धीरे-धीरे अपने ऊपर लुढ़का लेती और उसे पतंग देखने के लिए कहती. यहाँ, बुआ में आए परिवर्तन से प्रमोद हैरान होने लगता है. यहाँ मृणाल के सूक्ष्म मनोभावों को अभिव्यक्त किया गया है. जब मृणाल विवाह के कुछ घंटें पहले प्रमोद को अच्छा इंसान और बड़ा आदमी बनने की सीख देती है, तब भी प्रमोद मृग शावक-सा उसके अंक में पड़ा रहता है.

वस्तुतः प्रमोद का बुआ के बगैर जीना बड़ा मुश्किल है.

जब मृणाल ससुराल के लिए निकलती है, तब प्रमोद उसे रोकता हुआ, उसके पैर पकड़ लेता है. उस समय दोनों के बीच हुए संवाद हमें पिघला देते हैं. इतना ही नहीं इसी दिन से मृणाल के जीवन में संघर्ष प्रारंभ होता है और उसकी जिन्दगी नरक बन जाती है और उसमें आत्मपीड़न की वृति जगती है. देखिए, उदाहरण -

"प्रमोद, तू मेरी नहीं मानेगा?"

"मुझे जाने दो मैं जल्दी आऊँगी."

बुआ के उस आँसू भरे मुखड़े के आगे मेरी हठ बिलकुल गल गई.

मैंने पूछा - "जल्दी आओगी."

"मेरी कसम खाओ."

"अपने प्रमोद की कसम."

बुआ ससुराल से आई है, प्रमोद के लिए कई चीजें लाई है. लेकिन प्रमोद का मन उन चीजों की अपेक्षा (मृणाल के चहरे का रंग उतरा-सा है, तबियत में भी अनमनापन रहता है) बुआ के मन का हाल जानने में उत्सुक है. जब मृणाल चीजें देखने को कहती है तो वह बेमन कहता है - "दिखाओ." बुआ असमंजस में पड़ गई.

बोली - "यह तू कैसे बोल रहा है? क्या हुआ तुझे?"

मैंने कहा - "कुछ नहीं"

"फिर क्या बात है?"

मैंने कहा- "तुम मुझे पहले जैसा अब नहीं मानती हो ...." "पराया मानती हो." यह सुनकर मृणाल स्तब्ध भाव से देखती हुई, प्रमोद को गोद में लिटाकर बोली - "प्रमोद सच्ची-सच्ची कहूँ, तो मैं ही पराई हो गई हूँ. तुम सब लोगों के लिए मैं पराई हूँ. तेरी माँ ने मुझे धक्का देकर पराया कर दिया है. पर मुझे जहाँ भेज दिया है, प्रमोद, मेरा मन वहाँ का नहीं है. तू एक काम करेगा?"

मृणाल द्वारा कहा गया, यह कथन उपन्यास में कथा- विकास का उत्तम उदाहरण है. दूसरा यह कि उसकी शादी मन से नहीं, सामाजिक प्रतिष्ठा के डर से जबरदस्ती बड़ी उम्र के दुहाजू के साथ कर दी जाती है.

प्रमोद भी बुआ की सहायता हेतु तत्पर रहता है. यथा -

"सच-सच बताओ बुआ मैं जरूर करूँगा."

"शीला के वहाँ जाएगा?"

"जाऊँगा."

"जाकर क्या करेगा?"

....नहीं-नहीं मैं हँसी कर रही थी. कोई काम नहीं."

इस संवाद में हम देखते हैं कि मृणाल शादी के बाद भी अपने पूर्व प्रेमी को भूला नहीं पाती है. वह शीला के भाई को कुछ संदेश भेजना चाहती है. फिर भी अपने आप को रोकने का प्रयत्न अवश्य करती है.

इसके बाद वह हठपूर्वक लाई हुई चीजें दिखाते वक्त कहती है -

"बन्दूक तुझे अच्छी लगती है?"

मैंने कहा - "बन्दूक से कौओं को मारा करूँगा. कौए मुझे बड़े बुरे लगते हैं."

बुआ बोली - "बन्दूक से आदमी भी मर जाते हैं, भैया इसी से खिलौना लाई हूँ. मरना क्या होता है, क्यों रे, तू जानता है?"

"जानता हूँ. मरकर आदमी मर जाता है."

"मैं मर जाऊँ तो तू क्या करेगा?"

उपर्युक्त संवाद सूचनात्मक संवाद माना जाना चाहिए. क्योंकि मृणाल के मुख से निकला अंतिम वाक्य प्रमोद को जजी पद से त्यागपत्र देने के लिए मजबूर करता है. अर्थात् यूँ कहें कि मृणाल के मुख से निकले इस अंतिम कथन में 'त्यागपत्र' उपन्यास के उद्देश्य एवं शीर्षक की सार्थकता के बीज अंकुरित होते मालूम पड़ते हैं.

अन्य उदाहरण -

बुआ ने कहा - "सच बताऊँ?"

"हाँ, बिलकुल सच-सच बताओ."

बुआ ने हँसकर कहा - "क्यों सच-सच बताऊँ?"

मैंने नाराज होकर कहा - "नहीं बताओगी?"

बोली "अच्छा सच-सच बताती हूँ. मैं तेरे साथ रहना चाहती हूँ. रखेगा?"

जब मृणाल प्रमोद को वास्तविकताओं से परिचित कराती है, उस समय के संवाद देखिए अर्थात् लेखकीय विचारों की नाट्यात्मक अभिव्यक्ति देखिए -

मैंने कहा- "बेंत से मारते हैं?"

"हाँ, बेंत से मारते हैं."

"क्यों मारते हैं?"

"मैं ख़राब हूँ इसलिए मारते हैं."

उस समय आवेश से भरकर प्रमोद अपना मुँह बुआ की छाती में दुबकाया हुआ सोचता है कि हम दोनों ऐसी जगह चले जाएँ जहाँ कोई बेंत न हो, कोई बुरा-ख़राब न हो, किन्तु यह असंभव है. नियति मृणाल का साथ छोड़ने का नाम नहीं लेती. जैसे - फूफा बुआ को लेने आ रहे हैं, जबकि मृणाल वहाँ के अमानुषिक वातावरण में जाना नहीं चाहती. फिर भी उसे भेजा जाता है. भैया घर से निकाल देंगे तो वह चली जाने के लिए भी तैयार है. उस समय के बुआ और प्रमोद के पिताजी के संवाद देखिए -

"जाना नहीं चाहती हो यह तो मैं देखता हूँ. पर भला ऐसा कहीं होता है. और कब तक नहीं जाओगी?"

"बिलकुल नहीं जाऊँगी."

अन्य उदाहरण देखिए -

"अच्छा मुन्नी कहाँ है"

"मर गई"

"मर गई? कब मर गई."

"दस महीने की होकर मर गई. कुछ भूख से मरी, रोग से मरी."

मैंने कहा - "मिशन वाले उसे मांगते थे? दे क्यों नहीं दिया."

"......................यहाँ कैसे आई?"

"भटकते-भटकते ही आई."

मृणाल ने मिशन के अस्पताल में काम करना चाहा था. लेकिन उसके लिए धर्म परिवर्तन की शर्त थी जबकि मृणाल धर्म से परे इंसानियत मात्र के लिए अपने आप को समर्पित करना

चाहती थी.

वस्तुतः उसके नसीब में सदा के लिए भटकना लिखा था. वैसे जैनेन्द्र जी के पात्र नियतिवादी हैं. निम्न संवाद को देखिए -

"पर वहाँ तेरी भी शादी है? यह जानती तो क्या मैं यहाँ ठहरती!"

"क्यों, ठहरती क्यों नहीं?"

"मैं अपशकुन जो हूँ भाई. असगुन से बनता काम बिगड़ जाता है."

निम्नलिखित कथन से मृणाल के निश्चयात्मक विचार देखिए - (जिसमें हमें मृणाल की बेबसी और उसी के कारण जन्मी आत्मपीड़न की वृत्ति देखने को मिलती है)

"सहायता इसलिए चाहिए कि मेरा मन पक्का होता रहे कि कोई मुझे कुचले, तो मैं कुचली न जाऊँ और इतनी जीवित रहूँ कि उसके पाप के बोझ को भी मैं ले लूँ और सबके लिए क्षमा की प्रार्थना करूँ. प्रतिष्ठा मुझे क्यों चाहिए, मुझे तो जो मिलता है, उसी के भीतर सान्त्वना पाने की शक्ति चाहिए-"

मृणाल के इस कथन में सामाजिक बाह्यताओं पर सांकेतिक रूप में व्यंग्य है. वैसे प्रमोद भीरु है. अतः कहीं भी खुलकर विद्रोह करने की क्षमता नहीं रखता है, सिर्फ सोचता है. समाज के अन्य लोगों की भाँति वह भी द्रष्टा बन जाता है. बाद में उसकी आत्मा उसे जगाती है. लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी. अतः वह त्यागपत्र देकर (जजी छोड़कर) सच्चा प्रायश्चित करता है.

उपन्यास में लेखक अपनी ओर से बहुत कुछ कह सकता है, मगर यदि वह पात्रों के मुख से वार्तालाप करता है, तो उपन्यास में सजीवता आ जाती है. इसलिए संवाद जहाँ वर्णन की एकरसता को तोड़ते हैं, वहीं उपन्यास को सहजता, स्वाभाविकता तथा तीव्र गति प्रदान करते हैं.

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए.**

(1) "मैं चिड़िया होना चाहती हूँ" कौन कहता है? किससे और क्यों?

(2) सभ्य समाज के लिए मृणाल क्या लिखती है?

(3) मृणाल पत्र में क्या अफ़सोस व्यक्त करती है?

(4) प्रमोद के निरंतर घर बुलावे को मृणाल क्यों इन्कार करती रहती है?

(5) मृणाल अपने ससुराल वापस क्यों नहीं जाना चाहती?

(6) मृणाल कोयलेवाले के साथ क्यों रहती है?

- **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए.**

(1) मृणाल .... के घर पर अधिक समय बिताती है.

(2) बुआ के बिना .... जीना ही व्यर्थ है.

(3) मृणाल का मन .... के प्रति आकर्षित हुआ है.

(4) बुआ रोजाना घर आकर .... का सारा ब्यौरा प्रमोद को सुनाया करती थी.

4.6 सारबिंदु

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि जैनेन्द्र जी की मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी दृष्टि पारंपरिक

सामाजिक बंधनों में छटपटाते हुए पात्रों के अंतर्जगत को मनोयोग से उद्घाटित करती है. अतः कहना उचित होगा कि 'त्यागपत्र' उपन्यास में जैनेन्द्र जी ने छोटे-छोटे, सरल, सहज संवादों के माध्यम से कथा को सजीव बना दिया है. अंततः 'त्यागपत्र' उपन्यास संवाद एवं कथोपकथन की दृष्टि से सफल उपन्यास है.

4.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए.**

(1) मृणाल कौन है?

(2) प्रमोद का मृणाल के साथ क्या संबंध है?

(3) मृणाल की शादी किसके साथ की जाती है? क्यों?

(4) मृणाल की सहेली का नाम बताइए.

(5) मृणाल किससे प्रेम करती है?

(6) मृणाल ने प्रमोद को अपने दिल की बात किस तरह बताई?

(7) प्रमोद अपना प्रायश्चित किस प्रकार करता है?

(8) प्रमोद को किस बात का पछतावा होता है?

(9) मृणाल पत्र में पैसे के महत्व के बारे में क्या लिखती है?

- **टिप्पणी लिखिए.**

(1) 'त्यागपत्र' उपन्यास में कथोपकथन की विशेषताएँ

(2) 'त्यागपत्र' उपन्यास में संवादों की सजीवता

(3) मृणाल की पीड़ा

4.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- जैनेन्द्र साहित्य और समीक्षा - डॉ. रामरतन भटनागर
- जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. देवराज उपाध्याय
- हिन्दी उपन्यास बदलते संदर्भ - डॉ. शशिभूषण सिंहल
- आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान - डॉ. देवराज उपाध्याय
- भारतीय साहित्य के निर्माता जैनेन्द्र कुमार - गोविन्द मिश्र
- <http://www.apnimaati.com/2016/08/blog-post_78.htm>

इकाई 5 'त्यागपत्र' : देशकाल और वातावरण

रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 उपन्यास में देशकाल और वातावरण का महत्व

5.4 'त्यागपत्र' उपन्यास में देशकाल और वातावरण

5.4.1 'त्यागपत्र' उपन्यास मे देशकाल

5.4.2 'त्यागपत्र' उपन्यास में वातावरण

5.5 सारबिंदु

5.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

5.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

5.1 उद्देश्य

'त्यागपत्र' उपन्यास के अध्ययन हेतु यह पाँचवी इकाई है. इससे पहले आपने चार इकाइयों में लेखक परिचय एवं उपन्यास की कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र चित्रण, 'त्यागपत्र' उपन्यास में मनोविज्ञान, संवाद एवं कथोपकथन आदि का विस्तार से अध्ययन किया है. अब प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप :-

- उपन्यास विधा में देशकाल और वातावरण के महत्व को जान सकेंगे.
- मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में देशकाल और वातावरण के महत्व को जान सकेंगे.
- आँचलिक उपन्यास और मनोवैज्ञानिक उपन्यास की देशकाल और वातावरण के आधार पर तुलना कर सकेंगे.
- 'त्यागपत्र' के देशकाल और वातावरण से परिचित होंगे.
- अंत:साक्ष्य और बहिर्साक्ष्य के आधार पर 'त्यागपत्र' में देशकाल और वातावरण को सुनिश्चित कर सकेंगे.

5.2 प्रस्तावना

किसी भी उपन्यास को ठीक से समझने के लिए उसके तत्वों को समझना आवश्यक होता है. 'त्यागपत्र' उपन्यास से संबंधित इस इकाई में हम 'त्यागपत्र' उपन्यास के देशकाल और वातावरण के संदर्भ में चर्चा करने जा रहे हैं. जैनेन्द्र प्रेमचंदोत्तर युग के मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार हैं. सामान्यतया उपन्यासकार जिस प्रदेश विशेष का वर्णन कर रहा हो, उस प्रदेश के लोगों का, उनके रीत-रिवाज का, उनकी संस्कृति, उनकी सभ्यता, उनके व्यवहार का उसे पूरा ध्यान रखना चाहिए. साथ ही साथ उस काल में प्रचलित विचारधारा का भी ध्यान रखना चाहिए. जिस वातावरण विशेष में वह उपन्यास का सर्जन कर रहा हो उस वातावरण पर भी उसकी पैनी दृष्टि होनी चाहिए. हालाँकि यह सारे गुण एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास में कम ही देखने को मिलते हैं. फिर भी इस तत्व की उपेक्षा नहीं की जा सकती.

5.3 उपन्यास में देशकाल और वातावरण का महत्व

सामान्य रूप से किसी भी देश, प्रदेश या समाज की प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थितियाँ मिलकर ही देशकाल कहलाती हैं. इस तत्व को अनदेखा करनेवाला

कोई भी उपन्यास अपने युग के साथ समुचित न्याय नहीं कर सकता. ऐसा माना जाता है कि घटना का स्थान, समय, पात्र का परिवेश तथा चित्रित युगविशेष की विभिन्न परिस्थितियों का ज्ञान उपन्यासकार के लिए जरूरी है. ऐतिहासिक एवं आँचलिक उपन्यासों में इस तत्व का महत्व स्वयं स्पष्ट है. उपन्यास की सफलता एवं श्रेष्ठता उपन्यास के सभी तत्वों पर परस्पर आधारित है. डॉ. गुलाबराय के शब्दों में कहें तो "कथानक के पात्र भी वास्तविक पात्र की भाँति देशकाल के बन्धन में रहते हैं." देशकाल के बिना पात्रों का व्यक्तित्व स्पष्ट नहीं होता.

हिन्दी साहित्य में कुछ ऐसे उपन्यास भी लिखे गये हैं, जिनके कथानक में घटनाओं का क्रमिक विकास नहीं है, एकसूत्रता नहीं है. देशकाल और वातावरण का सर्वप्रथम ह्रास हम मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में देख सकते हैं.

देशकाल के साथ ही वातावरण का भी उपन्यास में उतना ही महत्व है. उपन्यास में वातावरण का प्रायः कथा के काल और कथा के प्रकार के अनुसार चयन किया जाता है. पात्रों के कथोपकथनों की भाषा तथा उनमें व्यंजित उनकी मनोवृत्ति युग की छाप से अछूती नहीं रह सकती. इसी कारण पात्रों के क्रियाकलाप में भी युग की झलक रहती है. सामान्यतया उपन्यास में चित्रित घटनाओं में समाज का वर्णन, संस्कार, मानसिकता आदि आ ही जाते हैं. पात्रों के संवादों से उनकी भाषा से भी वातावरण का निर्माण होता है.

5.4 'त्यागपत्र' उपन्यास में देशकाल और वातावरण

5.4.1 'त्यागपत्र' उपन्यास में देशकाल

जैनेन्द्र के 'त्यागपत्र' उपन्यास में देशकाल कितना प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में आया है, यह देखने की कोशिश करते हैं.

अंत:साक्ष्य : इस उपन्यास का नायक प्रमोद है, जो अपनी बुआ मृणाल की व्यथा भरी कहानी कह रहा है. प्रथम पुरुष की शैली में लिखा गया यह उपन्यास आत्मकथात्मक नहीं परंतु जीवनीपरक है. इस उपन्यास में ढूँढ़ने पर भी कहीं स्थान का साफ-साफ जिक्र नहीं मिलता.

इस उपन्यास की कथा आठ अध्यायों में विभाजित है. उससे पहले लेखक ने 'प्रारम्भिक' शीर्षक में लिखा है - "सर एम दयाल जी इस प्रांत के चीफ जज थे और जजी त्याग कर इधर कई वर्षों से हरिद्वार में विरक्त जीवन बिता रहे थे. उनके स्वर्गवास का समाचार दो महीने हुए पत्रों में छपा था. पीछे कागज़ों में उनके हस्ताक्षर के साथ एक पाण्डुलिपि पाई गई, जिसका संक्षिप्त सार इतस्ततः पत्रों में छप चुका है. कहानी में स्थानों और व्यक्तियों के नाम और कुछ ऐसे ही ऐहिक विवरण अनिवार्य न होने के कारण बदल या कम कर दिये गये हैं."

इस प्रकार कहानी के स्थान का पता नहीं चल पाता पर हरिद्वार में शेष जीवन बिताने वाले जज का जिक्र है इसलिए माना जा सकता है कि उत्तरप्रदेश या उत्तराखण्ड ही मुख्य स्थान होगा. इसी प्रांत के इर्दगिर्द कहानी की घटनाएँ घूमती रहती हैं. उदाहरण के लिए प्रथम अध्याय में देखें - 'हम लोगों का असली घर पछाँह की ओर था'... उसके बाद हम लोगों को इधर पूरब की तरफ जाना पड़ा. ... उसके बाद बुआ का ब्याह, ब्याह के बाद पति द्वारा त्यक्ता होने पर अलग स्थान पर कोठरी में रहना, फिर कोयलेवाले की संवेदना से प्रभावित होकर उसके साथ अमुक नगर के अन्य मुहल्ले में रहना जहाँ निचले दर्जे के लोग रहते थे. इस प्रकार जैनेन्द्र ने उपन्यासों में शहरी जीवन को स्वीकार किया और मध्यमवर्गीय समाज की नारियों की दशा को प्रमुखता प्रदान की हैं.

मृणाल कोयलेवाले से भी अलग होकर फिर किसी अन्य स्थान पर डॉक्टर के घर पर छोटे बच्चे बच्चियों को पढ़ाती है, स्कूल में नौकरी भी करती है ... यह सब स्थान नगर के ही हैं. प्रेमचंद की तरह जैनेन्द्र गाँव या अन्य छोटे अंचलों में नहीं गए.

बाह्य साक्ष्य के आधार पर देशकाल का निर्धारण : 'त्यागपत्र' जैनेन्द्र का तीसरा उपन्यास है जो सन् 1937 ई. में प्रकाशित हुआ. अर्थात् - स्वतंत्रता के पूर्व का देशकाल इस उपन्यास में वर्णित है. उपन्यास के वर्तमान में प्रमोद है जो जज के पद से त्यागपत्र देता है किन्तु उसके पीछे का कारण है मृणाल का जीवन जो प्रमोद की स्मृतियों में जिन्दा है अर्थात् उपन्यास में वर्तमान और भूतकाल दोनों हैं. स्वतंत्रता के पूर्व जो सामाजिक स्थितियाँ थी, वे भी इस यथार्थवादी उपन्यास में किसी न किसी प्रकार से अभिव्यक्त हुई हैं. प्रेम होना किसी भी काल में संभव हो सकता है, त्यागपत्र बीसवीं सदी के पूर्वार्ध का उपन्यास है. मृणाल को उसकी सखी शीला के भाई से प्रेम हो जाता है और इस बात का पता चलते ही मृणाल की भाभी उसे बेंत से पीटती है परिवार की लाज बचाये रखने के लिए उसी समय किसी अधेड़ वय के विधुर से मृणाल की मरजी के बिना ब्याह कर दिया जाता है. मृणाल भी अपने प्रेमी के साथ भाग जाना नहीं चाहती और चुपचाप ब्याह कर ससुराल चली जाती है.

- **बोधप्रश्न**
- **संक्षेप में उत्तर दीजिए.**

(1) सामान्य रूप से देशकाल किसे कहा जाता है?

(2) किस प्रकार के उपन्यास में देशकाल का महत्व स्वयं स्पष्ट है?

(3) "देशकाल के बिना पात्रों का व्यक्तित्व स्पष्ट नहीं होता ..." यह कथन किसका है?

(4) देशकाल और वातावरण का सर्वप्रथम ह्रास किसमें देखा जा सकता है?

(5) उपन्यासकार उपन्यास में देशकाल और वातावरण को क्यों महत्व देता है?

5.4.2 'त्यागपत्र' उपन्यास में वातावरण

आइये, अब 'त्यागपत्र' उपन्यास के वातावरण को समझने की कोशिश करते हैं - उपन्यास के कुछ दृश्यों को कथा के साथ देखते हुए. नायिका मृणाल का अपना कहा जा सके ऐसा हमजोली पात्र सिर्फ एक ही है - प्रमोद. प्रमोद उसका भतीजा है जो उससे चार पाँच साल ही छोटा है. दोनों में बनती भी बहुत है. बचपन की कुछ हरकतों और शरारतों का जिक्र उपन्यासकार ने कुछ इस प्रकार किया है - "... वह शहर के बड़े स्कूल में बग्घी में पढ़ने जाती थीं और घर आकर जो नई शरारतें वहाँ होतीं अकेले में सब मुझको सुनाती थीं. आज मास्टरजी को ऐसा छकाया कि प्रमोद! तुझे क्या बताऊँ कहकर वह ऐसा ठहाका मार कर हँसती कि मैं देखता रह जाता." यहाँ बुआ के बग्घी में स्कूल जाने का उल्लेख है जो स्वतंत्रता पूर्व के वातावरण को प्रस्तुत करता है.

बुआ बुद्धिमती होने के बाद उपदेश भी देने लगी थीं. "देखो बेटा, बड़ों का कहना मानना चाहिए. अच्छे लड़के आगे जाकर बड़े आदमी बनते हैं."... इस प्रकार बुआ कभी प्रमोद को बेटा कहती, कभी भैया, कभी कुछ भी और न कहतीं, सिर्फ गदहा कहतीं.

मृणाल का आरंभिक आचरण बहुत ही स्वाभाविक है. उसमें स्कूल की एक लड़की का खुलापन है, चहक है. शीला के भाई के साथ प्रेम सम्बन्ध होना और उस वक्त उसके मन की महक बड़ी सहज है. वह प्रमोद से कहती है कि, "मैं चिड़िया बनना चाहती हूँ." कभी वह प्रमोद के साथ खूब दूर, सबसे ऊँची पतंग उड़ाना चाहती है. इस प्रकार मृणाल जन्म से ही मानो हृदय में मनस्विता लेकर पैदा हुई है. वह स्वयं अपना पथ निर्माण करती है, उसे अपनी ही आँखों से देखती है, और उसे अपने ही पैरों से चलकर, बैसाखी लगा कर

नहीं तय करती है. वह बीसवीं सदी की एक जागृत महिला है.

पर ऐसी नादान निर्दोष मृणाल की नियति की कुटिलता बताकर जैनेन्द्र ने 'त्यागपत्र' को वज्र हृदय को भी हिला देनेवाली ट्रेजेडी बना दिया है. मृणाल के जीवन में आर्थिक कठिनाई नहीं, रोटियों के लाले नहीं, वह तिल तिल कर मरती नहीं, पति के प्रति समर्पित होकर जीवन व्यतीत करना चाहती है. एक पतिव्रता नारी होने के कारण पति से कुछ छिपाना नहीं चाहती पर बाद में पति की उपेक्षिता होकर वह नारकीय जीवन को स्वीकार कर लेने पर बाध्य हो जाती है. बुआ के अनुसार ब्याहता को पतिव्रता होना चाहिए इसलिए वह अपने प्रेमी शीला के भाई के पत्र का और अपने उत्तरवाले पत्र दोनों का जिक्र अपने पति से करती है. तब से वह पति की नज़रों में काँटा बन जाती है और पति से त्यक्ता होकर दूर किसी कोठरी में अकेली रहने लगती है. यहाँ से बुआ की कमनसीबी का प्रारंभ हो चुका था.

पति के घर में मृणाल की मैके के घर की तरह बेंतों से पिटाई भी होती थी जो उसे बहुत असह्य थी. पहली बार जब प्रमोद की माँ ने मृणाल को बेंत से सपासप पीटा था तब भी वह रोई नहीं थी, पर उस दिन से बुआ की हँसी गुम हो गई थी. पति के द्वारा पीटने पर वह प्रमोद से उसका कारण बताती है, "मैं खराब हूँ, इसलिए मारते हैं."

मृणाल को उसका भाई ससुराल वापस जाने के लिए समझाता है, संस्कार देता है, "यह झूठ नहीं है मृणाल कि पत्नी का धर्म पति है. घर पतिगृह है. उसका धर्म, कर्म और उसका मोक्ष भी वहीं है, समझती तो हो बेटा." यहाँ समाज, समाज के बन्धन एवं संस्कारों का वातावरण दिखाई देता है.

आगे पति द्वारा त्याग दिए जाने के बाद एक कोयलेवाले के साथ बुआ अपना जीवन बिताती है, जिसकी करुणा पर वह मरने से बची है. उस कोयलेवाले को वह नहीं छोड़ सकती. प्रमोद को वह जगह बुरी लगती है पर बुआ कहती हैं - "इस कोठरी में मैं न रहूँगी, कोई और रहेगा, ये कोठरियाँ तो आबाद ही रहेंगी. इनमें रहने लायक आदमी बहुत हैं..." ऐसे वातावरण से शायद वेश्याओं के स्थान का आभास होता है किन्तु बुआ वेश्या नहीं है - "वेश्यावृति नहीं करने लगूँगी इसका विश्वास रखो... जिसको तन दिया उससे पैसा कैसे लिया जा सकता है? तन दे सकूँगी, शायद वह अनिवार्य हो, पर लेना कैसा? दान स्त्री का धर्म है."

प्रमोद की माँ का अवसान हो जाने के बाद बुआ के पत्र मिलने पर प्रमोद जब अंतिम बार बुआ से मिलता है, तब उनकी हालत दर्दनाक थी. लेखक द्वारा वहाँ का वर्णन इस प्रकार किया गया है - "जहाँ नगर की सड़ांध रहती है, वहाँ वह रहती हैं. अधेड़ अवस्था की वेश्याएँ, बेकार मजदूर, पेशेवर भिखमंगे, कानून की आँख और चंगुल से बचकर छिपे-उघड़े काम करनेवाले उचक्के लोगों के रहने की वह जगह थी. ... बुआ की अवस्था के लिए पास में बैठे लोग चिंतित थे, पर उनकी बातों से खुलेपन से जी में मानो मेरे मितली चढ़ती थी. बुआ के प्रति उनका आदर प्रकट था, पर उनके लिए सभी 'तू' और 'इस' का व्यवहार करते थे. हया शर्म वहाँ न थी और बुआ की खाट के पास भी उनसे भद्दे इशारे हुए बिना न रहते थे. ..." यह वर्णन जो प्रमोद अपनी लेखनी से करता है, वह सचमुच नारकीय वातावरण खड़ा कर देता है निचले दरजे के लोगों का समाज यहाँ स्पष्ट हो रहा है.

बुआ अंत में प्रमोद से कुछ सहायता चाहती है, वह समझाती है - "खूब कमा और कमाकर सब इस गड्ढे में ला पटका कर. रुपये के जोर से यह नर्ककुण्ड स्वर्ग बन सकता है, ऐसा तो मैं नहीं जानती. फिर भी कुछ न कुछ काम तो आ सकता है ..." इस प्रकार जिस नर्ककुण्ड की बात करती है उन लोगों की आर्थिक सहायता के लिए वह प्रमोद से कहती है पर प्रमोद की समझ में नहीं आता. इस प्रकार उस नगर के मुहल्ले में रहनेवालों की आर्थिक स्थिति भी दर्शाई गई है.

उपन्यास के अंत में बुआ की याद प्रमोद के भीतर अंगार-सी जलती है जिनका जीवन कुछ हो, ऊपर उठती लौ की तरह जलता रहा. एक दिन फिर खबर आती है कि बुआ मर गई. और प्रमोद प्रायाश्चित के रूप में अपनी जजी छोड़ता है, अपना त्यागपत्र दाखिल करता है. अंत में त्यागपत्र के नीचे हस्ताक्षर में उसी सर एम. दयाल का नाम है जिससे उपन्यास का प्रारंभ होता है.

- **बोध प्रश्न**
- **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए.**

(1) ....नायिका मृणाल का अपना कहा जा सके ऐसा हमजोली पात्र है.

(2) .... नहीं करने लगूँगी इसका विश्वास रखो.

(3) बुआ की अवस्था के लिए .... लोग चिंतित थे.

(4) मृणाल प्रमोद से कहती है कि मैं .... बनना चाहती हूँ.

(5) बुआ के अनुसार ब्याहता को ....होना चाहिए.

5.5 सारबिंदु

- सामाजिक और यथार्थवादी उपन्यास से मनोवैज्ञानिक उपन्यास में देशकाल और वातावरण भिन्न होता है.
- देशकाल और वातावरण प्रत्यक्ष रूप से नहीं पर संवादों के माध्यम से प्रस्तुत हुआ है.
- देशकाल और वातावरण उपन्यास में एक आवश्यक अंग होते हुए भी आज संपूर्ण उपन्यास विधा के लिए अपरिहार्य अंग नहीं रह गये हैं.

5.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दीजिए.**

(1) पति द्वारा त्याग दिए जाने के बाद एक कोयलेवाले के साथ बुआ अपना जीवन क्यों बिताती है?

(2) प्रमोद मृणाल से कितने वर्ष छोटा था?

(3) बुआ प्रमोद को कौन कौन से संबोधनों से बुलाती थी?

(4) 'त्यागपत्र' किस सदी का उपन्यास है?

(5) क्या 'त्यागपत्र' में देशकाल प्रत्यक्ष रूप में पाया जाता है?

- **विस्तार से उत्तर लिखिए.**

(1) उपन्यास को समझने के लिए देशकाल और वातावरण का निर्धारण कहाँ तक उपयोगी है? - विस्तार से समझाइए.

(2) 'मृणाल बीसवीं सदी की एक जागृत महिला है.' सोदाहरण समझाइए.

(3) 'त्यागपत्र' उपन्यास में देशकाल और वातावरण को रेखांकित कीजिए.

(4) सामाजिक और यथार्थवादी उपन्यास से मनोवैज्ञानिक उपन्यास में देशकाल और वातावरण किस प्रकार भिन्न होता है?

(5) कोयलेवाले के साथ जहाँ बुआ रहती थी उस कोठरी का वर्णन कीजिए.

- **संक्षेप में उत्तर दीजिए.**

(1) समाज के बन्धन और संस्कारों का एक उदाहरण प्रस्तुत कीजिए.

(2) अंतिम बार प्रमोद बुआ से मिलता है तब उस स्थान का नारकीय वातावरण अपने शब्दों में लिखिए.

(3) क्या आज के युग में मृणाल जैसी नारी संभव है? चर्चा कीजिए.

(4) मृणाल के स्कूल के दिनों का वर्णन कीजिए.

(5) "वेश्यावृति नहीं करने लगूँगी इसका विश्वास रखो" ऐसा मृणाल किस संदर्भ में कहती है?

- **टिप्पणी लिखिए.**

(1) बुआ का आरंभिक आचरण

(2) बुआ की नियति की कुटिलता

(3) उपन्यासों में देशकाल और वातावरण का महत्व

(4) जैनेन्द्र के उपन्यासों में देशकाल और वातावरण

(5) परिवेश के आधार पर 'त्यागपत्र' उपन्यास की समीक्षा

5.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- हिन्दी उपन्यास - सं. सुषमा प्रियदर्शिनी - राधाकृष्ण प्रकाशन
- 'त्यागपत्र' उपन्यास - जैनेन्द्रकुमार - पूर्वोदय प्रकाशन - 1995
- हिन्दी उपन्यास एक अंतर्यात्रा - डॉ. रामदरश मिश्र - राजकमल प्रकाशन
- आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान - डॉ. देवराज उपाध्याय
- जैनेन्द्र के उपन्यासों में मनोविज्ञान - डॉ. देवराज उपाध्याय

इकाई 6 'त्यागपत्र' : भाषा-शैली

रुपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 भाषा-शैली

6.3.1 भाषा का अर्थ एवं स्वरूप

6.3.2 शैली का अर्थ एवं स्वरूप

6.4 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषा-शैली

6.4.1 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषा

6.4.1.1 शब्दगत विश्लेषण

6.4.1.2 वाक्यगत विश्लेषण

6.4.2 त्यागपत्र उपन्यास की शैली

6.4.2.1 संवाद शैली

6.4.2.2 प्रश्नात्मक शैली

6.4.2.3 विचारात्मक शैली

6.4.2.4 आत्मकथात्मक शैली

6.5 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषागत विशेषताएँ

6.6 सारबिंदु

6.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

6.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

6.1 उद्देश्य

हिन्दी उपन्यास 'त्यागपत्र' की यह छठी इकाई है. आपने इसके पहले की पाँच इकाइयों में लेखक परिचय एवं उपन्यास की कथावस्तु, पात्र एवं चरित्र-चित्रण, 'त्यागपत्र' उपन्यास में मनोविज्ञान, संवाद एवं कथोपकथन, देशकाल एवं वातावरण के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी प्राप्त की है. प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप :-

- भाषा के अर्थ एवं स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे.
- जैनेन्द्र के भाषा कौशल को समझ सकेंगे.
- 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषा-शैली का विवेचन कर सकेंगे.
- जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' की भाषा-शैली की विशेषताओं को जान सकेंगे.

6.2 प्रस्तावना

यह स्वाभाविक-सा प्रश्न मन में उत्पन्न होना निश्चित है कि भाषा-शैली क्या होती है ? 'भाषा-शैली' उपन्यास का एक तत्व होता है, जिसके अन्तर्गत कथाकार द्वारा प्रयुक्त भाषा का विस्तृत विवेचन किया जाता है. आइये, हम भाषा-शैली के संबंध में विस्तार से ज्ञान प्राप्त करते हैं. भाषा-शैली वस्तुतः दो शब्दों से मिलकर बना है - भाषा और शैली. भाषा के अन्तर्गत भाषिक इकाइयों की चर्चा की जाएगी वहीं शैली के अन्तर्गत कथाकार द्वारा प्रयुक्त शैली का विवेचन किया जाएगा. किसी भी उपन्यास की तात्विक दृष्टि से समीक्षा के संदर्भ में भाषा-शैली भी एक तत्व के रूप में है. अतः प्रस्तुत उपन्यास की भाषा-शैली के संबंध में पर्याप्त

ज्ञान अपेक्षित है. अतः 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषा-शैली का विवेचन व संबंधित समझ को विकसित करना आवश्यक है. चूँकि प्रत्येक रचनाकार की अपनी विशिष्ट भाषा प्रयोग और शैली होती है. अतः रचनाकार के भाषा कौशल को समझना अत्यंत आवश्यक है.

6.3 भाषा-शैली

6.3.1 भाषा का अर्थ एवं स्वरूप

भाषा वह रचनात्मक माध्यम है जिससे रचनाकार अपने जीवनगत अनुभवों को कथानक के कलेवर (स्वरुप) में सहज संप्रेष्य करने का प्रयास करता है. भाषा वस्तुतः विचारों एवं भावों को पाठक तक पहुँचाने का कार्य करती है. रचनाकार का व्यक्तिगत अनुभव एवं रुचि उसके भाषा प्रयोग को निर्धारित करती है. भाषा के द्वारा रचनाकार अपने लेखन के उद्देश्य को पूर्ण करता है. कथानक, पात्र, परिवेश के अनुकूल भाषा अपनी सार्थकता प्राप्त करती है. अप्रासंगिक भाषा अपने कथ्य को पाठक तक पहुँचाने में असफल सिद्ध होती है. अतः रचनाकार प्रसंगानुकूल भाषा के अनायास (बिना प्रयत्न) प्रयोग को महत्व देता है. प्रसंग एवं काल के अनुरुप भाषा में क्लिष्टता (कठिनता) अथवा सरलता दृष्टिगत (दिखाई) होती है.

जहाँ कवि की भाषा सांकेतिकता को लिए होती है वहीं कथाकार के लिए भाषा प्रयोग की अनेक संभावनाएँ होती हैं. कथाकार अपने विचारों, भावों, दर्शन आदि को व्यक्त करने के लिए भाषा को ही अपनाता है. भाषा का समर्थ प्रयोग रचनाकार की कृति को महत्व प्रदान करता है.

प्रभावी भाषा पाठकीय चेतना को गहराई तक प्रभावित करती है एवं वह कथ्य को, लेखक के उद्देश्य को आत्मसात् कर पाने में समर्थ होता है.

भाषा-शैली सरस, रोचक और स्वाभाविक होनी चाहिए. वातावरण की अनुभूति का ध्यान रखना तो आवश्यक है ही. भाषा ऐसी हो जो वस्तु, पात्र और चरित्र तथा कथावस्तु के लक्ष्य को भली प्रकार व्यक्त कर सके. सजीवता और व्यावहारिकता उसका सबसे महत्वपूर्ण गुण है. भाषा में प्रसंगानुकूल शब्दों, वाक्यों, मुहावरों आदि का ध्यानपूर्वक प्रयोग आवश्यक है.

उपन्यास की भाषा उसके कथानक पर निर्भर करती है. कथानक के परिवेश, पात्र आदि भाषा को निर्धारित करते हैं. समसामयिक कथानकों के अनुरुप भाषा समसामयिक जीवन की भाषा होगी. प्राचीन परिवेश के कथानकों की भाषा में वर्गानुसार उच्च व अन्य वर्ग के पात्रों की भाषा होगी. पात्रगत अन्तर के कारण भाषागत अन्तर भी सहज दृष्टिगत होता है. रचनाकार की कुशलता उसके भाषा प्रयोग में ही निहित होती है. उच्चवर्ग के पात्रों की भाषा में परिनिष्ठता अधिक होगी तो निम्न वर्ग के पात्रों की भाषा में उनके परिवेश के अनुसार देशज शब्दों से युक्त मिश्रित भाषा का प्रयोग दृष्टिगत होगा. मुस्लिम कथानकों अथवा परिवेश के पात्रों की भाषा में उर्दू शब्दों की अधिकता सहज रूप में रेखांकित की जा सकती है.

कथानक की जटिलता व सरलता भी भाषा को प्रभावित करती है. सूक्ष्म भावों की अभिव्यक्ति की भाषा प्रतीकात्मक अधिक होगी उसमें दार्शनिकता का पुट अधिक होगा. इसके विपरीत स्थूल कथानकों की भाषा स्थूल होगी. भाषा मुख्यतः कथानक पर आधारित होती है.

कथा भाषा की दृष्टि से हम हिन्दी उपन्यास परंपरा का अवलोकन करें तो पाते हैं कि काल सापेक्ष कथानकों में, विषय वस्तु में परिवर्तन हुआ है और उसी के अनुरुप उपन्यास के शिल्प में परिवर्तन हुआ है और रचनाकारों ने अपनी कथ्य अभिव्यक्ति का अपना नया मुहावरा गढ़ा है. जैसे-जैसे जीवन जटिल होने लगा वैसे-वैसे ही अभिव्यक्ति के स्वरुप में भी रचनाकारों ने विकास किया है. अभिव्यक्ति सरल से जटिल अथवा सूक्ष्म होने लगी है. इस प्रकार रचनाकारों ने अपनी विशिष्ट लेखन शैली का विकास किया है और अभिव्यक्ति को

विशिष्ट बनाया है.

प्रेमचन्द के बाद उपन्यास परंपरा में जैनेन्द्र अपनी विशिष्ट एवं नई धारा के उपन्यास लेखन के लिए जाने गये हैं. जैनेन्द्र ने रचनाशिल्प को नई दिशा प्रदान की है. पूर्व के भाषा एवं शिल्प को अस्वीकार करते हुए अन्तर्मन की अभिव्यक्ति के अनुकूल विशिष्ट कथा भाषा का निर्माण किया, जिसे जैनेन्द्रीय भाषा भी कहा गया है.

6.3.2 शैली का अर्थ एवं स्वरूप

'शैली' शब्द का विविध अर्थों में प्रयोग होता है. स्थान और कालभेद के साथ-साथ इस शब्द के अर्थ में भी परिवर्तन हुआ है. इतना ही नहीं भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भी अपनी-अपनी तरह से इस शब्द को परिभाषित किया है. हिन्दी में हम जिस शैली शब्द का प्रयोग करते हैं वह मोटे रुप से दो शब्दों - अंग्रेजी के 'स्टाइल' और संस्कृत के 'रीति' से संबंध रखता है.

भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने 'शैली' को परिभाषित करने का प्रयास करते हुए शैली के विविध रुपों पर प्रकाश डाला है. इन परिभाषाओं के अनुसार शैली की व्याप्ति स्वभाव, चरित्र, आचरण तक में स्वीकार की गई है. शैली की प्राचीन और अर्वाचीन परिभाषाओं में शैली की व्याप्ति के बारे में भिन्न-भिन्न मत हैं.

प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश के अनुसार - "शैली' शब्द का संबंध व्यक्ति के व्यक्तित्व की अपेक्षा रचना कौशल की विशिष्टता से अधिक है. इसके अनुसार शैली का अर्थ - चाल, रीति, प्रणाली, वाक्य रचना की विशिष्टता आदि है." (रामचन्द्र वर्मा, 'प्रामाणिक हिन्दी शब्दकोश')

डॉ. नगेन्द्र इस संबंध में लिखते हैं - "जिस प्रकार स्वभाव की अभिव्यक्ति का मार्ग रीति है, उसी प्रकार शील (स्वभाव) की अभिव्यक्ति पद्धति शैली भी है और उसके व्युत्पत्तिलब्ध अर्थ में भी वैयक्तिक तत्व मूलतः वर्तमान है."(भारतीय काव्यशास्त्र की भूमिका, पृ. 40)

अतः स्पष्ट है कि शैली का संबंध कथाकार के व्यक्तित्व के साथ-साथ भावाभिव्यक्ति एवं भाषा के विशेष परिधान से है. प्रत्येक कथाकार का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व होता है या होना चाहिए उसी प्रकार उसकी एक स्वतंत्र शैली भी होती है अथवा होना अनिवार्य है. यह उसके विचार, भाव, कल्पना, संस्कार, स्वभाव, प्रतिभा और जीवनदृष्टि के अनुरुप अभिव्यक्ति पाती है.

रचनाकार कोई हो, रचना किसी भी विधा की हो उसका माध्यम शब्द और अर्थ का समुच्चय ही है. भाषाविज्ञान की दृष्टि से भाषा की परिभाषा अलग है, किन्तु उसका रचनात्मक स्वरुप साहित्य में ही खासकर उपन्यास में दिखलाई पड़ता है. भाषा के इस रचनात्मक स्वरुप का अलग-अलग रचनाकार अलग-अलग ढंग से प्रयोग करते हैं, वे भाषा की सभी संभावनाओं का जो चयन, विचलन आदि में व्यक्त होती है प्रयोग कर लेना चाहते हैं. किसी रचनाकार के द्वारा भाषा का रचनात्मक प्रयोग उसकी पहचान बनता है. यही कारण है कि हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों को पढ़कर हम तुरंत यह पहचान लेते हैं कि यह द्विवेदी जी की रचना है. वृन्दावनलाल वर्मा, शिवानी आदि की रचनाओं को पढ़कर भी उन्हें पृथक्-पृथक् पहचाना जा सकता है. किसी रचनाकार की भाषा-शिल्प की पहचान करानेवाला तत्व ही उसकी शैली है. इस दृष्टि से शैली रचनाकार की पहचान है.

शैली वह तत्व है जो एक व्यक्ति के लेखन को दूसरे के लेखन से भिन्न बना देता है. वह लेखक के विचारों की वेशभूषा नहीं शरीर में त्वचा की तरह अभिन्न है. प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति लेखक के व्यक्तित्व से जुड़ी होती है. लेखक की विद्वत्ता, लेखक का जीवनदर्शन आदि भाषा की विशेष शैली में प्रतिफलित होता है.

भाषा और शैली के सूक्ष्म विवेचन के उपरांत आप समझ चुके होंगे कि भाषा और शैली का अर्थगत स्वरूप किस प्रकार का होता है. भाषा का विशेष प्रयोग ही शैली के रूप में रूपायित होता है. हम पहले भाषागत दृष्टि से जैनेन्द्र के उपन्यास 'त्यागपत्र' का अनुशीलन करेंगे. तत्पश्चात् शैलीगत विशेषताओं को उदाहरणों के माध्यम से रेखांकित करेंगे.

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिख्रि प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए.**

(1) भाषा-शैली क्या है?

(अ) उपन्यास का तत्व (ब) उपन्यास का कथ्य

(स) उपन्यास का वातावरण (द) उपन्यास का देशकाल

(2) भाषा-शैली के अन्तर्गत होता है?

(अ) भाषा का विस्तृत विवेचन (ब) भाषा का जटिल विवेचन

(स) भाषा का सामाजिक विवेचन (द) भाषा का सामान्य विवेचन

(3) भाषा के अन्तर्गत विश्लेषण होता है?

(अ) भाषिक इकाइयों का (ब) सामाजिक इकाइयों का

(स) दोनों का (द) इनमें से किसी का नहीं

(4) उपन्यास की भाषा निर्भर करती है?

(अ) कथानक के परिवेश पर (ब) कथानक के पात्र पर

(स) लेखक की व्यक्तिगत रुचि पर (द) इन सभी पर

(5) रचनाकार की कुशलता निहित होती है?

(अ) भाषा प्रयोग में (ब) व्यक्तित्व पर

(स) पात्र में (द) इनमें से कोई नहीं.

6.4 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषा-शैली

6.4.1 त्यागपत्र उपन्यास की भाषा

रचनाकार की विशिष्टता उसके शब्द प्रयोग में दृष्टिगत होती है. रचनाकार जन प्रचलित सभी शब्दों का प्रसंगानुकूल प्रयोग कर अपने कथ्य और भाषा को सशक्त रूप से अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है.

6.4.1.1 शब्दगत विश्लेषण

जैनेन्द्र के त्यागपत्र उपन्यास में भी शब्दगत विविधता का प्रयोग हुआ है. शब्दों का सहज प्रयोग भावों एवं विचारों के उद्घाटन में सहायक सिद्ध होता है. जैनेन्द्र की भाषा में शब्द प्रयोग देखने से ज्ञात होता है कि उनके शब्द प्रयोग में विविधता है. शब्द प्रयोग के अन्तर्गत तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, उर्दू शब्द, देशज शब्द, युग्म शब्द, अंग्रेजी शब्द का प्रयोग हुआ है-

- **तत्सम शब्द**

अपवाद, अवस्था, दायित्व, कोमल, संरक्षण, कुशल, अनुशासन, गृहिणी, सावधान, कदाचित्, विधाता, सदा, बुद्धिमती, स्वभाव, अविचार, असमय, व्यवस्था, अतिरिक्त, अत्यंत, विनोद, विवाह,

शावक, ग्रहण, राक्षस, प्रमोद, स्तब्धभाव, दु:ख, उत्सुकता, प्रश्न, लज्जित, चैतन्य, जगत, उत्साहित, अपेक्षित, विशेष, परिवर्तन, शारीरिक, अरुचि, ग्रन्थि, भावुकता, विद्यार्थी, आश्चर्य, निर्णय, आश्रय, मृणाल, प्रकृतिस्थ, पुस्तक, प्रवृत्त, काठिन्य, कन्या, अवश, कण्ठ, आलोचना, स्वीकार, कर्तव्य, व्यग्रता, उत्तर, निरर्थक, अकेला, अहेतुक, त्रास, ज्ञानीजन, कल्याण, चेष्टा, प्रयत्न, नीरव, अखिल, सृष्टि, उत्पन्न, स्वयं, व्यर्थ, कृत्रिम, क्षणिक, समाधान, कर्मफल, अज्ञात, आत्मा, निष्फल, इष्ट, अमृत, स्वेच्छा, अनुकूल, प्रवंचना, अप्रतिरोध्य, साभार, सत्य, दोष, दुश्चरित्र, निषिद्ध, देहान्त, गर्भवती, शिथिल, निष्क्रिय, यथाविधि, अधिकार, समर्पित, विस्मय, धर्म, पुरुष, अस्तित्व, रुपया, अभियोग.

- **तद्भव शब्द**

  आँख, गदहा, मुँह, ब्याह, जनम, आग, गाँठ, पूरब, पीली, गिरस्ती, बड़भागिन

- **उर्दू शब्द**

  सिलसिला, कीमत, खूब, सहमी, तरफ, शाम, वक्त, चुपचाप, जवाब, मालूम, बेबात, आसमान, मौज, प्यार, रोज, आवाज, बेबस, जोर, फेंक, बदन, बेहद, निगाह, मतलब, चेहरा, भारी, नौकर, कामचोर, खुद, बेचारी, जुर्माना, जल्दी, तबीयत, मुस्करा, चीजों, बन्दूक, आसानी, कागज, खत, लिफाफा, जरूरत, शादी, दिल, पैगाम, पुर्जे, दवाई, सख्ती, हजारों, याद, शिकायत, सफर, इंतजाम, नाराजगी, फिकर, अव्वल, आइंदा, सबक, तकलीफ, फौरन, इतवार, बेशक, अकीद, ख्वाबगाह.

- **अंग्रेजी शब्द**

  ओवरसियरी, स्कूल, मोटर, पैकेट, कोट, सेविन्थ, क्लास, माई डियर, मिनट, आइडियल, कॉलेज, अंडरग्रेजुएट, पोजिशन, डॉक्टर.

- **युग्म शब्द**

  पाप-पुण्य, कीरम-काँटे, कहे-सुने, इधर-उधर, सीने-पिरोने, झाड़ने-बुहारने, आज-कल, अन्न-जल, आबोहवा, खाना-पीना, आना-जाना, चिन्ता-क्लेश, थोड़ी-बहुत, रगड़-झगड़, छोटी-मोटी, माता-पिता, घी-दूध, छोटे-मोटे, रीति-नीति, गुम-सुम, क्षुधा-तृषा, राग-द्वेष, मान-मोह, सोच-विचार, साग-भाजी, बात-चीत, वाद-विवाद, उथल-पुथल, पढ़ा-लिखा, तोड़ना-फोड़ना, नाते-रिश्ते, मिलने-जुलने, हंसी-मजाक, खेल- कूद, पूछा-ताछा, पीट-पाट, खोज-खबर, उलझते-सुलझते, आस-पास.

- **पुनरुक्त शब्द**

  तरह-तरह, छोटे-छोटे, डरते-डरते, जाते-जाते, फूट-फूट, सच्ची-सच्ची, घूर-घूर, धीमे-धीमे, हल्के-हल्के, ज्यों-ज्यों, क्या-क्या, टहलते-टहलते, जगह-जगह, अच्छा-अच्छा, देखते-देखते, कहते-कहते, सच-सच, घर्र-घर्र, बूंद-बूंद, किनारे-किनारे.

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि जैनेन्द्र की भाषा में तत्सम शब्दों की अधिकता है तो उर्दू शब्दों का प्रयोग भी समुचित रुप में हुआ है. युग्म शब्दों का प्रयोग प्रसंग के अनुकूल हुआ है. तद्भव शब्दों व अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी थोड़ा बहुत हुआ है.

6.4.1.2 वाक्यगत विश्लेषण

किसी भी रचना की भाषिक योजना के अन्तर्गत शब्द के बाद बड़ी इकाई वाक्य है. शब्दों की सार्थकता वाक्य में निहित होती है. इस दृष्टि से वाक्य योजना का विश्लेषण भी पर्याप्त अपेक्षित है. वाक्य की दृष्टि से विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि जैनेन्द्र के त्यागपत्र उपन्यास में सरल, संयुक्त व मिश्र वाक्यों का प्रयोग हुआ है.

- **सरल वाक्य**

वह थोड़ी देर मुझे देखतीं. वह दृष्टि अनबूझ होती थी. मानो मैं उन्हें दीख ही न रहा होऊँ. मुझसे आर पार होकर जाने वह क्या देख रही हैं. एकाएक शिथिल पड़कर कुछ लजाकर कहतीं-"चल रे, पतंग से बालक गिर जाते हैं."

..... मेरी कुछ समझ में न आ रहा था. मैं सकपकाया-सा खड़ा था. थोड़ी देर बाद मैं साहसपूर्वक उस कोठरी में गया.

इसके बाद किसी विशेष बात होने की मुझे याद नहीं. अगले रोज फूफा आए. मेरा मन उनकी तरफ खुला नहीं. न ही उन्होंने ही मुझ से कुछ पूछा. बुआ की तबीयत कुछ विशेष गिर गई थी.

.....मैं उन्हें अपने कन्धे से लगी-लगी ही मोटर तक ले गया. फूफा ने बाबू जी को प्रणाम किया. वह मोटर में बैठ गए. मोटर ने घर्र-घर्र की. फूफा ने समोद भाव से कहा- "प्रमोद साहब ! आदाब अर्ज है." मैं मानो घूँट पीता हुआ खड़ा था.

- **संयुक्त वाक्य**

मेरी माँ का बुआ सदा डर मानती थीं और उन्हें मेरे सामने सदा 'तेरी माँ', कहा करतीं.

वह बेबात हँसती थीं और बेबात मुझे पकड़कर इधर से उधर खींचती थीं.

इस पर उन्होंने अपनी चुटकी से दबी कागज की गाँठ को खोला और दोनों हाथों के जोर से उस छोटे कागज के हजारों टुकड़े कर डाले.

- **मिश्र वाक्य**

मैंने उस समय यह भी अनुभव किया कि उन्हें अब एकांत उतना बुरा नहीं लगता.

मैं बाहर से घर में आया था, देखता हूँ कि माँ कहीं झपटी जा रही हैं.

वह दिन था कि फिर बुआ की हँसी मैंने नहीं देखी.

उनको देखकर जी हो आया कि मैं क्यों उनके गले नहीं लग जाऊँ और कहूँ - माँ! माँ !'

मैं चाहता था कि वह जान जाएँ कि मैं बच्चा नहीं हूँ.

बुआ को यह बिलकुल मालूम नहीं है कि मैं किस आसानी से मर सकता हूँ.

मैंने सोचा कि मैं भी कभी ऐसी सुंदर अंग्रेजी लिख सकूँगा या नहीं.

मैंने प्रण किया था कि मैं नहीं रोऊँगा, नहीं रोऊँगा.

- **संक्षिप्त वाक्य**

आदाब अर्ज है. मैं अब साँस लूँगा. बहुत कह चुका. शायद नहीं. इससे क्या फायदा है. ऐसे मन हल्का तो होगा. जिन्दगी है चलती जाती है. मैं यह सब देखता रह गया. बुआ कुछ भी नहीं बोलीं. बुआ नीचे देखने लगीं.

6.4.2 त्यागपत्र उपन्यास की शैली

जैनेन्द्र के उपन्यास में शैलीगत विशिष्टता को भी रेखांकित किया जाना आवश्यक है. इसके माध्यम से जैनेन्द्र की भाषागत विशेष शैली की पहचान करने में सुगमता होगी. शैली के अन्तर्गत जैनेन्द्र के 'त्यागपत्र' उपन्यास में भाषा के विविध शैलीगत प्रयोग दिखाई देते हैं. संवाद शैली, प्रश्नात्मक शैली, आत्मकथात्मक शैली आदि.

6.4.2.1 संवाद शैली

किसी भी रचना में पात्रों की क्रियाओं को नाटकीय और प्रभावी बनाने के लिए वार्तालाप

या संवाद रचना का अविच्छिन्न अंग होता है. संवाद रचना की नीरसता को तोड़कर उसे सरस बनाते हैं. रचना का वातावरण-विधान एवं पात्रों की मनोवैज्ञानिकता के साथ-साथ पात्रों की विचार प्रक्रियाओं का दायित्व संवाद पर ही निर्भर है. प्रेमचन्द संवाद के महत्व को रेखांकित करते हुए लिखते हैं कि "उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो और लेखक कलम से जितना ही कम लिख जाय उतना ही अच्छा है. इस संबंध में इतना ही ध्यान रखना आवश्यक है कि संवाद लघु एवं प्रभावी हों. बातचीत का स्वाभाविक परिस्थितियों के अनुकूल और सूक्ष्म होना आवश्यक है." (कुछ विचार, पृ.55)

मैंने कहा- "मैं प्रमोद हूँ, बुआ."

वह नहीं बोलीं.

मैं चुप रहा. फिर बोला- "मैं जाऊँ!"

मैंने कहा-"बुआ."

उन्होंने सुन लिया.

मैंने कहा-"बाबू जी तो चले गये, बुआ. तुम्हारी याद लेकर गए. बताओ, मेरे अब कौन है? एक माँ हैं, दूसरी तुम....."

6.4.2.2 प्रश्नात्मक शैली

प्रश्नात्मक शैली जैनेन्द्र की विशेष शैली के रूप में रेखांकित की जा सकती है.

जैनेन्द्र ने यथास्थान प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग भी किया है. प्रश्नात्मक शैली प्रश्न के माध्यम से पाठकों के समक्ष अनेक विचार के लिए खुले अवसर प्रदान करती है.

"आँखें फाड़कर क्या देख रहा है, प्रमोद? बुआ से लेकर झाड़ू खुद नहीं लगाई जाती? आजकल के लड़के बस कामचोर होते हैं."

"कहाँ गया वह बंसी? नहीं है? नहीं? सारा काम बेचारी लड़की को करना पड़ता है !

"अब तो यहीं रहोगी न बुआ? जल्दी तो नहीं जाओगी?"

वह प्रश्न क्या यों टाले टल सकता है? वह गाँठ है जो बँधी कि खुल नहीं सकती, टूटे तो टूट भले ही जाए, लेकिन टूटना कब किसका श्रेयस्कर है?

"क्या कहती हो बुआ? वह मारते हैं."

"हाँ मारते हैं."

"बेंत से मारते हैं?"

"हाँ, बेंत से मारते हैं."

बाबूजी ने कहा-"मृणाल, कहो कैसी तबीयत है?"

"अच्छी है."

"यहाँ शायद तुम्हारा मन नहीं लगता मालूम होता है?"

मृणाल चुप.

6.4.2.3 विचारात्मक शैली

उपन्यास वह माध्यम है जहाँ रचनाकार के लिए अभिव्यक्ति के व्यापक आयाम खुले रहते हैं. रचनाकार अपने दर्शन एवं विचारों को यथास्थान व्यक्त करने का प्रयास करता है. कथ्य के अनुरूप जहाँ विचार अभिव्यक्ति का अवसर होता है रचनाकार विचारों की अभिव्यक्ति

का अवसर नहीं खोता है. जैनेन्द्र का व्यक्तित्व दर्शनवादी रहा है अत: उनके कथ्य में विचारों का आना स्वाभाविक ही है. वे अपने पात्रों के माध्यम से विचार और दर्शन की सहज अभिव्यक्ति करते हैं. जिसे हमें शैली के रुप में पहचान सकते हैं.

सब भाग्य दीखता है और वह भाग्य चीन्हा नहीं जाता.

विवाह की ग्रन्थि दो के बीच की ग्रन्थि नहीं है, वह समाज के बीच की भी है. चाहने से वह क्या टूटती है? विवाह भावुकता का प्रश्न नहीं, व्यवस्था का प्रश्न है. वह प्रश्न क्या यों टाले टल सकता है? वह गाँठ है जो बँधी कि खुल नहीं सकती, टूटे तो टूट भले ही जाए, लेकिन टूटना कब किस का श्रेयस्कर है?

धन न चाहूँ, मन न चाहूँ. धन मैल है. मन का दर्द अमृत है. सत्य का निवास और कहीं नहीं है. उस दर्द की साभार स्वीकृति में से ज्ञान की और सत्य की ज्योति प्रकट होगी. अन्यथा सब ज्ञान ढकोसला है और सब सत्य की पुकार अहंकार है.

जिन्दगी है, चलती जाती है. कौन किसके लिए थमता है? यह तो चक्कर है. गिरता गिरे, उसे उठाने की सोचने में तुम लगे कि पिछड़े. इससे चले चलो, चले चलो. पर इस चला चली के चक्कर में अकस्मात् मुझे और भी पता लगा. वह यह कि अब बुआ उस जगह नहीं हैं.

6.4.2.4 आत्मकथात्मक शैली

'मैं' या आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग रचनाकार करता है. जैनेन्द्र ने भी कथ्य के अनुरुप इस शैली का प्रयोग किया है. जिसे हम उनकी रचनात्मक भाषागत शैली के रुप में रुपायित कर सकते हैं. मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में यह सहज रुप में देखा जा सकता है.

मैंने प्रण किया था कि मैं नहीं रोऊँगा, नहीं राऊँगा. मैं नहीं रोया. नहीं रोया. मुझे बेहद गुस्सा मालूम होता था कि मैं क्यों कुछ उत्पात नहीं किए डाल रहा हूँ. मेरे मन में हो रहा था कि कोई मुझसे झगड़ता क्यों नहीं है. इससे, उससे किसी न किसी से टक्कर लेने को जी होता था. बुआ! उहं, वह जाएँ तो जाएँ, मेरा उनसे कुछ मतलब नहीं है. मेरा किसी से कुछ मतलब नहीं है. मैं अकेला सब कुछ निबट लूँगा. हाँ, अकेला, अकेला. मुझसे मत बोलो, मैं नहीं याद करूँगा बुआ को. वह क्यों चली जा रही हैं? मेरे रहते क्यों चली जा रही हैं? और वह फूफा कौन बला हैं कि ले जाएँगे? - ले जाएँ, तो ले जाएँ. जाएँ अरे टलें तो.

मैं अब साँस लूँगा. बहुत कह चुका. मेरा मन दर्द से भरा हुआ है, यों तो यह कहानी आरम्भ की है तो पूरी भी करनी होगी. जीना एक बार शुरु करते मौत आकर छुट्टी न दे दे तब तक जीना ही होता है. बीच में छुट्टी कहाँ? पर मैं जरा साँस लेना चाहता हूँ.

समग्रतः जैनेन्द्र ने अपने भाषागत विशेष प्रयोग से अपनी विशिष्ट शैली निर्मित की है जो प्रस्तुत उपन्यास में सहज देखी जा सकती है.

6.5 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषागत विशेषताएँ

जैनेन्द्र की भाषा पर टिप्पणी करते हुए आलोचक लिखते हैं, 'यदि हम जैनेन्द्र की कथा भाषा के सार्थक संगठन को देखना चाहें तो 'त्यागपत्र' जैसी आरंभिक कृति ही अधिक महत्वपूर्ण या उल्लेखनीय जान पड़ती है. यहां यथार्थ से निरंतर मुठभेड़ भी है - भीतर की चिंताएँ बाहर की चुनौतियों से निरन्तर टकरा रही हैं और पीड़ा या वेदना का दर्शन निरा विचार नहीं है जिसकी कारण कार्य व्याख्या की जा रही हो- सम्प्रेषित होने की सहजता और अनुभव की अद्वितीयता के बीच तनाव यहाँ रचनात्मक भाषा के लिए संभावनाएँ बनाए रखता

है. मृणाल ने अपने से लड़ने और यथार्थ को सहने की जो भाषा उपलब्ध की है उसके कसाव, संक्षिप्तता, तनाव, लय को समझते हुए हम इस महत्वपूर्ण कृति को आंतरिक, एकाग्रता या पूर्णता के साथ समझ सकते हैं.'

जैनेन्द्र का चिन्तन गहरा है, जो हमें प्राचीन ऋषियों का स्मरण कराता है. चिन्तन के अनुरूप भाषा सहज तथा अकृत्रिम है. शैली अनगढ़ तथा वेगवती है. वाक्य विन्यास अपने ढंग का है. वाक्य छोटे हैं. आवश्यकता पड़ने पर बड़े भी हैं. शब्द चयन के प्रति आग्रह विशेष नहीं है. व्याकरणात्मक दोष उनमें मिल जाते हैं. परंतु जैनेन्द्र जैसे चिन्तन में स्वतंत्र हैं वैसे ही उसके माध्यम भाषा तथा शैली के प्रति हैं. मुहावरों का प्रयोग कम किया है. संस्कृत की सूक्तियों तथा उद्धरणों का प्रयोग भी मिलता है. अंग्रेजी के वाक्यों का भी. अंग्रेजी के शब्दों के प्रति उनका आग्रह प्रारंभिक रचनाओं में अधिक दिखता है. उर्दू के शब्दों का खुलकर प्रयोग किया गया है. उर्दू के ऐसे शब्दों का भी प्रयोग ढूँढने से मिल जाएगा, जिनका प्रयोग प्राय: व्यवहार में देखने में नहीं आता है. आपने तद्भव शब्दों का भी खूब प्रयोग किया है. देशज शब्दों को भी स्थान मिला है. कतिपय ठेठ संस्कृत के शब्द भी मिलते हैं. जैनेन्द्रीय भाषा के लिए स्वतंत्र शब्दकोश की आवश्यकता है. कारण है कि उनके सामान्य शब्दों के विशिष्ट अर्थ हैं. आपने व्यस्त तथा मिश्रित शैली का प्रयोग किया है. साथ में विश्लेषण शैली, संवाद शैली, चर्चाशैली, गोष्ठी शैली, प्रश्नोत्तर शैली, आत्मकथात्मक शैली का भी प्रयोग किया है.

जैनेन्द्र की भाषा पर टिप्पणी करते हुए आलोचक लिखते हैं कि उन्होंने व्यक्तिमन की जटिलता और सूक्ष्मता के अनुरूप ऐसी कथा शैली का आविष्कार किया जिसमें एक गतिधर्मी तरलता थी और दूसरी ओर भीतर की बुनावट को उसके समस्त अनबन के भीतर खपाने या साधने की कोशिश. कई बार इस कोशिश में एक अन्तर्मुख नाटकीयता भी थी जिसमें शब्द ही सब कुछ नहीं कहते, शब्दों के बीच का अन्तराल भी कहता है. जैनेन्द्र की आरंभिक कथाभाषा में निहित भ्रामक सहजता अवश्य ही हिन्दी गद्य की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है.' डॉ. माधुरी दूबे अपनी पुस्तक 'हिन्दी गद्य वैभव' में जैनेन्द्र की भाषा के संबंध में उल्लेख करती हुई लिखती हैं - "जैनेन्द्र की भाषा में प्रभावित करने की क्षमता भले ही अस्पष्ट हो. इसी में जैनेन्द्र का व्यक्तित्व निहित है. यही उनकी शैलीगत विशेषता है.

- **बोधप्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए.**

(1) निम्न में से कौन तत्सम शब्द नहीं है?

(अ) बुद्धिमती (ब) असह्य (स) स्वभाव (द) सिलसिला

(2) 'त्यागपत्र' उपन्यास में निम्न में से कैसे शब्दों का प्रयोग नहीं हुआ है?

(अ) तत्सम (ब) देशज (स) उर्दू (द) अंग्रेजी

(3) निम्न में से कौन-सा पुनरुक्त शब्द है?

(अ) पाप-पुण्य (ब) ओवरसियरी (स) खेल-कूद (द) तरह-तरह

(4) त्यागपत्र उपन्यास में प्रयुक्त शैली हैं?

(अ) आत्मकथात्मक शैली (ब) संवाद शैली (स) विचारात्मक शैली (द) सभी

(5) .... स्वाभाविक परिस्थितियों के अनुकूल और सूक्ष्म होना आवश्यक है?

(अ) संवाद (ब) प्रश्न (स) कथन (द) विचार

6.6 सारबिन्दु

- आपने जैनेन्द्र की भाषा-शैली के बारे में विस्तार से अध्ययन कर लिया है. समग्रत: जैनेन्द्र ने जिस तरह के कथानक लिए हैं, जिस तरह के उनके पात्र हैं उसके अनुसार उनकी भाषा-शैली निर्धारित हुई है. जैनेन्द्र के पास कहने की अपनी कला है जो उनकी रचनागत विशिष्टता को रेखांकित करती है.
- दार्शनिकता का पुट अधिक होने से भाषा में शब्दों का विशिष्ट प्रयोग हुआ है और वाक्यगत स्तर पर लघुता अधिक दिखाई देती है. उपन्यास के पात्र शिक्षित हैं अत: तत्सम व उर्दू भाषा के शब्दों की अधिकता को सहज में पाया जा सकता है. शैली की दृष्टि से उनमें प्रश्नात्मक शैली, संवाद शैली, आत्मकथात्मक शैली को सहज रूप में रूपायित किया जा सकता है.
- जैनेन्द्र का भाषा के प्रति संकीर्ण दृष्टिकोण नहीं रहा है, वे भाषा में प्रवाह लाने के लिए शब्द चयन के प्रति सावचेत नहीं हैं, अपितु विभिन्न भाषाओं के शब्द सहज रूप से उनके भाव प्रवाह में सहायक बने हैं. पूर्ण विराम, अर्द्धविराम, प्रश्नार्थक चिह्नों के सार्थक प्रयोग से भी उनके कथन में स्पष्टता और प्रभावोत्पादकता आ गई है. वाक्य-रचना अपने संतुलन, सामंजस्य, सरलता और संक्षिप्तता के कारण अर्थ संप्रेषण में समर्थ हुई है. उन्होंने अधिकतर छोटे छोटे और सरल वाक्यों का प्रयोग किया है. यथास्थान दीर्घ वाक्यों की संरचना भी देखी जा सकती है.
- जैनेन्द्र ने लेखन को एक नई दिशा प्रदान की और कथा को सामाजिक धरातल से हटाकर वैयक्तिता से जोड़ दिया है. अर्थात् सामाजिक समस्याओं की अपेक्षा व्यक्तिगत समस्याओं का चित्रण किया है. उन्होंने अपने उपन्यासों में कथानक के अनुरुप अपनी विशिष्ट लेखन शैली का आविष्कार किया है. उनके उपन्यासों की भाषा के विश्लेषण से इस तथ्य की प्रामाणिकता सिद्ध होती है.

6.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**

(1) शैली का अर्थ है-

(अ) चाल (ब) रीति

(स) वाक्य रचना की विशिष्टता (द) सभी

(2) शैली में मूलत: कौन-सा तत्व होता है?

(अ) सामाजिक (ब) राजनैतिक

(स) आर्थिक (द) वैयक्तिक

(3) किसी रचनाकार की भाषा शिल्प की पहचान करानेवाला तत्व है-

(अ) पात्र (ब) कथानक

(स) शैली (द) वातावरण

(4) भाषा की विशेष शैली में ....प्रतिफलित होता है.

(अ) लेखक की विद्वत्ता (ब) लेखक का जीवनदर्शन

(स) दोनों ही (द) इनमें से कोई नहीं

(5) शैली रचनाकार की-

(अ) अभिव्यक्ति का माध्यम है (ब) पहचान है

(स) शब्द प्रयोग है (द) वाक्य विज्ञान है

(6) जैनेन्द्र की भाषा में-

(अ) व्याकरण सम्मत विधान है (ब) दीर्घ वाक्यों की अधिकता है

(स) देशज शब्दों का प्रयोग है (द) तत्सम शब्दों का प्रयोग है

(7) जैनेन्द्र की भाषा -

(अ) पात्रों के अनुरुप है (ब) पात्रों के अनुरुप नहीं है

(स) कथ्य के अनुरुप नहीं है (द) पात्रों की मन:स्थिति को प्रकट करती है.

- **संक्षिप्त उत्तर लिखिए.**

(1) शैली की परिभाषा लिखिए.

(2) भाषाशैली से आप क्या समझते हैं?

(3) शब्द कितने प्रकार के होते है?

(4) संरचना की दृष्टि से वाक्य कितने प्रकार के होते हैं?

- **विस्तृत उत्तर लिखिए.**

(1) जैनेन्द्र की भाषागत विशेषताएँ लिखिए.

(2) जैनेन्द्र द्वारा प्रयुक्त भाषा की वाक्यगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए.

(3) जैनेन्द्र द्वारा उपन्यास में प्रयुक्त शैलियों को उदाहरण सहित समझाइए.

- **टिप्पणी लिखिए.**

(1) जैनेन्द्र की भाषा-शैली

(2) 'त्यागपत्र' उपन्यास की भाषागत विशेषताएँ

(3) 'त्यागपत्र' उपन्यास में प्रयुक्त आत्मकथात्मक शैली

6.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- डॉ. भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान
- डॉ. उदयनारायण तिवारी, भाषाशास्त्र की रुपरेखा
- डॉ. कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण
- आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका
- डॉ. माधुरी दुबे, हिन्दी गद्य वैभव
- जैनेन्द्र, त्यागपत्र
- जैनेन्द्र के उपन्यास

इकाई 7 'त्यागपत्र' : उपन्यास का उद्देश्य

रूपरेखा

7.1 उद्देश्य
7.2 प्रस्तावना
7.3 उपन्यास विधा में उद्देश्य से तात्पर्य
7.4 त्यागपत्र में प्रतिपादित लेखक का उद्देश्य
 7.4.1 सामाजिक दृष्टिकोण
 7.4.2 नारी संबंधी दृष्टिकोण
 7.4.3 मानव मूल्यों की स्थापना
 7.4.4 मनुष्य के मन के द्वंद्व
7.5 सारबिंदु
7.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली
7.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

7.1 उद्देश्य

यह इकाई इस खंड की अंतिम इकाई है. अब तक आपको उपन्यास के विषय में बहुत कुछ जानकारी मिल गई है. अब हम त्यागपत्र उपन्यास के प्रतिपाद्य अर्थात उद्देश्य के बारे में विचार करेंगे.

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- उपन्यास विधा में उद्देश्य का महत्व प्रतिपादित कर सकेंगे.
- त्यागपत्र उपन्यास के प्रतिपाद्य एवं शीर्षक का विश्लेषण प्रस्तुत कर सकेंगे.
- उपन्यासकार जैनेन्द्र का सामाजिक दृष्टिकोण दर्शा सकेंगे.
- त्यागपत्र उपन्यास के प्रतिपाद्य अर्थात उद्देश्य से अवगत होंगे.
- त्यागपत्र निहित जैनेन्द्र का भावपक्ष समझ सकेंगे.

7.2 प्रस्तावना

आपने त्यागपत्र उपन्यास के खंड से संबंधित छह इकाइयों का अध्ययन कर लिया है. अभी तक आपको उपन्यास की कथा स्पष्ट हो गई होगी. आशा है आप उपन्यास की परिभाषा तथा उपन्यास के आरम्भ, विकास एवं विस्तार को अच्छी प्रकार से समझ गए होंगे आपने इससे पूर्व की इकाइयों में 'त्यागपत्र' उपन्यास का वाचन भी कर लिया है. क्रमशः आपने उपन्यास की कथावस्तु, चरित्र चित्रण, परिवेश, संवाद, शिल्प से संबंधित विस्तृत जानकारी प्राप्त कर ली है. आपने यह भी अनुभव किया होगा कि लेखक इस उपन्यास के माध्यम से कुछ कहना चाहता है, या कोई सन्देश हम तक पहुँचाना चाहता है. कोई भी रचनाकार चाहे किसी विधा में लिख रहा हो, उसके लेखन के पीछे कोई न कोई सन्देश रहता है. उपन्यासकार अपना उद्देश्य कभी प्रकट रूप से नहीं बताता लेकिन वह स्वयं व्यंजित होता है. इस इकाई में हम इसी विषय पर चर्चा करेंगे. आइए जैनेन्द्र द्वारा रचित इस उपन्यास में निहित उद्देश्य की चर्चा करते हैं.

7.3 उपन्यास विधा में उद्देश्य से तात्पर्य

साहित्य की हर रचना का कोई न कोई उद्देश्य होता हैं. किसी उपन्यास का मूल कथ्य क्या है? अर्थात् लेखक उपन्यास की कथा के द्वारा क्या कहना चाहता है, इसे ही हम उपन्यास

का उद्देश्य या प्रतिपाद्य कह सकते हैं.

प्रत्येक लेखक का जीवन के प्रति तथा जीवन की समस्याओं के प्रति कुछ निश्चित दृष्टिकोण होता है. वह अपने दृष्टिकोण से ही जीवन की व्याख्या करता है. उपन्यासकार केवल पात्रों का परिचय करने के लिए नहीं किन्तु जीवन के तथ्यों, जीवन की समस्याओं को सुलझाने के लिए भी उपयुक्त होते है. जीवन जीने के लिए तथा जीवन जीने की सामग्री जुटाने के लिए सहायक सिद्ध होते हैं. लेखक अपने उद्देश्य पात्रों द्वारा प्रस्तुत करता है. चाहे वह सामाजिक, राजकीय, या मानवीय हो.

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में जैनेन्द्र कुमार मनोविश्लेषणवादी विचारधारा को लेकर आये. उपन्यास जगत में उनके आगमन से एक नयी विचारधारा का सूत्रपात हुआ. जैनेन्द्र के चिंतन ने स्त्री पुरुष सम्बन्धो को एक नयी दिशा प्रदान की. उनके उपन्यासों में चरित्रों को महत्त्व मिला. उन्हें समाज के दायरे से निकलकर व्यक्तित्व स्वतंत्राकाश में उड़ने का मार्ग प्रशस्त किया. हम यह भी कह सकते है कि जैनेन्द्र जी नए वैयक्तिक अध्ययन के अग्रदूत है. आइए उनके त्यागपत्र उपन्यास के प्रतिपाद्य को समझते है.

- **बोध प्रश्न**
- **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए.**

(1) लेखक अपने उद्देश्य .... द्वारा प्रस्तुत करता है.

(2) जैनेन्द्र के उपन्यासों में........... को महत्त्व मिला.

(3) हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में जैनेन्द्रकुमार .... विचारधारा को लेकर आये.

(4) जैनेन्द्र जी नए .... अध्ययन के अग्रदूत है.

(5) लेखक अपने दृष्टिकोण से ही .... की व्याख्या करता है.

7.4 त्यागपत्र उपन्यास का प्रतिपाद्य

जैसा कि हम जानते है कि लेखक का जीवन के प्रति तथा जीवन की समस्याओं के प्रति कुछ निश्चित दृष्टिकोण होता है. और इसी दृष्टिकोण को प्रकाशित करना लेखक का मुख्य उद्देश्य होता है. 'त्यागपत्र' उपन्यास में भी जैनेन्द्र जी का निम्न दृष्टिकोण प्रतिपादित होता है जिससे लेखक के प्रस्तुत उपन्यास का उद्देश्य क्या है यह स्पष्ट होता है. उपन्यास के उद्देश्य को हम निम्नलिखित बिन्दुओं में विभक्त कर सकते है -

7.4.1 सामाजिक दृष्टिकोण

जैनेन्द्र जी भारतीय समाजिकता से जुड़े हुए लेखक है वे व्यक्ति को समाजिकता के खूँटे से बंधकर ही चलने देना पसंद करते है जैनेन्द्र जी ने जब यह उपन्यास लिखा तब भारतीय समाज में पुरानी विचारधारा तथा मर्यादावादी नियमों अथवा बंधनों का प्रभुत्व था। व्यक्ति चाहते हुए भी इन बंधनों को तोड़ नहीं सकता था. यही कारण है कि प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने समाज में फैली मर्यादाओं को हमारे सामने लाने का प्रयास किया है.

जब हम 'त्यागपत्र' उपन्यास के उद्देश्य की बात करें तो हम कह सकते हैं कि इस उपन्यास में मृणाल नामक नायिका के माध्यम से भारतीय समाज को खोखला करनेवाले पारस्परिक मानदंडों और मान्यताओं पर करारी चोट की है. मृणाल के पास समाज व लोगों को समझने के लिए तार्किक बुद्धि है जो कथित सभ्य समाज के ढोंगों का पर्दाफाश करती है। जिंदगी के आखिरी मुकाम पर वह शराबी, जुआरी, भिखारियों, वेश्याओं जैसे कथित दुर्जनों के बीच बस जाती है। मृणाल इनके बीच भी इनकी ऊपरी परत खरोंच कर इनसानियत पा जाती है. मृणाल समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़े लोगों का सम्मान करती है. उनके संदर्भ में कहती है कि

'वहाँ छल असंभव है जो छल शिष्ट समाज में जरूरी ही है.' मनुष्य हो तो भीतर एक मनुष्य होना होगा. कलई वाला सदाचार यहाँ खुल कर उघड़ रहता है. यहाँ खरा कंचन ही टिक सकता है. क्योंकि उसे जरुरत नहीं कि वह कहे 'मैं पीतल नहीं हूँ'. दरअसल मृणाल सभ्य समाज के सदाचार की ही शिकार थी. किसी से प्रेम कर बैठना ही मृणाल कि भूल थी. उसके भाई ने उसका पालन पोषण तो इसलिए किया था कि वह एक अच्छी आर्य स्त्री बने. मृणाल के विवाह के बाद जब वह दांपत्य की नींव सच्चाई पर रखना चाहती है तो पति की नजर में दुराचारी हो जाती है. सच्चाई का बोझ पति नहीं सह पाता उसका पति उसकी बेल्ट से धुलाई करता है. साथ ही यह धौंस भी देता है कि 'बहू बेटियों की चलन की रीति नीति हुआ करती है.' '...अपना कुल शील चला जाता है, वह निभा तो फिर क्या रह गया'. पति जब दुश्चरित्रता का आरोप लगाकर मृणाल को छोड़ देता है तो उसका कोई सहारा नहीं रहता. मायके में उसकी जगह तभी तक थी जब तक पति का घर था. घर आने की शर्त ही थी कि 'वहाँ अपनी गिरस्थी अच्छी तरह सँभालना और पति को सुखी रखना' पर मृणाल से तो गृहस्थी ही बिखर गई थी अब नैहर में ठौर कहाँ? स्त्री को मिलने वाले आशीर्वादों का बोझ कैसा होता है, इसको जैनेंद्र ने बखूबी से समझाया है.

मृणाल के जीवन के माध्यम से स्त्री-पुरुष जीवन में प्रेम की अनिवार्यता को स्वीकारते हुए प्रेम और विवाह की समस्याओं के नए सन्दर्भ उजागर किये हैं. समाज में बेमेल विवाह की समस्या को उजागर किया है. पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की व्यथा को व्यक्त किया गया है. साथ ही पाठकों के सामने सामाजिक विषमताओं को लाना यह भी लेखक का महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है. लेखक ने इस उपन्यास में समाज के निम्न वर्ग और पीड़ितों के प्रति सहानुभूति प्रकट की है. दूसरे बिंदु पर विचार करे तो एक व्यक्ति के ऊपर उठने में कितने ही व्यक्तियों का सहयोग रहता है. उसके पद के तल अनेक व्यक्ति दबे रहते हैं. मृणाल कहती है -

"जिन लोंगो के बीच रहती हूँ, वे समाज की जूठन है.

और कौन जानता है कि वे जूठन होने के योग्य भी नहीं है.

लेकिन आमिर तो इंसान है न"

यहाँ लेखक यह कहना चाहते हैं कि दलित, बदनाम लोग भीतर बाहर एक होते हैं. इसलिए उन में मानवता भी सहज और सिद्ध होती है. जैनेन्द्र ने 'त्यागपत्र' उपन्यास में निम्नवर्ग की कपट रहित जीवन शैली का दर्शन कराया है. उच्च समाज में दंभ भी है, छल है, अविश्वास है, झूठी मान्यताएँ है, झूठी सामाजिक मर्यादाएँ है. मृणाल जैसी कितनी ही किशोरियाँ उन मर्यादाओं और बन्धनों की वेदी पर चढ़ा दी जाती है यही सत्य लेखक उजागर करना चाहते है.

7.4.2 नारी संबंधी दृष्टिकोण

प्रस्तुत उपन्यास नारी प्रधान उपन्यास है इसलिए इस उपन्यास में भारतीय नारी की हृदय स्पर्शी करुण स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया गया है. स्त्री के संघर्ष और सहनशीलता को उजागर करना लेखक का मुख्य उद्देश्य रहा है. प्रस्तुत उपन्यास में मध्यम वर्गीय नारी के विविध रूपों के दर्शन होते है.

जैसा कि हमने उपन्यास की कथावस्तु में पढ़ा मृणाल उपन्यास की नायिका है, बचपन से ही मातापिता के सुख से वंचित होने के कारण अपने भाई-भाभी के आश्रय में रहती है. अपने भतीजे प्रमोद से वह खूब प्यार करती है, जो कि आयु में वह उससे पाँच वर्ष छोटा है. मृणाल अपनी सहेली शीला के भाई से प्रेम करती है. किन्तु उसका विवाह एक अधेड़ व्यक्ति से कर दिया जाता है. जब वह उसका त्याग करता है, फिर एक कोयले का व्यापारी सहायता के बहाने उसे अपने साथ रखता है. कुछ वक्त बाद वह भी उसे छोड़ देता

हैं. मृणाल एक डॉक्टर के बच्चों को ट्यूशन देने का काम करती हैं. किन्तु वहाँ पर भी डॉक्टर की लड़की और प्रमोद के रिश्ते की बात लेकर वह आधार छूट जाता है. आखिर वह गन्दी बस्ती में दम तोड़ देती है, प्रमोद यह खबर सुनकर मृणाल की दुर्दशा में अपने को दोषित मानता है और जजी से इस्तीफा दे देता है.

इस तरह हम देखते हैं कि मृणाल स्त्री धर्म को ही पतिव्रत धर्म मानती है, और यदि वह स्त्री है, तो पुरुष द्वारा उसकी मांग होगी. पुरुष यदि स्त्री को सहारा देता है, तो उसका कर्तव्य है कि वह उसकी कामेच्छा को पूर्ण करे. क्योंकि स्त्री को सहारा देने के पीछे पुरुष का काम भाव ही छिपा होता है. मृणाल अपने पति के अन्यायों को सहकर भी विच्छेद नहीं चाहती, क्योंकि -

"विवाह भावुकता का प्रश्न नहीं, व्यवस्था का प्रश्न है न" (त्यागपत्र पृष्ठ 30)

"विवाह के बाद पति का घर ही स्त्री का स्वर्ग है. थोड़ी सी रगड़ - झगड़ होती है, पर पति के घर के आलावा स्त्री को और क्या आसरा है?"

(त्यागपत्र पृष्ठ 32)

लेखक ने विवाह और स्त्री धर्म की व्याख्या बखूबी से की है.

जैनेन्द्र जी मानते हैं की विवाह का समाज से सम्बन्ध है. दोनों का अभिन्न संबंध है। विवाह भावुकता का नहीं व्यवस्था का प्रश्न है. इसीलिए जैनेन्द्र के उपन्यास की नायिकाएँ पति के छोड़ जाने पर दूसरे पुरुषों के साथ रहने पर भी पापिष्ठा नहीं होती मृणाल कहती है, "मैं स्त्री धर्म को पतिव्रत धर्म मानती हूँ न" - क्या पतिव्रता को चाहिए कि पति उसे नहीं चाहता, तब भी वह अपना भार उस पर डाले रहें? यह भी सच है कि स्त्री जब तक ससुराल की है, तभी तक मैके की है. इसी कारण मृणाल कभी अपने भाई के घर लौटना नहीं चाहती.

7.4.3 मानव मूल्यों की स्थापना

यह बात हमने उपन्यास पढ़ने के दौरान ही जान ली कि इस उपन्यास का उद्देश्य आत्मपीड़ा के द्वारा दूसरे व्यक्ति का उपकार अथवा सुधार है. इसी से सुख पहुँचता है. जैनेन्द्र का मानना है कि कोई एसा व्यक्ति नहीं जिसके दिल में दर्द न हो. दर्द जीवन को प्रकाशित करने वाला मणि है इस मणि के प्रकाश से जीवन के मार्ग प्रकाशित हो जाते है. प्रमोद और मृणाल के प्रेम के माध्यम से सच्चे प्रेम के सूक्ष्म रुप पर भी प्रकाश डाला है. लेखक ने सच्चे प्रेम के सूक्ष्म रूप के साथ संघर्षमय जीवन की अभिव्यक्ति की है.

हम यह भी कह सकते हैं कि जैनेंद्र जी ने हिंदी उपन्यास के दृढ़ चित्रलक स्वरूप को अस्वीकार करते हुए व्यक्ति सत्ता के स्तर पर पुरुष और नारी पात्रों के माध्यम से उनके जीवन के कुंठा, अनास्था, आकांक्षा, भावना, प्रेम को उभारने का प्रयास किया है. मृणाल एक प्रबल चरित्र के रूप में उभरती है. वह अत्यंत उदार व आदर्शवादी चरित्र के रूप में उभरती है जो स्वयं के जीवन में अपार कष्ट पाकर भी सदा दूसरों के लिए केवल सुख की ही आकांक्षा रखती है. उसके मन में अपनी परिस्थितियों के लिए ज़िम्मेदार लोगों के लिए कोई कटुता नहीं और न ही वह किसी को दोषी मानती है. यहाँ लेखक के मानव मूल्यों की स्थापना का उद्देश्य पूर्ण होता है.

7.4.4 मनुष्य के मन के द्वंद्व

मनुष्य के मन के द्वंद्व को उजागर करना मनोवैज्ञानिक लेखक का महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है. 'त्यागपत्र' उपन्यास की कथावस्तु व्यक्ति के मन के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित है. इसलिए कथावस्तु का ताना बाना वैचारिक मानवीयता के सूक्ष्म तारों से बुना गया है।

तात्पर्य यह है कि इसमें बाहरी जगत से ज्यादा अंतर्जगत को अधिक महत्व दिया गया है। आत्मकथनात्मक शैली के माध्यम से उन्होंने मानव मन के द्वंद्व को उजागर किया है। प्रमोद अपने जीवन के सभी प्रसंगों को इसी आत्मकथनात्मक शैली के माध्यम से व्यक्त करता है

मृणाल मरने को अधर्म मानती है. उसे जीना था, भले मर कर ही सही. रोटी चलाने में मृणाल की मदद एक निहायत ही मामूली आदमी करता है. यह आदमी मृणाल के रूप यौवन पर आसक्त है. मृणाल इसे समझती है फिर भी वह सहारा देने के लिए उसकी कृतज्ञ है. शीघ्र ही मृणाल परिश्रम से अपनी जीविका अर्जित करने लगती है. उसके गर्भ धारण करते ही दूसरा आदमी उसे छोड़ कर भाग जाता है. मृणाल स्वयं यही चाहती थी कि वह अपने परिवार में लौट जाए. क्योंकि वह समझती थी कि उसके साथ सोने के कारण वह उसे बदजात और बाजारू औरत ही समझेगा. दुख और अपमान की पीड़ा मृणाल को इस मन:स्थिति में पहुँचा देती है कि वह अपने दर्द से ही दवा हासिल करती है : ‘मेरा मन पक्का होता रहे कि कोई मुझे कुचले, तो भी मैं कुचली न जाऊँ और इतनी जीवित रहूँ कि उसके पाप के बोझ भी ले लूँ और सबके लिए क्षमा की प्रार्थना करूँ.’ यहाँ पर एक त्यक्ता स्त्री का दर्द उसकी मन:स्थिति को लेखक ने बखूबी से दर्शाया है.

- **बोध प्रश्न**
- **कथन सही है अथवा गलत, बताएँ.**

(1) स्त्री के द्वंद्व को उजागर करना मनोवैज्ञानिक लेखक का महत्वपूर्ण उद्देश्य होता है.

(2) लेखक ने सच्चे प्रेम के सूक्ष्मरूप के साथ संघर्षमय जीवन की अभिव्यक्ति की है.

(3) जैनेन्द्र जी मानते हैं की विवाह भावुकता का प्रश्न है.

(4) जैनेन्द्र जी ने मृणाल नामक नायिका के माध्यम से भारतीय समाज को खोखला करनेवाली मान्यताओं पर करारी चोट की है.

(5) लेखक ने कोयलेवाले और मृणाल के प्रेम के माध्यम से सच्चे प्रेम के सूक्ष्म रुप पर भी प्रकाश डाला है.

7.5 सारबिंदु

समग्रत: अध्ययन के पश्चात हम कह सकते हैं कि जैनेन्द्र ने इस उपन्यास द्वारा यह प्रतिपादित किया है, कि यह संसार परीक्षास्थल है, नियति प्रबल है. कोई मनुष्य बुरा नहीं है, निम्न वर्ग को भी सहानुभूति की आवश्यकता रहती है. अन्य प्रतिपाद के रुप में हम यह भी कह सकते हैं कि ‘त्यागपत्र’ मध्यमवर्गीय शिक्षित, स्वाभिमानी परिस्थितियों से संघर्ष करनेवाली मृणाल की कहानी है, जो स्वच्छन्द प्रेम और अनमेल विवाह की त्रासदी भोगते हुए मिट जाती है, किन्तु झुकती नहीं.

सभी बिन्दुओं पर विचार करें तो प्रस्तुत उपन्यास में जैनेंद्र जी ने नारी के विविध रूपों का प्रस्तुतीकरण किया है. अविवाहित नारी का रूप, अनमेल विवाह, विधवा समस्या, त्यक्ता नारी की समस्या, पर पुरुष सम्बन्ध आदि मध्यमवर्गीय कतिपय समस्याओं को मृणाल को केंद्र में रखकर उठाया गया है.

7.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर दीजिए.**

(1) प्रमोद अपने जीवन के सभी प्रसंगों को किस शैली के माध्यम से व्यक्त करता है?

(2) त्यागपत्र उपन्यास में बाहरी जगत से ज्यादा कौन से जगत को अधिक महत्व दिया गया है?

(3) मनोवैज्ञानिक लेखक का महत्व पूर्ण उद्देश्य क्या होता है?

(4) मृणाल कौन-से धर्म को पतिव्रत धर्म मानती है?

(5) लेखक ने इस उपन्यास में समाज के कौन से वर्ग के प्रति सहानुभूति प्रकट की है?

- **निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए.**

(1) प्रस्तुत उपन्यास के उद्देश्य को किन चार भागों में बाँट सकते है?

(2) जैनेन्द्र का सामाजिक दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए?

(3) प्रस्तुत उपन्यास में जैनेन्द्र का नारी संबंधी दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए?

(4) मनोवैज्ञानिक उपन्यास से क्या तात्पर्य है?

(5) प्रस्तुत उपन्यास में किन मानव मूल्यों की स्थापना हुई है?

- **निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त में उत्तर लिखिए.**

(1) मृणाल 'त्यागपत्र' उपन्यास में किसका प्रतीक है?

(2) ईश्वरीय वरदान के रूप में मृणाल के पास क्या है?

(3) मृणाल के अंतर्मन की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन कौन सा है?

(4) उपन्यास में नारी जीवन संबंधी किन समस्याओं की चर्चा की गई है?

(5) प्रस्तुत उपन्यास मे हमें जैनेन्द्र के किन विचारों की अभिव्यक्ति मिलती है?

- **टिप्पणी लिखिए.**

(1) 'त्यागपत्र' उपन्यास का उद्देश्य

(2) 'त्यागपत्र' शीर्षक की सार्थकता

(3) नारी जीवन सम्बन्धी विविध समस्याओं का चित्रण

(4) जैनेन्द्र का भावपक्ष

(5) 'त्यागपत्र' उपन्यास में चित्रित जैनेन्द्र जी का मनोविज्ञान अथवा नियतिवाद - आदि

7.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- जैनेन्द्र और नैतिकता - डॉ. ज्योतिष जोषी
- जैनेन्द्र सृजन और सन्दर्भ - डॉ. सावित्री मिश्रा
- जैनेन्द्र व्यक्तित्व एवं कृतित्व - सं. सत्यप्रकाश जैनेन्द्र के उपन्यास - मर्म की स्मोश - डॉ. चंद्रकांत
- जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. देवराज उपाध्याय
- भारतीय साहित्य के निर्माता जैनेन्द्र कुमार - गोविन्द मिश्र
- http://www.apnimaati.com/2016/08/blog-post

इकाई 8 'त्यागपत्र' : उपन्यास में मनोविज्ञान

रूपरेखा

8.1 उद्देश्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 मनोविज्ञान का अर्थ और उसकी स्थापनाएँ

8.4 'त्यागपत्र' उपन्यास में मनोविज्ञान

8.5 सारबिंदु

8.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

8.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

8.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई जैनेन्द्र द्वारा लिखित उपन्यास 'त्यागपत्र' के मनोविज्ञान पर आधारित है. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- मनोविज्ञान का अर्थ समझ सकेंगे.
- उपन्यास 'त्यागपत्र' में जैनेन्द्र के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से अवगत हो सकेंगे.

8.2 प्रस्तावना

'त्यागपत्र' पर आधारित इस खंड की पहली दो इकाइयों में आप जैनेन्द्र का जीवन परिचय, 'त्यागपत्र' की कथावस्तु और पात्र एवं चरित्र चित्रण पढ़ चुके हैं. प्रस्तुत इकाई में जैनेन्द्र के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को जानने का उपक्रम रहेगा. प्रेमचंद के बाद उपन्यास के विविध प्रकार सामने आए, जिनमें से एक महत्वपूर्ण प्रकार मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का था और जैनेन्द्र उसके पुरोधा थे. 'त्यागपत्र' जैनेन्द्र का मनोवैज्ञानिक उपन्यास है. यह उपन्यास अपने कथ्य और शिल्प की दृष्टि से बहुचर्चित रहा है. इस नायिका प्रधान उपन्यास में लेखक ने नायिका मृणाल के जीवन की करुणा, पीड़ा, मजबूरी, त्याग और समर्पण का वर्णन किया है. जैनेन्द्र जी ने व्यक्ति के मन की विसंगतियों का बखूबी वर्णन किया है. 'त्यागपत्र' उपन्यास की कथावस्तु और चरित्रों का ताना बाना मनोविश्लेषण के आधार पर बुना गया है. सीमित पात्रों एवं परिवेश के माध्यम से मानव मस्तिष्क की गहराई तक पहुँचने में, मन की उलझनों को पकड़ पाने में और मानसिक द्वंद्व की स्थिति को भाँपने में जैनेन्द्र सक्षम हैं. लेखक ने बाह्य जगत से ज्यादा अंतर्जगत को स्थान दिया है. आत्मविश्लेषण परक शैली में लिखे गए इस उपन्यास में मानसिक द्वंद्व से उत्पन्न सूक्ष्म कथासूत्रों को आधार बनाया गया है. आइए, इस उपन्यास में समाविष्ट मनोवैज्ञानिक पहलुओं को पढ़ते हैं, लेकिन उससे पहले मनोविज्ञान के अर्थ और स्थापनाओं को समझ लेना आवश्यक है.

8.3 मनोविज्ञान का अर्थ और उसकी स्थापनाएँ

'मनोविज्ञान' का एक बड़ा सीधा सा अर्थ बनता है - 'मन का विज्ञान'. हम लगातार कुछ न कुछ सोचते रहते हैं, अपने चारों ओर की परिस्थितियों से जाने-अनजाने प्रभावित होते रहते हैं और मूक या मुखर प्रतिक्रियाएँ देते रहते हैं. हम निरंतर कुछ न कुछ करते रहते हैं या कुछ न कुछ नहीं करते हैं. यह सब सोचना, करना और प्रतिक्रिया देना, यानी एक शब्द में हमारा कुल व्यवहार हमारी चेतन, अचेतन मानसिक प्रक्रियाओं का नतीजा होता है. इन्हीं मानसिक प्रक्रियाओं का व्यवस्थित अध्ययन मनोविज्ञान का विषय है.

मनोविज्ञान एक ऐसा विज्ञान है जो प्राणी के प्रेक्षणीय व्यवहार का क्रमबद्ध रूप से अध्ययन उसकी मानसिक एवं दैहिक प्रक्रियाओं तथा वातावरण की घटनाओं के साथ उनका संबंध जोड़कर करता है. इस परिप्रेक्ष्य में मनोविज्ञान को व्यवहार एवं मानसिक प्रक्रियाओं के अध्ययन का विज्ञान कहा गया है. इसी रूप में मनोविज्ञान साहित्य से जुड़ता है. प्रेमचंद ने 'उपन्यास' का स्वरूप बताते हुए कहा है - "मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मुख्य स्वर है." अपने विस्तृत समावेशी अर्थ में यह कथन साहित्य की किसी भी विधा के लिए ठीक ही बैठता है और बिना किसी विशेष व्याख्या के यह स्वतः स्पष्ट है कि मानव चरित्र उसके व्यवहार से ही प्रतिबिंबित होता है, जिसका रहस्योद्घाटन मनोविज्ञान का ही काम है.

आरंभ में मनोविज्ञान का अध्ययन दर्शनशास्त्र का विषय था, किंतु बढ़ते अध्ययन के साथ अलग अध्ययन शाखा के रूप में उसकी स्वीकारोक्ति हुई और उन्नीसवीं शदी के उत्तरार्ध में सिग्मंड फ्रायड ने विशिष्ट ज्ञानशाखा के रूप में इसे पूरी तरह स्थापित कर दिया.

यद्यपि फ्रायड के सिद्धांतों की निर्विवाद सर्वसम्मति कभी नहीं रही, पर फिर भी इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि बीसवीं सदी के बौद्धिक परिवेश के सृजन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही.

आइये! फ्रायड के सिद्धांतों पर एक नजर डाल ली जाय -

- फ्रायड के सिद्धांत कार्य-कारण के दृढ़ संबंध की मान्यता पर आधारित हैं. उनका मानना है कि हमारे व्यवहार के पीछे हमारी मानसिक प्रक्रियाएँ होती हैं, जो कार्य-कारण संबंध से संचालित होती हैं.
- फ्रायड मन के तीन हिस्से मानते हैं - चेतन (कॉन्शस), अवचेतन (सबकॉन्शस) और अचेतन (अनकॉन्शस). हमारे व्यवहार का निर्धारण जितना चेतन मन द्वारा किया जाता है, उससे कहीं ज्यादा अचेतन मन उसे संचालित करता है.
- फ्रायड ने साबित किया कि अचेतन मन चेतन मन की अपेक्षा कहीं अधिक विशाल और शक्ति शाली है. यद्यपि साधारणतया उसके होने का अहसास नहीं होता, तथापि इसका अर्थ यह नहीं कि वह क्रियाशील नहीं रहता. अपितु वह निरंतर सक्रिय रहकर हमारी गतिविधियों, हमारे बात-व्यवहार को अज्ञात रूप से प्रेरित प्रभावित करता रहता है. साहित्यकारों के लिए यह तथ्य काफी आकर्षक साबित हुआ.
- फ्रायड ने बताया कि यह अचेतन हमारी उन इच्छाओं-अभावों-अतृप्तियों का घर है, जो सामान्य सामाजिक सांस्कृतिक स्वीकृति के अभाव में चेतन मन में जगह नहीं बना पातीं और कुंठित होकर गहरे अचेतन में उतर जाती हैं और अभिव्यक्त होने का मौका खोजती रहती हैं.
- फ्रायड का कहना है कि दमित इच्छाएँ अनेक छद्म रूप धारण कर अपनी अभिव्यक्ति का मार्ग खोज ही लेती हैं. ये मार्ग प्रतीक कथा, स्वप्न या कला-साहित्य या आत्मविस्तार भी हो सकते हैं. इस प्रक्रिया में दमित इच्छाओं का उदात्तीकरण (सब्लिमेशन) हो जाता है और वे समाज के लिए स्वीकार्य बन जाती हैं.
- अभिव्यक्ति का अनुकूल अवसर न मिल पाने से ये कुंठित भावनाएँ 'मनोग्रंथि' बन जाती हैं और मानसिक रोगों के रूप में प्रकट होती हैं.
- फ्रायड की विचार सरणि का केंद्रीय तत्व है - 'काम'. उनके अनुसार मानव में भारी यौन ऊर्जा होती है, और उसके समस्त कार्य-कलाप मूलतः काम भावना से ही संचालित होते हैं.

यहाँ पर दो अन्य महत्वपूर्ण मनोविज्ञानियों का उल्लेख करना उपयुक्त होगा, जो आरंभ में फ्रायड के सहयोगी रहे थे, पर बाद में उसके कुछ विचारों से गहरी असहमति हो जाने के कारण उससे अलग हो गये और अपने तरीके से फ्रायड के काम को आगे बढ़ाते हुए नये सिद्धांत स्थापित किये. ये दो मनोविज्ञानी थे - अल्फ्रेड एडलर और कार्ल गुस्ताफ युंग.

एडलर की प्रमुख मान्यताएँ हैं -

- वैयक्तिक मनोविज्ञान.
- जीवन की प्रेरणा शक्ति का मूल स्रोत 'अधिकार भावना'.
- वयस्क व्यक्ति के चरित्र गढ़न के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक बचपन के अनुभव और समाज के साथ उसका संबंध.
- मनस्ताप, मनोग्रंथि या मनोविकार का कारण व्यक्ति की सामाजिकता, परिवेश और वातावरण में निहित होता है, विशेषकर उसके बचपन से संबंधित सामाजिकता, परिवेश और वातावरण में. अतः इनके निवारण के लिए बचपन का इतिहास भूगोल जानना आवश्यक होता है.

(यहाँ आप हिंदी फीचर फिल्म 'भूलभुलैया' याद कर सकते हैं. इसमें अक्षय कुमार अभिनीत पात्र विद्या बालन अभिनीत पात्र के मनोरोग का इलाज करने के लिए उसके बचपन को जानने के लिए जाता है!)

युंग की प्रमुख मान्यताएँ हैं -

- जीवन का प्रेरणास्रोत जिजीविषा है.
- अचेतन मन में पुरातन ऐतिहासिक अनुभव राशि के तत्व होते हैं, जिसे 'प्रजातीय स्मृति (रेशियल मेमोरी)' कहते हैं.
- ये संस्कार रुप स्मृतियाँ किसी की व्यक्तिगत नहीं होतीं, बल्कि एक पूरे समुदाय, समाज, राष्ट्र या फिर मनुष्य मात्र की भी हो सकतीं हैं.
- इस प्रजातीय स्मृति के कई स्तर होते हैं - सबसे निचला स्तर तब का है, जब मनुष्य पूरी तरह मनुष्य नहीं बना था, बल्कि काफी कुछ पशु समान जीवन जी रहा था. अगला स्तर आदिमानव के संस्कार का कह सकते हैं, इसके ऊपर विकास क्रम में अलग अलग समुदाय के रुप में विकसित हुई मानव जाति की स्मृति का क्रम आता है, फिर राष्ट्रीय स्मृति और तब वंश-परंपरा की स्मृति का.
- यह सब मनुष्य के अचेतन में संचित रहता है और अवसर मिलने पर चेतन व्यवहार में भी प्रकट होता है.

इन सभी मनोवैज्ञानिक मान्यताओं का बीसवीं सदी के विचार परंपरा पर गहरा असर पड़ा. हिंदी लेखक भी इससे अछूते न रहे. हिंदी साहित्य विशेषकर कथासाहित्य में मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर बहुत सी रचनाएँ सामने आईं. जैनेन्द्र कुमार, इलाचंद्र जोशी, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', पांडेय बेचनशर्मा 'उग्र' आदि मनोवैज्ञानिक तथ्यों को आधार बनाकर लिखने वाले प्रमुख रचनाकार हैं.

आइये! आगे बढ़ने से पहले अपनी समझ की परीक्षा कर लें :-

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दें.**

(1) बीसवीं शदी के बौद्धिक परिवेश को प्रभावित करने वाले तीन मनोवैज्ञानिक कौन कौन हैं?

(2) फ्रायड ने मन के तीन हिस्से कौन-कौन से माने हैं?

(3) मनुष्य की दमित इच्छाएँ कहाँ दबी रहती हैं?

(4) दमित इच्छाओं की अभिव्यक्ति किन रूपों में होती है?

(5) मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर लिखने वाले हिंदी के प्रमुख लेखक कौन कौन हैं ?

8.4 'त्यागपत्र' उपन्यास में मनोविज्ञान

हिंदी उपन्यासों की धारा शुद्ध मनोरंजनात्मकता और कोरी उपदेशात्मकता से जैसे ही यथार्थवादी सामाजिक सोद्देश्यता की ओर मुड़ती है, वैसे ही उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता अपने आप प्रवेश कर जाती है, क्योंकि तब उसके पात्र किन्हीं शास्त्रीय नियमों और कहानी की आवश्यकता के अनुसार गढ़े गए सपाट द्विआयामी पुतले नहीं रह जाते, बल्कि हमारे बीच से उठकर गए हुए जीते जागते वास्तविक मनुष्य होते हैं, जो अपने अंतर्मन के साथ वहाँ उपस्थित रहते हैं, जैसे प्रेमचंद के पात्र. विचारों का आंतरिक आलोड़न; मानसिक द्वंद्व और ऊहापोह वहाँ भी है, जिसे समझकर लेखक अपने शब्दों में पाठकों के लिए वर्णित कर देता है. पात्रों के बाह्य क्रिया-कलापों और व्यवहार के कारण के रूप में उनके अंतर्जगत की हलचलों का पूरा ब्यौरा आमतौर पर प्रेमचंद तफसील से देते हैं. लेकिन फिर भी, अधिकांश मामलों में कार्य-कारण संबंध बताने वाले ये विवरण सरल एकरेखीय और अंततोगत्वा लेखक की अपनी सूझ ज्यादा लगते हैं, पात्रों के मनोविज्ञान से स्वाभाविक रुप से उपजे कम. दूसरे, प्रेमचंद 'आदर्शोन्मुख यथार्थवाद' के हिमायती हैं, अतः उनके पात्रों का अंतर्मन यथार्थ होने पर भी आदर्शीकृत हो जाने के लिए प्रतिबद्ध है और इस प्रक्रिया में वे मनोविज्ञान के सिद्धांतों से विचलित हो जाते हैं. इसीलिए प्रेमचंद और उनके समान लिखने वाले दूसरे लेखकों के उपन्यासों को 'मनोवैज्ञानिक उपन्यास' नहीं कहा गया है.

जैनेन्द्र ने प्रेमचंद की परंपरा पर चलते हुए भी अपने पात्रों को अधिकाधिक वास्तविकता के करीब रखा और उन्हें आदर्श बनाने के स्थान पर बिना किसी लेखकीय टिप्पणी के स्वाभाविक रूप से स्वतंत्रतापूर्वक विकसित होने दिया. ऐसा लगता है कि जैनेन्द्र ने नवविकसित मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया था और वे फ्रायड से गहरे प्रभावित थे. अतः उनके पात्र स्वाभाविक रूप से फ्रायडीय सिद्धांतों के अनुरूप विकसित होते दिखाई पड़ते हैं. पात्रों के विकास को अनावश्यक लेखकीय हस्तक्षेप से बचाने के लिए जैनेन्द्र ने अक्सर अपने उपन्यासों की शैली भी आत्मकथ्यपरक या डायरीनुमा रखी है. 'त्यागपत्र' में भी मुख्यपात्र ही अपने अनुभवों को कहता है.

आगे बढ़ने से पहले जाँचा जाए कि आपने कितना समझा!

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित कथनों के सही या गलत होने की पहचान कीजिए.**

(1) उपन्यास का उद्देश्य जैसे ही शुद्ध मनोरंजन के स्थान पर समाज का वास्तविक प्रतिबिंबन होने लगता है, उपन्यास में कुछ न कुछ मनोविज्ञान आने ही लगता है.

(2) प्रेमचंद के उपन्यास मनोवैज्ञानिक उपन्यास हैं.

(3) जैनेन्द्र प्रेमचंद की परंपरा के उपन्यासकार नहीं है.

(4) जैनेन्द्र ने अपने पात्रों को मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार विकसित होने दिया है.

(5) 'त्यागपत्र' उपन्यास की शैली आत्मकथात्मक है.

आइये! अब देखते हैं कि इस उपन्यास में मनोविज्ञान के सिद्धांत कितने और कैसे प्रतिफलित हुए हैं.

'त्यागपत्र' - यह शीर्षक ही संकेत करता है कि उपन्यास मनोवैज्ञानिक धरातल पर गठित हुआ है. त्यागपत्र किसका? जज साहब का क्यों? वे अपने आपको इस पद के योग्य नहीं समझते, इसलिए. ध्यान दीजिए! वे स्वयं अपने आपको योग्य नहीं समझते, कोई अन्य नहीं. दुनिया की नज़रों में तो वे एक सफल प्रतिष्ठित जज हैं, जिनके करियर में कहीं कोई अपवाद का दाग तक नहीं है. यह उनका आत्मविश्लेषण है जो उन्हें अपनी बुआ के प्रति हुए अन्याय के लिए अपराधी समझकर आत्मपीड़न की ओर ले जाता है. वे अपने आप को निर्वासित कर लेते हैं और एकांत क्षणों में अपनी बुआ मृणाल की जीवन कथा याद करते हैं. पर उनके पास बुआ के जीवन के वही हिस्से हैं, जिनमें वे खुद उपस्थित रहे हैं, बाकी की कहानी अधूरी है, अस्पष्ट है. न केवल उनके लिए बल्कि पाठकों के लिए भी. यानी कल्पना की जगह नहीं. जो देखा, जो महसूस किया, वही कहा.

लेकिन जज साहब बुआ के प्रति अपने को अपराधी क्यों समझते हैं? उपन्यास में वर्णित कथा तो ऊपरी तौर पर ऐसा कुछ नहीं बताती, जिससे लगे कि वे अपराधी हैं. जब बुआ के मन में प्रथम प्रेमांकुरण हुआ, उसके लिए उन्हें अपनी भाभी से प्रतारणा मिली, उनका अनमेल विवाह कर दिया गया और अधमरी अवस्था में ससुराल से वापस आने पर भी कुछ दिनों बाद पुनः वहीं भेज दिया गया, तब वे इतने छोटे थे कि परिवार का - अपनी माँ और पिताजी का पुरजोर विरोध कर ही नहीं सकते थे. बड़े होने पर उन्होंने बुआ को खोज ही निकाला और अपने साथ लौट चलने को कहा भी, पर वे ही किसी तरह लौटने के लिए तैयार नहीं हुईं, तो वे क्या करते! जहाँ उनका विवाह संबंध स्थिर हो रहा था, वहाँ अकस्मात बुआ से भेंट होने पर भी साथ आने को कहा, पर वे नहीं आईं. संबंध उजागर कर मान देने की कोशिश की, पर उसके चलते विवाह भी टूट गया और बुआ की नौकरी भी गयी. पर सच बोलना अपराध कैसे हो सकता है? फिर आख़री बार बुआ के पत्र से पता चला कि वे कहाँ हैं. मिलने गये तो समाज के तलछट में पड़ी बुआ की दुरावस्था का पता चला. यहाँ से भी अपने साथ चले चलने की बहुतेरी प्रार्थना बुआ से की, पर वे जहाँ थीं, वहीं रहना चाहती थीं. बल्कि उन्होंने रुपयों की माँग की, अपने लिए नहीं उस तलछट के लिए, जिसके साथ वे रह रही थीं! ऐसा करना क्या संभव था? व्यावहारिक था? जज साहब को हार कर लौट आना पड़ा था. बुआ की नियति को स्वीकार कर लेना पड़ा था. इसमें उनका अपराध कहाँ था?

तब बुआ की मृत्यु की ख़बर पाकर जज साहब को अपराध बोध क्यों हुआ? और वह भी इतना गहरा कि उन्होंने मान-प्रतिष्ठा, ऐशो आराम, घर परिवार सब त्याग कर अपने को निपट एकांत में निर्वासित कर लिया! इसका उत्तर जानने के लिए मनोविज्ञान को समझना जरूरी हो जाता है. जज साहब का जो व्यवहार ऊपर के परिच्छेद में विवेचित है, वह उनके चेतन मन का कार्य है. चेतन मन सामाजिक होता है और सामाजिकता की दृष्टि से उन्होंने कोई असामान्य व्यवहार या अपराध नहीं किया था, पर उनका अवचेतन (सबकांशस) मन यह जानता था कि बुआ की दुर्दशा के लिए वह जिम्मेदार था, कि बुआ के सबसे निकट वही था और बुआ उस पर ही निर्भर हो सकती थी, कि यह अंततः उसकी ही कायरता थी, सामाजिक पद-प्रतिष्ठा पाने की लालसा थी, स्वार्थपरता थी, जिसने उसे बुआ को उनकी इच्छा के विरुद्ध भी साथ लाने से रोक दिया. अतः वह अपराधी बनता है और गहरे जाएँ और जज साहब के अचेतन में उतरें तो यह भी पता चलेगा कि वह अपने बचपन के अंतरंग की साथी बुआ से वस्तुतः प्यार करते थे और बुआ भी उन्हें हृदय से प्यार करती थीं. जैनेन्द्र ने इसके स्पष्ट संकेत दिये हैं - "बुआ का तब का रुप सोचता हूँ तो दंग रह जाता हूँ..... उस समय मुझे कहानी की परियों का ध्यान हो आता. और मैं मुग्ध भाव से अपनी बुआ की ओर आकृष्ट हो रहता." ..... "मेरी बारह वर्ष की अवस्था होगी. मेरा मन उस समय

बिलकुल बुआ के बस में था. वह मुझे सचमुच बहुत प्यार करती थीं. लेकिन तभी मैंने अनुभव किया कि उनके प्यार का रूप बदल गया है. वह मुझे अब उपदेश नहीं देतीं बल्कि अपनी छाती में लगाकर जाने पार कहाँ देखने लगती हैं." ..... "वह शनैः शनैः मुझको अपने ऊपर ही लुढ़का लेतीं." ..... "उस रोज रात को वे मुझे बहुत देर तक अपने से चिपटाए रहीं. पूछने लगीं - "प्रमोद, तू मुझे प्यार करता है?" सुनकर बिना कुछ बोले मैंने अपना मुँह उनके छाती के घोंसले में और दुबका लिया. इस पर वह बोलीं - "प्रमोद, मैं तुझे बहुत प्यार करती हूँ." अचेतन मन में बैठा हुआ यह अगाध प्रेम भी जज साहब को बुआ के प्रति हुए अन्याय के लिए जिम्मेदार समझ कर अपराधी ठहराता है.

उपन्यास का केंद्र बिंदु है - मृणाल. एक अनाथ बालिका - 'अनाथ' इस दृष्टि से कि उसके माता-पिता की मृत्यु हो चुकी है. अपने से काफी बड़े भाई के परिवार में वह पल-बढ़ रही है. भाई उससे बहुत स्नेह करते हैं, उसकी सभी इच्छाएँ पूरी करने का यत्न करते हैं, पर भाभी का अनुशासन कड़ा है - "पिता का यह स्नेह उन्हें बिगाड़ न दे, इस बात का मेरी माता को ख़ास ख्याल रहता था. वह अपने अनुशासन में सावधान थीं. मेरी बुआ को कम प्रेम करती थीं, यह तो किसी हालत में नहीं कहा जा सकता. पर आर्य गृहणी का जो उनके मन में आदर्श था, मेरी बुआ को वे ठीक उसी के अनुरूप ढलना चाहती थीं." 'अनुशासन में सावधानी' के पीछे का वास्तविक कारण वह फ्रायडीय सिद्धांत है, जिसके अनुसार पुरुष के संदर्भ में माता अपनी पुत्री को भी प्रतिद्वंद्वी समझती है. यदि आप उपन्यास का एक एक वाक्य ध्यान से पढ़ेंगे तो आप इस तथ्य की पुष्टि में और भी प्रमाण पा सकेंगे.

दमित इच्छाओं वाली एक 15-16 वर्ष की किशोर बालिका जिसके मन में अपने आप को लेकर अपने शरीर को लेकर बहुत से प्रश्न अकुलाते होंगे, जो बहुत कुछ कहना, बहुत कुछ समझना चाहती होगी, किसी से खुलकर बात तक नहीं कर सकती. प्रमोद के वर्णन से उसकी व्याकुलता का स्पष्ट आभास होता है - "कहते कहते थोड़ी देर बाद एकाएक जाने उन्हें क्या याद आ जाता, चिहुँक पड़तीं......" ...... "मैंने उस समय यह भी अनुभव किया कि उन्हें अब एकांत उतना बुरा नहीं लगता. शाम के वक्त छत पर खटोला डाले ऊपर उड़ती हुई चीलों को ही चुपचाप देख रही हैं. कभी पतंगों के पेंच देखती हैं और कटी हुई पतंग पर, जब तक वह ओझल न हो जाय, आँख गाड़े रहती हैं. और नहीं तो खटोले पर पेट के बल लेटकर कोयले से धरती पर कीरम काँटें ही खींचती हैं." ...... "वह थोड़ी देर मुझे देखती रहतीं. वह दृष्टि अनबूझ होती थी. मानो मैं उन्हें दीख ही न रहा होऊँ. मुझसे आर-पार होकर जाने वह क्या देख रही हैं. ......" - वयःसंधि पर खड़ी नवयौवना, जिसके अंतः में सहेली के भाई के प्रति प्रेमांकुरण हो रहा है, की मनोदशा का स्पष्ट वर्णन किया है जैनेन्द्र ने.

यह प्रेमांकुरण पुलकित करने वाला भी है और भयभीत करने वाला भी. भाभी को जैसे ही पता चलता है, मृणाल का भय ही साकार हो उठता है उसकी बुरी तरह पिटाई की जाती है, जिसका वो विरोध तक नहीं करती, उसका विवाह आनन-फानन में एक अधेड़ उम्र के निस्संतान विधुर से कर दिया जाता है, वह फिर भी कोई विरोध नहीं करती. मानो अपनी दमित इच्छाओं के साथ साथ वह स्वयं भी अचेतन के गहरे गह्वर में उतर गयी हो. और जो दिख रहा है, वह मृणाल का सत्व न होकर शरीर रूपी खोल मात्र हो, जिसके साथ जो कुछ होना हो, हो! वह तो अब इस सबसे परे है.

विवाह के चौथे दिन मृणाल वापस आती है, तब मृणाल और प्रमोद के बीच हुए वार्तालाप में जैनेन्द्र मृणाल के गहरे अंतर्द्वंद्व का आभास देते हैं - "तू एक काम करेगा ? ...... नहीं नहीं कुछ नहीं. ..... शीला के घर जाएगा? .... जाकर क्या करेगा? ...... नहीं, नहीं मैं हँसी कर रही थी. कोई काम नहीं."

अपने पहले प्यार और सामाजिक रीति से हुए धर्मविवाह के बीच मृणाल द्वंद्व में है - चेतन और अवचेतन मन का द्वंद्व - चेतन मन सामाजिक मर्यादाओं को निभाने का उपदेश देता है, अवचेतन प्राकृतिक इच्छाओं की ओर खींचता है. चेतन की विजय होती है और मृणाल मर्यादा की गठरी संभाले पतिगृह चली जाती है, जहाँ का उसका मन नहीं है, जहाँ उसे प्रतारणा ही मिलती है. प्रतारणा का कारण जैनेन्द्र ने पाठकों के मनोविज्ञान पर छोड़ दिया है, सब अपने अपने अनुभवों से उससे तदाकार हों!

मृणाल अपने द्वंद्व से निकलने का प्रयत्न करती है, वास्तविक अर्थों में पतिपरायणा बनना चाहती है और पति से अपना बीता हुआ कल सब सच सच बता देती है, क्योंकि एक सच्चे रिश्ते की शुरुआत सच से ही होनी चाहिए. लेकिन इसकी प्रतिक्रिया यह होती है कि पति उसे घर से ही निकाल देता है. यहीं से मृणाल की समस्त दमित इच्छाएँ आत्मविस्तार के रूप में प्रकट होती हैं. मृणाल का जीवन, मृणाल का शरीर सब दूसरों को समर्पित हो जाता है, उसका अपना कुछ बचता है, तो वह है उसका सच्चा हृदय. आगे की उसकी समस्त क्रियाओं का स्पष्टीकरण केवल उसका शुद्ध हृदय है, फिर वह क्रियाएँ समाजसम्मत हों या न हों! कोयले वाले के संग रहने से लेकर, अंत समय में तथाकथित निम्नश्रेणी के लोगों के साथ रहने का औचित्य इसी फ्रायडीय सिद्धांत के द्वारा सिद्ध होता है कि दमित इच्छाएँ अपनी मुक्ति का मार्ग खोज निकालती हैं, और सकारात्मक मार्ग इच्छाओं के उदात्तीकरण (सब्लिमेशन) की ओर ले जाते हैं, जैसा मृणाल के साथ हुआ - अपना अहं खोकर वह सबकी हो गयी. सभी वर्जनाओं से ऊपर; क्रोध, लोभ, मोह, घृणा आदि सभी नकारात्मकताओं से परे!

आपने 'त्यागपत्र' उपन्यास ध्यान से पूरा पढ़ा है? नहीं? तो अब पढ़िये, जरूर पढ़िये ! आप पाएँगे कि उपन्यास के प्रत्येक वाक्य में शब्दों के माध्यम से जितना कहा गया है, उससे कहीं ज्यादा वो कहा जा रहा है, जो लिखा नहीं है. उदाहरण के लिए मृणाल के शीला के घर जाने की चर्चा है, रोज जाने की चर्चा है, एक दिन अधिक देर हो जाने के कारण नौकर को भेज कर बुलाने की जरूरत पड़ जाने की चर्चा है, मृणाल की अन्यमनस्कता की चर्चा है, फिर भाभी द्वारा मृणाल को बुरी तरह पीटे जाने की चर्चा है. पर यह सब क्यों ? यह शब्दों से नहीं कहा गया है, फिर भी पाठक बिना किसी विशेष प्रयास के सहज ही मृणाल के अंकुरित होते प्रेमसंबंध और इसके कारण उसकी भाभी के रोष को आसानी से समझ लेता है. इसी तरह विवाहोपरांत जब मृणाल और शीला के भाई के बीच प्रमोद के माध्यम से संदेशों का आदान प्रदान होता है, तो संदेशों की विषयवस्तु शब्दशः न लिखी होने पर भी स्पष्ट रूप से समझी जा सकती है. ऐसा इसलिए है क्योंकि उपन्यास मनोवैज्ञानिक शैली में लिखा गया है.

आशा है, अब आप समझ गये होंगे कि 'त्यागपत्र' उपन्यास किस प्रकार मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों का इस्तेमाल करते हुए लिखा गया एक सफल मनोवैज्ञानिक उपन्यास है.

आइये! अब प्रश्नों के माध्यम से अपनी समझ को परखिये.

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए.**

(1) जज साहब का .... और .... मन उन्हें बुआ के प्रति अपराधी बता रहा था.

(2) मृणाल की भाभी द्वारा मृणाल पर कड़ा अनुशासन रखने का कारण वह फ्रायडीय सिद्धांत है, जिसके तहत .... के संदर्भ में .... पुत्री को भी अपना .... समझती है.

(3) चेतन मन .... होता है, जबकि अचेतन मन ....

(4) आत्मविस्तार के रूप में मृणाल की दमित इच्छाओं का .... हो जाता है.

(5) शब्दों से अधिक शब्दों से परे जाकर कह सकने की जैनेन्द्र की शैली ही .... शैली है.

8.5 सारबिंदु

मित्रो! आशा है आपने इकाई अच्छी तरह से पढ़कर समझ ली है. यदि आप पाठ के दौरान पूछे गये प्रश्नों के उत्तर बिना किसी मदद के अपने आप तुरंत दे पा रहे हैं, तो इसका अर्थ है कि आपने सचमुच अच्छी तरह इकाई समझ ली है. यदि ऐसा नहीं है, तो आपको पुनः इकाई पढ़ने की आवश्यकता है. दुबारा इकाई पढ़ते समय आप अपनी कॉपी कलम साथ में लेकर बैठें और पढ़े गये अनुच्छेद में कही गयी सबसे महत्वपूर्ण बात को बिंदु के रूप में नोट कीजिए. पूरा पढ़ने के बाद आप अपने लिखे बिंदुओं को नीचे लिखे बिंदुओं से मिलाइए.

- 'त्यागपत्र' उपन्यास मनोवैज्ञानिक शैली में लिखा गया उपन्यास है.
- बीसवीं शताब्दी के आरंभ में सिग्मंड फ्रायड ने मनोविज्ञान को एक स्वतंत्र अध्ययन शाखा के रूप में दृढ़ता के साथ स्थापित किया और प्रेक्षणीय मानवीय व्यवहार और मानसिक प्रक्रियाओं के बीच कार्य-कारण संबंध की तार्किक व्याख्या प्रस्तुत की.
- फ्रायड ने मन के तीन हिस्से बताए - चेतन, अवचेतन और अचेतन. चेतन मन चैतन्यतापूर्वक समाज और विधि की रीति नीति के अनुरूप कार्य करता है. अवचेतन मन कई बार कुछ ऐसा कर जाता है, जो चेतन मन करने से हिचकता है. अचेतन मन सबसे विशाल, सबसे गूढ़ और सबसे अबूझ है. इसके कार्य अक्सर या तो अलग से दिखाई ही नहीं पड़ते, या फिर असामान्य या विपरीत दिखाई पड़ते हैं.
- अल्फ्रेड एडलर और कार्ल गुस्ताफ युंग भी मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं में मौलिक योगदान के लिए जाने जाते हैं.
- जैनेन्द्र प्रेमचंद की परंपरा के उपन्यासकार हैं, परंतु उन्होंने अपने उपन्यासों को मनोवैज्ञानिक धरातल पर विकसित किया है.
- 'त्यागपत्र' शीर्षक ही इस उपन्यास की मनोवैज्ञानिक शैली की ओर इंगित कर देता है.
- उपन्यास के प्रमुख पात्र जज साहब का जजी से त्यागपत्र और स्वनिर्वासन उनके अवचेतन में बैठे अपराध-बोध को घोषित करता है.
- उपन्यास की केंद्रबिंदु मृणाल की दमित इच्छाएँ अपनी मुक्ति का मार्ग आत्मविस्तार में पाती हैं, जहाँ उनका परिष्कार हो उदात्तीकरण हो जाता है.

8.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 800 शब्दों में लिखिए.**

(1) 'मनोविज्ञान' शब्द का अर्थ बताते हुए फ्रायड की मान्यताओं को संक्षेप में बताइए.

(2) बीसवीं शताब्दी के बौद्धिक परिवेश को प्रभावित करने वाले तीन मनोवैज्ञानिकों के नामों का उल्लेख करते हुए उनकी मान्यताओं की चर्चा कीजिए.

(3) जज साहब के त्यागपत्र देने के कारण की मनोवैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत कीजिए.

(4) मृणाल की जीवन यात्रा का मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण दीजिए.

(5) मनोवैज्ञानिक उपन्यास के रूप में 'त्यागपत्र' का मूल्यांकन कीजिए.

- **टिप्पणी लिखिए.**

(1) सिग्मंड फ्रायड की मनोवैज्ञानिक मान्यताएँ

(2) एडलर और युंग की मनोवैज्ञानिक मान्यताएँ

(3) जज साहब का त्यागपत्र

(4) मृणाल का मानसिक द्वंद्व

(5) मृणाल का आत्मविस्तार

(6) जज साहब का अपराधबोध

(7) मृणाल की दमित इच्छाएँ

(8) हिंदी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास

(9) प्रेमचंद के उपन्यासों में मनोविज्ञान का स्वरूप

(10) 'त्यागपत्र' शीर्षक से अभिव्यक्त होता मनोविज्ञान

8.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

नीचे कुछ ऐसी पुस्तकों के नाम और कुछ वेबसाइट लिंक हैं, जिनका उपयोग इस इकाई की सामग्री तैयार करने के लिए किया गया है और आपके अध्ययन के लिए भी उपयोगी हो सकते हैं.

- https://epustakalay.com/book/4916-tyagpatra-by-jainendra-kumar/
- जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन. लेखक - डॉ. देवराज उपाध्याय. प्रकाशक - पूर्वोदय प्रकाशन दिल्ली. प्रथम संस्करण - दिसंबर, 1968
- https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.401929/page/n89/mode/2up?view=theater
- https://ijcrt.org/papers/IJCRT1807056.pdf
- <https://www.allresearchjournal.com/archives/2015/vol1issue10/PartN/1-10-90.pdf>

इकाई 9 'तमस' : भीष्म साहनी – लेखक परिचय और उपन्यास की कथावस्तु

रुपरेखा

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 लेखक परिचय

9.3.1 जीवन परिचय

9.3.2 रचनात्मक परिचय

9.3.3 सम्मान और पुरस्कार

9.4 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु

9.5 'तमस' उपन्यास की कथात्मक विशिष्टता

9.6 सारबिंदु

9.7 परीक्षापयोगी प्रश्नावली

9.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

9.1 उद्देश्य

उपरोक्त इकाई के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :-

- भीष्म साहनी के जीवन और लेखन के बारे में विस्तार से जानना.
- 'तमस' उपन्यास की सामाजिक और ऐतिहासिक महत्ता को समझना.
- विभाजन के समय की त्रासदी और उसके प्रभाव को उपन्यास के माध्यम से विश्लेषित करना.
- उपन्यास की कथावस्तु और घटनाओं का विस्तार से अध्ययन करना.
- 'तमस' में भारत-पाक विभाजन के बाद के सामाजिक परिवर्तनों को समझना.
- विभाजन के समय के धार्मिक संघर्षो का चित्रण और उनका प्रभाव जानना.
- उपन्यास में मानवीय संवेदनाओं और संघर्षों का विश्लेषण करना.
- स्त्री पात्रों के माध्यम से उपन्यास में सामाजिक और मानसिक संघर्षों को समझना.
- भीष्म साहनी की लेखनी के प्रकार और शैली का अध्ययन करना.
- विभाजन के बाद के समाज पर मानसिक और भावनात्मक प्रभावों का गहराई से विश्लेषण करना.
- उपन्यास के पात्रों का व्यक्तित्व और उनके संघर्षो का परीक्षण करना.
- धार्मिक और सांस्कृतिक विवादों का प्रभाव समाज पर जानना.
- उपन्यास में प्रस्तुत सामाजिक असमानताओं और उनके समाधान पर विचार करना.
- 'तमस' के माध्यम से लेखक द्वारा समाज और राजनीति की आलोचना का अध्ययन करना.
- 'तमस' उपन्यास में मानवीयता, सहानुभूति और करुणा जैसे तत्वों के चित्रण को समझना.

इस तरह से इन उद्देश्यों के माध्यम से 'तमस' उपन्यास की गहरी समझ और लेखक भीष्म

साहनी की विचारधारा को जानने में मदद मिल सकती है.

9.2 प्रस्तावना

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण और प्रख्यात लेखक हैं, जिनका लेखन विशेष रूप से विभाजन, संघर्ष और समाज की गहरी समस्याओं से जुड़ा हुआ है. उनकी कृतियों में मानवता की गहरी समझ और समाज के प्रति उनका दृष्टिकोण साफ़ झलकता है. 'तमस' उपन्यास भी उनकी ऐसी ही एक सशक्त कृति है, जिसे सन् 1974 ई. में प्रकाशित किया गया. इस उपन्यास ने भारतीय समाज के विभाजन की त्रासदी और उसके परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली हिंसा और मानवीय पीड़ा को एक गहरे और वास्तविक तरीके से प्रस्तुत किया है.

'तमस' का अर्थ है अंधकार, और यह उपन्यास सन् 1947 ई. के भारत-पाक विभाजन के समय की परिस्थितियों और घटनाओं को केंद्रित करता है. उपन्यास में उस समय के धार्मिक और सांप्रदायिक संघर्षों, असहमति और नफरत के परिणामस्वरूप पैदा हुए सामाजिक और मानसिक अंधकार का चित्रण किया गया है. भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में उस समय के पीड़ितों की मनोस्थिति, उनके संघर्ष और अस्तित्व की कठिनाइयों को बखूबी दर्शाया है. उपन्यास के माध्यम से लेखक ने यह बताने की कोशिश की है कि समाज की यह आंतरिक विषमताएँ और संघर्ष मानवता की कितनी बड़ी विफलता साबित होते हैं.

'तमस' उपन्यास का आरंभ विभाजन के समय के तनावपूर्ण माहौल से होता है. उपन्यास में एक छोटे से गाँव का दृश्य प्रस्तुत किया गया है, जहाँ धार्मिक उन्माद और सांप्रदायिक हिंसा ने घर-घर में भय और असुरक्षा की भावना फैला दी है. यहाँ पर लोगों का जीवन, जो पहले सामूहिकता, शांति और भाईचारे में जी रहा था, अब धार्मिक ध्रुवीकरण और एक-दूसरे के प्रति नफरत और असहमति से भर चुका है. विभाजन ने न केवल भूमि को, बल्कि लोगों के दिलों और रिश्तों को भी बाँट दिया.

इस उपन्यास में हम विभिन्न पात्रों के माध्यम से इन संघर्षों को और उनकी जटिलताओं को देख सकते हैं. एक ओर, उपन्यास में कुछ पात्र धर्म, जाति और समाज के आधार पर अपने भीतर हिंसा और घृणा की भावना को पनपते हुए दिखाई देते हैं, तो दूसरी ओर कुछ पात्र मानवीय संवेदनाओं, करुणा और सहानुभूति के प्रतीक बनकर सामने आते हैं. भीष्म साहनी ने इन पात्रों के माध्यम से यह दिखाया है कि कैसे विभाजन का समय न केवल बाहरी बल्कि भीतरी मानसिकता पर भी गहरे प्रभाव डालता है.

विभाजन के समय की धार्मिक हिंसा और मानसिक संघर्षों को साहनी ने गहरी संवेदनशीलता और यथार्थवाद के साथ प्रस्तुत किया है. वे इसे केवल एक राजनीतिक घटना के रूप में नहीं देखते, बल्कि इसके मानवतावादी पहलू को भी उभारते हैं. 'तमस' में यह भी दिखाया गया है कि धर्म और संप्रदाय के नाम पर जो हिंसा की जा रही थी, वह वास्तविकता से कितनी अलग थी. यह उपन्यास एक चेतावनी भी है, जो समाज को बताता है कि अंधकार के इस रास्ते पर चलकर न केवल हम एक दूसरे से दूर होते हैं, बल्कि अंततः हम अपनी मानवता से भी दूर हो जाते हैं.

भीष्म साहनी का यह उपन्यास केवल भारत के विभाजन का चित्रण नहीं करता, बल्कि यह समाज की गहरी मानसिक और सांस्कृतिक धारा को भी उजागर करता है. साहनी ने अपने लेखन में जो मानवीय संवेदनाएँ और संघर्षों का चित्रण किया है, वह आज भी प्रासंगिक है और पाठकों को समाज की वास्तविकता और उसके भीतर छिपी हुई जटिलताओं को समझने का एक गहरा दृष्टिकोण प्रदान करता है.

इस प्रकार, 'तमस' उपन्यास न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह

भारतीय समाज की सांस्कृतिक और मानसिक धारा का एक विश्लेषण भी है. भीष्म साहनी का लेखन इस उपन्यास के माध्यम से उस समय की असलियत को सामने लाता है और पाठकों को यह समझाने की कोशिश करता है कि मानवीय रिश्ते और संवेदनाएँ ही एकमात्र सच्ची शक्ति हैं, जो समाज का सही दिशा में मार्गदर्शन कर सकती हैं.

9.3 लेखक परिचय

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के महान लेखक, उपन्यासकार, और नाटककार थे, जिन्होंने समाज के जटिल पहलुओं और मानव जीवन की गहरी संवेदनाओं को अपनी रचनाओं में अभिव्यक्त किया. उनका साहित्यिक योगदान विशेष रूप से विभाजन के समय की पीड़ा और समाज में व्याप्त असमानताओं के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है. उनकी रचनाओं में समाज के हर वर्ग की समस्याएँ और मानवता आदि की प्रामाणिक जानकारी मिलती है.

भीष्म साहनी के जीवन परिचय, साहित्यिक योगदान और सम्मान और पुरस्कार आदि निम्नलिखित रूप में व्याख्यायित किया जा सकता है –

9.3.1 जीवन परिचय

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के एक महान और प्रभावशाली लेखक थे. उनका जन्म 8 अगस्त, 1915 को अविभाजित पंजाब के रावलपिंडी में हुआ था. उनका परिवार समाज सुधारक विचारधारा से प्रभावित था, क्योंकि उनके पिता न केवल व्यापारी थे, बल्कि समाज सुधारक कार्यों में भी सक्रिय रहते थे. भीष्म साहनी का बचपन रावलपिंडी में बीता, और उनका जीवन प्रारंभ से ही संघर्षों और कष्टों से भरा था. वे बचपन से ही अक्सर बीमार रहते थे, और बीमारी के दिनों में वे अकेलेपन का सामना करते थे. वे अपने छोटे से जीवन में शरारतें करने और अपनी स्वतंत्रता का आनंद लेने के लिए तांगे पर कूदने, गलियों में घूमने और कभी-कभी छोटे-मोटे विद्रोह करने का आनंद लेते थे.

भीष्म साहनी का व्यक्तित्व बहुत ही विविध था. वे अपने बड़े भाई बलराज साहनी से पूरी तरह से भिन्न थे. बलराज साहनी को एक आदर्श और शरीफ व्यक्ति माना जाता था, जबकि भीष्म साहनी का व्यक्तित्व थोड़ी शरारतों और विद्रोह से भरा हुआ था. वे कभी भी खुद को निम्न या घटिया मानने से ईन्कार करते थे. उनकी शरारतें उनकी आंतरिक बेचैनी को व्यक्त करती थीं, और वे इन शरारतों के जरिए अपने विद्रोह को व्यक्त करते थे. उनका कहना था कि वे कभी भी किसी से खम माने वाले नहीं थे और अपने आत्मविश्वास और ताकत को बनाए रखते थे.

भीष्म साहनी का शैक्षिक जीवन भी प्रेरणादायक था. वे पढ़ाई में अच्छे थे, हालांकि उत्कृष्ट नहीं. उन्होंने आठवीं कक्षा में जिले में चौथा स्थान प्राप्त किया था, जिसके लिए उन्हें एक मैडल भी मिला था. इसके बाद वे डिबेटिंग, हॉकी और स्टेज अभिनय में भी सक्रिय रहे. उन्होंने हमेशा अपने जीवन में सादगी और उच्च विचारों को अपनाया. उनका आदर्श 'सादा जीवन, उच्च विचार' था, और यह उनके जीवन का आधार बना. वे कभी भी किसी प्रकार के दिखावे या बनावट से दूर रहते थे और अपनी सरलता और सादगी के कारण हमेशा लोगों के दिलों में बसे रहते थे.

भीष्म साहनी का व्यक्तित्व उनका सबसे बड़ा आर्कषण था. वे स्वभाव से विनम्र थे और उनके चेहरे पर कभी कोई बनावट नहीं दिखती थी. वे हमेशा अपने विचारों और जीवन को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते थे. उनका जीवन हमेशा अपनी सादगी और विनम्रता के साथ चलता था, और उन्होंने अपने जीवन में कभी भी किसी प्रकार के अभिमान का प्रदर्शन नहीं किया. उनकी पत्नी श्रीमती शीला साहनी के अनुसार भीष्म साहनी के पास अत्यधिक नम्रता

थी, जो कभी-कभी उनकी कमजोरी बन जाती थी, क्योंकि लोग इसका गलत फायदा उठाते थे. वे गुस्से में कभी नहीं आते थे और हमेशा अपनी समस्याओं को सुलझाने के लिए शांतिपूर्वक बैठते थे.

भीष्म साहनी का साहित्यिक सफर भी बहुत ही प्रेरणादायक था. उन्होंने लाहौर के गवर्नमेंट कॉलेज से अंग्रेजी साहित्य में मास्टर डिग्री और पीएचडी की डिग्री प्राप्त की. वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े हुए थे और विभाजन के समय शरणार्थियों के लिए राहत कार्यों में शामिल हुए थे. इसके बाद उन्होंने इंडियन पीपल्स थिएटर एसोसिएशन (इप्टा) से जुड़कर नाटककार, अभिनेता और निर्देशक के रूप में काम किया. उन्होंने कई नाटकों का निर्देशन किया और उनका एक प्रसिद्ध नाटक 'भूत गारी' था, जिसे बाद में फिल्म निर्देशक ख्वाजा अहमद अब्बास ने मंच पर प्रस्तुत किया.

भीष्म साहनी का जीवन कार्य हमेशा समाज के सुधार की ओर अग्रसर था. वे भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ गए थे और पंजाब में कुछ समय तक शिक्षक के रूप में काम किया. बाद में उन्होंने दिल्ली कॉलेज में अंग्रेजी के व्याख्याता के रूप में कार्य किया. उन्होंने सन् 1956 ई. से सन् 1963 ई. तक मास्को स्थित विदेशी भाषा प्रकाशन गृह में अनुवादक के रूप में काम किया और लिओ टॉल्स्टॉय की लघु कथाओं और उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद किया.

भीष्म साहनी का लेखन भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखता है. वे भारतीय साहित्य में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करने वाले लेखक थे और उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से समाज की समस्याओं और उसकी विद्रूपताओं को उजागर किया. उनका लेखन समाज के उत्पीड़ित वर्गों की आवाज़ था. उन्होंने साहित्यिक पत्रिका 'नई कहानियाँ' का संपादन भी किया, और इसके माध्यम से उन्होंने प्रगतिशील विचारधाराओं को आगे बढ़ाया.

भीष्म साहनी साहित्य, थिएटर और सामाजिक आंदोलनों में अपनी सक्रिय भूमिका के लिए हमेशा याद किए जाएँगे. उनका योगदान भारतीय समाज और साहित्य में अमूल्य रहेगा. दिल्ली में 11 जुलाई, सन् 2003 ई. को उन्होंने हमेशा के लिए आँखें मूँद ली, लेकिन उनका साहित्यिक योगदान और विचारों की प्रभावशीलता हमेशा जीवित रहेगी.

9.3.2 रचनात्मक परिचय

भीष्म साहनी हिंदी साहित्य के एक अत्यंत प्रभावशाली और बहुआयामी लेखक थे, जिन्होंने साहित्य, नाटक और पटकथा लेखन में महत्वपूर्ण योगदान दिया. उनका लेखन विविध सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों को सामने लाता है, और उनके काम का प्रमुख केंद्र भारतीय समाज के आंतरिक संघर्ष और विभाजन की गहरी पड़ताल है. उनका साहित्य भारत के विभाजन, समाज की समस्याओं और मानवता की पीड़ा को दर्शाता है.

'तमस' (1974) भीष्म साहनी की सबसे प्रसिद्ध रचना मानी जाती है. यह उपन्यास सन् 1947 ई. के भारत विभाजन के दौरान हुई हिंसा, सांप्रदायिक नफरत और उत्पीड़न के अनुभवों पर आधारित है. यह न केवल एक ऐतिहासिक कथा है, बल्कि यह विभाजन के समय की क्रूरता और उसकी मानवता पर पड़ने वाले प्रभावों को गहराई से चित्रित करता है. तमस का अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन, जापानी और कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया गया है और यह एक महत्वपूर्ण साहित्यिक कृति बन गई. इस उपन्यास को सन् 1975 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला, और गोविंद निहलानी ने सन् 1987 ई. में इस पर एक टेलीविजन फिल्म बनाई, जो आज भी दर्शकों के बीच लोकप्रिय है.

भीष्म साहनी का साहित्य केवल विभाजन के दर्द को ही नहीं, बल्कि समग्र मानवता

के संघर्षों को व्यक्त करता है. उनके अन्य महत्वपूर्ण उपन्यासों में **झरोखे सन् 1967 ई.**, **कड़ियाँ (1971)**, **बसंती (1979)**, **मय्यादास की माड़ी (1987)**, **कुंतो (1993)** और **नीलू, नीलिमा, नीलोफर (2000)** शामिल हैं. इन उपन्यासों में उन्होंने विभिन्न सामाजिक मुद्दों को उठाया और मानवता की जटिलताओं को दर्शाया. विशेष रूप से मय्यादास की माड़ी एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास है, जिसमें पंजाब के खालसा राज के पतन और अंग्रेजों के शासन में बदलाव को बारीकी से चित्रित किया गया है. इस उपन्यास में सामाजिक मूल्यों के टूटने और व्यवस्था के परिवर्तन की गहरी छानबीन की गई है.

साहनी के कहानी संग्रहों में **भाग्य रेखा (1953)**, **पहला पाठ (1956)**, **भटकती राख (1966)**, **पटरियन (1973)**, **वांग चू (1978)**, **शोभा यात्रा (1981)**, **निशाचर (1983)**, **पाली (1989) और डायन (1996) शामिल हैं.** उनकी कहानियाँ सरल, प्रभावी और सामाजिक सच्चाइयों को उजागर करने वाली होती हैं. **'चीफ की दावत'**, जो 1956 में प्रकाशित हुई थी, ने उन्हें एक प्रमुख कहानीकार के रूप में पहचान दिलाई.

भीष्म साहनी के नाटकों का भी महत्वपूर्ण स्थान है. उनके द्वारा लिखे गए नाटक **हानूश** (1977), **कबीरा खड़ा बाजार में** (1981), **माधवी** (1982), और **मुआवज़े** (1993) भारतीय रंगमंच पर गहरी छाप छोड़ गए हैं. 'कबीरा खड़ा बाजार में को कई प्रमुख भारतीय रंगमंच निर्देशकों ने मंचित किया है, और यह नाटक सामाजिक और सांप्रदायिक विषयों पर आधारित है. **माधवी**, जो एक एकल नाटक के रूप में प्रस्तुत किया गया, ने अंतरराष्ट्रीय रंगमंच समारोहों में कई पुरस्कार जीते.

मुआवज़े भी एक महत्वपूर्ण नाटक है, जो नाट्य समूहों के बीच बेहद लोकप्रिय हुआ. इस नाटक ने न केवल भारतीय रंगमंच की धारा को एक नई दिशा दी, बल्कि यह नाटक नाट्य समूहों के बीच पुरस्कार भी जीतने में सफल रहा.

भीष्म साहनी का लेखन समाज के प्रति उनके गहरी संवेदनशीलता को दर्शाता है. उनका साहित्य सिर्फ व्यक्तिगत अनुभवों का ही नहीं, बल्कि समाज के दुखों और विडंबनाओं का भी प्रमाण है. उनका उपन्यास तमस उन यादों को सामने लाता है जो विभाजन की त्रासदी का हिस्सा थीं, जबकि उनके नाटक और कहानियाँ हमारे समक्ष उन मुद्दों को उजागर करती हैं जो आज भी समाज के भीतर व्याप्त हैं.

भीष्म साहनी ने अपनी आत्मकथा **'आज के अतीत'** (2016) में अपने जीवन के अनुभवों और संघर्षों को साझा किया है, जो उनके साहित्यिक सफर को और भी समृद्ध बनाते हैं. इसके अलावा, उन्होंने अपने भाई बलराज साहनी की जीवनी **'बलराज माई ब्रदर'** भी लिखी, जो उनके पारिवारिक और व्यक्तिगत संबंधों की गहरी समझ प्रदान करती है.

भीष्म साहनी का साहित्य न केवल भारतीय साहित्य में एक मील का पत्थर है, बल्कि उन्होंने समग्र मानवता की सच्चाई और संघर्ष को उजागर करने के लिए अपना जीवन समर्पित किया. उनके नाटक, उपन्यास और कहानियाँ आज भी भारतीय समाज में प्रासंगिक हैं, और उनकी कृतियाँ न केवल साहित्य प्रेमियों के लिए, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए गहरे विचार की आवश्यकता को प्रस्तुत करती हैं. उनका लेखन आज भी लोगों को सोचने पर मजबूर करता है और उन्हें मानवता और सहिष्णुता के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करता है.

9.3.3 सम्मान और पुरस्कार

भीष्म साहनी अपने जीवनकाल में हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण लेखक और नाटककार के रूप में पहचाने गए. उन्होंने साहित्य और नाट्य क्षेत्र में असाधारण योगदान दिया, जिसके

लिए उन्हें कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया.

(1) शिरोमणि लेखक पुरस्कार (1979) : यह पुरस्कार भीष्म साहनी को उनकी उत्कृष्ट लेखनी के लिए प्रदान किया गया, जिसने हिंदी साहित्य को नई दिशा दी.

(2) उत्तर प्रदेश सरकार पुरस्कार (1975) : उपन्यास तमस के लिए उन्हें यह पुरस्कार मिला, जो भारतीय विभाजन और उससे जुड़े दंगों की क्रूरता को उजागर करता है.

(3) अंतर्राष्ट्रीय रंगमंच महोत्सव, रूस (2004) : उनके नाटक माधवी (जिसे राशि बनी ने प्रदर्शित किया था) को इस महोत्सव में कलर ऑफ नेशन पुरस्कार प्राप्त हुआ.

(4) मध्य प्रदेश कला साहित्य परिषद पुरस्कार (1975) : नाटक हानूश के लिए यह पुरस्कार मिला, जो भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को दर्शाता है.

(5) साहित्यिक अकादमी पुरस्कार (1975) : तमस उपन्यास के लिए उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया.

(6) एफ्रो-एशियन राइटर्स एसोसिएशन से लोटस पुरस्कार (1981) : इस पुरस्कार से भीष्म साहनी को उनकी लेखन शैली और विषयवस्तु की अंतरराष्ट्रीय सराहना मिली.

(7) सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार (1983) : यह पुरस्कार भीष्म साहनी को उनके साहित्यिक योगदान के लिए दिया गया.

(8) पद्म भूषण (1998) : भारतीय साहित्य में उनके योगदान के लिए उन्हें यह सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार प्राप्त हुआ.

(9) शलाका सम्मान (1999-2000) : यह सम्मान नई दिल्ली में उनकी उत्कृष्टता के लिए प्रदान किया गया.

(10) मैथलीशरण गुप्त सम्मान (2000-2001) : मध्य प्रदेश द्वारा भीष्म साहनी को उनके योगदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया.

(11) संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (2001) : यह पुरस्कार नाटक के क्षेत्र में उनकी महत्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए मिला.

(12) सैयद राष्ट्रीय पुरस्कार : सर्वश्रेष्ठ हिंदी कथा लेखक के रूप में उन्हें यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुआ.

इसके अलावा, 31 मई, 2017 को इंडिया पोस्ट ने भीष्म साहनी को सम्मानित करने के लिए एक स्मारक डाक टिकट जारी किया, जो उनके साहित्यिक योगदान का प्रतीक है.

इन पुरस्कारों और सम्मानों से यह स्पष्ट होता है कि भीष्म साहनी का साहित्यिक और नाट्य क्षेत्र में योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण था और उनका कार्य आज भी प्रेरणा का स्रोत है.

इस तरह से भीष्म साहनी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को इसके आधार पर समझा जा सकता है.

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्न के विस्तृत उत्तर दीजिए.**

(1) भीष्म साहनी के जीवन पर अपने विचार व्यक्त करें.

(2) भीष्म साहनी के साहित्यिक योगदान का परिचय दीजिए.

(3) भीष्म साहनी का लेखन समाज के किस वर्ग की समस्याओं को उजागर करता है और क्यों?

(4) भीष्म साहनी के साहित्यिक योगदान को देखते हुए उन्हें कौन-कौन से प्रमुख पुरस्कार प्राप्त हुए और उनका महत्व क्या है?

- **लघु उत्तरीय प्रश्न**

(1) भीष्म साहनी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(2) भीष्म साहनी ने किस साहित्यिक पत्रिका का संपादन किया?

(3) भीष्म साहनी के प्रमुख उपन्यासों में कौन-कौन से उपन्यास शामिल हैं?

(4) तमस उपन्यास को किस वर्ष साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ?

(5) भीष्म साहनी को सन् 1998 ई. में कौन-सा सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार प्राप्त हुआ?

- **वाक्य/कथन पढ़कर 'सही' 'गलत' का चिन्ह लगाइए.**

(1) भीष्म साहनी का जन्म रावलपिंडी में हुआ था. ( )

(2) भीष्म साहनी ने 'तमस' उपन्यास के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार 1980 में प्राप्त किया. ( )

(3) भीष्म साहनी ने अपनी आत्मकथा 'आज के अतीत' 2000 में प्रकाशित की. ( )

(4) भीष्म साहनी को पद्म भूषण पुरस्कार सन् 1983 ई. में प्राप्त हुआ. ( )

(5) भीष्म साहनी के नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' को भारतीय रंगमंच के इतिहास में गहरी छाप छोड़ी. ( )

- **रिक्त स्थान की पूर्ति करें-**

(1) भीष्म साहनी का जन्म .... में हुआ था.

(2) भीष्म साहनी का प्रसिद्ध उपन्यास .... सन् 1947 ई. के विभाजन की पीड़ा पर आधारित है.

(3) भीष्म साहनी का उपन्यास .... को सन् 1975 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला.

(4) भीष्म साहनी ने अपनी पत्नी का नाम .... रखा था.

(5) भीष्म साहनी को सन् 1998 ई. में .... पुरस्कार प्राप्त हुआ.

9.4 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु

भीष्म साहनी का उपन्यास तमस आज़ादी से पहले सांप्रदायिक हिंसा के भयावह रूप का मार्मिक चित्रण करता है. यह केवल पाँच दिनों की कहानी है, लेकिन इन पाँच दिनों में सांप्रदायिकता की विभीषिका, राजनीतिक स्वार्थ और मानवीय त्रासदी के अनेक पहलू उजागर होते हैं. उपन्यास में दिखाया गया है कि कैसे ब्रिटिश शासन ने 'फूट डालो और राज करो' नीति के तहत सांप्रदायिक दंगों को हवा दी, और कैसे आज़ादी के बाद भी राजनीतिक दल इस विभाजनकारी मानसिकता का इस्तेमाल करते रहे.

तमस न सिर्फ हिंसा के बीभत्स स्वरूप को सामने लाता है, बल्कि उस पीड़ा को भी अभिव्यक्त करता है जिसका शिकार वे निर्दोष लोग बने, जो न हिंदू थे, न मुसलमान बल्कि सिर्फ इंसान थे. साहनी ने उन मनोवृत्तियों को उजागर किया है जो समाज में घृणा और नफरत फैलाती हैं और आम जनता को भय, हिंसा और विनाश के गर्त में धकेल देती हैं. उपन्यास पाठक को झकझोर देता है और सांप्रदायिकता की समस्या पर गंभीर आत्ममंथन के लिए मजबूर करता है.

भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' में भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय हिंदू-मुसलमानों के बीच भड़की सांप्रदायिक हिंसा और अंग्रेजों की विभाजनकारी नीति को गहरे रूप में चित्रित किया गया है. अंग्रेजों ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाकर हिंदू-मुसलमानों के बीच नफरत और संघर्ष को बढ़ावा दिया, जिससे वे लगभग दो सौ वर्षों तक शासन करते रहे. मुराद अली जैसे पतित व्यक्तियों को अपने स्वार्थों के लिए इस्तेमाल किया गया.

उपन्यास की शुरुआत एक घटना से होती है, जब मुराद अली ने नत्थू चमार से एक सुअर मरवाकर मस्जिद के पास फेंकवा दिया. इस घटना से हिंदू-मुसलमानों के बीच हिंसा की चिनगारी सुलग उठती है. मुसलमान इसे हिंदुओं की करतूत समझते हैं और बदले की भावना से हिंसा का रास्ता अपना लेते हैं. दोनों समुदायों के बीच लूटपाट, बलात्कार और हत्या की घटनाएँ बढ़ जाती हैं. हिंदू-मुसलमान अपने-अपने मोहल्लों से पलायन करने लगते हैं.

अंग्रेज शासक रिचर्ड ने इस हिंसा को रोकने के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं किया. उसने स्थिति को नियंत्रित करने के बजाय इसे बढ़ावा दिया, क्योंकि उसे लगता था कि जितनी अधिक हिंसा होगी, उतना ही ब्रिटिश शासन मजबूत रहेगा. इस दौरान हजारों निर्दोष लोग मारे गए और लाखों की संपत्ति नष्ट हुई. अंततः अमन कमेटी का गठन हुआ और शरणार्थी शिविर खोले गए, लेकिन ये सभी उपाय अस्थायी साबित हुए. ब्रिटिश सरकार ने इस त्रासदी की कोई ज़िम्मेदारी लेने के बजाय केवल रिचर्ड का तबादला कर मामले को समाप्त कर दिया. इससे यह स्पष्ट होता है कि अंग्रेजों का उद्देश्य केवल अपनी सत्ता को मजबूत करना था, न कि भारतीयों की भलाई.

अगर 'तमस' को विस्तार से देखें, तो इसकी शुरुआत एक हृदयविदारक घटना से होती है, जब मुराद अली नत्थू से एक सुअर मारने को कहता है और इसके लिए उसे पाँच रुपये का इनाम देने का वादा करता है. नत्थू काफी संघर्ष के बाद सुअर को पकड़ने में सफल होता है, लेकिन उसे मारने में बार-बार विफल रहता है. कई बार छुरे से वार करने के बावजूद सुअर पर कोई असर नहीं होता. अंततः नत्थू एक बड़ी सिल उठाकर सुअर पर प्रहार करता है, जिससे वह मर जाता. यह घुटनभरा माहौल नत्थू के लिए असहनीय हो जाता है, और वह वहाँ से भाग निकलता है.

उधर, कुछ कांग्रेसी नेता प्रभातफेरी में व्यस्त रहते हैं. ये नेता समाज-सेवा का दावा तो करते हैं, लेकिन उनकी असलियत कुछ और ही होती है. कश्मीरीलाल, बख्शीजी और जरनैल जैसे नेता आपसी प्रतिस्पर्धा और स्वार्थ से ग्रस्त हैं. भीष्म साहनी ने इन नेताओं का पर्दाफाश करते हुए दिखाया कि वे समाज के प्रति अपनी वास्तविक जिम्मेदारी निभाने के बजाय केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति में लगे रहते हैं.

नत्थू जब खुली हवा में आता है, तो उसकी घबराहट थोड़ी कम होती है. एक फकीर से मुलाकात के दौरान फकीर उसे आशीर्वाद देता है और चेतावनी देता है कि वह सतर्क रहे. नत्थू के मन में सुअर की घटना और मुराद अली की यादें उमड़ने लगती हैं. उसकी मानसिक स्थिति अस्थिर हो जाती है. अगले दिन जब वह मुराद अली को देखता है, तो डर के मारे वहाँ से भाग खड़ा होता है. इस बीच, साम्प्रदायिक हिंसा पूरे शहर में फैल चुकी होती है और हिंदू-मुसलमान अपने-अपने नारे लगा रहे होते हैं.

उपन्यास में सांप्रदायिकता की आग बुझाने का कार्य डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड को सौंपा गया था. मूलतः इतिहास का विद्यार्थी रहा रिचर्ड एक प्रशासक के रूप में नियुक्त किया गया था. उसकी पत्नी लीज़ा जीवन का आनंद लेना चाहती थी, लेकिन रिचर्ड हमेशा अपने विचारों में खोया रहता था. उसे शहर में बढ़ रही सांप्रदायिक हिंसा से कोई विशेष सरोकार नहीं

था. लीज़ा जानती थी कि अंग्रेज हिंदू-मुसलमानों के बीच फूट डालकर उन्हें आपस में लड़वा रहे हैं.

जब रिचर्ड को नगर में हो रही हिंसा की जानकारी मिली, तब भी उसने सीमित प्रतिक्रिया दी. कांग्रेसी नेता प्रभातफेरी के साथ-साथ नगर में तामीरी काम भी कर रहे थे, जिससे उन्हें मुसलमानों का समर्थन मिल रहा था. इसी दौरान मस्जिद के पास मृत सुअर फेंके जाने की खबर आई, जिसने सांप्रदायिक तनाव को और भड़का दिया. बख्शीजी और जरनैल ने इस मृत सुअर को छिपाने का प्रयास किया, लेकिन तब तक हिंसा शुरू हो चुकी थी.

साम्प्रदायिक तनाव बढ़ता देख नगर के धार्मिक नेताओं ने आत्मरक्षा के उपायों पर विचार किया. वानप्रस्थीजी ने सभी को अपने घरों में कड़वा तेल और कोयला रखने की सलाह दी. एक सज्जन ने डिप्टी कमिश्नर से मिलकर शहर की स्थिति पर चेतावनी देने का सुझाव दिया. वहीं, युवकों को शस्त्र प्रशिक्षण देने का कार्य मास्टर देवव्रत ने आरंभ किया. लाला लक्ष्मीनारायण आर्थिक सहायता प्रदान कर रहे थे, जबकि उनका बेटा रणवीर भी शस्त्र प्रशिक्षण ले रहा था.

एक दिन, रणवीर और धर्मवीर हलवाई की दुकान से कड़ाही लेने गए. वहाँ बिना किसी पूर्व अनुमति के रणवीर ने हलवाई पर छुरे से हमला कर दिया. यह घटना उनके भीतर छिपी हिंसक प्रवृत्ति को उजागर करती है. यह हिंसा और सांप्रदायिकता की ओर बढ़ते समाज का प्रतीक बन जाती है, जो उपन्यास में विभाजनकारी परिस्थितियों को स्पष्ट करती है.

नगर में सांप्रदायिक तनाव की स्थिति को लेकर एक शिष्टमंडल डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड से मिलने गया. बख्शीजी और अन्य नेताओं ने आग्रह किया कि सरकार को जल्द कोई ठोस कदम उठाना चाहिए, अन्यथा शहर में हिंसा और अराजकता फैल जाएगी. लेकिन रिचर्ड ने इसे हिंदू-मुसलमानों का आपसी विवाद बताकर पल्ला झाड़ लिया और सुझाव दिया कि वे मिलकर एक अमन कमेटी बनाएँ ताकि शांति बनी रहे. यह सुनकर शिष्टमंडल असंतुष्ट होकर लौट गया, क्योंकि रिचर्ड ने उन्हें न केवल अनदेखा किया, बल्कि यह भी स्पष्ट कर दिया कि ब्रिटिश सरकार के पास इस स्थिति को नियंत्रित करने की कोई वास्तविक इच्छा नहीं है.

उधर, शहर में सांप्रदायिक झगड़े की शुरुआत हो चुकी थी. मुसलमानों को यह विश्वास नहीं था कि कांग्रेस हिंदुओं की संस्था नहीं है, और इसी वजह से बख्शीजी और मेहताजी को वे शंकास्पद समझते थे. इसी बीच, शिवाले के बाजार में रौनक थी, हलवाई की दुकान पर भीड़ थी, और बच्चे स्कूल जा रहे थे. बाजार में इत्र का व्यापारी इब्राहिम भी अपनी बोतलें बेचने जा रहा था. नानबाई की दुकान पर बैठे मुसलमान करीम खान अंग्रेजों की दूरदर्शिता की चर्चा कर रहे थे, और नत्थू भी उनकी बातों को सुन रहा था. वह इस बात से परेशान था कि कहीं वही सुअर तो नहीं जो उसने मारा था और कहीं यह मुरादअली की चाल तो नहीं.

नत्थू को यह सोच-सोचकर डर लग रहा था. वह जल्दी से घर लौटना चाहता था, लेकिन रास्ते में उसे मुरादअली मिल गया, जिसने नत्थू की बातों को नजरअंदाज किया. शराब के नशे में नत्थू घर पहुँचता है, जहाँ उसकी पत्नी घबराई हुई थी, लेकिन नत्थू को मानसिक अशांति और अपराधबोध ने घेर रखा था. तभी बाहर कुत्तों के भौंकने की आवाज़ सुनाई देती है और साथ ही शिवाले का घड़ियाल बजने लगता है. नत्थू और उसकी पत्नी बाहर निकलते हैं तो देखते हैं कि आग की लपटें उठ रही हैं और सांप्रदायिक झगड़े शुरू हो चुके हैं. मुसलमान 'अल्लाह हो अकबर' और हिंदू 'हर हर महादेव' के नारे लगा रहे थे. यह दृश्य बताता है कि उपन्यास में सांप्रदायिकता ने समाज को किस हद तक प्रभावित किया है और व्यक्तिगत जीवन में भी हिंसा के भूत ने घेर लिया है.

‘तमस’ उपन्यास में सांप्रदायिकता और हिंसा के बीच, लीज़ा और रिचर्ड का संवाद एक महत्त्वपूर्ण दृश्य प्रस्तुत करता है. लीज़ा जब शहर में फैले फसाद की आवाज़ सुनती है तो वह अपने पति रिचर्ड को जागृत करने की कोशिश करती है, ताकि वह इस हिंसा को रोकने का प्रयास करें. लेकिन रिचर्ड, जो हमेशा अपने आंतरिक विचारों और शासकीय मूल्यों में खोया रहता है, लीज़ा की बातों को अनसुना कर सो जाता है. इस घटना से लीज़ा को यह एहसास होता है कि शासकीय मूल्य ही असल में महत्त्व रखते हैं, न कि मानवीय मूल्यों की कोई अहमियत है. रिचर्ड के लिए यह एक सामान्य घटना थी, जबकि लीज़ा के लिए यह एक गंभीर संकट का संकेत था.

इसी बीच, लाला लक्ष्मीनारायण के घर में भी सांप्रदायिकता की आग के बीच चिंता का माहौल था. उनके घर में एक छोटी कुल्हाड़ी थी, जो आज किसी कारण से गायब थी. उनका बेटा रणवीर घर से बाहर था, जिससे उनका डर और बढ़ गया था. हालाँकि उनके पड़ोसी फतहदीन ने उन्हें आश्वस्त किया था कि उनके रहते कोई ख़तरे की बात नहीं है, फिर भी लाला जी चिंतित थे. इस समय उन्होंने रणवीर को ढूँढ़ने का निर्णय लिया, लेकिन उनकी पत्नी ने उन्हें रोक लिया.

सुरक्षा की चिंता में लाला जी ने अपने समधी के माध्यम से शाहनवाज़ को पत्र भेजा, ताकि वह उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दे. शाहनवाज़, जो मुस्लिम होते हुए भी हिंदुओं से अच्छे संबंध रखता था, लाला जी के परिवार को सुरक्षित स्थान पर भेज देता है. लेकिन जब शाहनवाज़ रघुनाथ के घर जेवर लेने जाता है, तो वहाँ एक घटना घटती है. रघुनाथ के नौकर मिलखी, जो हिंदू था, शाहनवाज़ से मुलाकात करता है और मुस्कराते हुए जाता है. शाहनवा़ज को यह अच्छा नहीं लगता और उसकी ‘मुसलमान’ पहचान जाग उठती है. वह मिलखी की पीठ पर जोर से लात मारता है, जिससे मिलखी बुरी तरह घायल हो जाता है. मिलखी के मुँह से कुछ घुटते शब्द निकलते हैं, लेकिन वह गिरकर चुप हो जाता है. शाहनवाज़ जेवर का डिब्बा लेकर रघुनाथ के घर पहुँचता है और मिलखी के घायल होने की खबर देता है.

मज़दूर नेता देवदत्त हिंदू-मुस्लिम एकता स्थापित करने के प्रयास में जुटा था. वह अपने माता-पिता से विरोध कर निकल चुका था और तनावग्रस्त इलाके से बेख़ौफ होकर एक आवश्यक बैठक में शामिल हुआ. इस बीच दंगों में जरनैल की भी मृत्यु हो गई.

रणवीर और उसके साथी हथियार इकट्ठे करने में लगे थे. उनके भीतर एक अंधा जोश था, वे मुसलमानों को निशाना बनाना चाहते थे. इसी दौरान उन्होंने एक इत्रफरोश को मारने की योजना बनाई. इंद्र नामक युवक उसके साथ हो लिया, रास्ते भर इत्रफरोश उसे बच्चा समझकर प्रेम से बातें करता रहा, लेकिन गली के मोड़ पर इंद्र ने उसे छुरा घोंपकर मार डाला.

नत्थू, जिसने एक सुअर को मारा था, तब से भयभीत था. उसे लग रहा था कि उसकी इस हरकत से दंगे भड़क गए. उसने अपनी पत्नी से यह बात साझा की, जिसने उसे सांत्वना दी और भरोसा दिलाया कि यह प्रमाणित नहीं है कि वही सुअर मस्जिद के सामने डाला गया था. दोनों ने यह राज़ किसी को न बताने की कसम खा ली.

सांप्रदायिक दंगे पूरे क्षेत्र में फैल गए थे. खानपुर के पास एक गाँव में हरनाम सिंह की चाय की दुकान थी, पर अब कोई ग्राहक नहीं आता था. उसकी पत्नी बन्तो ने उसे गाँव छोड़ने के लिए कहा, पर हरनाम सिंह अपने वाहेगुरु पर भरोसा किए बैठा था। करीम मान ने उन्हें चेताया, जिससे वे अपनी दुकान बंद कर बंदूक के साथ निकल पड़े। रास्ते में उन्होंने अपनी दुकान लुटती और जलती देखी. वे रातभर छिपते-छिपाते रहे और सुबह एक गाँव में पहुँचे.

गाँव के मुस्लिम परिवार की महिला राजो ने उन्हें शरण दी. उसका पति एहसान अली वही था, जिसने हरनाम सिंह की दुकान लूटी थी. जब एहसान अली को सच्चाई पता चली, तो उसने उन्हें भूसे वाली कोठरी में छिपा दिया. मगर उनका बेटा रमज़ान उन्हें मारने के लिए आ गया. अचानक उसका हृदय परिवर्तन हुआ और उसने उन्हें छोड़ दिया। रात में राजो ने उन्हें सुरक्षित नदी पार छोड़ दिया और उनके गहने व बंदूक लौटा दी.

इस बीच मुस्लिम उपद्रवियों ने हरनाम सिंह के बेटे इकबाल सिंह को जबरन पकड़कर मुसलमान बना दिया. उसकी जान तभी छोड़ी गई, जब उसने कलमा पढ़ लिया और इकबाल अहमद बना दिया गया.

गुरुद्वारा सिखों से भरा हुआ था. वहाँ शत्रुओं से निपटने की पूरी तैयारी हो रही थी. सिख स्त्रियाँ भी आत्मबलिदान के लिए तैयार थीं. 'जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल' के नारों से वातावरण गूँज रहा था, तो दूसरी ओर 'अल्लाह हो अकबर' की आवाज़ें आ रही थीं.

इस हिंसा के बीच भी सोहन सिंह और मुस्लिमों की ओर से मीरदाद शांति की अपील कर रहे थे, लेकिन उन्हें गद्दार कहकर अपमानित किया गया और उन पर हमला भी हुआ. तभी बलवाइयों ने हमला कर दिया. सिखों और मुस्लिमों में दो दिन तक भीषण युद्ध हुआ. हजारों लोग मारे गए, जो सांप्रदायिकता के नाम पर हुए अत्याचारों के मूक गवाह बन गए.

युद्ध रोकने के लिए मुस्लिम पक्ष दो लाख रुपये माँग रहा था, लेकिन तेजा सिंह एक लाख तक ही देने को तैयार था. जब सिखों ने छोटे ग्रंथी को बातचीत के लिए भेजा, तो बलवाइयों ने उसकी हत्या कर दी, जिससे लड़ाई और भड़क उठी. सिख स्त्रियों ने अपमानित होने से पहले आत्मबलिदान करना उचित समझा. सबसे पहले हरनाम सिंह की बेटी जसवीर कौर ने कुएँ में छलांग लगा दी, फिर कई अन्य स्त्रियों ने भी आत्मबलिदान कर दिया.

अंततः, हवाई जहाज के आने के बाद लड़ाई थम गई. शहर में फौज तैनात कर दी गई और कर्फ्यू लगा दिया गया. धीरे-धीरे जन-जीवन सामान्य होने लगा. बख्शी जी का मानना था कि इन दंगों के पीछे अंग्रेजों की साजिश थी. रिलीफ कमेटी के कार्यकर्ता शरणार्थियों के नुकसान का आँकलन कर रहे थे, लेकिन लोग उन्हें अपनी आपबीती सुनाने लगते, जिससे वे कभी खीझ जाते तो कभी दुःखी हो जाते.

दंगों के बाद के माहौल में कुछ लोग ऐसे भी थे जो स्वार्थ सिद्ध करने में लगे थे. मकानों और जमीनों के सौदे हो रहे थे. हिंदुओं की बस्तियों से मुस्लिम जा चुके थे और मुस्लिम बस्तियों से हिंदू. कुछ ही लोग थे जो यह समझते थे कि सबको यहीं रहना है और आपसी तनाव दूर करना चाहिए.

शांति स्थापना के लिए अमन कमेटी ने एक बस का प्रबंध किया, जिसमें लाउडस्पीकर और माइक्रोफोन लगाए गए. शहर भर में शांति की अपील करने का कार्य मुराद अली को सौंपा गया. बहुतों ने उसे पहचान लिया, नत्थू भी पहचान सकता था, लेकिन वह मर चुका था.

दंगे थमने के बाद नगर-जीवन सामान्य हो गया था. रिचर्ड अब फुरसत में था और उसका तबादला होने वाला था, लेकिन वह कुछ दिन और रुककर अध्ययन और लेखन करना चाहता था. लीज़ा ने उसे याद दिलाया कि वह यहाँ के जन-जीवन पर किताब लिखना चाहता था. रिचर्ड ने लापरवाही से कहा, कहाँ से शुरु करूँ? लीज़ा को इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ा.

इस तरह संक्षेप में तमस उपन्यास की कथावस्तु सुनियोजित, सुगठित और श्रृंखलाबद्ध है. इसका मुख्य विषय हिंदू-मुसलमान दंगे और भारत-पाकिस्तान विभाजन की त्रासदी का चित्रण और इनसे बचने की मानवीय संभावनाएँ हैं. इसकी घटना सांप्रदायिक उन्माद और पहचान

के संकट को उजागर करती है, जहाँ धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान के कारण लोग हिंसा पर उतारू हो जाते हैं. यह कथा दंगों की भयावहता, मानवीय संवेदनाओं और धार्मिक कट्टरता के बीच फँसे निर्दोष लोगों के संघर्ष को मार्मिक रुप से प्रस्तुत करती है. कथानक नाटकीयता और उत्सुकता से भरपूर है. यह दो भागों और इक्कीस खंडों में विभाजित है, हालाँकि दो भागों का औचित्य स्पष्ट नहीं होता. उपन्यास दर्शाता है कि धार्मिक उन्माद और अज्ञानता से देश को कितना नुकसान हुआ है. जब तक यह तमस (अंधकार) दूर नहीं होगा, तब तक देश सही मायनों में स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता.

9.5 'तमस' उपन्यास की कथात्मक विशिष्टता

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हुए सांप्रदायिक दंगों की भयावहता और विभाजन की त्रासदी को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है. यह उपन्यास ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है. भीष्म साहनी ने इसमें विभाजन के समय हिंदू-मुसलमानों के बीच पनपी कट्टरता, अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' नीति, और इस त्रासदी से प्रभावित आम जनता की व्यथा को अत्यंत सजीव रुप से चित्रित किया है.

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और यथार्थवाद : 'तमस' का सबसे बड़ा गुण इसकी ऐतिहासिक प्रमाणिकता और यथार्थवाद है. यह उपन्यास सन् 1947 ई. के भारत-पाकिस्तान विभाजन की पृष्ठभूमि में लिखा गया है, जिसमें सांप्रदायिक दंगों की वास्तविकता को बेहद गहराई से उकेरा गया है. लेखक ने विभाजन के समय फैली हिंसा, लूटपाट, हत्या, बलात्कार और पलायन जैसी घटनाओं को इतने वास्तविक रुप में प्रस्तुत किया है कि पाठक उस समय के सामाजिक और राजनीतिक माहौल को अनुभव कर सकता है.

2. चरित्र चित्रण की सजीवता : भीष्म साहनी ने उपन्यास में विभिन्न वर्गों और समुदायों के लोगों को यथार्थवादी तरीके से चित्रित किया है. मुराद अली, जो स्वार्थ के लिए सांप्रदायिक आग भड़काता है, रिचर्ड, जो अंग्रेजों की नीति का प्रतिनिधित्व करता है, और नत्थू, जो इस हिंसा का अनजाने में कारण बन जाता है ये सभी पात्र अपनी गहराई और बहुआयामी व्यक्तित्व के कारण अविस्मरणीय बन जाते हैं. हिंदू और मुस्लिम दोनों पक्षों के चरित्रों को लेखक ने निष्पक्षता से प्रस्तुत किया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि हिंसा किसी एक पक्ष की करतूत नहीं थी, बल्कि यह राजनीतिक षड्यंत्र का परिणाम थी.

3. सांप्रदायिकता की समस्या का चित्रण : उपन्यास हिंदू-मुस्लिम संघर्ष और सांप्रदायिकता की समस्या को अत्यंत गहराई से उजागर करता है. यह दिखाता है कि किस प्रकार धार्मिक पहचान को हथियार बनाकर आम जनता को आपस में लड़वाया गया. मुराद अली जैसे स्वार्थी लोग अपने हितों के लिए हिंसा भड़काने से भी नहीं चूकते. यह सांप्रदायिकता के पीछे की राजनीति और सत्ता की महत्वाकांक्षा को भी उजागर करता है.

4. ब्रिटिश शासन की भूमिका : भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में अंग्रेजों की विभाजनकारी नीति को प्रमुखता से उभारा है. अंग्रेज अधिकारियों ने हिंदू-मुसलमानों के बीच कटुता को बढ़ावा देकर भारत में अपने शासन को मजबूत बनाए रखा. उपन्यास का पात्र रिचर्ड इस मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है. वह भारत के सांप्रदायिक माहौल को समझने के बावजूद इसे रोकने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाता, बल्कि इस स्थिति को और भड़काने का प्रयास करता है.

5. विभाजन की त्रासदी और विस्थापन : उपन्यास में यह दिखाया गया है कि सांप्रदायिक दंगों के कारण लाखों लोगों को अपने घर-बार छोड़कर पलायन करना पड़ा. हिंदू अपने मोहल्लों

से भागने को मजबूर हुए तो मुसलमान भी असुरक्षित महसूस करने लगे. इस दर्दनाक स्थिति को दर्शाते हुए लेखक ने हरनाम सिंह और उनकी पत्नी बन्तो के माध्यम से विस्थापन की पीड़ा को गहराई से व्यक्त किया है.

6. सामाजिक और राजनीतिक नेतृत्व की विफलता : उपन्यास में समाज के विभिन्न वर्गों के नेतृत्वकर्ताओं की भूमिका को भी उजागर किया गया है. कांग्रेस के नेता अपने-अपने स्वार्थों में उलझे हुए थे और जनता की वास्तविक समस्याओं से दूर थे. वहीं, धार्मिक नेता भी अपनी-अपनी सुरक्षा और प्रभाव बनाए रखने में व्यस्त थे. यह समाज के उस नेतृत्व की असफलता को दिखाता है, जो सांप्रदायिकता को रोकने के बजाय इसे बढ़ावा देने में लगा हुआ था.

7. नारी पात्रों की भूमिका : उपन्यास में महिलाओं की भूमिका भी महत्वपूर्ण है. लीज़ा, जो रिचर्ड की पत्नी है, अपने पति की नीति को लेकर चिंतित रहती है, लेकिन वह भी अपने पति को प्रभावित करने में असफल रहती है. हरनाम सिंह की बेटी जसवीर कौर, जो अपने सम्मान की रक्षा के लिए आत्मबलिदान कर देती है, भारतीय समाज की उस पीड़ा को दर्शाती है, जहाँ महिलाओं को हमेशा ही हिंसा का शिकार बनाया जाता रहा है.

8. भाषा और शिल्प : भीष्म साहनी की भाषा अत्यंत सरल, सहज और प्रभावशाली है. उन्होंने बोलचाल की भाषा में संवाद प्रस्तुत किए हैं, जिससे पात्रों की भावनाएँ और घटनाओं की गंभीरता और अधिक प्रभावशाली बन जाती है. उनका शिल्प भी अत्यंत सुगठित है, जो उपन्यास को एक प्रवाह देता है और पाठक को अंत तक बाँधे रखता है.

9. संदेश और प्रासंगिकता : तमस केवल विभाजन की कहानी नहीं है, बल्कि यह सांप्रदायिकता के दुष्प्रभावों और मानवीयता के विनाश की कथा भी है. यह हमें याद दिलाता है कि धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास के कारण समाज को कितना नुकसान हुआ है. उपन्यास का मुख्य संदेश यह है कि जब तक समाज से यह तमस (अंधकार) नहीं मिटेगा, तब तक सच्ची स्वतंत्रता नहीं मिल सकती. आज के समय में भी यह उपन्यास उतना ही प्रासंगिक है, क्योंकि सांप्रदायिक तनाव और धार्मिक कट्टरता आज भी समाज में मौजूद हैं.

इस तरह निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं - 'तमस' केवल एक ऐतिहासिक उपन्यास नहीं है, बल्कि यह एक गहरी मानवीय संवेदना से ओत-प्रोत कृति है, जो समाज के अंधकारमय पक्ष को उजागर करती है. भीष्म साहनी ने इसे केवल विभाजन की कथा नहीं रहने दिया, बल्कि इसे एक व्यापक सामाजिक और राजनीतिक दस्तावेज बना दिया है. यह उपन्यास हमें इतिहास की उन त्रासदियों से सबक लेने को प्रेरित करता है और बताता है कि सांप्रदायिकता और नफरत से कोई भी समाज सुरक्षित नहीं रह सकता.

भीष्म साहनी ने इस उपन्यास के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि सांप्रदायिकता का जहर समाज को कैसे भीतर से खोखला कर देता है और इसे खत्म करने के लिए हमें आपसी भाईचारे, प्रेम और समझदारी से काम लेना होगा. जब तक यह तमस दूर नहीं होगा, तब तक समाज में वास्तविक स्वतंत्रता का प्रकाश नहीं फैल सकता.

- **बोध प्रश्न**
- **निम्नलिखित प्रश्न के उत्तर संक्षेप में दीजिए.**

(1) तमस की कथावस्तु पर संक्षेप में प्रकाश डालिए.

(2) तमस की कथावस्तु की विशिष्टता को संक्षेप में स्पष्ट करें.

(3) भीष्म साहनी ने तमस उपन्यास में अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो नीति को किस प्रकार उजागर किया है?

(4) मुराद अली द्वारा नत्थू से सुअर मरवाने की घटना उपन्यास के कथानक को किस प्रकार प्रभावित करती है?

(5) उपन्यास में रिचर्ड और लीज़ा के दृष्टिकोणों में क्या अंतर दिखाया गया है? इससे उपन्यास की केंद्रीय थीम पर क्या प्रभाव पड़ता है?

- **लघु उत्तरीय प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास का मुख्य विषय क्या है?

(2) नत्थू को मुराद अली ने क्या कार्य सौंपा था?

(3) रिचर्ड की भूमिका उपन्यास में कैसी दिखाई गई है?

(4) गाँव में हरनाम सिंह और उसकी पत्नी को किसने शरण दी?

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास की शुरुआत किस घटना से होती है?

(अ) प्रभातफेरी से (स) हिंदू-मुस्लिम हिंसा से

(ब) नत्थू द्वारा सुअर मारने से (द) रणवीर की लड़ाई से

(2) रिचर्ड उपन्यास में किस भूमिका में है?

(अ) कांग्रेस नेता (स) ब्रिटिश डिप्टी कमिश्नर

(ब) मज़दूर नेता (द) पुलिस अधिकारी

(3) उपन्यास तमस के लेखक कौन हैं?

(अ) प्रेमचंद (स) यशपाल

(ब) भीष्म साहनी (द) अमृतलाल नागर

9.6 सारबिंदु

- भीष्म साहनी ने विभाजन की त्रासदी और सामाजिक विघटन को अपने साहित्य में प्रमुखता से चित्रित किया.
- तमस का अर्थ अंधकार है, जो उपन्यास की मूल भावना को दर्शाता है – सांप्रदायिकता का अंधकार.
- उपन्यास की पृष्ठभूमि भारत विभाजन से पूर्व की सांप्रदायिक हिंसा और दंगों पर आधारित है.
- नायक नत्थू को सुअर मारने का काम देकर दंगा भड़काने की साजिश रची जाती है.
- नत्थू के माध्यम से समाज में जातिगत भेदभाव और शोषण को उजागर किया गया है.
- हिंदू-मुस्लिम संघर्ष के पीछे राजनीतिक स्वार्थ और ब्रिटिश हुकूमत की 'फूट डालो और राज करो' नीति को दर्शाया गया है.
- उपन्यास में कई पात्र हैं जो समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं.
- बख्शी जैसे पात्रों के माध्यम से शांति और हिंसा के बीच का द्वंद्व दिखाया गया है.
- विभाजन से पहले सांप्रदायिक सद्भाव कैसे धीरे-धीरे नफरत में बदल गया, यह उपन्यास में स्पष्ट रूप से चित्रित किया गया है.
- ब्रिटिश अधिकारी रिचर्ड के माध्यम से अंग्रेजों की अवसरवादी राजनीति को दिखाया गया है.

- महिलाओं पर होने वाले अत्याचार, बलात्कार और हिंसा को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है.
- धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास कैसे सामाजिक ताने-बाने को तोड़ते हैं, इसे प्रभावी रूप से दर्शाया गया है.
- सांप्रदायिकता और राजनीतिक षड्यंत्रों के कारण आम जनता को होने वाले कष्टों को प्रभावी ढंग से उभारा गया है.
- इसमें भारत-पाक विभाजन के दौरान हुए विस्थापन और लोगों की पीड़ा को हृदयस्पर्शी तरीके से चित्रित किया गया है.
- भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी समाज में मौजूद आंतरिक संघर्षों को रेखांकित किया गया है.
- यह उपन्यास सांप्रदायिकता जैसी समस्याओं को समझने के लिए आज भी प्रासंगिक है.
- उपन्यास को भीष्म साहनी के व्यक्तिगत अनुभवों से प्रेरित बताया जाता है, क्योंकि उन्होंने विभाजन को करीब से देखा था.
- इस पर आधारित 'तमस' नामक टीवी सीरियल 1988 में आया, जिसे गोविंद निहलानी ने निर्देशित किया था.
- उपन्यास समाज में शांति, प्रेम और सद्‌भाव का संदेश देता है और सांप्रदायिकता के दुष्प्रभावों को उजागर करता है और पाठकों को सोचने पर मजबूर करता है कि सांप्रदायिकता से बचने के लिए समाज को कैसे आगे बढ़ना चाहिए.

9.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **विस्तृत प्रश्न.**

(1) भीष्म साहनी का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

(2) 'तमस' उपन्यास की कथावस्तु के आधार पर सांप्रदायिक स्थिति के तनाव पर विस्तृत टिप्पणी लिखें.

- **लघु प्रश्न.**

(1) रणवीर और उसके साथियों के चरित्र को देखकर क्या कहा जा सकता है कि सांप्रदायिकता किस प्रकार युवाओं को प्रभावित करती है?

(2) क्या आपको लगता है कि तमस उपन्यास की घटनाएँ केवल अतीत तक सीमित हैं, या आज के समाज में भी इसकी प्रासंगिकता है? अपने विचार स्पष्ट करें.

- **टिप्पणी लिखें.**

(1) भीष्म साहनी का जीवन परिचय

(2) भीष्म साहनी का साहित्यिक योगदान

(3) भीष्म साहनी के सम्मान और पुरस्कार

(4) तमस के कथावस्तु का सामाजिक-यथार्थ

(5) तमस के कथावस्तु का राजनीतिक-यथार्थ

(6) तमस के कथावस्तु का प्रशासनिक-यथार्थ

- **वस्तुनिष्ट प्रश्न.**

(1) 'तमस' का अर्थ क्या होता है?

(अ) प्रकाश (स) अंधकार

(ब) सत्य (द) अहिंसा

(2) 'तमस' उपन्यास के मुख्य पात्र नत्थू का पेशा क्या है?

(अ) किसान (स) मजदूर

(ब) कसाई (द) मोची

(3) नत्थू को किस उद्देश्य से सुअर मारने के लिए कहा जाता है?

(अ) धार्मिक अनुष्ठान के लिए

(ब) एक राजनीतिक षड्यंत्र के तहत दंगा भड़काने के लिए

(स) खाने के लिए

(द) व्यापार के लिए

(4) 'तमस' उपन्यास को किस वर्ष साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला?

(अ) 1975 (स) 1978

(ब) 1980 (द) 1982

(5) उपन्यास में कौन-सा पात्र सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने की कोशिश करता है?

(अ) रिचर्ड (स) बख्शी

(ब) शाह नवाज (द) नत्थू

(6) भीष्म साहनी ने विभाजन का अनुभव किस शहर में किया था?

(अ) लाहौर (स) दिल्ली

(ब) मुंबई (द) कोलकाता

(7) 'तमस' उपन्यास में मुख्यतः किन दो समुदायों के संघर्ष को दिखाया गया है?

(अ) हिंदू-सिख (स) हिंदू-मुस्लिम

(ब) ब्राह्मण-दलित (द) अंग्रेज-भारतीय

(8) 'तमस' का प्रमुख विषय क्या है?

(अ) प्रेम और विवाह (स) सांप्रदायिकता और विभाजन

(ब) विज्ञान और तकनीक (द) आध्यात्मिक जागरण

(9) 'तमस' में अंग्रेज किस प्रकार की भूमिका निभाते हैं?

(अ) शांतिदूत (स) सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने वाले

(ब) भारतीय स्वतंत्रता के समर्थक (द) निष्पक्ष शासक

(10) 'तमस' उपन्यास का प्रमुख संदेश क्या है?

(अ) धर्म के आधार पर समाज को संगठित करना.

(ब) सांप्रदायिकता के विनाशकारी प्रभाव को उजागर करना.

(स) भारत की आर्थिक प्रगति दिखाना.

(द) केवल ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करना.

9.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- **तमस** : भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- **उपन्यास : कला और सिद्धांत** (संपादकः विनोद तिवारी, अजय आनंद), अनन्य प्रकाशन, दिल्ली-110032, वर्षः 2016
- **कालजयी उपन्यास** : ममता देवी, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2018
- **समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष** : डॉ. अर्जुन चौहान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2012
- **समकालीन हिंदी उपन्यास : दशा और दिशा** : डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, वर्षः 2018
- **समकालीन हिंदी उपन्यास : समाज और संवेदना** : संपादकः डॉ. वी. के. अब्दुल जलील, सह-संपादकः डॉ. पी. रवि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2017
- **भारत-विभाजन और हिंदी उपन्यास** : हरियश, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली-110015, वर्षः 1986
- **भीष्म साहनीः व्यक्ति और रचना** : राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर(संपादक), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 1982
- **शैली और शैली विश्लेषण** : डॉ. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2014
- **हिंदी उपन्यास का विकास** : मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्षः 2014
- **हिंदी उपन्यास का इतिहास** : गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2016
- **हिंदी उपन्यासः सामाजिक चेतना** : डॉ. रजनीकांत एस. शाह, संस्कृति, अहमदाबाद-380001, वर्षः 1990
- **शोध पत्रिका** : आलोचन दृष्टि आजाद नगर, बिंदकी फतेहपुर उ. प्र.
- **वेबसाइट लिंक** : https://www.hindikunj.com/2024/11/tamas-upanyas-ki-samiksha-bhisham-sahni.html

इकाई 10 'तमस' : पात्र एवं चरित्र चित्रण

रूपरेखा

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 भीष्म साहनी के तमस उपन्यास में पात्रों का चयन

10.3.1 पात्रों का वर्गीकरण

10.3.2 उपन्यास के प्रमुख पात्र

10.3.2.1 नत्थू : परिस्थितियों का दास और एक बेबस इंसान

10.3.2.2 नत्थू की पत्नी : समर्पण और संवेदनशीलता की प्रतिमूर्ति

10.3.2.3 रिचर्ड : कूटनीति का माहिर लेकिन असफल जीवनसाथी

10.3.2.4 जरनैल सिंह : निःस्वार्थ देशभक्त और अदम्य संघर्षशील

10.3.2.5 मुरादअली : एक धूर्त और स्वार्थी चरित्र

10.3.2.6 हरनामसिंह : सांप्रदायिक हिंसा का शिकार

10.3.2.7 राजो : मानवीय भावनाओं से युक्त महिला

10.3.2.8 शाहनवाज : दोहरी शख्सियत का मालिक

10.4 'तमस' उपन्यास के पात्रों की विशेषताएँ एवं उपलब्धियाँ

10.4.1 यथार्थपरकता और मानवीय संवेदनाएँ

10.4.2 सांप्रदायिकता के वास्तविक कारणों को उजागर करना

10.4.3 सामाजिक और वर्गीय संघर्ष

10.4.4 मनोवैज्ञानिक द्वंद्व और मानवीय पीड़ा

10.4.5 स्त्री पात्रों की सशक्त उपस्थिति

10.4.6 मानवीय मूल्यों की खोज

10.4.7 ऐतिहासिक और सामाजिक दस्तावेज

10.4.8 जाति और वर्ग संघर्ष की वास्तविकता को उजागर करना

10.5 सारबिंदु

10.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

10.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

10.1 उद्देश्य

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' भारतीय उपन्यास साहित्य का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जो विभाजन के दौरान उत्पन्न सांप्रदायिकता, हिंसा और मानवीय त्रासदी को प्रभावी ढंग से चित्रित करता है. इस उपन्यास में कथावस्तु का विकास पात्रों के माध्यम से हुआ है, जो समाज के विभिन्न वर्गों और उनकी मानसिकता को उजागर करते हैं. पात्रों के विचार, भावनाएँ और कार्य-व्यवहार न केवल उपन्यास को सजीव बनाते हैं, बल्कि इसके उद्देश्य और संदेश को भी प्रकट करते हैं. चरित्र-चित्रण की दृष्टि से 'तमस' अत्यंत प्रभावशाली कृति है, जिसमें लेखक ने पात्रों को उनकी सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक पृष्ठभूमि के अनुरूप गढ़ा है.

– 'तमस' उपन्यास में पात्रों के माध्यम से कथावस्तु के विकास को समझना.

– उपन्यास में मुख्य और गौण पात्रों की भूमिका का विश्लेषण करना.

- पात्रों के बाह्य और आंतरिक संघर्ष का अध्ययन करना.
- लेखक द्वारा पात्रों की मनोवैज्ञानिक गहराइयों को उजागर करने की विधि को समझना.
- उपन्यास में चरित्रों की विविधता और उनके सामाजिक संदर्भो का अध्ययन करना.
- पात्रों के कार्य-व्यवहारों के आधार पर उनके चरित्र की विशेषताओं को पहचानना.
- पात्रों के माध्यम से समाज की राजनीतिक और सांप्रदायिक स्थिति को समझना.
- प्रमुख पात्रों जैसे नत्थू, मुरादअली, रिचर्ड, लीज़ा आदि के चरित्रों की जटिलताओं को समझना.
- पात्रों के अंतर्विरोधों और उनके साम्प्रदायिक-मनोवैज्ञानिक आयामों को समझना.
- समाज के विभिन्न वर्गों के पात्रों के चयन और उनके प्रतिनिधित्व का विश्लेषण करना.
- उपन्यास में व्याप्त भय, आतंक और संत्रास की प्रधानता को समझना और उसके प्रभाव का विश्लेषण करना.

'तमस' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि भारत के विभाजन और उससे उत्पन्न सांप्रदायिक उन्माद का यथार्थ चित्रण है. इस उपन्यास के पात्र समाज की विभिन्न मानसिकताओं और परिस्थितियों का प्रतिनिधित्व करते हैं. लेखक ने चरित्रचित्रण को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक पात्रों की भावनाओं से जुड़ाव महसूस करता है. नत्थू, मुरादअली, रिचर्ड, लीज़ा, शाहनवाज जैसे पात्र कथा के माध्यम से समाज की जटिलताओं को उजागर करते हैं. उपन्यास में 'आतंक' एक अनदेखे नायक के रूप में उभरता है, जो पूरे कथानक पर हावी रहता है. इस प्रकार, 'तमस' का चरित्रचित्रण पाठकों को न केवल ऐतिहासिक यथार्थ से परिचित कराता है, बल्कि समाज की गहरी परतों को भी खोलकर रख देता है.

10.2 प्रस्तावना

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण कृति है, जो विभाजन की पृष्ठभूमि में सांप्रदायिकता, हिंसा और मानवीय त्रासदी को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है. यह केवल एक कथा नहीं, बल्कि इतिहास के उन काले पृष्ठों का जीवंत चित्रण है, जब मनुष्य अपने भीतर के भय, असुरक्षा और नफरत की आग में जल रहा था. 'तमस' का साहित्यिक सौंदर्य इस तथ्य में निहित है कि यह कथा केवल घटनाओं का वर्णन मात्र नहीं है, बल्कि उन घटनाओं के पीछे छिपे सामाजिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक पहलुओं का भी गहन विश्लेषण करता है. इस उपन्यास का मूल आधार इसके पात्र हैं, जिनके माध्यम से लेखक ने एक संपूर्ण कालखंड को सजीव कर दिया है.

पात्र किसी भी कथा की आत्मा होते हैं और 'तमस' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है. उपन्यास में घटनाएँ केवल पात्रों के माध्यम से ही संचालित होती हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि कथावस्तु जितनी महत्वपूर्ण है, उतनी ही महत्त्वपूर्ण उसके पात्र भी हैं. लेखक ने पात्रों की योजना अत्यंत सावधानीपूर्वक की है, जिससे वे अपने-अपने परिवेश और भूमिका के अनुरूप कथा को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होते हैं. भीष्म साहनी ने पात्रों के अंतर्द्वंद्व, उनकी मन:स्थितियों और उनके कार्य-व्यवहार का ऐसा सजीव चित्रण किया है कि वे वास्तविक जीवन के प्रतीक बन जाते हैं. एक सफल उपन्यासकार की यही विशेषता होती है कि वह अपने पात्रों के माध्यम से न केवल समय और समाज को प्रतिबिंबित करता है, बल्कि उनके माध्यम से पाठकों को भी उस युग विशेष की परिस्थितियों से जोड़ देता है. 'तमस' में चरित्रचित्रण की यह विशेषता पूरी तरह स्पष्ट होती है.

आलोचकों का मानना है कि किसी भी उपन्यास की सफलता उसके पात्रों की सजीवता,

स्वतंत्रता और क्रियाशीलता पर निर्भर करती है. 'तमस' में यह गुण स्पष्ट रूप से दिखाई देता है. इस उपन्यास के पात्र केवल लेखक की कल्पना की उपज मात्र नहीं हैं, बल्कि वे समाज की विविध मानसिकताओं और यथार्थ की उपज हैं. इन पात्रों के मनोभाव, विचार और आंतरिक संघर्ष इस कदर प्रामाणिक हैं कि वे उपन्यास की सीमाओं से बाहर निकलकर पाठक के मानस में गहरी छाप छोड़ जाते हैं. इस उपन्यास में प्रमुख रूप से दो प्रकार के पात्र मिलते हैं मुख्य पात्र और गौण पात्र. मुख्य पात्र कथा के मूल स्वरूप को गढ़ने में सहायक होते हैं, जबकि गौण पात्र घटनाओं को विश्वसनीयता प्रदान करते हैं और कथा को विस्तार देते हैं. इसी आधार पर इन्हें पुरुष और नारी पात्रों में भी विभाजित किया जा सकता है.

पुरुष पात्रों में नत्थू, मुरादअली, रिचर्ड, लाला लक्ष्मीनारायण, रणवीर, हरनामसिंह, हयातबख्श, शाहनवाज, देवदत्त, रघुनाथ, जरनैल, मेहता, बख्शी, शंकरलाल, किशनसिंह आदि उल्लेखनीय हैं. इन पात्रों के अलावा कई गौण पात्र भी हैं, जैसे रोशनलाल, कश्मीरीलाल, अजीज, मास्टर रामदास, वानप्रस्थी, मौलादाद, मीरदाद, करीमखान, एहसानअली, रमजान आदि. ये सभी पात्र कथावस्तु से जुड़े हैं और घटनाओं को गति प्रदान करते हैं. इसी प्रकार, नारी पात्रों में लीजा, नत्थू की पत्नी, बन्तो, जसवीर कौर, लक्ष्मीनारायण की पत्नी, रघुनाथ की पत्नी, अंकरा, राजो आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं. ये पात्र भी कथा को संपूर्णता प्रदान करते हैं और उपन्यास के सामाजिक और सांस्कृतिक पक्ष को सशक्त बनाते हैं.

भीष्म साहनी ने अपने पात्रों का चयन समाज के विभिन्न वर्गों से किया है, जिससे उपन्यास की व्यापकता और प्रभावशीलता बढ़ जाती है. प्रत्येक पात्र अपने आप में विशिष्ट होते हुए भी किसी न किसी वर्ग, विचारधारा या मानसिकता का प्रतिनिधित्व करता है. नत्थू, रणवीर, रिचर्ड, शाहनवाज, लीज़ा, राजो आदि पात्र केवल व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि अपने-अपने समाज और परिवेश के प्रतिनिधि के रूप में भी सामने आते हैं. इसी प्रकार, हरनामसिंह, शाहनवाज और लक्ष्मीनारायण जैसे पात्र अपनी सामाजिक और धार्मिक पृष्ठभूमि के अनुरूप व्यवहार करते हैं. ये पात्र हमें यह समझने में सहायता करते हैं कि विभाजन के समय केवल एक समुदाय विशेष ने ही कष्ट नहीं सहे, बल्कि हर वर्ग और समुदाय के लोग इस त्रासदी का शिकार बने.

भीष्म साहनी ने पात्रों के चित्रण में दो प्रमुख पद्धतियों का प्रयोग किया बहिरंग चित्रण और अंतःकरण चित्रण. बहिरंग चित्रण में पात्रों की बाह्य आकृति, वेश-भूषा, भावभंगिमा, आचार-व्यवहार आदि का वर्णन किया गया है. उदाहरण के लिए, मुरादअली का वर्णन करते हुए लेखक लिखते हैं कि वह अपनी पतली छड़ी लेकर शहर भर में घूमता रहता था, उसकी घनी काली मूँछों के बीच कभी भी उसके दाँत नहीं दिखाई देते थे और उसकी छोटी-छोटी पैनी आँखें साँप की आँखों की तरह चमकती थीं. इस प्रकार के वर्णन पात्रों को अधिक सजीव बना देते हैं और पाठकों के मन में उनकी स्पष्ट छवि उभरती है. दूसरी ओर, अंतःकरण चित्रण में पात्रों की आंतरिक मानसिकता, विचार और भावनाओं को व्यक्त किया गया है. शाहनवाज का चरित्र इसका उत्कृष्ट उदाहरण है. वह ऊपर से बहुत भला आदमी प्रतीत होता है, लेकिन मिलखी को मारकर अपनी धार्मिक आस्था को प्रकट करता है. इस प्रकार, भीष्म साहनी ने पात्रों के बाहरी और भीतरी पक्षों को समान रूप से प्रस्तुत किया है, जिससे उपन्यास का चरित्रचित्रण अधिक प्रभावशाली बन जाता है.

इस उपन्यास में संवादात्मक, मनोवैज्ञानिक और वर्णनात्मक पद्धतियों का सफल प्रयोग किया गया है. संवाद पात्रों के व्यक्तित्व को स्पष्ट करने में सहायक होते हैं और उनके मानसिक द्वंद्व को पाठकों तक पहुँचाने का माध्यम बनते हैं. उदाहरण के लिए, रणवीर और अन्य नेताओं के संवादों में हमें उनकी विचारधारा और मानसिकता की झलक मिलती है. इसी प्रकार, शाहनवाज

और लक्ष्मीनारायण के संवाद उनके धार्मिक दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं. मनोवैज्ञानिक चित्रण पात्रों के अंतर्द्वंद्व को उजागर करने के लिए किया गया है, जिससे वे और अधिक वास्तविक प्रतीत होते हैं.

'तमस' उपन्यास के चरित्र-चित्रण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें कोई एक केंद्रीय नायक या नायिका नहीं है. यदि इस उपन्यास का कोई नायक है, तो वह है 'आतंक' और 'भय'. यह भय ही है जो पूरे उपन्यास में छाया हुआ है और हर पात्र किसी न किसी रूप में इससे प्रभावित है. इस संदर्भ में, डॉ. महीप सिंह का कथन अत्यंत प्रासंगिक है कि आतंक उपन्यास का नायक है, जो आरंभ से अंत तक छाया रहता है.

'तमस' केवल एक ऐतिहासिक उपन्यास नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं का दर्पण है, जिसमें भीष्म साहनी ने पात्रों के माध्यम से समाज की वास्तविकताओं को उजागर किया है. इन पात्रों के विचार, संघर्ष और त्रासदियाँ हमें विभाजन के दौर में झाँकने का अवसर प्रदान करती हैं और हमें यह सोचने पर विवश कर देती हैं कि नफरत और सांप्रदायिकता के अंधकार में किस प्रकार निर्दोष जीवन झुलस जाते हैं. इस प्रकार, 'तमस' का चरित्र-चित्रण न केवल उपन्यास की सजीवता को बढ़ाता है, बल्कि इसे एक अमर कृति के रूप में स्थापित करता है.

10.3 भीष्म साहनी के 'तमस' उपन्यास में पात्रों का चयन

भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' का भारतीय साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है. यह उपन्यास न केवल विभाजन की त्रासदी को दर्शाता है, बल्कि उस समय के समाज, राजनीति और सांप्रदायिक तनावों को भी गहराई से प्रस्तुत करता है. इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता- इसका चरित्र चित्रण और पात्रों का चयन है. भीष्म साहनी ने अपने पात्रों का चयन समाज के विभिन्न वर्गों से किया है, जिससे यह उपन्यास और अधिक यथार्थवादी बन जाता है.

10.3.1 पात्रों का वर्गीकरण

उपन्यास में पात्रों को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है. इनमें मुख्यतः दो वर्ग प्रमुख हैं 'मुख्य पात्र और गौण पात्र'. इसके अतिरिक्त, पात्रों को पुरुष और नारी पात्रों में भी बाँटा जा सकता है.

पुरुष पात्रों में मुख्य और गौण दोनों प्रकार के पात्र हैं. इसी प्रकार नारी पात्रों में भी मुख्य और गौण दोनों प्रकार के पात्र हैं. अतः इन पर हम संक्षेप में विचार करेंगे.

पुरुष पात्र : नत्थू, मुरादअली, रिचर्ड, लाला लक्ष्मीनारायण, रणवीर हरनामसिंह, हयातबख्श, शाहनवाज, देवदत्त, रघुनाथ, जरनैल, मेहता, बख्शी, शंकरलाल, किशनसिंह आदि उपन्यास के प्रमुख पुरुष पात्र हैं. इनके अतिरिक्त रोशनलाल, कश्मीरीलाल, अजीज, मास्टर रामदास, वानप्रस्थी मौलादाद, मीरदाद, करीममान, एहसानअली, रमजान आदि तथा इकबालसिंह आदि अनेक गौण पुरुष पात्र भी हैं. ये सभी गौण पात्र घटनाओं के साथ जुड़े हुए हैं.

प्रमुख स्त्री पात्र : लीजा, नत्थू की पत्नी, बन्तो, जसवीरकौर, लक्ष्मीनारायण की पत्नी, रघुनाथ की पत्नी, अंकरा, राजो आदि के नाम उल्लेखनीय हैं.

इनके अलावा सभी पात्र गौण हैं. गौण केवल इसलिए हैं कि इनका विकास समग्रतया नहीं हुआ है. अलबत्ता इनके बिना उपन्यास की पूर्णता संभव नहीं थी.

साहनी जी पात्रों के चरित्रों को पूर्णता प्रदान करने के लिए उनके मन की गहराइयों में डूबकर उनकी मनःस्थितियों और आंतरिक भावनाओं का सजीव चित्रण करने में सिद्धहस्त हैं. उन्होंने पात्रों के अंतर्विरोधों को भी अत्यंत प्रभावशाली ढंग से मनोवैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत किया है. शाहनवाज का चरित्र एक ऐसे दोगले व्यक्ति का उदाहरण है, जो ऊपर से अत्यंत

भला प्रतीत होता है, लेकिन अवसर मिलते ही अपनी धार्मिक कट्टरता को प्रकट करने के लिए मिलखी की हत्या कर देता है.

इस उपन्यास में चरित्र-चित्रण के लिए विभिन्न पद्धतियों का प्रयोग किया गया है, जिनमें मनोविश्लेषणात्मक, संवादात्मक, नाटकीय वर्णनात्मक और भावात्मक पद्धतियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं. साहनी जी ने अपने पात्रों का निर्माण किसी पूर्वाग्रह या 'टाइप' के आधार पर नहीं किया, बल्कि उनके चरित्र कथा-विकास के साथ स्वतः विकसित होते हैं.

'तमस' उपन्यास चरित्र-चित्रण की दृष्टि से पूर्णतः सफल है. साथ ही, पात्रों के अनुरूप भाषा-शैली ने इसे और अधिक सजीव, आकर्षक तथा मर्मस्पर्शी बना दिया है. इस उपन्यास में लेखक ने चरित्रांकन में अपनी अद्वितीय प्रतिभा और गहन मनोवैज्ञानिक दृष्टि का परिचय दिया है.

यद्यपि उपन्यास में अनेक पात्र अपनी-अपनी भूमिकाएँ निभाते हैं, किंतु जिन पात्रों पर लेखक ने विशेष ध्यान दिया है, वे हैं नत्थू, मुराद अली, रिचर्ड, लीजा, हरनाम सिंह, इकबाल सिंह और राजो. इनके अतिरिक्त कुछ पात्र क्षणिक रूप से आते हैं और किसी विशेष घटना या अपने वर्ग की विशेषताओं और कमियों को उजागर कर लुप्त हो जाते हैं। वानप्रस्थी, पीर, सरदार तेजा सिंह, विभिन्न राजनीतिक दलों के कार्यकर्ता, रणवीर, देवदत्त, शाहनवाज, लक्ष्मीनारायण और इत्रफरोश ऐसे ही पात्र हैं.

आमतौर पर कथात्मक साहित्य में नायक-नायिका की परिकल्पना स्वीकृत होती है, किंतु 'तमस' उपन्यास में कोई एक मुख्य पात्र नहीं है. यदि किसी तत्व की प्रधानता है, तो वह है भय, दहशत और संत्रास, जो आरंभ से अंत तक उपन्यास में व्याप्त है. इस संदर्भ में डॉ. महीप सिंह का यह कथन अत्यंत उपयुक्त है - "आतंक इस उपन्यास का नायक है, जो आरंभ से अंत तक छाया रहता है."

10.3.2 उपन्यास के प्रमुख पात्र

साहनी जी की चरित्र-चित्रण कला की गहराई को समझने के बाद अब हम 'तमस' के कुछ प्रमुख पात्रों का विस्तारपूर्वक विश्लेषण करेंगे.

10.3.2.1 नत्थू : परिस्थितियों का दास और एक बेबस इंसान

तमस उपन्यास के आरंभ में ही नत्थू का परिचय पाठकों से होता है. नत्थू एक निर्धन चमार है, जो मृत पशुओं की खाल उधेड़ने का काम करता है. समाज के सबसे निचले तबके से आने वाला यह व्यक्ति अपनी मजबूरी और गरीबी के चलते परिस्थितियों के हाथों कठपुतली बन जाता है. नत्थू का चरित्र एक ऐसे दुर्बल व्यक्ति के रूप में सामने आता है, जो थोड़े से पैसों के लालच में ऐसा कार्य करने को तैयार हो जाता है, जो न तो उसकी प्रकृति के अनुकूल है और न ही उसकी रुचि.

मुरादअली नत्थू को पाँच रुपये का लालच देकर और भय दिखाकर एक सुअर को मारने के लिए मजबूर करता है. हालाँकि, नत्थू इस कार्य को करने के लिए तैयार नहीं था और वह खुद को इस परिस्थिति से निकालने की कोशिश करता है. वह सोचता है- "किस मुसीबत में जान फँस गई है. मुझे क्या लेना इस काम से! सलोतरी को सुअर नहीं मिलता तो न मिले, मेरी बला से. मैं कल मुरादअली के सामने पाँच का नोट पटक दूँगा और हाथ जोड़ दूँगा - यह मेरे बस का नहीं है हुजूर, मैं यह काम नहीं कर सकता." इस उद्धरण से स्पष्ट है कि नत्थू स्वभाव से हिंसक नहीं है, लेकिन उसकी गरीबी और डर उसे इस अमानवीय कार्य के लिए मजबूर कर देते हैं. वह अपने अंदर चल रहे द्वंद्व से जूझ रहा होता है, परंतु अंततः परिस्थितियों के आगे हार मान लेता है.

नत्थू भले ही एक कमजोर और मजबूर व्यक्ति है, लेकिन उसके भीतर दया और संवेदनशीलता

कूट-कूट कर भरी हुई है. जब वह सुअर को मारने के बाद अपनी कोठरी से बाहर निकलता है, तो रास्ते में एक फकीर गाते हुए दिखाई देता है. मुरादअली से मिले पाँच रुपये में से वह एक आना उस फकीर को दे देता है. यह घटना दर्शाती है कि उसकी आत्मा अभी भी उदारता और करुणा से भरी हुई है.

नत्थू के चरित्र की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह अपनी पत्नी के प्रति वफादार है. गरीबी और अभावों के बावजूद, वह अपने परिवार के प्रति प्रेम और जिम्मेदारी की भावना रखता है. एक अवसर पर जब वह शराब के नशे में वेश्या के पास जाने का विचार करता है, तो जल्द ही उसका मन बदल जाता है. वह सोचता है- “रंडी के पास जाऊँगा तो कड़वा बोलेगी, बुरा-भला कहेगी. घरवाली चुप रहनेवाली औरत है, ढाड़स बंधानेवाली, सुख पहुँचानेवाली. दो रुपये मोतिया रंडी को देने के बजाय, घरवाली के लिए कुछ ले जाऊँगा. वह खुश हो जाएगी, कहेगी तुम क्यों लाए, मेरे पास सब कुछ है. वह कभी कुछ नहीं माँगती.” यह अंश नत्थू के सरल और प्रेमपूर्ण हृदय को उजागर करता है. वह अपनी पत्नी को खुश देखना चाहता है और अपनी छोटी-छोटी खुशियों को उसके साथ बाँटना चाहता है.

नत्थू एक सीधा-सादा गरीब व्यक्ति है, जो दुनिया के छल-कपट और षड्यंत्रों को नहीं समझता. उसकी इसी कमजोरी का फायदा मुरादअली उठाता है और उसे सुअर मारने के लिए मजबूर कर देता है. नत्थू को यह अहसास भी नहीं होता कि उसका यह कार्य पूरे शहर में सांप्रदायिक दंगे भड़काने का कारण बन जाएगा. जब उसे यह पता चलता है कि मस्जिद के पास सुअर पाया गया और उसके कारण दंगे भड़क उठे हैं, तो वह अत्यंत व्यथित और पश्चाताप से भर जाता है.

सुअर को मारने के बाद नत्थू का मन शांत नहीं रहता. जब उसे अहसास होता है कि उसने अंजाने में एक बड़ा अपराध कर दिया है, तो उसके भीतर आत्मग्लानि और अपराधबोध घर कर जाता है. उसे महसूस होता है कि उसने केवल कुछ पैसों के लिए न केवल अपने मन के विरुद्ध कार्य किया, बल्कि पूरे समाज को भी संकट में डाल दिया.

नत्थू का चरित्र एक ऐसे व्यक्ति का प्रतीक है, जो परिस्थितियों का शिकार बन जाता है. गरीबी, लालच और डर के कारण वह एक ऐसे कृत्य को अंजाम देता है, जिसका परिणाम पूरे समाज को भुगतना पड़ता है. हालाँकि, उसकी आत्मा निर्दोष है, और वह अपनी गलती का पश्चाताप करता है. डॉ. प्रेमकुमार के अनुसार - “नत्थू उपन्यास में बहुत समय तक रहता है. स्वयं के मानसिक द्वंद्व, अभाव, लालच, नासमझी के साथ अपने वर्ग और जाति की अनेक विशेषताओं को उभारने में वह सक्षम है.” नत्थू का चरित्र इस बात का प्रमाण है कि किस प्रकार एक भोला-भाला, गरीब और मजबूर इंसान समाज के षड्यंत्रों का शिकार बनकर एक बड़े सांप्रदायिक हादसे का कारण बन जाता है. वह न तो बुरा है, न ही हिंसक, लेकिन उसकी कमजोरी उसे एक ऐसे मोहरे में बदल देती है, जिसका उपयोग दूसरों के स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किया जाता है.

10.3.2.2 नत्थू की पत्नी : समर्पण और संवेदनशीलता की प्रतिमूर्ति

तमस उपन्यास में नत्थू की पत्नी एक ऐसी भारतीय नारी के रूप में सामने आती है, जो अपने पति के सुख-दुख में उसके साथ खड़ी रहती है. उसकी पहचान केवल नत्थू की पत्नी के रूप में ही नहीं, बल्कि एक ऐसी स्त्री के रूप में होती है, जो त्याग, प्रेम और समर्पण की सजीव मिसाल है. उसका अपना कोई व्यक्तिगत स्वार्थ नहीं है, वह केवल अपने पति की खुशी और भलाई के लिए जीती है.

नत्थू की पत्नी के चरित्र का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि वह अपने पति के लिए अत्यधिक चिंतित रहती है. जब एक रात नत्थू घर नहीं लौटता, तो वह पूरी रात सो नहीं

पाती. अगले दिन जब नत्थू वापस आता है, तो वह राहत की साँस लेती है. यह दृश्य उसकी पति-भक्ति और गहरी चिंता को दर्शाता है. वह न केवल अपने पति की प्रतीक्षा करती है, बल्कि उसके बिना भोजन भी नहीं करती. जब नत्थू उससे पूछता है कि उसने खाना खाया या नहीं, तो वह पहले उसे संतुष्ट करने के लिए कहती है- 'हाँ, खा लिया.' परंतु नत्थू उसकी सच्चाई भाँप जाता है. जब वह दोबारा पूछता है, तो वह मुस्कुराते हुए स्वीकार करती है कि उसने अब तक खाना नहीं खाया था, क्योंकि वह उसकी राह देख रही थी. यह छोटी-सी घटना उसके प्रेम, समर्पण और पति के प्रति गहरे लगाव को दर्शाती है.

नत्थू की पत्नी न केवल एक प्रेममयी पत्नी है, बल्कि एक समझदार और धैर्यवान स्त्री भी है. जब नत्थू उसे बताता है कि उसने एक सुअर को मार दिया है, तो पहले वह घबरा जाती है, लेकिन जल्दी ही अपने पति को ढाँढस बँधाने लगती है. वह उसे समझाती है- "तुमने सिर्फ सुअर को मारा है, मस्जिद के सामने तो नहीं फेंका, यह बात तुमने मुझे बताई, किसी और को मत बताना." यह संवाद उसकी व्यावहारिक बुद्धिमत्ता और परिस्थिति को सँभालने की क्षमता को दर्शाता है. वह जानती है कि स्थिति गंभीर है, लेकिन वह अपने पति को डराने के बजाय उसे हिम्मत देने का प्रयास करती है.

नत्थू की पत्नी अपने कर्तव्यों को पूरी निष्ठा से निभाती है. वह अपने पति की हर छोटी-बड़ी जरूरत का ध्यान रखती है. जब नत्थू उससे चाय बनाने के लिए कहता है, तो वह आश्चर्य से पूछती है- "पहले तो कभी तुम इस वक्त चाय नहीं माँगते थे?"

नत्थू की घबराहट और बेचैनी देखकर वह समझ जाती है कि कुछ गड़बड़ है. जब नत्थू खुद चाय बनाने के लिए आगे बढ़ता है, तो उसे यह बात अच्छी नहीं लगती. वह अपने पति से कहती है- "मेरे रहते तू चूल्हा जलाएगा, मैं मर न जाऊँगी!" और फिर वह आगे बढ़कर नत्थू की बाँह पकड़ती है और कहती है- "उठ जा, तुझे मेरे सिर की कसम!" यह संवाद उसकी घरेलू ज़िम्मेदारी को दर्शाने के साथ-साथ उसके आत्मसम्मान को भी प्रकट करता है. वह अपने पति को हर हाल में सुख देना चाहती है और यह स्वीकार नहीं कर सकती कि वह उसके रहते हुए रसोई का काम करे.

नत्थू की पत्नी के चरित्र की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी क्षमाशीलता और सहनशीलता है. जब उसे पता चलता है कि नत्थू ने जिस सुअर को मारा था, उसी का उपयोग सांप्रदायिक दंगे भड़काने के लिए किया गया, तो भी वह अपने पति को दोष नहीं देती. इसके विपरीत, वह उसे धैर्य बँधाती है और उसकी चिंता कम करने की कोशिश करती है. वह जानती है कि नत्थू ने यह कार्य अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि मजबूरी में किया था. इसलिए वह उसके साथ सहानुभूति रखती है और उसकी गलती को माफ कर देती है. उसकी यह सहनशीलता उसे एक आदर्श भारतीय नारी के रूप में स्थापित करती है.

नत्थू की पत्नी का चरित्र प्रेम, त्याग, धैर्य और सहनशीलता का प्रतीक है. वह अपने पति के हर सुख-दुख में उसकी सच्ची संगिनी बनी रहती है. उसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह न केवल अपने पति से प्रेम करती है, बल्कि उसकी परेशानियों को भी समझती है और उसे मानसिक संबल प्रदान करती है. इस उपन्यास में नत्थू की पत्नी केवल एक पारंपरिक भारतीय स्त्री का प्रतिनिधित्व नहीं करती, बल्कि वह स्त्री शक्ति, सहनशीलता और कर्तव्यपरायणता का एक सशक्त उदाहरण भी प्रस्तुत करती है. वह अपने पति के लिए एक सच्ची जीवनसंगिनी है, जो हर परिस्थिति में उसके साथ खड़ी रहती है और उसे संबल प्रदान करती है.

10.3.2.3 रिचर्ड : कूटनीति का माहिर लेकिन असफल जीवनसाथी

रिचर्ड डिप्टी कमिश्नर होते हुए भी प्रशासनिक कार्यों में अपेक्षाकृत कम रुचि रखता है. उसकी असली रुचि इतिहास में है, और भारतीय संस्कृति व कलाओं को समझने में उसका

विशेष झुकाव है. उसका कार्यालय केवल सरकारी फाइलों तक सीमित नहीं है, बल्कि वहाँ इतिहास की झलक स्पष्ट रुप से दिखती है.

लेखक ने उसके कक्ष का वर्णन कुछ इस प्रकार किया है - "चारों ओर दीवारों के साथ लगी अलमारियों में किताबें ठसाठस भरी थीं. उनके बीच जगह-जगह लकड़ी के ऊँचे आधार रखे थे जिन पर बुद्ध तथा बोधिसत्वों के अनेक ऊर्ध्वकाय बुत रखे थे. प्रत्येक बुत के ऊपर बिजली की रोशनी का अलग से प्रबंध किया गया था. बटन दबाने पर रोशनी ऐसे कोण से बुत के चेहरे पर पड़ती कि उसका रुप खिल उठता. दीवारों पर भारतीय चित्रकला के अनेक चित्र, अंगीठी पर गुड़िया और ताम्रपत्र पर लिखा एक ग्रंथ रखा था. अंगीठी के सामने शिलालेख का एक बड़ा-सा टुकड़ा लकड़ी के कुंदे के सहारे खड़ा था." उसके कार्यालय की यह सजावट स्पष्ट रुप से दर्शाती है कि वह भारतीय इतिहास और कलाओं का पारखी है.

रिचर्ड के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह अपनी विभिन्न भूमिकाओं को पूरी तरह अलग-अलग रख सकता है. उसकी रुचि भारतीय संस्कृति में है, लेकिन यह प्रशासनिक निर्णयों में बाधा नहीं बनती. लेखक कहता है- "एक काम को दूसरे काम से अलग रखना, एक भावना को दूसरी भावना से अलग रखना, उसके प्रशिक्षण और स्वभाव की विशिष्टता थी. वह एक तरह के काम से बिलकुल दूसरी तरह के काम में बड़ी आसानी से अपने को ढाल लेता था."

प्रशासनिक कार्यों में वह निष्पक्ष दिखने का प्रयास करता है, किंतु भीतर से उसकी नीतियाँ अंग्रेजी हुकूमत को मजबूत करने के लिए होती हैं. जब शिष्टमंडल के सदस्य सांप्रदायिक समस्याओं को लेकर उसके पास आते हैं, तो वह बड़ी शांति और धैर्य से उनकी बातें सुनता है, लेकिन अंततः सभी सुझावों को अस्वीकार कर देता है. वह खोखला आश्वासन देते हुए कहता है - "मुस्लिम लीग और काँग्रेस दोनों के नेता यहाँ मौजूद हैं. आप सरदारजी को साथ ले लीजिए और सब मिलकर अमन कमेटी बनाइए और काम शुरु कर दीजिए. सरकार आपकी हर तरह से मदद करेगी." यह उसका राजनीतिक कौशल है, जिससे वह बिना कोई ठोस समाधान दिए लोगों को भ्रमित कर देता है.

रिचर्ड की सोच सांप्रदायिक विभाजन को बढ़ावा देने वाली है. वह भारतीय समाज की विविधता से अधिक उसमें मौजूद मतभेदों पर ध्यान देता है. उसकी यह सोच उसकी पत्नी लीज़ा को भी परेशान करती है. जब वह उससे सांप्रदायिक दंगों के बारे में सवाल करती है, तो वह गोलमोल जवाब देने की कोशिश करता है. इस पर लीज़ा कहती है- बहुत चालाक मत बनो, रिचर्ड. मैं सब जानती हूँ. देश के नाम पर ये लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो. क्यों, ठीक है न? रिचर्ड इस तर्क के आगे निरुत्तर हो जाता है. वह स्वीकार करता है कि- "हुकूमत करने वाले यह नहीं देखते कि प्रजा में कौन-सी समानता पाई जाती है, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन-किन बातों में एक-दूसरे से अलग हैं."

धर्म को लेकर उसकी धारणा भी सतही और हास्यास्पद है. वह कहता है कि मुसलमानों के नामों में 'अली', 'दीन', 'अहमद' जैसे शब्द होते हैं, जबकि हिंदुओं के नामों के पीछे 'लाल', 'चंद', 'राम' जैसे शब्द जुड़ते हैं. वह हिंदू, मुस्लिम और सिखों की पहचान को केवल बाहरी प्रतीकों और खान-पान की आदतों से जोड़कर देखता है.

रिचर्ड का वैवाहिक जीवन सुखी नहीं है. उसकी पत्नी लीज़ा और उसके बीच अंत तक एक दूरी बनी रहती है. न तो वह अपनी पत्नी को अपने विचारों के अनुरूप बना सका और न ही खुद को उसके अनुरूप ढाल पाया. यह दर्शाता है कि वह प्रशासनिक चातुर्य में माहिर होने के बावजूद निजी जीवन में असफल रहा.

रिचर्ड की नीति 'फूट डालो और राज करो' पर आधारित है. वह सांप्रदायिक विवादों को भड़काकर शासन करना चाहता है. जब ल़ीजा उससे पूछती है कि क्या उसे किसी ख़तरे का अंदेशा है, तो वह जवाब देता है - "नहीं ल़ीजा, अगर प्रजा आपस में लड़े तो शासक को किस बात का ख़तरा है?" यह कथन उसकी मानसिकता को पूरी तरह उजागर कर देता है.

रिचर्ड एक कुशल प्रशासक और चतुर राजनीतिज्ञ है, लेकिन वह अपने निजी जीवन में असफल पति और संवेदनहीन व्यक्ति साबित होता है. वह भारतीय समाज की कमजोरियों को समझता है और उनका उपयोग अपने शासन को बनाए रखने के लिए करता है. लेखक ने उसके चरित्र को इस तरह प्रस्तुत किया है कि पाठक उसमें घृणा के बजाय सहानुभूति महसूस करता है. डॉ. विवेकरॉय के शब्दों में- "किसी अंग्रेज प्रशासक के चरित्र पर इतना सीधा, तेज, तीखा, सधा, सटीक, किंतु सूक्ष्म सांकेतिक व्यंग्य इसके पूर्व कहीं हिंदी उपन्यास में आया है, मुझे स्मरण नहीं."

इस प्रकार, रिचर्ड केवल एक कूटनीतिक प्रशासक ही नहीं, बल्कि एक ऐसा व्यक्ति भी है जो अपने स्वार्थ के लिए नैतिकता और संवेदनाओं से समझौता करने में संकोच नहीं करता.

10.3.2.4 जरनैल सिंह : नि:स्वार्थ देशभक्त और अदम्य संघर्षशील

जरनैल सिंह का व्यक्तित्व और चरित्र उपन्यास में अत्यधिक प्रभावशाली रूप से चित्रित किया गया है. वह पाठकों से पहली बार तब परिचित होता है, जब वह प्रभातफेरी में 'लेफ्ट-राइट' करता हुआ शामिल होता है. देखने में वह एक सनकी व्यक्ति लगता है, लेकिन उसके भीतर एक सच्चा देशभक्त और आदर्शवादी इंसान छिपा होता है, जिसे समाज ने पूरी तरह से नहीं समझा.

उसकी सनक उसके पहनावे में भी झलकती है. लेखक उसके वस्त्रों का वर्णन इन शब्दों में करता है- "लैम्प की रोशनी सबसे पहले उसके फटे जूतों पर पड़ी. कुछ पता नहीं चलता था कि वे स्लीपर थे या जूते. जूतों के लगभग छः इंच ऊपर खाकी कोट, जिस पर गांधी और नेहरू के जितने तमगे जरनैल को मिल सकते थे, उसने लगा रखे थे, साथ में रंगीन थिगलियाँ, डोरे. सूखे हुए बुढ़ऊ शरीर पर भुथड़ा हुआ खाकी कोट लटक रहा था. ऊपर खसखस दाढ़ी, नुची-खुची मूंछें और सबसे ऊपर भुंगिया रंग की पगड़ी."

उसका यह पहनावा कोई सामान्य च़ीज नहीं थी. वह लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में वॉलंटियर बनकर गया था और तब से उसने यही वर्दी धारण कर रखी थी. जरनैल को कहीं कोई काम नहीं मिला और न ही उसने करना स्वीकार किया. अच्छे दिनों में वह अपनी वर्दी को थोड़ा संवार लेता, तो कभी सीढ़ी लगा लेता या तिरंगे की डोरी बाँध लेता, लेकिन जब बुरे दिन आते, तो वह अपनी वर्दी को धो भी नहीं पाता था.

जरनैल सिंह न केवल एक देशभक्त था, बल्कि वह एक ऐसा इंसान था, जो किसी भी परिस्थिति में अपने विचारों से समझौता नहीं करता था. उसके भीतर सच बोलने की अद्‌भुत शक्ति थी. वह अपने साथियों की कमजोरियों को भी बिना किसी झिझक के उजागर करता था. जब उसके एक साथी कश्मीरीलाल के बारे में उसे पता चला कि वह कम्युनिस्टों के साथ उठता-बैठता है, तो उसने उसे लज्जित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी - मैं तुम्हारा पर्दाफाश करूँगा. तुम्हारा कम्युनिस्टों के साथ उठना-बैठना है, मैं जानता हूँ. मैंने तुम्हें कुबड़े हलवाई की दुकान पर छाना-मुर्गी खाते देखा है."

जब तामीरी (सफाई) कार्य करने का अवसर आया और कार्यकर्ता यह सोचकर घबरा गए कि कहीं उन्हें गंदी नालियाँ साफ न करनी पड़ें, तो उन्होंने नाक-मुँह सिकोड़ना शुरू कर

दिया. कश्मीरीलाल ने कहा- "कच्ची नालियाँ हैं तो बरसों का लसलसा कीच वहाँ जमा होगा, वे नालियाँ कौन साफ करेगा." इस पर जरनैल सिंह गुस्से से चिल्लाया- "हम करेगा !" तुम गद्दार हो! यह उसका बेबाक अंदाज ही था, जिसने उसे लोगों से अलग बनाया.

जरनैल सिंह केवल देशभक्ति का नारा लगाने वाला व्यक्ति नहीं था, बल्कि वह चाहता था कि हिंदू-मुस्लिम सद्भावना बनी रहे. जब शहर में सांप्रदायिक दंगे भड़क उठे और हर ओर आगजनी होने लगी, तो अधिकांश लोग छिपकर बैठ गए. लेकिन जरनैल सिंह ने हिम्मत नहीं हारी. उसने दंगे रोकने के लिए ख़ुद आगे बढ़कर भाषण देना शुरू किया. वह पूरे विश्वास के साथ चिल्लाया- "अंग्रेज की शरारत है, मैं जानता हूँ! तुम बुज़दिल हो! यह अंग्रेज की चाल है, मैं उसका भांडाफोड़ करूँगा!" लेकिन धर्मांध लोगों को उसकी बातें पसंद नहीं आईं. वे भड़क उठे और उसकी आवाज़ को बंद करने की साजिश करने लगे.

जरनैल सिंह ने कभी डरना नहीं सीखा था. जब पूरा शहर दंगों की आग में झुलस रहा था, तब भी वह अकेला आगे बढ़ा और जगह-जगह भाषण देने लगा- "साहिबान, मैं आपसे कहता हूँ कि हिंदू-मुसलमान भाई-भाई हैं. शहर में फसाद हो रहा है, आगजनी हो रही है और उसे कोई रोकता नहीं. डिप्टी कमिश्नर अपनी मेम को बाहों में लेकर बैठा है और मैं कहता हूँ कि हमारा दुश्मन अंग्रेज है. गांधीजी कहते हैं कि वही हमें लड़ाता है और हम भाई-भाई हैं. हमें अंग्रेज की बातों में नहीं आना चाहिए. और गांधीजी का फर्मान है कि पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा. मैं भी कहता हूँ - पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा! हम एक हैं, हम भाई-भाई हैं, हम मिलकर रहेंगे..." लेकिन भीड़ को यह सुनना मंज़ूर नहीं था. तभी किसी ने गुस्से में आकर गाली दी और लाठी से उसकी खोपड़ी फोड़ दी. "छड़ी कहाँ गई, और फटी हुई मुर्गिया पगड़ी कहाँ गायब हो गई. और फटे हुए चप्पल कहाँ गए. और फिकरा खत्म किए बिना ही जहाँ जरनैल खड़ा था, वहीं ढेर हो गया." इस तरह, अपनी ईमानदारी, स्पष्टवादिता और हिंदू-मुस्लिम एकता की भावना के कारण उसे अपनी जान से हाथ धोना पड़ा.

डॉ. प्रेमकुमार के शब्दों में- "उपन्यास का सर्वाधिक सबल और याद रहनेवाला पात्र जरनैल है. अपनी संक्षिप्त भूमिका में भी वह बहुत प्रभावशाली है. अपनी सनक और आस्था को लेकर वह देश और पार्टी का शुभचिंतक है. अपने आपको भूलकर वह सिद्धांतों के लिए लड़ सकता है. मर सकता है. अनीतियों और असंगतियों को आलोचित करने का अपूर्व नैतिक साहस उसमें है. उसका चरित्र व्यंजक, अनुकरणीय और स्मरणीय है." डॉ. विवेकराय भी लिखते हैं- "जरनैल की शहादत का चित्र अत्यधिक द्रावक है और बहुत क्षोभ तथा कड़वाहट की स्थितियों को उभारने वाला है."

जरनैल सिंह का चरित्र हमें यह सिखाता है कि सच्चे देशभक्तों को अक्सर समाज से प्रताड़ना झेलनी पड़ती है. उनका मज़ाक उड़ाया जाता है, उन्हें सनकी समझा जाता है, लेकिन वे अपने विचारों और सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं करते. वह केवल एक पात्र नहीं है, बल्कि वह उन असंख्य निःस्वार्थ देशभक्तों का प्रतीक है, जिन्होंने अपनी पूरी जिंदगी देश के लिए समर्पित कर दी. वह हमें यह याद दिलाता है कि सत्य और न्याय की राह पर चलने वाले लोग अक्सर अकेले पड़ जाते हैं, लेकिन उनकी कुर्बानियाँ व्यर्थ नहीं जातीं.

10.3.2.5 मुरादअली : एक धूर्त और स्वार्थी चरित्र

उपन्यास के प्रारंभ में ही मुरादअली का परिचय मिलता है, जो अपनी धूर्तता और स्वार्थपूर्ण प्रवृत्तियों के कारण पूरे कथानक में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. वह न केवल एक कपटी व्यक्ति है, बल्कि उसकी चालाकियों के कारण शहर में दंगे भड़कते हैं, जिससे सैकड़ों निर्दोष लोग मारे जाते हैं.

मुरादअली को नत्थू जैसे गरीब और मजबूर व्यक्तियों का शोषण करने में कोई संकोच नहीं होता. वह नत्थू को पाँच रुपये का लालच देकर सुअर मारने के लिए कहता है और यह झूठ बोलता है कि उसे सलोतरी साहब (पशु चिकित्सक) के लिए सुअर की आवश्यकता है. नत्थू गरीबी और भय के कारण यह काम कर देता है, लेकिन उसे इस बात का जरा भी आभास नहीं होता कि उसकी इस हरकत से पूरे शहर में दंगे भड़क जाएंगे.

मुरादअली बड़ी चतुराई से नत्थू को फँसाता है- "हमारे सलोतरी साहब को एक मरा हुआ सुअर चाहिए, डॉक्टरी काम के लिए. इधर पिगरी के सुअर बहुत घूमते हैं, एक सुअर को इधर कोठरी के अंदर कर लो, और उसे काट डालो." जब नत्थू हिचकिचाता है, तो मुरादअली उसे फटकारता है और पाँच रुपये का नोट उसकी जेब में जबरदस्ती डाल देता है. उसकी यह रणनीति दिखाती है कि वह किस हद तक धूर्त और निष्ठुर व्यक्ति है, जो दूसरों के माध्यम से अपने स्वार्थ पूरे करने में निपुण है.

मुरादअली जानता था कि मस्जिद की सीढ़ियों पर मरा हुआ सुअर मिलते ही सांप्रदायिक तनाव फैल जाएगा. वह अपनी इस साजिश में पूरी तरह सफल भी होता है. लेकिन जब दंगे भड़क जाते हैं, लोग मरने लगते हैं और शहर जलने लगता है, तब मुरादअली कहीं नजर नहीं आता. लेखक उसे एक अवसरवादी के रूप में प्रस्तुत करता है, जो घटनाओं को अपने अनुसार नियंत्रित करता है लेकिन खुद को हमेशा बचाए रखता है. जब नत्थू शराब के नशे में उसे खोजता है और चिल्लाता है- "हुजूर, आपने जो काम सौंपा था, वह हमने कर दिया!" तब मुरादअली कोई जवाब नहीं देता. वह अनसुना करके तेजी से वहाँ से निकल जाता है, जिससे स्पष्ट होता है कि वह अपने कृत्यों का परिणाम भुगतने के बजाय केवल अपनी खाल बचाने में लगा रहता है.

बाहर से मुरादअली एक सभ्य और दयालु व्यक्ति प्रतीत होता है, लेकिन भीतर से वह एक अवसरवादी, धूर्त और समाज-विरोधी इंसान है. जब शहर दंगों में जल रहा था, तब वह कहीं नहीं दिखता, लेकिन जब अमन कमेटी बनाई जाती है और शांति की अपील करने के लिए एक बस चलाई जाती है, तो वह उसमें सबसे आगे बैठकर माइक से शांति के नारे लगाता है. उपन्यासकार साहनीजी उसके चरित्र का वर्णन करते हैं- "शहर की कोई सड़क न थी, जिसके बीचों-बीच लोगों ने मुरादअली को चलते न देखा हो. पतली बेंत की छड़ी झुलाता, ठिगना, काला मुरादअली, जगह-जगह घूमता था. साँप की सी छोटी-छोटी पैनी आँखें, कँटीली मूँछें, घुटनों तक लंबा खाकी कोट, सलवार और सिर पर पगड़ी उसे सब फबते थे."

मुरादअली जैसा व्यक्ति समाज के लिए सबसे बड़ा खतरा होता है. वह प्रत्यक्ष रूप से अपराध नहीं करता, लेकिन अपनी चालाकियों से दूसरों को इस हद तक प्रभावित करता है कि पूरा समाज अराजकता में डूब जाता है. उसके कारण निर्दोष लोग मारे जाते हैं, लेकिन वह खुद हमेशा बच निकलता है और अंत में अपने चेहरे पर शांति और सद्भाव का मुखौटा लगा लेता है. उसका चरित्र इस सच्चाई को उजागर करता है कि समाज में ऐसे लोग हमेशा मौजूद रहते हैं, जो अपने स्वार्थ और राजनीतिक लाभ के लिए साम्प्रदायिकता का जहर फैलाते हैं और मासूम लोगों की जिंदगी तबाह कर देते हैं.

10.3.2.6 हरनामसिंह : सांप्रदायिक हिंसा का शिकार

उपन्यास के दूसरे खंड में हरनामसिंह का चरित्र उभरकर सामने आता है. वह ढोक इलाहीबख्श में चाय की दुकान चलाने वाला एक साधारण और सुलझा हुआ व्यक्ति है, जो अपनी धार्मिक आस्था और ईमानदारी के लिए जाना जाता है. लेकिन दुर्भाग्य से वह सांप्रदायिक हिंसा की चपेट में आकर अपने ही घर और गाँव से बेघर हो जाता है.

हरनामसिंह को अपने वाहे गुरु पर अटूट विश्वास है. जब गाँव में दंगा भड़कता है,

तो उसकी पत्नी बन्तो उसे वहाँ से निकल जाने की सलाह देती है, लेकिन वह धैर्यपूर्वक कहता है- "यदि किसी ने हमला किया तो दुकान, मकान और अपने-आपको भी उसके हवाले कर देंगे और अगर सचमुच जान पर बन आई तो मैं तुझे पहले खत्म कर दूंगा, फिर अपने को गोली मार दूंगा."

यह हमेशा अपने विश्वास को दोहराता है- "जिसके सिर पर उपरि तूं तु आमी, सो दुःख केसो पावे." उसका यह दृढ़ विश्वास उसे विपरीत परिस्थितियों में भी शांत और संयमित बनाए रखता है. लेखक इस दृढ़ता को इस रुप में प्रस्तुत करता है कि- "तर्क का जवाब तो तर्क में दिया जा सकता है, पर विश्वास का जवाब तर्क के पास नहीं है."

हरनामसिंह की स्थिति तब और गंभीर हो जाती है, जब करीमखान उसे सचेत करता है कि वे अब उसकी रक्षा नहीं कर सकते. मजबूरी में हरनामसिंह और उसकी पत्नी अपना घर छोड़कर निकल पड़ते हैं, लेकिन कुछ ही समय बाद वे देखते हैं कि बलवाई उनकी दुकान और मकान को लूटकर उसमें आग लगा रहे हैं. वे निःसहाय खड़े अपने घर को जलते हुए देखते हैं. इस समय लेखक उनकी मनःस्थिति का मार्मिक चित्रण करता है- "अपने घर में से उठते हुए शोले जरूर ही किसी दूसरे के घर में से उठनेवाले शोलों से भिन्न होते होंगे, वरना वे क्यों मूर्तिवत् खड़े रह जाते और उन्हें ताकते रहते." यह वाक्य हरनामसिंह की पीड़ा और असहायता को गहराई से उजागर करता है.

हरनामसिंह और उसकी पत्नी एक गाँव में शरण लेते हैं, लेकिन वहाँ भी उनकी स्थिति दयनीय बनी रहती है. जिस घर में उन्हें आश्रय मिलता है, उस परिवार का मुखिया ही उनकी दुकान को लूटकर आया होता है. जब हरनामसिंह देखता है कि उसका संदूक खोला जा रहा है, तो वह साहसपूर्वक कहता है- "एहसानअली, ताला क्यों तोड़ते हो. ये रही इसकी चाबियाँ. यह हमारा ही संदूक है. पर अब इसे तुम अपने पास रख सकते हो." यह कथन उसके आत्मसम्मान और साहस को दर्शाता है.

जल्द ही घर के लड़के रमज़ान को पता चलता है कि उनके घर में 'काफिरों' को पनाह दी गई है. वह गुस्से में दरवाजा तोड़ देता है और कुल्हाड़ी लेकर हरनामसिंह को मारने बढ़ता है. लेकिन जैसे ही वह हरनामसिंह को पहचानता है, उसकी दाढ़ी को पहले से ज्यादा सफेद और शरीर को कमजोर देखता है, वह हिचकिचा जाता है. लेखक इस क्षण को गहराई से व्यक्त करता है- "दो-तीन बार रमज़ान ने कुल्हाड़ी उठाने की कोशिश की, पर कुल्हाड़ी हाथ में रहते भी, उसे उठा नहीं पाया. काफिर को मारना और बात है, अपने घर के अंदर जान-पहचान के पनाहग़जीन को मारना दूसरी बात." रमज़ान का यह द्वंद्व इस तथ्य को दर्शाता है कि मज़हबी नफरत और हिंसा के माहौल में भी इंसानियत की एक पतली रेखा कहीं न कहीं बनी रहती है.

हरनामसिंह एक आस्थावान, ईमानदार और साहसी व्यक्ति है, जो संकट के समय भी घबराता नहीं है. उसे मानवीयता और ईश्वर की मर्जी पर गहरा विश्वास है. लेकिन वह सांप्रदायिक हिंसा का शिकार बनता है और अपने घर-बार से बेघर हो जाता है. डॉ. प्रेमकुमार के अनुसार - "हरनामसिंह को जितना स्थान दिया गया है, उतना वैविध्य या महत्व उसके चरित्र में नहीं है. वह आस्थावान, साहसी व्यक्ति की उस विवशता को अंकित करता है, जो सांप्रदायिक आग की लपटों में सीधे जला-झुलसा है." हरनामसिंह का चरित्र हमें यह सिखाता है कि सांप्रदायिकता की आग में न केवल निर्दोष लोग झुलसते हैं, बल्कि मानवीयता भी बुरी तरह प्रभावित होती है.

10.3.2.7 राजो : मानवीय भावनाओं से युक्त महिला

राजो एक मुस्लिम महिला होते हुए भी सांप्रदायिक नफरत और मज़हबी जुनून के बीच

इंसानियत का परिचय देती है. वह जाति-धर्म की दीवारों से ऊपर उठकर एक बेसहारा सिख दंपति हरनामसिंह और बन्तो को अपने घर में शरण देती है. उसके इस कदम में ख़तरे की पूरी संभावना थी, फिर भी वह दया और करुणा को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होती.

राजो को डर था कि अगर उसका बेटा रम़जान या अन्य परिजन जान गए, तो उन शरणार्थियों की जान बचाना मुश्किल होगा. लेकिन इसके बावजूद, वह उन दोनों को लस्सी पिलाती है. जब हरनामसिंह और बन्तो हिचकिचाते हैं कि वे मुस्लिम के हाथ की लस्सी कैसे पीएँ, तो राजो सहजता से कहती है - "तुम्हारे पास कोई बर्तन हो तो उसमें डाल लो, नहीं तो मैं पण्डित के यहाँ से तुम्हारे लिए दो बर्तन ले आऊँगी." इससे स्पष्ट होता है कि वह म़जहबी संकीर्णताओं से बहुत ऊपर है और सिर्फ इंसानियत में विश्वास रखती है. जब वह अपने पति और बेटे के डर से उन्हें घर से जाने को कहती है, तब भी उसकी ममता उसे रोकती है. जैसे ही वे जाने लगते हैं, उसका हृदय भर आता है और वह भावुक होकर कहती है- न जाओ जी, रुक जाओ, सांकल चढ़ा दो. तुमने मेरे घर का दरवाज़ा खटखटाया है, दिल में कोई आस लेकर आए हो. जो होगा, देखा जाएगा. तुम लौट आओ.

राजो धार्मिक प्रवृत्ति की महिला है, लेकिन उसका धर्म जाति-पांति और म़जहब से ऊपर उठकर मानवता की सेवा करना है. जब उसकी बहू अकरां कहती है कि काफिरों को पनाह देना गलत है और मर्दों को यह पसंद नहीं आएगा, तब राजो डटकर जवाब देती है- "तू चुप कर, कोई बदनसीब आए तो क्या मैं उसे धक्का देकर निकाल दूँ?" यह वाक्य उसकी विशाल मानवता को दर्शाता है, जो सांप्रदायिकता की अंधी दीवारों को तोड़कर केवल इंसान को इंसान मानती है.

हालाँकि राजो का हृदय दया से भरा हुआ है, फिर भी वह व्यावहारिक समझ रखती है. जब अकरां उसे चेतावनी देती है कि हरनामसिंह के पास बंदूक है और अगर उसने मर्दों पर गोली चला दी तो क्या होगा, तब उसे अपनी गलती का अहसास होता है. वह मियानी में जाकर हरनामसिंह से बंदूक ले लेती है और कहती है- "जब तुम जाओगे, तो मैं तुम्हारी बंदूक लौटा दूँगी." यह दर्शाता है कि वह केवल भावनाओं में बहकर निर्णय नहीं लेती, बल्कि संभावित खतरों को भी समझती है.

राजो को यह एहसास था कि अगर किसी मुस्लिम ने देख लिया कि उसने सिखों को पनाह दी है, तो उसकी जान पर भी बन सकती है. इसलिए वह रात के अंधेरे में हरनामसिंह और बन्तो को सुरक्षित निकालकर गाँव की सीमा तक छोड़ने जाती है. जाते समय वह बन्तो को एक पोटली पकड़ाते हुए कहती है - "लो बहन, ये तुम्हारे कुछ जेवर हैं, तुम्हारी संदूक से मिले थे, मैं ले आई हूँ. तुम्हारे आगे कठिन समय है, काम आएँगे."

हरनामसिंह और बन्तो की आँखें भर आती हैं. वे धन्यवाद देते हुए कहते हैं- "जब तक जिंदगी रहेगी, तेरा अहसान हम नहीं भूलेंगे, बहन!" बन्तो भी भावुक होकर कहती है- "वाहे गुरु तुम्हें सलामत रखे, अच्छे करम किए थे जो तुमसे मिलना हुआ." राजो की यह निःस्वार्थ सेवा और त्याग उसके चरित्र को और भी ऊँचा कर देता है. लेकिन वह स्वयं इस असमंजस में रहती है कि वह उन्हें बचा रही है या किसी और खतरे की ओर धकेल रही है.

राजो का चरित्र मानवीयता और सहानुभूति का प्रतीक है. वह परिवार और समाज के विरोध के बावजूद अपने भीतर की करुणा को मरने नहीं देती. उसकी दया, सेवा, त्याग और साहस एक आदर्श नारी के गुणों को प्रतिबिंबित करते हैं. लेखक ने उसके चरित्र को अत्यधिक संवेदनशीलता के साथ उकेरा है. कहीं-कहीं यह भावना अतिरंजित लग सकती है, लेकिन फिर भी यह चरित्र सांप्रदायिकता की विभीषिका में इंसानियत की लौ जलाए रखने का एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत करता है.

10.3.2.8 शाहनवाज : दोहरी शख्सियत का मालिक

शाहनवाज एक मुस्लिम होते हुए भी हिंदुओं के प्रति सौहार्दपूर्ण व्यवहार रखता है. वह न केवल आर्थिक रूप से संपन्न है, बल्कि सरकारी अधिकारियों के बीच उसका प्रभाव भी है. उसकी पहचान एक मिलनसार, दोस्तपरवर और मददगार व्यक्ति के रूप में होती है, जो भयभीत हिंदू परिवारों को मुस्लिम इलाकों से सुरक्षित स्थानों तक पहुँचाने का कार्य करता है.

शाहनवाज अपने रौबदार व्यक्तित्व के लिए जाना जाता था. लेखक के शब्दों में- "रोबीला जवान, छाती तनी रहती, तुर्रा लहराता रहता, बूट चमचमाते रहते, सदा धुले-धुले कपड़े पहनता था. ईमान से, यह किसी लड़की की तरफ देखकर मुसकरा दे, तो वह मुसकराए बिना नहीं रह सकती." हालाँकि वर्षों बाद वह एक गंभीर और दुनियादार आदमी बन चुका था, फिर भी उसका हँसमुख और मिलनसार स्वभाव बरकरार था. उसकी दोस्तपरवरी उसका ईमान थी, जिससे उसका चरित्र एक उदार और विश्वसनीय व्यक्ति के रूप में उभरता है.

शाहनवाज जब लाला लक्ष्मीनारायण के समधी से सुनता है कि लालाजी अपने परिवार को सुरक्षित स्थान पर ले जाना चाहते हैं, तो वह तुरंत अपनी गाड़ी लेकर आता है और उन्हें सुरक्षित पहुँचा देता है. इसके बाद वह अपने बचपन के दोस्त रघुनाथ से मिलने जाता है. रघुनाथ की पत्नी उससे अनुरोध करती है कि वह उनके पुराने मकान से जेवरों का डिब्बा ले आए. शाहनवाज नि:संकोच यह काम करने को तैयार हो जाता है, जिससे उसकी निस्वार्थ प्रवृत्ति सामने आती है.

जब शाहनवाज रघुनाथ के घर पहुँचता है, तो वहाँ उसे उनका नौकर मिलखी मिलता है. मिलखी की सहायता से वह जेवरों का डिब्बा ढूँढ़ लेता है, लेकिन अचानक उसके भीतर एक हिंसक भावना जाग उठती है. लेखक के अनुसार- "न जाने ऐसा क्यों हुआ, मिलखी की चोटी पर नज़र जाने के कारण, मस्जिद के आँगन में लोगों की भीड़ देखकर, या जो कुछ वह पिछले तीन दिनों से देखता-सुनता आ रहा था, वह विष की तरह उसके भीतर घुलता जा रहा था." अचानक शाहनवाज मिलखी की पीठ पर इतनी जोर से लात मारता है कि वह गिरकर दीवार से टकराता है और गंभीर रूप से घायल हो जाता है. उसके माथे से खून बहने लगता है, और वह इतनी बुरी तरह गिरता है कि उसकी पीठ टूट जाती है. शाहनवाज का गुस्सा इस हद तक बढ़ जाता है कि वह उसे और कुचलने की इच्छा रखता है, लेकिन संतुलन खोने के डर से ऐसा नहीं करता.

रघुनाथ के घर पहुँचकर शाहनवाज सहजता से कहता है कि मिलखी सीढ़ियों से गिरकर घायल हो गया है और डॉक्टर मिलना मुश्किल है. वह रघुनाथ की पत्नी को जेवरों का डिब्बा सौंपता है, और उसका चमकता हुआ चेहरा देखकर वह उसे पुण्यात्मा समझती है. यह विरोधाभास पाठकों के मन में तीव्र घृणा उत्पन्न करता है. शाहनवाज एक ओर हिंदुओं को बचाने वाला दिखाई देता है, लेकिन दूसरी ओर एक निरीह व्यक्ति को मज़हबी नफरत के चलते निर्दयता से मार डालता है.

शाहनवाज का यह चरित्र एक गहरे सांप्रदायिक तनाव को दर्शाता है. वह बाहरी रूप से एक उदार, धर्मनिरपेक्ष और दयालु व्यक्ति प्रतीत होता है, लेकिन भीतर ही भीतर उसकी मानसिकता मज़हबी जुनून से ग्रस्त है. "सौजन्य में राक्षसी वृत्ति का एकाएक उदय शाहनवाज के चरित्र में देखा जा सकता है." यह चरित्र दर्शाता है कि कैसे कोई व्यक्ति सामाजिक रूप से उदार दिख सकता है, लेकिन उसके भीतर संचित नफरत एक भयावह रूप में कभी भी प्रकट हो सकती है.

शाहनवाज का चरित्र 'तमस' उपन्यास में एक गहरे मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व को उजागर करता है. वह एक ओर मददगार, आकर्षक और मिलनसार व्यक्ति है, तो दूसरी ओर उसके भीतर संप्रदायगत विष भरा हुआ है, जो एक निरीह व्यक्ति की हत्या करवा देता है. यह दोहरी

शख्सियत दर्शाती है कि सांप्रदायिक दंगों और हिंसा में केवल कट्टर विचारधारा नहीं, बल्कि सामाजिक परिस्थितियाँ और आंतरिक मानसिकता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. साहनी जी का यह चरित्र-चित्रण गहरी मनोवैज्ञानिक सूझ-बूझ को दर्शाता है और यह बताता है कि कैसे हालात इंसान के असली चेहरे को उजागर कर देते हैं.

10.4 'तमस' उपन्यास के पात्रों की विशेषताएँ एवं उपलब्धियाँ

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' भारतीय उपमहाद्वीप के विभाजन की त्रासदी, सांप्रदायिकता, राजनीतिक षड्यंत्रों और मानवीय संवेदनाओं का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है. यह उपन्यास केवल ऐतिहासिक घटनाओं का दस्तावेज़ भर नहीं है, बल्कि यह मानवीय चेतना, सामाजिक जटिलताओं और सांप्रदायिक संघर्षों का गहन विश्लेषण भी करता है. इसके पात्र किसी एक विचारधारा से नहीं बंधे, बल्कि समाज के विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रतिबिंबित करते हैं.

10.4.1 यथार्थपरकता और मानवीय संवेदनाएँ

तमस के पात्र आदर्शवादी नहीं हैं, बल्कि वास्तविक जीवन के संघर्षशील लोग हैं. इनमें से प्रत्येक अपने-अपने समाज, वर्ग और धर्म का प्रतिनिधित्व करता है. पात्रों का स्वभाव परिस्थितियों के अनुरुप बदलता है और वे यथार्थ से जुड़े प्रतीत होते हैं. उदाहरण के लिए, नाथू केवल अपनी रोजी-रोटी कमाने वाला एक साधारण दलित व्यक्ति है, लेकिन परिस्थितियाँ उसे एक सांप्रदायिक षड्यंत्र का हिस्सा बना देती हैं. इसी तरह, शाहनवाज और हरनाम सिंह जैसे पात्र अपने समाज की जटिलताओं में फँसे हुए हैं.

10.4.2 सांप्रदायिकता के वास्तविक कारणों को उजागर करना

इस उपन्यास के पात्र यह दर्शाते हैं कि सांप्रदायिक दंगे केवल धार्मिक भावनाओं का परिणाम नहीं होते, बल्कि इसके पीछे गहरे राजनीतिक और सामाजिक कारण भी होते हैं. मुराद अली और लक्ष्मीनारायण जैसे पात्र इस बात को दर्शाते हैं कि किस तरह राजनीतिक स्वार्थ सांप्रदायिक तनाव को बढ़ाने में सहायक होते हैं. वहीं शाहनवाज जैसे पात्र उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सांप्रदायिकता के शिकार तो हैं लेकिन उसे रोक पाने में असमर्थ हैं.

10.4.3 सामाजिक और वर्गीय संघर्ष

भीष्म साहनी ने अपने पात्रों के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों की व्यथा को उकेरा है. नाथू, जो एक दलित है, निम्न वर्ग के संघर्ष और शोषण का प्रतीक बनकर सामने आता है. हरनाम सिंह और उसकी पत्नी बन्तो सिख समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्षरत है. वहीं, लीजा जैसी अंग्रेज महिला भारत में रहते हुए भी सांप्रदायिक संघर्षों से अछूती नहीं रह पाती, जिससे यह स्पष्ट होता है कि विभाजन केवल भारतीयों के लिए ही नहीं, बल्कि बाहरी लोगों के लिए भी चुनौतीपूर्ण था.

10.4.4 मनोवैज्ञानिक द्वंद्व और मानवीय पीड़ा

भीष्म साहनी ने अपने पात्रों के आंतरिक संघर्षों को भी बहुत गहराई से प्रस्तुत किया है. शाहनवाज का द्वंद्व इस बात को दर्शाता है कि वह सांप्रदायिक हिंसा को रोकना चाहता है, लेकिन परिस्थितियाँ उसे बेबस बना देती हैं. हरनाम सिंह का संघर्ष एक ओर अपने परिवार की सुरक्षा को लेकर है तो दूसरी ओर अपनी भूमि और पहचान को बचाने का प्रश्न है. इसी प्रकार, नत्थू का मनोवैज्ञानिक संघर्ष उसकी स्थिति की विडंबना को दर्शाता है वह किसी षड्यंत्र का हिस्सा नहीं बनना चाहता था, लेकिन समाज उसे दोषी मान लेता है.

10.4.5 स्त्री पात्रों की सशक्त उपस्थिति

'तमस' में केवल पुरुष पात्र ही नहीं, बल्कि स्त्री पात्र भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते

हैं. राजो, बन्तो और लीजा जैसी स्त्रियाँ अपने-अपने तरीके से विभाजन की त्रासदी को झेलती हैं. राजो का चरित्र साहस और संघर्षशीलता का प्रतीक है, जबकि बन्तो का चरित्र उस नारी शक्ति को दर्शाता है, जो अपने परिवार की रक्षा के लिए किसी भी परिस्थिति का सामना करने को तैयार है. लीजा की उपस्थिति इस बात को उजागर करती है कि भारत का विभाजन केवल भारतीयों के लिए ही नहीं, बल्कि यहाँ बसे विदेशियों के लिए भी एक त्रासदी थी.

10.4.6 मानवीय मूल्यों की खोज

इस उपन्यास के पात्रों के संघर्ष केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक भी हैं. यह पात्र मानवीय मूल्यों की खोज में लगे हुए हैं. शाहनवाज और हरनाम सिंह का आंतरिक द्वंद्व इस बात को दर्शाता है कि वे इंसानियत को बचाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन परिस्थितियाँ उन्हें ऐसा करने नहीं देतीं.

10.4.7 ऐतिहासिक और सामाजिक दस्तावेज

'भीष्म साहनी' के 'तमस' के पात्र केवल कथा के उद्देश्य से नहीं गढ़े गए, बल्कि वे उस समय की वास्तविकता को प्रतिबिंबित करते हैं. नत्थू, शाहनवाज, हरनाम सिंह, राजो और मुराद अली जैसे पात्र विभाजन के समय के समाज का जीवंत चित्रण प्रस्तुत करते हैं, जिससे यह उपन्यास केवल साहित्यिक कृति ही नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक दस्तावेज भी बन जाता है.

10.4.8 जाति और वर्ग संघर्ष की वास्तविकता को उजागर करना

इस उपन्यास के पात्र यह भी दिखाते हैं कि विभाजन केवल धर्म का संघर्ष नहीं था, बल्कि इसके पीछे जाति और वर्ग का संघर्ष भी छिपा था. नत्थू के माध्यम से यह दिखाया गया है कि दलित वर्ग किस प्रकार दोहरी मार झेलता है - एक ओर समाज में उनकी स्थिति कमजोर होती है और दूसरी ओर वे सत्ता के खेल में मोहरा बना दिए जाते हैं.

निष्कर्षत: कह सकते हैं कि 'तमस' के पात्र केवल एक कथा का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि वे विभाजन की त्रासदी और सांप्रदायिकता के असली कारणों को उजागर करते हैं. उनके माध्यम से भीष्म साहनी ने यह दिखाया है कि समाज केवल धर्म और जाति के आधार पर नहीं चलता, बल्कि उसमें व्यक्तिगत स्वार्थ, राजनीतिक षड्यंत्र और वर्ग संघर्ष भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. यह उपन्यास और इसके पात्र हमें केवल इतिहास की घटनाओं को समझने का अवसर नहीं देते, बल्कि यह भी सिखाते हैं कि कैसे सांप्रदायिकता, राजनीति और सामाजिक अन्याय से बचा जा सकता है. इन पात्रों की विशेषताएँ और उपलब्धियाँ उन्हें भारतीय साहित्य में एक अमूल्य स्थान प्रदान करती हैं.

10.5 सारबिंदु

- उपन्यास के पात्र वास्तविक जीवन के करीब हैं और उनके अनुभवों में प्रामाणिकता झलकती है.
- इसमें विभिन्न वर्गों, धर्मों और मानसिकताओं के पात्र शामिल हैं, जो समाज की विविधता को दर्शाते हैं.
- पात्रों के संवाद स्वाभाविक और प्रभावशाली हैं, जो उनकी मानसिकता को स्पष्ट करते हैं.
- पात्रों के माध्यम से सांप्रदायिक तनाव और उसके परिणामों को प्रभावी ढंग से दर्शाया गया है.
- नेताओं के राजनीतिक षड्यंत्र के चलते ही धर्म के नाम पर सत्ता और हिंसा को बढ़ावा दिया जाता है.

- रिचड्र्स जैसे पात्र दिखाते हैं कि अंग्रेज सरकार सांप्रदायिक दंगों को रोकने में उदासीन थी.
- पात्रों के पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक संबंधों को गहराई से दर्शाया गया है.
- गुरबक्श सिंह जैसे पात्र सांप्रदायिक हिंसा के बावजूद साहस और मानवीय मूल्यों को बनाए रखते हैं.
- पात्रों के अनुभवों और संवादों में संवेदनशीलता झलकती है, जो पाठकों को भावनात्मक रुप से जोड़ती है.
- पात्रों का जीवन और उनके संघर्ष विभाजनकालीन भारत की वास्तविकता को दर्शाते हैं.
- पात्रों की मानसिकता और परिस्थितियाँ आज भी सांप्रदायिकता और समाज की जटिलताओं को समझने में सहायक हैं.

10.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **बोध प्रश्न**
- **विस्तृत प्रश्न.**

(1) तमस उपन्यास के पात्र साम्प्रदायिक परिस्थितियों के शिकार हैं- सप्रमाण स्पष्ट करें.

(2) क्या 'तमस' उपन्यास के पात्र केवल ऐतिहासिक घटनाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, या वे आज के समाज में भी प्रासंगिक हैं?

(3) 'तमस' उपन्यास के पात्र के चरित्र चित्रण को केंद्र में रखते हुए विस्तृत लेख लिखें.

- **टिप्पणी लिखें.**

(1) नत्थू

(2) नत्थू की पत्नी

(3) रिचर्ड

(4) जरनैल सिंह

(5) मुरादअली

(6) हरनामसिंह

(7) राजो

(8) शाहनवाज

- **लघु प्रश्न**

(1) नत्थू को 'परिस्थितियों का दास' क्यों कहा गया है, और उसकी बेबसी उपन्यास में किस प्रकार प्रकट होती है.

(2) नत्थू की पत्नी के चरित्र में समर्पण और संवेदनशीलता किस प्रकार दिखाई देती है?

(3) जरनैल सिंह का चरित्र उपन्यास में निःस्वार्थ देशभक्ति और संघर्षशीलता को कैसे दर्शाता है.

(4) मुरादअली को एक धूर्त और स्वार्थी चरित्र के रूप में क्यों प्रस्तुत किया गया है?

(5) हरनाम सिंह सांप्रदायिक हिंसा का शिकार कैसे बनता है, और इससे उपन्यास में क्या संदेश मिलता है.

(6) राजो का चरित्र उपन्यास में मानवीय भावनाओं को किस प्रकार व्यक्त करता है.

(7) शाहनवाज को 'दोहरी शख्सियत का मालिक' क्यों कहा गया है?

(8) 'तमस' उपन्यास के पात्र किस प्रकार सांप्रदायिकता के वास्तविक कारणों को उजागर करते हैं.

(9) 'तमस' को एक ऐतिहासिक और सामाजिक दस्तावेज क्यों माना जाता है, और इसमें जाति व वर्ग संघर्ष की वास्तविकता को किस प्रकार प्रस्तुत किया गया है.

(10) तमस उपन्यास के पात्र एवं चरित्र चित्रण की विशेषता को स्पष्ट करें.

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न.**

(1) नत्थू को सुअर मारने के लिए कौन मजबूर करता है.

(अ) रिचर्ड (ब) मुरादअली (स) हरनाम सिंह (द) शाहनवाज

(2) नत्थू को सुअर मारने के बदले कितने रुपये देने का वादा किया गया था?

(अ) दस रुपये (ब) दो रुपये (स) पाँच रुपये (द) बीस रुपये

(3) नत्थू का चरित्र किस बात का प्रतीक है?

(अ) साहस और पराक्रम का

(ब) परिस्थितियों का शिकार होने वाले व्यक्ति का

(स) धार्मिक कट्टरता का

(द) अत्यधिक बुद्धिमत्ता का

(4) नत्थू द्वारा सुअर मारने की घटना का क्या परिणाम हुआ?

(अ) शहर में दंगे भड़क उठे

(ब) नत्थू अमीर बन गया

(स) पुलिस ने नत्थू को गिरफ्तार कर लिया

(द) नत्थू का सम्मान बढ़ गया

(5) रिचर्ड की प्रशासनिक शैली का मुख्य उद्देश्य क्या था?

(अ) भारतीय संस्कृति का संरक्षण

(ब) सांप्रदायिक सद्भाव स्थापित करना

(स) अंग्रेजी हुकूमत को मजबूत करना

(द) भारतीय जनता की भलाई करना

(6) रिचर्ड की रुचि किन विषयों में विशेष रूप से थी?

(अ) विज्ञान और तकनीक

(ब) भारतीय इतिहास और कलाएँ

(स) खेलकूद और राजनीति

(द) धार्मिक अध्ययन

(7) रिचर्ड की पत्नी लीज़ा उसके बारे में क्या सोचती थी?

(अ) वह एक न्यायप्रिय शासक था

(ब) वह सांप्रदायिक विवादों को बढ़ावा देता था

(स) वह भारतीयों की भलाई के लिए कार्य करता था

(द) वह प्रशासनिक कार्यों में पूरी निष्ठा रखता था

(8) रिचर्ड का कार्यालय किस प्रकार से सजाया गया था?

(अ) सरकारी फाइलों और दस्तावेजों से

(ब) भारतीय मूर्तियों, चित्रों और शिलालेखों से

(स) पश्चिमी कलाकृतियों और चित्रों से

(द) केवल आवश्यक फर्नीचर से

(9) उपन्यास में जरनैल सिंह का पहला परिचय पाठकों से कब होता है?

(अ) जब वह तिरंगा फहराता है

(ब) जब वह प्रभातफेरी में लेफ्ट-राइट करता हुआ शामिल होता है

(स) जब वह गली में भाषण देता है

(द) जब वह गांधीजी से मिलता है

(10) राजो का चरित्र किस मानवीय गुण का प्रतिनिधित्व करता है?

(अ) सांप्रदायिक भेदभाव

(ब) निस्वार्थ सेवा और त्याग

(स) म़जहबी कट्टरता

(द) आत्मकेंद्रित स्वभाव

(11) राजो ने हरनामसिंह और बन्तो को क्यों शरण दी?

(अ) वे उसके पुराने मित्र थे

(ब) वे उसके पड़ोसी थे

(स) वह मानवता को म़जहब से ऊपर मानती थी

(द) वह उनके गहनों की लालच में थी

(12) राजो ने हरनामसिंह की बंदूक क्यों ले ली?

(अ) उसे अपनी सुरक्षा की चिंता थी

(ब) वह अपने परिवार को बचाना चाहती थी

(स) उसे हिंसा से डर था और वह किसी अनहोनी को रोकना चाहती थी

(द) उसे बंदूक चलाने का शौक था

(13) शाहनवाज का बाहरी व्यक्तित्व किस प्रकार का था?

(अ) कट्टर और हिंसक

(ब) मिलनसार, दोस्तपरवर और मददगार

(स) डरपोक और असहाय

(द) चालाक और धोखेबाज

(14) शाहनवाज ने मिलखी पर हमला क्यों किया?

(अ) वह उसकी वफादारी से नाऱाज था

(ब) उसके भीतर म़जहबी जुनून जाग उठा

(स) मिलखी ने उससे झगड़ा किया था

(द) मिलखी ने जेवर चुराने की कोशिश की थी

(15) शाहनवाज के चरित्र से कौन-सा प्रमुख सामाजिक सत्य उजागर होता है?

(अ) सांप्रदायिक हिंसा केवल कट्टरपंथियों द्वारा की जाती है

(ब) व्यक्ति बाहरी रूप से उदार दिख सकता है, लेकिन भीतर नफरत छिपी हो सकती है

(स) सभी अमीर लोग मददगार होते हैं

(द) मित्रता और मानवता दंगों से प्रभावित नहीं होती

10.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- **तमस** : भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- **उपन्यास: कला और सिद्धांत** (संपादक: विनोद तिवारी, अजय आनंद), अनन्य प्रकाशन, दिल्ली-110032, वर्ष: 2016
- **कालजयी उपन्यास** : ममता देवी, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 2018
- **समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष** - डॉ. अर्जुन चव्हाण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 2012
- **समकालीन हिंदी उपन्यास: दशा और दिशा** - डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, वर्ष: 2018
- **समकालीन हिंदी उपन्यास: समाज और संवेदना** - संपादक: डॉ. वी. के. अब्दुल जलील, सह-संपादक: डॉ. पी. रवि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 2017
- **भारत-विभाजन और हिंदी उपन्यास** - हरियश, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली-110015, वर्ष: 1986
- **भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना** - राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर (संपादक), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 1982
- **शैली और शैली विश्लेषण** - डॉ. पाण्डेय शशिभूषण ‘शीतांशु’, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 2014
- **हिंदी उपन्यास का विकास** - मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष: 2014
- **हिंदी उपन्यास का इतिहास** - गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 2016
- **हिंदी उपन्यास: सामाजिक चेतना** - डॉ. रजनीकांत एस. शाह, संस्कृति, अहमदाबाद-380001, वर्ष: 1990
- **शोध पत्रिका** - ‘आलोचन दृष्टि’ आजाद नगर, बिंदकी फतेहपुर उ. प्र.
- **वेबसाइट लिंक** - https://www.hindikunj.com/2024/11/tamas-upanyas-ki-samiksha-bhisham-sahni.html

इकाई 11 'तमस' : संवाद और कथोपकथन

रूपरेखा

11.1 उद्देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 'तमस' उपन्यास का कथोपकथन और संवाद
 11.3.1 संक्षिप्त संवाद योजना
 11.3.2 दीर्घ संवाद योजना

11.4 'तमस' उपन्यास के कथोपकथन और संवाद के गुण
 11.4.1 पात्रानुकूलता
 11.4.2 सरलता
 11.4.3 स्वाभाविकता
 11.4.4 मार्मिकता
 11.4.5 व्यंग्यात्मकता
 11.4.6 यथार्थपरकता

11.5 'तमस' उपन्यास के कथोपकथन और संवाद की विशिष्टता

11.6 सारबिंदु

11.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

11.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

11.1 उद्देश्य

– 'तमस' में प्रयुक्त संवाद और कथोपकथन की विशेषताओं को समझना.

– उपन्यास में संवादों की भूमिका और उनके प्रभाव का विश्लेषण करना.

– संवादों के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व और मनोवृत्ति को समझना.

– 'तमस' के संवादों में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के यथार्थवादी चित्रण का अध्ययन करना.

– भीष्म साहनी की कथोपकथन शैली को पहचानना और उसका अध्ययन करना.

– संवादों के माध्यम से लेखक द्वारा प्रस्तुत सामाजिक संदेशों को समझना.

– उपन्यास के विभिन्न संवादों की आज के संदर्भ में प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना.

– उपन्यास में प्रयुक्त संवादों की भाषा, शैली और संरचना का विश्लेषण करना.

– संवादों में निहित भावनात्मकता, संवेदनशीलता और प्रभावशीलता को समझना.

– उपन्यास में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के संवादों (आदेशात्मक, प्रश्नात्मक, व्यंग्यात्मक आदि) की पहचान करना.

– कथोपकथन में प्रयुक्त शैली और उसके प्रभाव को समझना.

– संवादों और कथोपकथन के माध्यम से ऐतिहासिक घटनाओं के चित्रण को देखना.

– संवादों में उत्पन्न होने वाले विवादों और संघर्षों का विश्लेषण करना.

11.2 प्रस्तावना

'तमस' भारतीय साहित्य में विभाजन और सांप्रदायिकता के विषय पर लिखी गई एक महत्वपूर्ण कृति है. भीष्म साहनी द्वारा रचित यह उपन्यास सन् 1947 ई. के भारत-पाकिस्तान विभाजन से पहले के दंगों और सामाजिक उथल-पुथल का सजीव चित्रण करता है. उपन्यास की सबसे प्रभावशाली विशेषताओं में से एक इसका संवाद और कथोपकथन है, जो न केवल कहानी को आगे बढ़ाता है, बल्कि पात्रों की मानसिकता, समाज की दशा और राजनीतिक परिस्थितियों को भी उजागर करता है. संवादों के माध्यम से पाठक घटनाओं को गहराई से महसूस कर सकते हैं और उस समय की भयावहता को प्रत्यक्ष अनुभव कर सकते हैं.

'तमस' के संवाद सहज, प्रभावी और यथार्थवादी हैं. उपन्यास की भाषा आमजन की भाषा है, जो इसकी संप्रेषणीयता को बढ़ाती है. पात्रों के संवाद उनकी सामाजिक, धार्मिक और वैचारिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हैं. हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ब्रिटिश अधिकारियों के संवादों में उनकी मानसिकता झलकती है. संवादों के माध्यम से भीष्म साहनी ने दंगों के पीछे छिपी राजनीति और आम जनता की पीड़ा को उजागर किया है. कहीं संवाद व्यंग्यपूर्ण हैं, तो कहीं वे भय, क्रोध और आशंका से भरे हुए हैं.

कथोपकथन की दृष्टि से तमस एक सशक्त उपन्यास है. इसकी घटनाएँ विस्तार से वर्णित हैं, जिससे पाठक खुद को उन परिस्थितियों में पाते हैं. नत्थू से सुअर मरवाने की घटना, जो आगे चलकर सांप्रदायिक दंगे का कारण बनती है, कथोपकथन की शक्ति को दर्शाती है. संवादों और घटनाओं के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि किस प्रकार एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत दंगे भड़काए जाते हैं और निर्दोष लोगों को इसका शिकार बनाया जाता है.

संवादों के माध्यम से भीष्म साहनी ने तत्कालीन समाज की जटिलताओं को उकेरा है. हिन्दू-मुस्लिम संबंधों की पेचीदगी, अंग्रेजों की चालबाजी, राजनीतिक दलों की स्वार्थपरता और आम जनता की असहायता को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है. जब जनता दंगों की आग में जल रही होती है, तब राजनीतिक नेता अपने स्वार्थ की रोटियाँ सेंक रहे होते हैं. यह स्थिति संवादों के माध्यम से स्पष्ट होती है.

उपन्यास के संवाद पात्रों की सामाजिक स्थिति के अनुरुप हैं. मजदूर, व्यापारी, राजनेता, पुलिस अधिकारी और धार्मिक नेताओं के संवाद उनकी मानसिकता को दर्शाते हैं. कथोपकथन में संवेदनशीलता भी देखने को मिलती है, विशेष रूप से तब, जब कोई पात्र अपने परिवार को खो देता है या दंगे की विभीषिका का शिकार होता है. इन संवादों से पीड़ा और दर्द की गहरी अभिव्यक्ति होती है.

'तमस' का कथोपकथन घटनाओं को प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. लूटपाट, हिंसा और भयावह दृश्यों को भीष्म साहनी ने इस तरह प्रस्तुत किया है कि वे पाठकों के मन पर गहरी छाप छोड़ते हैं. संवाद और कथोपकथन केवल कहानी को आगे बढ़ाने का साधन नहीं हैं, बल्कि समाज की वास्तविकता को उजागर करने का माध्यम भी हैं. इन तत्वों के माध्यम से तमस न केवल विभाजन की त्रासदी को चित्रित करता है, बल्कि सांप्रदायिकता के भयावह परिणामों को भी दिखाता है.

11.3 'तमस' उपन्यास का कथोपकथन और संवाद

उपन्यास में कथोपकथन का उतना ही महत्व है, जितना कि कथानक और पात्रों का. कथोपकथन के माध्यम से न केवल पात्रों का चरित्र स्पष्ट होता है, बल्कि कथावस्तु का विकास भी होता है. इससे लेखक को अपनी बात प्रत्यक्ष रूप से कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती,

क्योंकि पात्रों के संवाद, उनके कार्य-व्यवहार और अन्य पात्रों की टिप्पणियाँ स्वयं ही बहुत कुछ व्यक्त कर देती हैं. उपन्यास में संवादों की उपस्थिति से घटनाओं में गति आती है और पाठकों को पात्रों के विचारों और मनोभावों को समझने में सहायता मिलती है. संवादों के माध्यम से ही पात्रों की मनोदशा, उनकी वैचारिक प्रवृत्तियाँ और उनके आपसी संबंध उभरकर सामने आते हैं.

यदि उपन्यास में संवाद न हों, तो कथा और पात्रों में सजीवता नहीं आ सकती. प्रभावी संवाद कथा को स्वाभाविक बनाते हैं और पाठकों को कथा से जोड़ते हैं. संवाद जितने पात्रानुकूल, स्वाभाविक, अभिनयात्मक, संक्षिप्त, सरल और प्रभावशाली होंगे, कथा उतनी ही जीवंत लगेगी. कथोपकथन उपन्यास को दृश्य-काव्य जैसी सजीवता और वास्तविकता प्रदान करता है, जिससे वह एक कलात्मक कृति के रूप में उभरता है. संवादों के माध्यम से ही पाठक पात्रों की मानसिक स्थिति को समझ सकते हैं और उनके विचारों से परिचित हो सकते हैं. 'तमस' उपन्यास में भीष्म साहनी ने संवादों का अत्यंत प्रभावी उपयोग किया है, जिससे उपन्यास का घटनाक्रम अत्यधिक स्वाभाविक बन गया है.

'तमस' उपन्यास में संवादों की योजना अत्यंत प्रभावशाली है. इसमें संवादों को कहीं संक्षिप्त रखा गया है, तो कहीं विस्तृत. कुछ संवाद लम्बे हैं, जो एक-दो पृष्ठ तक चलते हैं, जबकि कुछ अत्यंत संक्षिप्त होते हैं. संवादों की यह विविधता उपन्यास को अधिक प्रभावशाली और रोचक बनाती है. संवादों के माध्यम से भीष्म साहनी ने विभाजन के समय की भयावहता, सांप्रदायिक तनाव, सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों और मानवीय संवेदनाओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है. पात्रों के संवाद उनके सामाजिक वर्ग और मानसिकता के अनुरूप हैं, जिससे वे अत्यधिक स्वाभाविक प्रतीत होते हैं.

संवादों के माध्यम से 'तमस' में कई गंभीर मुद्दों को उठाया गया है. धार्मिक कट्टरता, सत्ता का खेल, आम जनता की असहायता, अंग्रेजों की कूटनीति और सहसा की विभीषिका को संवादों के माध्यम से अत्यंत स्पष्ट रूप से व्यक्त किया गया है. जब राजनीतिक नेता अपने स्वार्थ में लिप्त रहते हैं और जनता दंगों की आग में जलती है, तब संवादों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि सत्ता और आम जनता के बीच कितना बड़ा अंतर है. संवादों के माध्यम से ही यह भी दिखाया गया है कि किस प्रकार समाज में फैली अफवाहें और गलतफहमियाँ दंगे भड़काने में अहम भूमिका निभाती हैं.

भीष्म साहनी ने 'तमस' में संवादों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है, जिससे उपन्यास की प्रामाणिकता और बढ़ जाती है. उपन्यास में पात्रों के बीच होने वाले संवाद न केवल कथावस्तु को आगे बढ़ाते हैं, बल्कि समाज की सच्चाइयों को भी उजागर करते हैं. संवादों के माध्यम से पाठक विभाजन के उस दौर की मानसिकता, पीड़ा और संघर्ष को महसूस कर सकते हैं. संवादों की विविधता, उनकी स्वाभाविकता और प्रभावशीलता ही 'तमस' को एक उत्कृष्ट उपन्यास बनाती है, जिसे हम संक्षिप्त संवाद योजना, दीर्घ संवाद योजना के रूप मे अलग-अलग कर सकते हैं.

11.3.1 संक्षिप्त संवाद योजना

साहनी जी की कथा-शैली में संवादों की योजना अत्यंत प्रभावी और सारगर्भित है. उन्होंने कथा के विकास, वातावरण के चित्रण और पात्रों के क्रिया-कलाप को स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करने के लिए संक्षिप्त किंतु अर्थपूर्ण संवादों का उपयोग किया है. उनके संवाद यथार्थवादी होने के साथ-साथ कथानक को गति प्रदान करते हैं और पाठकों को पात्रों की मानसिक स्थिति, सामाजिक पृष्ठभूमि और भावनात्मक तनाव को समझने में सहायता करते हैं.

संवादों के माध्यम से लेखक ने पात्रों के व्यक्तित्व को उभारने की उत्कृष्ट क्षमता दिखाई है. छोटे-छोटे संवाद भी गहरी अर्थवत्ता लिए होते हैं, जिससे पात्रों के अंतर्द्वंद्व, वैचारिक मतभेद और सामाजिक परिस्थितियों का प्रभावी चित्रण संभव हो सका है. उनकी संवाद-योजना में संक्षिप्तता के बावजूद गहनता होती है, जिससे कथा अधिक प्रभावशाली बनती है. इस प्रकार, साहनी जी की संवाद-योजना उनकी कथा-कला की विशेषता बनकर उभरती है, जो उनके लेखन को अधिक सजीव और सशक्त बनाती है. उदाहरण के लिए, आँकड़ा बाबू और हरनाम सिंह के बीच यह संवाद देखा जा सकता है जो न केवल हरनाम सिंह की अशिक्षा और निरीहता को दर्शाता है, बल्कि आँकड़ा बाबू की बेरुखी और प्रशासनिक जड़ता को भी उजागर करता है.

'नाम?'

'हरनाम सिंह.'

'वल्दियत?'

'सरदार गुरदयाल सिंह.'

'मौजा?'

'ढोक इलाही बख्श.'

'तहसील?'

'नूरपुर.'

'कितने घर हिंदुओं-सिखों के थे?'

'केवल एक घर, मेरा घर जी.'

बाबू ने सिर ऊपर उठाया. बड़ी उम्र का एक सरदार सवालों के जवाब दिए जा रहा था.

'तुम बचकर कैसे आ गए?'

'करीमखान के साथ हमारे बड़े अच्छे ताल्लुक थे. शाम को जब बाबू ने उंगली का इशारा करके उसे बोलने से बन्द कर दिया.'

साहनी जी की लेखनी में संवादों का विशेष महत्व है, जो संक्षिप्त होते हुए भी गहरे अर्थ संप्रेषित करते हैं. प्रस्तुत संवाद इसी विशेषता का सजीव उदाहरण है. यह संवाद न केवल कथा के घटनाक्रम को आगे बढ़ाता है, बल्कि पात्रों के व्यक्तित्व, सामाजिक परिस्थितियों और विभाजनकालीन तनाव को भी प्रकट करता है.

संवाद की भाषा अत्यंत सहज और प्रभावी है. प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया यह संवाद सरकारी दफ्तरों की कठोरता और संवेदनहीनता को दर्शाता है. आँकड़ा बाबू का यांत्रिक ढंग से सवाल पूछना, बिना किसी सहानुभूति के, प्रशासनिक व्यवस्था की बेरुखी को उजागर करता है. दूसरी ओर, हरनाम सिंह के उत्तरों में विस्थापन की पीड़ा, बेचारगी और विडंबना झलकती है. "केवल एक घर, मेरा घर जी" - यह वाक्य अकेले ही उस त्रासदी को व्यक्त करता है, जहाँ एक संपूर्ण समुदाय नष्ट हो गया और केवल वह अकेला जीवित बचा.

संवादों की संक्षिप्तता उन्हें और भी प्रभावशाली बनाती है. 'तुम बचकर कैसे आ गए?' के उत्तर में 'करीम खान के साथ हमारे बड़े अच्छे ताल्लुक थे' – यह वाक्य सांप्रदायिक सौहार्द्र की एक झलक देता है, जहाँ जाति-धर्म के भेदभाव से ऊपर उठकर करीम खान ने हरनाम सिंह की रक्षा की. यह विभाजन के अमानवीय दृश्यों के बीच मानवता की उपस्थिति को भी दर्शाता है.

अंत में, 'शाम को जब बाबू ने उंगली का इशारा करके उसे बोलने से बंद कर दिया' — यह संकेत करता है कि पीड़ितों की कहानियाँ प्रशासन के लिए महज आंकड़े भर हैं. बाबू की इस हरकत से सरकारी तंत्र की उदासीनता उजागर होती है, जहाँ मानवीय संवेदना की कोई गुंजाइश नहीं बचती.

एक दूसरा उदाहरण देखें- जिसमें पात्रों के बीच सहज बातचीत के माध्यम से उनके स्वभाव, संबंधों और समाज में उनके स्थान को व्यक्त किया गया है —

"आप तो मालिक हैं, बख्शी जी, आपको मंज़ूरी की क्या .जरूरत है. आपके हुक्म के बिना तो चिड़ी नहीं फड़क सकती," शंकर बोला,

फिर मेहताजी की ओर मुख़ातिब होकर कहा, "जय हिंद, मेहताजी!"

'जय हिंद!'

'मैंने आपको देखा ही नहीं.'

'तुम अब हमें कहाँ देखते हो, शंकर, तुम्हारे पौ-बारह हैं.'

'आज आप अपना बैग नहीं लाए?'

'बैग की प्रभातफेरी में क्या जरूरत है?'

'वाह जी, बैग की सभी जगह.जरूरत रह सकती है. बीमा का ग्राहक भी फंस सकता है.'

मेहताजी चुप रहे. कांग्रेस का काम करने के साथ-साथ वह बीमा का काम भी करते थे.

'कभी जबान भी बंद किया कर, शंकर. मेहताजी तुझसे तिगुनी उम्र के हैं. बड़ों को बड़ा समझते हैं, बख्शी जी ने कहा.'

'मैंने क्या कहा है? मैंने यही पूछा है ना कि बैग नहीं लाए. मैंने यह तो नहीं पूछा कि सेठी से पचास ह़जार का बीमा मिला है या नहीं मिला.'

भीष्म साहनी के इस संवाद में समाज की व्यवहारिक सच्चाइयों और व्यक्तियों की प्रवृत्तियों को अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है. संवाद के माध्यम से पात्रों के व्यक्तित्व, सामाजिक संबंधों और तात्कालिक राजनीतिक-सामाजिक स्थिति को उभारा गया है.

शंकर का व्यंग्यात्मक लहजा और बख्शी जी को संबोधित करते हुए उनकी शक्ति को रेखांकित करना यह दर्शाता है कि समाज में पद और प्रभाव का विशेष महत्त्व है - "आपके हुक्म के बिना तो चिड़ी नहीं फड़क सकती" - यह वाक्य बख्शी जी की सत्ता और प्रभाव का संकेत देता है, साथ ही चाटुकारिता की प्रवृत्ति को भी उजागर करता है.

मेहताजी, जो कांग्रेस के कार्यकर्ता होते हुए भी बीमा एजेंट हैं, उनके द्वंद्व को इस संवाद में कुशलता से व्यक्त किया गया है. शंकर का प्रश्न - "बैग की प्रभातफेरी में क्या .जरूरत है?" - उनकी दोहरी भूमिका पर कटाक्ष करता है. यह संवाद उनकी व्यावसायिक चतुराई और राजनीतिक सक्रियता के बीच संतुलन साधने की कोशिश को दर्शाता है.

बख्शी जी का हस्तक्षेप सामाजिक अनुशासन और परंपरागत बड़ों के सम्मान की भावना को दर्शाता है, परंतु शंकर अपनी चतुराई और व्यंग्य के माध्यम से स्थिति को हल्के-फुल्के अंदाज में मोड़ देता है. संवाद की संक्षिप्तता और तीखे व्यंग्य के कारण यह समाज की वास्तविकताओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है.

एक तीसरा उदाहरण देखिए- प्रदेश कांग्रेस के चुनाव निकट थे, और प्रत्येक जिला कमेटी से चार प्रतिनिधियों को भेजने की योजना बनाई गई थी. इसी संदर्भ में जिला कमेटी की बैठक आयोजित की गई, जहाँ सदस्यों के नाम तय किए जा रहे थे. मेहताजी, जो संगठन

में प्रभावशाली थे, ने अन्य तीन सदस्यों के साथ चौथे सदस्य के रूप में कोहली का नाम सुझाया. यह तय माना जा रहा था कि कोहली निर्विरोध चुन लिया जाएगा, किंतु शंकर, जो स्पष्टवादी और बेबाक था, ने इस निर्णय पर आपत्ति जताते हुए बैठक की दिशा ही बदल दी. स्क्रुटिनी कमेटी की गंभीर बैठक में शंकर की दख़ल अंदाजी से माहौल गर्मा गया, और संगठन के आंतरिक मतभेद सतह पर आने लगे.

'माफ़ कीजिए. मैं एक सवाल पूछना चाहता हूँ.'

मेहताजी का माथा ठनका.

'यह स्क्रूटिनी कमेटी की मीटिंग हो रही है. जो सवाल पूछना हो बाद में पूछ लेना.'

'मैं आपसे नहीं, स्क्रुटिनी कमेटी से पूछना चाहता हूँ.'

फिर वह बड़े नाटकीय अन्दाज से इस इन्तज़ार में खड़ा रहा कि स्क्रुटिनी के प्रधान उससे कहें तब वह बोले.

'कहो, क्या है? प्रधान ने कहा.'

'मैं पूछ सकता हूँ कि कांग्रेस-सदस्यता के नियम क्या हैं?'

'तुम काम की बात करो, उल्टी-सीधी बात करने का यह वक़्त नहीं है.'

'मेहताजी, मैं आपसे बात नहीं कर रहा हूँ. आप ख़ामोश रहिए.'

'कहने दो, कहने दो, हाँ बोलो भाई शंकर, क्या कहते हो? कांग्रेस की सदस्यता के क्या नियम हैं?'

'कि सदस्य चार आने सालाना चन्दा देता हो, शुद्ध हाथ की कती, हाथ की बुनी ख़ादी पहनता हो, चरख़ा कातता हो, क्यों ठीक है कि नहीं?'

'ठीक है.'

'मैं कोहली साहिब से दरख़ाश्त करूँगा कि वह एक मिनट के लिए खड़े हो जाएँ. सभी चुप रहे.'

'गुस्ताख़ी माफ़, स्क्रुटिनी कमेटी के सामने हर सदस्य को सवाल पूछने का हक हासिल है.'

मेहताजी गुर्राए.

'मेहता साहिब, आप यहाँ पर प्रधान नहीं हैं. यहाँ पर आपको अपनी रूड़पंची चलाने की कोई ज़रूरत नहीं है. हाँ जी, तो कोहली साहिब, एक मिनट के लिए खड़े हो जाइए.'

कोहली खड़ा हो गया.

'आप ख़ादी पहनते हैं ना?'

'यह क्या नाटक कर रहे हो तुम? सीधी बात कहो. तुम पूछना क्या चाहते हो?'

'अपना नाड़ा दिखाइए. नाड़ा मतलब आज़ारबन्द.'

'क्यों? तुम्हारा मतलब?'

'यह मेम्बर की तौहीन है. यह क्या मज़ाक चल रहा है?'

'मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ, मेहता साहिब, आप ख़ामोश रहिए. बिना प्रधानजी की इजाज़त के आपको बोलने का कोई हक नहीं है. हाँ, कोहली साहिब, मैंने क्या कहा. अपना नाड़ा दिखाइए. आजारबन्द दिखाइए.'

'जो न दिखाऊँ तो?'

‘आपको दिखाना पड़ेगा. मैं जो बात साबित करना चाहता हूँ उसके लिए नाड़ा दिखाना जरूरी है.’

‘दिखा दो यार, यह भौंका काम नहीं करने देगा. कैसे-कैसे लोफ़र कांग्रेस में घुस आए हैं.’

‘क्या कहा मेहताजी, मैं लोफ़र हूँ तो आप शोहदे हैं? मुझसे कुछ मत कहलवाइए, मैं स्याह-सफ़ेद सब जानता हूँ. हाँ तो कोहली साहिब !’

‘तुम क्या चाहते हो, मैं सबके सामने नाड़ा खोलूँ?’

‘मैं खोलने को नहीं कह रहा हूँ, मैं सिर्फ दिखाने को कह रहा हूँ.’

‘दिखा दो यार, ख़त्म करो.’

कोहली ने अचकन का पल्ला उठाया. नीचे से खादी के कुर्ते का अगला भाग ऊपर को उठाया. नीचे पीले रंग का आजारबन्द लटक रहा था. शंकर लपककर आगे बढ़ गया और नाड़े को पकड़ लिया.

‘देख लीजिए साहिबान, नाड़ा रेशमी है. हाथ के कते सूत का नहीं है. मशीनी है, अकड़े का है. आप खुद छूकर देख सकते हैं.’

‘तो फिर? फिर क्या हुआ?’

यह संवाद सत्ता, राजनीति और संगठनात्मक संघर्ष का प्रभावी चित्रण प्रस्तुत करता है. शंकर और मेहताजी के बीच का टकराव सिर्फ दो व्यक्तियों की बहस नहीं है, बल्कि यह सत्ता संरचना के भीतर नैतिकता, ईमानदारी और अवसरवादिता के बीच संघर्ष को दर्शाता है. संवादों में पात्रों की मानसिकता और उनके व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक मिलती है.

शंकर की भाषा में व्यंग्य और चुनौती दोनों मौजूद हैं. वह कांग्रेस के नियमों को आधार बनाकर कोहली की सदस्यता पर सवाल उठाता है, लेकिन उसका तरीका आक्रामक और कुछ हद तक नाटकीय है. दूसरी ओर, मेहताजी का व्यवहार पारंपरिक सत्ता की मानसिकता को प्रकट करता है, जो विरोध को दबाने और पुराने प्रभाव को बनाए रखने में विश्वास रखते हैं. संवादों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी स्वाभाविकता और रोचकता है. “अपना नाड़ा दिखाइए” जैसा संवाद न केवल हास्य उत्पन्न करता है, बल्कि राजनीतिक संगठन में दिखावे और वास्तविकता के बीच के अंतर को भी उजागर करता है. यह दिखाता है कि नियमों की व्याख्या किस तरह से सत्ता-स्वार्थ के अनुसार बदली जा सकती है.

संवादों की लंबाई के बावजूद उनमें कहीं भी नीरसता नहीं आती. प्रत्येक पंक्ति एक नए स्तर पर कथा को आगे बढ़ाती है. स्क्रुटिनी कमेटी के अन्य सदस्य भी इस पूरे प्रसंग में निष्क्रिय दर्शक की तरह नजर आते हैं, जिससे यह पता चलता है कि किस तरह संगठन में सत्ता के सामने चुप्पी साध लेना आम प्रवृत्ति होती है.

कुल मिलाकर, यह संवाद केवल व्यक्तिगत बहस तक सीमित नहीं है, बल्कि राजनीति में नैतिकता, अवसरवाद और सत्ता-संघर्ष के व्यापक मुद्दों पर टिप्पणी करता है. यह संगठनात्मक तंत्र की वास्तविकता को प्रकट करने वाला सजीव चित्रण है.

यह संवाद केवल सामान्य बातचीत का आदान-प्रदान नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से समाज की विडंबनाओं और व्यावहारिक संबंधों की परतों को उजागर किया गया है. शंकर की बातचीत में व्यंग्य और तंज की झलक है, वहीं मेहताजी की चुप्पी उनके दोहरे किरदार को दर्शाती है. बख्शी जी का हस्तक्षेप सामाजिक अनुशासन और परंपरागत बड़ों के सम्मान की भावना को दर्शाता है. संवाद की शैली सहज और प्रभावशाली है, जिससे पात्रों की मानसिकता

और सामाजिक स्थिति स्पष्ट होती है. साहनी जी का यह संवाद उनके कथानक में व्यंग्यात्मक यथार्थवाद की सशक्त उपस्थिति को प्रमाणित करता है.

इस प्रकार, यह संवाद अपने संक्षिप्त शब्दों में भी गहरी भावनात्मक गूंज छोड़ता है और विभाजनकालीन त्रासदी को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है.

11.3.2 दीर्घ संवाद योजना

भीष्म साहनी की रचनाओं में संवाद योजना अत्यंत प्रभावशाली है. उनके संवाद संक्षिप्त होने पर भी गहरे अर्थ संप्रेषित करते हैं और यदि दीर्घ होते हैं, तो भी वे अनावश्यक विस्तार से मुक्त रहते हैं. दीर्घ संवादों का उपयोग उन्होंने कथानक की गति बनाए रखने, पात्रों के मनोभावों को स्पष्ट करने और वातावरण को अधिक सजीव बनाने के लिए किया है. इन संवादों में प्रवाह बना रहता है, जिससे पाठकों की रुचि बनी रहती है और कथा अधिक प्रभावी हो जाती है. उदाहरण के लिए मुराद अली और नत्थू के बीच का संवाद केवल शब्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की विभिन्न परतों को उजागर करता है –

'हमारे सलोतरी साहिब को एक मरा हुआ सुअर चाहिए, डाक्टरी काम के लिए. मुराद अली ने नत्थू से कहा था जब वह ख्याल साफ़ कर चुकने के बाद नल पर हाथ-मुँह धो रहा था.'

'सुअर? क्या करना होगा मालिक? नत्थू ने हैरान होकर पूछा था.'

'इधर पिगरी के सुअर बहुत घूमते हैं, एक सुअर को इधर कोठरी के अन्दर कर लो और उसे काट डालो.'

नत्थू ने आँख उठाकर मुराद अली के चेहरे की ओर देखा था.'

'हमने कभी सुअर मारा नहीं मालिक, और सुनते हैं सुअर मारना बड़ा कठिन है. हमारे बस का नहीं होगा हुजूर. ख्याल-वाल उतारने का काम होता कर दें. मारने का काम तो पिगरीवाले ही करते हैं.'

'पिगरीवालों से करवाना होता तो तुमसे क्यों कहते. यह काम तुम्हीं करोगे.' और मुराद अली ने पाँच रुपये का चरमराता नोट जेब में से निकाल कर नत्थू के जुड़े हाथों के पीछे उसकी जेब में ठूँस दिया था.'

'यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ा काम नहीं है. सलोतरी साहिब ने फ़रमाइश की तो हम इन्कार कैसे कर देते.'

फिर मुराद अली ने लापरवाही के अन्दाज में कहा :

'उधर मसान के पार पिगरी के सुअर घूमते हैं. एक को पकड़ लो. सलोतरी साहिब खुद बाद में पिगरीवालों से बात कर लेंगे.'

मुराद अली और नत्थू के बीच का यह संवाद पाठक को एक ऐसे समाज से रुबरु कराता है, जहाँ सत्ता और मजबूरी के बीच संतुलन की कोई गुंजाइश नहीं है. नत्थू, जो ख्याल उतारने का काम करता है, सुअर मारने से स्पष्ट इनकार करता है, क्योंकि यह न केवल उसके काम से अलग है, बल्कि उसकी नैतिकता और मान्यताओं के भी विरुद्ध है. "हमने कभी सुअर मारा नहीं मालिक" - इस वाक्य में नत्थू की झिझक, असमंजस और सामाजिक-सांस्कृतिक दुविधा स्पष्ट रूप से उभरती है. मुराद अली नत्थू की विवशता को समझते हुए भी उसे यह कार्य करने के लिए बाध्य करता है. पाँच रुपये का नोट उसकी जेब में ठूँसने का दृश्य स्पष्ट करता है कि किस तरह गरीबों की मजबूरी का लाभ उठाया जाता है. मुराद अली का संवाद - "यह तुम्हारे लिए बहुत बड़ा काम नहीं है" शक्ति के अहंकार और ऊँच-

नीच की मानसिकता को दर्शाता है.

इस संवाद में कहीं भी अनावश्यक विस्तार नहीं है, फिर भी यह पाठक को गहराई से झकझोरता है. नत्थू का डर, मुराद अली का दबदबा, और सत्ता के आगे उसकी मजबूरी यह सब संवादों के माध्यम से अत्यंत प्रभावी ढंग से उभरा है.

रिचर्ड और ल़ीजा के संवाद, रिचर्ड और ल़ीजा सुबह के समय नाश्ते से पहले अपने बँगले के विशाल कमरों से गुजरते हुए एक बड़े कक्ष में पहुँचे. यह कमरा भारतीय कला और संस्कृति के अद्‌भुत संग्रह से भरा हुआ था. अप्रैल के महीने में घर के भीतर रोशनी की व्यवस्था विशेष रूप से की जाती थी, जिससे स्निग्ध अंधकार बना रहता और बुद्ध तथा बोधिसत्त्वों की मूर्तियों पर विशेष कोण से प्रकाश डाला जा सके. इन मूर्तियों के साथ-साथ अलमारियों में ठसाठस भरी किताबें, दीवारों पर भारतीय चित्रकला के चित्र, ताम्रपत्र पर लिखे ग्रंथ और अन्य ऐतिहासिक धरोहरें रखी थीं.

रिचर्ड, जो कि भारतीय संस्कृति से अत्यंत प्रभावित था, अपनी मूर्तियों और कलाकृतियों के प्रति विशेष भावुकता रखता था. उसने ल़ीजा को बुद्ध की मूर्तियों की विशिष्ट मुस्कान के बारे में बताया, जो प्रकाश के विशेष कोण पर उभरकर आती थी. उसकी रुचि और जुनून उसे किसी संग्रहालय के क्यूरेटर की तरह प्रतीत करा रहे थे. ल़ीजा, जो इन बातों को सुनते हुए उसकी गहराई को महसूस कर रही थी, सोच रही थी कि पुरुष कितनी तल्लीनता से निर्जीव वस्तुओं में जीवन ढूँढ़ते हैं.

'देखा ल़ीजा, देखा?' रिचर्ड ने चहककर कहा. ल़ीजा को भी लगा कि बुद्ध के चेहरे पर मुस्कान सहसा खिल उठी है - शान्त, स्निग्ध, तनिक व्यंग्यपूर्ण मुस्कान.'

'मुस्कान होंठों के कोनों में छिपी रहती है. पैंतालीस डिग्री के कोण पर से हल्की-सी रोशनी डालो तो जैसे मुस्कान फूटकर बाहर आ जाती है. अब इसी का कोण मोड़ दूं तो मुस्कान बहुत-कुछ ओझल हो जाएगी...'

ल़ीजा ने मुड़कर रिचर्ड के चेहरे की ओर देखा. ये आदमी लोग कितने अजीब होते हैं, कितना रस ले-लेकर पत्थरों और खंडहरों के बारे में बातें करते रहते हैं. कोई स्त्री इन बातों के बारे में जानते हुए भी इतना चहकेगी नहीं, इतनी डींग नहीं मारेगी. उसने रिचर्ड का बाज़ू दबा दिया और उसके कन्धे पर अपना गाल रख दिया.

'बुद्ध के बुतों की यही सबसे बड़ी ख़ूबी है. एक हल्की-सी मुस्कान बुद्ध के होंठों पर खेलती रहती है. रिचर्ड ने कहा और झुककर ल़ीजा के बालों को चूम लिया.'

इसी तरह से नत्थू और उसकी पत्नी के संवाद, गुरुद्वारे में सिख्खों के बीच होने वाले संवाद, आँकड़ा बाबू और एक सरदार के संवाद- दीर्घ संवाद योजना के उत्कृष्ट उदाहरण हैं.

इन संवादों के माध्यम से पात्रों की मनोदशा, सामाजिक पृष्ठभूमि और सांस्कृतिक भिन्नताओं को उभारा गया है. रिचर्ड और ल़ीजा के संवाद उनके आपसी संबंधों और विचारधाराओं को स्पष्ट करते हैं, जो उनकी मानसिकता को दर्शाते हैं. नत्थू और उसकी पत्नी के संवादों में दांपत्य जीवन की उलझनें, संघर्ष और सामान्य जनजीवन की वास्तविकता झलकती है. गुरुद्वारे में सिक्खों के संवाद और आँकड़ा बाबू व सरदार के बीच का संवाद विभाजन के समय के सामाजिक-राजनीतिक माहौल को दर्शाते हैं. इनमें विस्थापन, पीड़ा, प्रशासनिक उदासीनता और सांप्रदायिक तनाव को दर्शाने के लिए संवादों को विस्तार दिया गया है. इस विस्तार के बावजूद संवाद अत्यधिक रोचक और सजीव बने रहते हैं, जिससे कथा में प्रवाह और प्रभाव बना रहता है.

इस प्रकार, साहनी जी की दीर्घ संवाद योजना कथानक को गति देने, पात्रों के मनोभाव

व्यक्त करने और ऐतिहासिक-सामाजिक संदर्भों को उभारने का सशक्त माध्यम बनती है.

11.4 'तमस' उपन्यास के कथोपकथन और संवाद के गुण

भीष्म साहनी का प्रसिद्ध उपन्यास 'तमस' विभाजन के दौरान हिंदू-मुस्लिम दंगों, सांप्रदायिक वैमनस्य, राजनीतिक षड्यंत्रों और मानवीय त्रासदी को अत्यंत सजीव रूप में प्रस्तुत करता है. इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता इसके संवाद हैं, जो कथानक को गति प्रदान करते हैं और पात्रों के स्वभाव, मनोविज्ञान तथा सामाजिक परिवेश को प्रभावशाली ढंग से उभारते हैं.

इस उपन्यास के संवादों में पात्रानुकूलता, सरलता, स्वाभाविकता, संक्षिप्तता, मार्मिकता, व्यंग्यात्मकता और यथार्थपरकता जैसे सभी आवश्यक गुण मौजूद हैं. ये संवाद पाठकों को न केवल घटनाओं से जोड़ते हैं, बल्कि उन्हें विभाजन की विभीषिका का सजीव अनुभव भी कराते हैं.

11.4.1 पात्रानुकूलता

संवादों में पात्रानुकूलता का अर्थ है कि पात्रों के वार्तालाप उनकी सामाजिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरूप होने चाहिए. 'तमस' उपन्यास में संवाद पात्रों के स्तर और परिस्थितियों के अनुसार ढले हुए हैं. उदाहरण के लिए नत्थू जैसे निम्नवर्गीय पात्रों के संवाद उसकी अशिक्षा, लाचारी और समाज में उसकी स्थिति को दर्शाते हैं.

'हमारे पास तो अपने खाने तक को नहीं है, सरकार.'

वहीं शंकरलाल और बख्शीजी के संवादों में राजनीतिक चेतना और व्यंग्यात्मकता झलकती है –

'आप तो मालिक हैं बख्शीजी, आपको मंजूरी की क्या जरूरत है?'

इस तरह, उपन्यास के संवाद पात्रों की मनोदशा और सामाजिक पृष्ठभूमि को सटीक ढंग से व्यक्त करते हैं.

11.4.2 सरलता

संवादों की भाषा सरल, सुबोध और प्रवाहमयी होनी चाहिए ताकि पाठक कथानक को सहजता से समझ सके. 'तमस' में संवाद अत्यंत सहज और सरल भाषा में लिखे गए हैं, जिससे पाठक कथा के साथ सहजता से प्रवाहित होता जाता है. उदाहरण के लिए, एक साधारण वार्तालाप को देखें –

'आगे मत जाओ, एक आदमी मरा पड़ा है.'

'कहाँ पर?'

'चौक के पार, ढलान पर.'

यह संवाद अत्यंत संक्षिप्त और स्पष्ट है. भाषा में अनावश्यक क्लिष्टता नहीं है, जिससे कथा की गति बनी रहती है.

11.4.3 स्वाभाविकता

संवादों की स्वाभाविकता उन्हें प्रभावशाली बनाती है. अगर संवाद कृत्रिम या बनावटी लगने लगें, तो वे पाठक को कथा से जोड़ने में असमर्थ हो जाते हैं. 'तमस' में सभी संवाद यथार्थ के करीब हैं और पात्रों के स्वाभाव के अनुरूप हैं. उदाहरण के लिए, जब हरनामसिंह और बन्तो भागने की कोशिश कर रहे होते हैं, तब राजो से उनकी बातचीत अत्यंत स्वाभाविक प्रतीत होती है –

'जाओ हुण, रब्ब राखा. सीधे किनारे-किनारे चले जाओ. आगे जो तुम्हारी किस्मत।'

इन संवादों में नाटकीयता नहीं है, बल्कि स्वाभाविकता है, जिससे पात्रों की मनोदशा

स्पष्ट झलकती है.

11.4.4 मार्मिकता

संवादों में मार्मिकता आवश्यक होती है, जिससे पाठक कथा से भावनात्मक रूप से जुड़ सके. 'तमस' में कई संवाद इतने मार्मिक हैं कि वे पाठकों को भीतर तक झकझोर देते हैं. हरनामसिंह, बन्तो और राजो के संवाद इसकी बेहतरीन मिसाल हैं –

'मैं क्या जानूं बहन, मैं नहीं जानती मैं तुम्हारी जान बचा रही हूँ या तुम्हें मौत के मुँह में झोंक रही हूँ. चारों तरफ आग लगी है.'

यह संवाद पाठक को विभाजन की त्रासदी और मानवीय असहायता का गहरा अनुभव कराता है.

11.4.5 व्यंग्यात्मकता

व्यंग्य एक महत्वपूर्ण गुण है, जो संवादों को रोचक और प्रभावी बनाता है. 'तमस' में कई संवाद व्यंग्यात्मक हैं, जो तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर कटाक्ष करते हैं. उदाहरण के लिए, जब एक पात्र गांधीजी द्वारा ब्राह्मणों से झाड़ू उठवाने की बात करता है, तो उसकी व्यंग्यात्मकता स्पष्ट दिखती है –

'ब्राह्मणों से भी झाड़ू उठवाते हो गाँधी महात्मा, जो करो थोड़ा है जी.'

इसी तरह, एक अन्य प्रसंग में –

'कभी ज़बान भी बन्द किया कर, शंकर. मेहताजी तेरे से तिगुनी उम्र के हैं. बड़ों को बड़ा समझते हैं.'

इन संवादों में व्यंग्य के माध्यम से पात्रों के स्वभाव और तत्कालीन सामाजिक स्थितियों को उभारा गया है.

11.4.6 यथार्थपरकता

संवादों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी यथार्थपरकता होती है. 'तमस' के संवाद समाज की वास्तविकता को पूरी ईमानदारी से प्रस्तुत करते हैं. उदाहरण के लिए, नत्थू के संवादों में उसकी असहायता और दलित जीवन का यथार्थ झलकता है –

'मैं नाली साफ नहीं करूँगा. पहले बोल दूँ.'

'क्यों? तुम्हें सुरख़ाब के पर लगे हैं?'

इस तरह के संवाद विभाजन कालीन समाज और जातीय विभाजन की हकीकत को सामने लाते हैं.

अस्तु कह सकते हैं – 'तमस' उपन्यास के संवाद अत्यंत प्रभावशाली, सजीव और कथा को गति देने वाले हैं. इनमें पात्रानुकूलता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जिससे संवाद पात्रों की सामाजिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरुप प्रतीत होते हैं. सरलता और स्वाभाविकता के कारण ये सहज और स्पष्ट होते हैं तथा कथा में बनावटीपन नहीं आने देते. मार्मिकता इन संवादों को भावनात्मक गहराई प्रदान करती है, जिससे पाठक विभाजन की त्रासदी को आत्मसात कर पाता है. व्यंग्यात्मकता के माध्यम से सामाजिक विडंबनाओं पर तीखा कटाक्ष किया गया है, जबकि यथार्थपरकता संवादों को वास्तविकता के करीब ले जाती है. इन सभी गुणों के कारण 'तमस' के संवाद कथा को जीवंत बनाते हैं और पाठकों को विभाजन काल की भयावहता का प्रत्यक्ष अनुभव कराते हैं, जिससे यह उपन्यास संवादों की दृष्टि से निस्संदेह एक सफल उपन्यास बन जाता है.

11.5 'तमस' उपन्यास के कथोपकथन और संवाद की विशिष्टता

'तमस' उपन्यास के संवाद इसकी कथा की आत्मा हैं, जो इसे जीवंत और प्रभावशाली बनाते हैं. भीष्म साहनी ने विभाजन की त्रासदी को अत्यंत यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है, जिसमें संवादों की प्रमुख भूमिका रही है. संवादों के माध्यम से पात्रों के मनोभाव, समाज की जटिलताओं और राजनीतिक परिस्थितियों को स्वाभाविक रूप से उजागर किया गया है. यह संवाद पात्रों के व्यक्तित्व, उनकी सामाजिक स्थिति और उनकी मानसिकता के अनुरूप हैं, जिससे वे अत्यंत विश्वसनीय प्रतीत होते हैं. नत्थू, हरनाम सिंह, बन्तो, शंकर, बख्शीजी, मेहताजी, रिचर्ड, लीज़ा, कश्मीरीलाल जैसे पात्रों के संवाद उनकी पृष्ठभूमि के अनुसार ढले हुए हैं, जिससे उपन्यास का यथार्थ और भी प्रभावी बन जाता है.

इस उपन्यास के संवाद सहज और सुबोध हैं, जिससे पाठक कथ्य को शीघ्र समझ पाता है. भाषा सरल होने के कारण संवादों में प्रवाह बना रहता है और कथा की रोचकता बनी रहती है. उदाहरणस्वरूप, "आगे मत जाओ, एक आदमी मरा पड़ा है." जैसे छोटे वाक्य पाठक को तत्काल घटनास्थल पर ले जाते हैं और माहौल की गंभीरता को दर्शाते हैं. इसी प्रकार, 'कहाँ पर?' "चौक के पार, ढलान पर." जैसे प्रश्नोत्तर शैली के संवाद कथा में सजीवता लाते हैं और पाठक को घटनाओं से जोड़े रखते हैं.

इन संवादों की एक विशेषता उनकी स्वाभाविकता है. पात्रों के वार्तालाप इतने सहज और वास्तविक हैं कि वे बनावटी प्रतीत नहीं होते. यह स्वाभाविकता ही उपन्यास को जीवंत बनाती है और विभाजन की त्रासदी को और अधिक प्रामाणिक बना देती है. संवादों की यह स्वाभाविकता पात्रों के बोलने के अंदाज, उनके स्थानीय लहजे और उनके सामाजिक स्तर के अनुसार प्रस्तुत की गई है. यह विशेषता उपन्यास को कृत्रिमता से मुक्त रखती है और पाठक को ऐसा प्रतीत होता है जैसे वह स्वयं घटनाओं का साक्षी हो.

इस उपन्यास के संवादों में गहरी मार्मिकता विद्यमान है. कुछ संवाद इतने संवेदनशील हैं कि वे पाठक की भावनाओं को गहरे स्तर तक झकझोर देते हैं. हरनाम सिंह, बन्तो और राजो के प्रसंग में जब राजो अपने परिचितों को बचाने के लिए उन्हें रात में जंगल की ओर भेजती है, तब उसके विदाई संवाद अत्यंत मार्मिक बन पड़ते हैं - 'जाओ हुण, रब्ब राखा। सीधे किनारे-किनारे चले जाओ. आगे जो तुम्हारी किस्मत.' यह संवाद विभाजन के समय लोगों की असहायता, दर्द और अनिश्चित भविष्य को व्यक्त करता है. इसी प्रकार, जब बन्तो कहती है, "तुमने हम पर बड़ा एहसान किया है, राजो बहन, हम इसे कभी नहीं भूल सकते," तो यह संवाद मानवीय संबंधों की गहराई को प्रकट करता है.

इस उपन्यास में व्यंग्यात्मक संवाद भी अपनी विशिष्ट भूमिका निभाते हैं. व्यंग्य के माध्यम से समाज की विडंबनाओं और राजनीतिक छल-कपट को उजागर किया गया है. शंकर, जरनैल, कश्मीरीलाल, रिचर्ड जैसे पात्रों के संवादों में तीखा व्यंग्य मिलता है, जो तत्कालीन परिस्थितियों की जटिलताओं को दर्शाते हैं. उदाहरण के लिए, जब बख्शीजी को लेकर शंकर कहता है, "आप तो मालिक हैं बख्शीजी, आपको मंजूरी की क्या जरूरत है? आपके हुक्म के बिना तो चिड़ी नहीं फड़क सकती," तो यह संवाद सत्ता और प्रभावशाली लोगों की मनमानी पर व्यंग्य करता है. इसी प्रकार, जब शंकर कहता है, "मैंने यह तो नहीं पूछा कि सेठी से पचास हजार का बीमा मिला है या नहीं मिला?" तो यह संवाद कांग्रेस नेताओं और उनके स्वार्थी रवैये पर कटाक्ष करता है.

यथार्थपरकता इस उपन्यास के संवादों की एक और प्रमुख विशेषता है. संवादों के माध्यम से तत्कालीन समाज की वास्तविकता को बारीकी से उकेरा गया है. विभाजन के समय के

भय, असुरक्षा, धार्मिक उन्माद और मानवीय संवेदनाओं को संवादों के माध्यम से अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है. उदाहरणस्वरुप, जब नत्थू यह कहता है, “मैं नाली साफ नहीं करूँगा. पहले बोल दूँ,” तो यह संवाद जातिगत भेदभाव की ओर संकेत करता है. इसी प्रकार, एक अन्य संवाद में जब कहा जाता है, ‘गांधीजी अपना शौचालय साफ कर सकते हैं, तुम नाली साफ नहीं कर सकते?’ तो यह संवाद समाज में व्याप्त पाखंड और भेदभाव पर गहरा प्रहार करता है.

‘तमस’ उपन्यास के संवादों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे कथा को केवल आगे नहीं बढ़ाते, बल्कि कथा को जीवंत बनाते हैं और पाठक को मानसिक रूप से उस वातावरण का हिस्सा बना देते हैं. ये संवाद न केवल विभाजन की त्रासदी को मूर्त रूप में प्रस्तुत करते हैं, बल्कि उन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विडंबनाओं को भी उजागर करते हैं जो इस त्रासदी का कारण बनीं. संवादों के माध्यम से ही उपन्यास के पात्रों की मनोदशा, उनकी भावनाएँ और उनके संघर्ष स्पष्ट होते हैं.

इस प्रकार, ‘तमस’ के संवाद पात्रों के अनुरूप, सरल, स्वाभाविक, मार्मिक, व्यंग्यपूर्ण और यथार्थपरक हैं, जो इसे संवादों की दृष्टि से एक उत्कृष्ट और सफल कृति बनाते हैं.

11.6 सारबिंदु

- ‘तमस’ उपन्यास के संवाद यथार्थपरक हैं, जो विभाजन की त्रासदी और सामाजिक तनाव को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं.
- संवाद पात्रों की सामाजिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुरुप हैं, जिससे पात्रानुकूलता स्पष्ट होती है.
- भाषा सरल और सहज है, जिससे पाठक बिना किसी कठिनाई के कथा से जुड़ पाता है.
- संवाद स्वाभाविक हैं और वास्तविक जीवन के वार्तालाप जैसे प्रतीत होते हैं, जिससे कथा में प्रामाणिकता बनी रहती है.
- संवादों में गहरी मार्मिकता है, जो विभाजन के दौर की पीड़ा और मानवीय संवेदनाओं को सशक्त रूप से उभारते हैं.
- समाज की कुरीतियों, राजनीतिक चालबाजियों और सांप्रदायिक तनावों पर संवादों के माध्यम से व्यंग्य किया गया है.
- संवाद अनावश्यक विस्तार से बचते हैं और संक्षिप्त रहते हुए भी गहरे अर्थ प्रकट करते हैं.
- पात्रों की मनोदशा, मानसिक द्वंद्व और संवेदनशीलता को व्यक्त करने में संवाद प्रभावी भूमिका निभाते हैं.
- हिंदू-मुस्लिम दंगों और उस समय की भयावहता को उभारने के लिए संवादों का कुशलता से प्रयोग किया गया है.
- तत्कालीन राजनीतिक माहौल और सामाजिक जटिलताओं को स्पष्ट करने में संवादों की महत्वपूर्ण भूमिका है.
- संवादों में स्थानीयता का प्रभाव दिखता है, जिससे पात्रों की वास्तविकता और उनकी भौगोलिक पृष्ठभूमि प्रकट होती है.
- संवाद कथा को गतिशील और रोचक बनाते हैं, जिससे पाठक की रुचि बनी रहती है.
- संवादों में प्रेम, भय, क्रोध, करुणा, निराशा जैसी विभिन्न भावनाओं को प्रभावी रूप से व्यक्त किया गया है.

- विभिन्न पात्रों के संवाद उनकी मानसिकता, विचारधारा और व्यक्तित्व को स्पष्ट रूप से उभारते हैं.
- संवाद केवल वार्तालाप नहीं हैं, बल्कि वे कथानक को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं और कथा की तार्किक दिशा को निर्धारित करते हैं.

11.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **बोध प्रश्न**
- **विस्तृत उत्तरीय प्रश्न.**

(1) संवाद किसी भी साहित्यिक रचना की आत्मा होते हैं. 'तमस' उपन्यास के संवाद किस प्रकार कथा के यथार्थ को जीवंत बनाते हैं और पात्रों की मानसिकता को व्यक्त करने में सहायक सिद्ध होते हैं? विश्लेषण करें.

(2) 'तमस' उपन्यास के संवाद पात्रानुकूलता, सरलता, स्वाभाविकता और यथार्थपरकता के दृष्टिकोण से अत्यंत प्रभावी माने जाते हैं. उपन्यास के संदर्भ में इन गुणों का विस्तारपूर्वक विश्लेषण करें.

(3) 'तमस' में विभाजन के दौर की भयावहता, सांप्रदायिक तनाव और राजनीतिक षड्यंत्रों को संवादों के माध्यम से सशक्त रूप में प्रस्तुत किया गया है. उपयुक्त उदाहरणों सहित संवादों की इस विशेषता पर प्रकाश डालें.

(4) 'तमस' के संवाद केवल कथा को आगे बढ़ाने का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक विडंबनाओं पर व्यंग्य करने और पाठक को गहरे विचार मंथन के लिए प्रेरित करने का कार्य भी करते हैं. इस कथन की पुष्टि उपन्यास के संदर्भ में करें.

(5) 'तमस' उपन्यास में संवादों की संक्षिप्तता और मार्मिकता कथा को प्रभावी बनाती है. संवादों की इस विशेषता का विस्तारपूर्वक वर्णन करें एवं उदाहरण देकर इसे स्पष्ट करें.

- **लघु उत्तरीय प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास के संवादों की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

(2) संवादों की पात्रानुकूलता से क्या तात्पर्य है? 'तमस' में इसका उदाहरण दें.

(3) 'तमस' में संवादों की भाषा कैसी है?

(4) 'तमस' के संवाद कथा को किस प्रकार आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं?

(5) मार्मिक संवादों का उपन्यास में क्या प्रभाव पड़ता है?

(6) उपन्यास में स्वाभाविक संवादों का क्या महत्व है?

(7) 'तमस' में व्यंग्यात्मक संवादों की क्या भूमिका है?

(8) यथार्थपरक संवादों से उपन्यास में किस प्रकार सजीवता आती है?

(9) संवादों की संक्षिप्तता कथा पर किस प्रकार प्रभाव डालती है?

(10) 'तमस' के संवाद विभाजनकालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों को उजागर करने में किस प्रकार सहायक हैं?

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास के संवादों की भाषा कैसी है?

(अ) जटिल और कठिन (ब) सरल और सुबोध

(स) क्लिष्ट और आलंकारिक (द) केवल संस्कृतनिष्ठ

(2) संवादों में पात्रानुकूलता का क्या अर्थ है?

(अ) संवाद सभी पात्रों के लिए एक समान हों.

(ब) संवाद पात्रों के सामाजिक और मानसिक स्तर के अनुरूप हों.

(स) संवाद केवल मुख्य पात्रों के लिए हों.

(द) संवादों का किसी नियम से संबंध न हो.

(3) 'तमस' में संवादों की कौन-सी विशेषता नहीं पाई जाती?

(अ) स्वाभाविकता (ब) अतिनाटकीयता

(ब) संक्षिप्तता (द) मार्मिकता

(4) 'तमस' के संवादों का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(अ) पाठकों को मनोरंजन प्रदान करना.

(ब) विभाजन की त्रासदी को प्रभावी रूप में प्रस्तुत करना.

(स) केवल ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करना.

(द) उपन्यास को लंबा बनाना.

(5) 'तमस' उपन्यास के संवादों में व्यंग्यात्मकता किस प्रकार दृष्टिगोचर होती है?

(अ) केवल हास्य उत्पन्न करने के लिए.

(ब) सामाजिक विडंबनाओं को उजागर करने के लिए.

(स) संवादों को अधिक कठिन बनाने के लिए.

(द) उपन्यास को रहस्यमय बनाने के लिए.

(6) 'तमस' उपन्यास का कौन-सा पात्र व्यंग्यात्मक संवादों के लिए जाना जाता है?

(अ) नत्थू (ब) कश्मीरी लाल

(स) रिचर्ड (द) हरनाम सिंह

(7) 'तमस' के संवादों में यथार्थपरकता क्यों आवश्यक है?

(अ) कथा को काल्पनिक बनाने के लिए.

(ब) विभाजनकालीन घटनाओं को वास्तविकता के निकट रखने के लिए.

(स) भाषा को क्लिष्ट बनाने के लिए.

(द) पाठकों को भ्रमित करने के लिए.

(8) 'तमस' के संवाद कथा में किस प्रकार योगदान देते हैं?

(अ) कथा को रोचक और प्रवाहमय बनाते हैं.

(ब) कथा को जटिल और धीमा कर देते हैं.

(स) केवल पात्रों के संवाद भरते हैं.

(द) संवादों को कथा से अलग रखते हैं.

(9) 'तमस' में किस प्रकार के संवाद अधिकतर देखे जाते हैं?

(अ) लंबे और जटिल (ब) संक्षिप्त और प्रभावशाली

(स) तर्कपूर्ण और कठिन (द) मात्र साहित्यिक सौंदर्य बढ़ाने वाले

(10) 'तमस' उपन्यास के संवादों में मार्मिकता किस प्रकार व्यक्त होती है?

(अ) विभाजन की भयावहता को दर्शाकर (ब) केवल प्रेम प्रसंगों में

(स) हास्य उत्पन्न करने के लिए (द) आलंकारिक भाषा के प्रयोग से

उत्तर : 1. (ब) 2. (ब) 3. (ब) 4. (ब) 5. (ब) 6. (ब) 7. (ब) 8. (स) 9. (ब) 10. (स)

11.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- **तमस** : भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- **उपन्यास: कला और सिद्धांत** - (संपादकः विनोद तिवारी, अजय आनंद), अनन्य प्रकाशन, दिल्ली-110032, वर्षः 2016
- **कालजयी उपन्यास** - ममता देवी, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2018
- **समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष** - डॉ. अर्जुन चव्हाण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2012
- **समकालीन हिंदी उपन्यास: दशा और दिशा** - डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, वर्षः 2018
- **समकालीन हिंदी उपन्यास : समाज और संवेदना** - संपादकः डॉ. वी. के. अब्दुल जलील, सह-संपादकः डॉ. पी. रवि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2017
- **भारत-विभाजन और हिंदी उपन्यास** - हरियश, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली-110015, वर्षः 1986
- **भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना** - राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर (संपादक), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 1982
- **शैली और शैली विश्लेषण** - डॉ. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2014
- **हिंदी उपन्यास का विकास** - मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्षः 2014
- **हिंदी उपन्यास का इतिहास** - गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2016
- **हिंदी उपन्यास : सामाजिक चेतना** - डॉ. रजनीकांत एस. शाह, संस्कृति, अहमदाबाद-380001, वर्षः 1990
- **शोध पत्रिका** - आलोचन दृष्टि आजाद नगर, बिंदकी फतेहपुर उ. प्र.
- **वेबसाइट लिंक** : https://www.hindikunj.com/2024/11/tamas-upanyas-ki-samiksha-bhisham-sahni.html

इकाई 12 'तमस' : देशकाल और वातावरण

रूपरेखा

12.1 उद्देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 'तमस' का देशकाल और वातावरण

12.3.1 आंतरिक वातावरण

12.3.2 बाह्य वातावरण

12.4 'तमस' का देशकाल और वातावरण विशिष्टता

12.5 सारबिंदु

12.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

12.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

12.1 उद्देश्य

- भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' में प्रस्तुत ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को समझना, विशेष रुप से सन् 1947 ई. के विभाजन से पहले की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण करना.
- उपन्यास 'तमस' के देशकाल और वातावरण को समझना, जिससे विभाजन कालीन भारत की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों की स्पष्ट तस्वीर उभर सके.
- आंतरिक और बाहय वातावरण के प्रभाव को समझना, जिससे कथा का यथार्थवादी स्वरुप और अधिक प्रामाणिक बनता है.
- विभाजन के दौरान आम जनता के मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों का अध्ययन करना.
- सांप्रदायिकता के कारण उत्पन्न मानवीय त्रासदी और उसके दीर्घकालिक प्रभावों को समझना.
- तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त असुरक्षा, भय और संघर्ष की भावना का विश्लेषण करना.
- विभाजन की त्रासदी के कारण उत्पन्न विस्थापन और पलायन की पीड़ा का अध्ययन करना.
- समाज में व्याप्त धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक असमानताओं के प्रभावों को समझना.
- सांप्रदायिक दंगों की भयावहता और उनके पीछे की राजनीति को समझना.
- तमस के वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता को समझना और इससे सीख लेकर सांप्रदायिक सौहार्द्र की दिशा में सोच विकसित करना.

12.2 प्रस्तावना

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' भारतीय इतिहास की उन घटनाओं का सजीव चित्रण प्रस्तुत करता है, जो सन् 1947 ई. में भारत विभाजन के समय देखने को मिली थीं. यह उपन्यास केवल एक कहानी नहीं है, बल्कि उस समय के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवेश का वास्तविक चित्रण करता है. इसमें तत्कालीन समाज में व्याप्त सांप्रदायिक तनाव,

धार्मिक उन्माद और राजनीतिक षड्यंत्रों को इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि पाठक स्वयं को उन परिस्थितियों में जीता हुआ महसूस करता है. तमस का देशकाल और वातावरण इस उपन्यास की आत्मा है, जो इसकी घटनाओं को स्वाभाविकता प्रदान करता है.

यह उपन्यास विभाजन से ठीक पहले के पंजाब की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जहाँ हिंदू, मुस्लिम और सिख समुदाय मिल-जुलकर रहते थे, लेकिन राजनीतिक स्वार्थों और धार्मिक कट्टरता के कारण धीरे-धीरे एक-दूसरे के प्रति अविश्वास और नफरत पैदा हो गई. लेखक ने उस समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों को अत्यंत सूक्ष्मता से दर्शाया है. जिस प्रकार नत्थू से एक सुअर मरवाया जाता है और उसे मस्जिद के सामने फेंक दिया जाता है, यह स्पष्ट करता है कि सांप्रदायिक दंगे अचानक नहीं भड़कते, बल्कि इन्हें योजनाबद्ध तरीके से भड़काया जाता है. इस घटना के बाद पूरे शहर में सहिंसा भड़क उठती है और हिंदू-मुसलमान एक-दूसरे के खून के प्यासे बन जाते हैं. इस पृष्ठभूमि के माध्यम से भीष्म साहनी यह दिखाने में सफल होते हैं कि किस प्रकार आम जनता राजनीतिक षड्यंत्रों का शिकार बनती है.

उपन्यास के वातावरण को दो मुख्य रूपों में देखा जा सकता है – आंतरिक वातावरण और बाहय वातावरण. आंतरिक वातावरण उन परिस्थितियों और घटनाओं से बनता है, जो पात्रों के मनोभावों को प्रभावित करती हैं. उपन्यास में हर पात्र भय, असुरक्षा और हिंसा से गुजरता है. नत्थू का अपने किए पर पछतावा, हरनाम सिंह और बन्तो का अपने परिवार को बचाने की चिंता, जसवीर कौर का आत्म-सम्मान बचाने की संघर्षशील भावना, सभी पात्रों की मानसिक स्थिति को प्रभावी ढंग से उकेरा गया है. जब हरनाम सिंह और बन्तो अपने जरूरी सामान समेटने में असमर्थता महसूस करते हैं और सोच नहीं पाते कि क्या लें और क्या छोड़ें, तब यह केवल उनके व्यक्तिगत द्वंद्व का चित्रण नहीं होता, बल्कि यह उस समय लाखों विस्थापित लोगों की स्थिति का प्रतिबिंब है.

बाहय वातावरण के अंतर्गत प्रकृति, समाज और राजनीतिक घटनाओं का चित्रण आता है. लेखक ने विभाजन के समय के एक छोटे शहर का ऐसा चित्र खींचा है, जिससे उस कालखंड की स्पष्ट झलक मिलती है. सुबह की हलचल, सड़कों पर चहल-पहल, नगर के बाजारों की रौनक और फिर धीरे-धीरे शहर में बढ़ता भय, आगजनी और रक्तपात यह सब बहुत ही स्वाभाविक तरीके से प्रस्तुत किया गया है. प्रकृति-चित्रण में भी लेखक की कुशलता नजर आती है, जब वे दूर तक फैली घाटी, धुंधलके में खोए पहाड़ों और चीलों के उड़ने का वर्णन करते हैं. यह सब उपन्यास को और अधिक सजीव और प्रभावशाली बनाता है.

भीष्म साहनी ने जिस दौर का चित्रण किया है, उसमें भाषा और संवादों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है. उपन्यास में पात्रों की भाषा, उनके संवाद और उनके लहजे को पूरी तरह स्वाभाविक रखा गया है. चाहे वह बन्तो का अपने गहनों को समेटने का द्वंद्व हो, या फिर नत्थू की अपने कार्य पर पश्चाताप भरी सोच, हर दृश्य पाठक के मन को झकझोरता है. साहनी का लेखन यथार्थवादी होते हुए भी संवेदनशीलता से भरा है, जो उपन्यास को अत्यधिक प्रभावशाली बनाता है.

तमस केवल विभाजन की घटनाओं का दस्तावेज नहीं, बल्कि यह एक चेतावनी भी है कि सांप्रदायिकता की जड़ें कितनी गहरी हो सकती हैं और कैसे यह समाज को विभाजित कर सकती है. उपन्यास का वातावरण इस बात को स्पष्ट करता है कि कैसे सामान्य और गरीब वर्ग के लोग इन परिस्थितियों के सबसे बड़े शिकार होते हैं, जबकि बड़े नेता और संपन्न वर्ग सुरक्षित रहते हैं. जो वास्तव में समाज में अमन-चैन बनाए रखना चाहते हैं, उन्हें ही गद्दार करार दिया जाता है, और जो सहसा भड़काते हैं, वे शांति के संदेशवाहक बन जाते हैं.

यह उपन्यास हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या विभाजन के घाव भर चुके हैं, या फिर समाज अब भी उन्हीं परिस्थितियों में जी रहा है. देशकाल और वातावरण के प्रभावी चित्रण के कारण यह उपन्यास केवल ऐतिहासिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि वर्तमान समय में भी प्रासंगिक बना हुआ है. भीष्म साहनी का यह उपन्यास हमें याद दिलाता है कि इतिहास की गलतियों से सीखना ही बेहतर भविष्य की कुंजी है.

12.3 'तमस' का देशकाल और वातावरण

उपन्यास की सफलता और प्रभावशीलता के लिए उसका देशकाल और वातावरण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है. जिस समय की घटनाओं पर कथा आधारित होती है, उस काल विशेष की परिस्थितियाँ, परंपराएँ, रहन-सहन और भाषा का सजीव चित्रण उपन्यास को यथार्थपरक बनाता है. उपन्यासकार को इन सभी तत्वों की गहन जानकारी होनी आवश्यक होती है, जिससे वह अपने पात्रों और घटनाओं को प्रामाणिकता प्रदान कर सके.

भीष्म साहनी का तमस केवल एक कथा नहीं, बल्कि एक ऐतिहासिक साक्ष्य भी है, जो भारत विभाजन की त्रासदी को उजागर करता है. यह उपन्यास पंजाब के एक अँचल विशेष में घटित उन भयावह परिस्थितियों को प्रस्तुत करता है, जब सांप्रदायिकता की आग में हजारों निर्दोष लोगों की जान चली गई थी. 'तमस' के देशकाल और वातावरण का चित्रण इतना जीवंत और स्वाभाविक है कि पाठक स्वयं को उन्हीं परिस्थितियों में पाता है. साहनी जी ने पात्रों के अनुरुप भाषा, बोली और संवादों का प्रयोग किया है, जिससे उपन्यास की वास्तविकता और गहराई बढ़ जाती है.

उपन्यास में आंतरिक और बाहय वातावरण का कुशल चित्रण किया गया है. आंतरिक वातावरण में पात्रों की मनोवैज्ञानिक स्थिति और उनके संघर्षों को दर्शाया गया है, जबकि बाहय वातावरण में सामाजिक, राजनीतिक और प्राकृतिक परिवेश का चित्रण किया गया है. सांप्रदायिक दंगों से ग्रस्त लोगों की मानसिक स्थिति, सहसा का भय और विस्थापन की पीड़ा को लेखक ने अत्यंत मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है.

उपयुक्त देशकाल और वातावरण का चित्रण केवल घटनाओं की पृष्ठभूमि ही नहीं तैयार करता, बल्कि पात्रों के मानसिक और भावनात्मक उतार-चढ़ाव को भी उभारता है. जिस समय की घटनाएँ उपन्यास में वर्णित होती हैं, उस समय की परिस्थितियाँ, परंपराएँ, लोगों का रहन-सहन और भाषा का सजीव चित्रण कथा को विश्वसनीय बनाता है. भीष्म साहनी का तमस इसी विशेषता के कारण विभाजनकालीन भारत का सजीव दस्तावेज बन गया है. इसमें लेखक ने स्थान और पात्रों के अनुरुप वातावरण की रचना की है, जिससे उपन्यास का देशकाल और वातावरण चित्रण पूर्णतः स्वाभाविक बन पड़ा है.

तमस में वातावरण-चित्रण दो स्तरों पर हुआ है – आंतरिक और बाह्य.

12.3.1 आंतरिक वातावरण

उपन्यास का आंतरिक वातावरण वह मानसिक, भावनात्मक और विचारात्मक संरचना है, जो कथा के पात्रों, उनकी मनःस्थितियों, संबंधों और संघर्षों के माध्यम से विकसित होता है. यह पात्रों की भावनाओं, मानसिक द्वंद्व, आकांक्षाओं और उनके भीतर चल रहे विचारों को उजागर करता है. आंतरिक वातावरण में प्रेम, घृणा, संघर्ष, आत्ममंथन, सामाजिक मूल्यों से टकराव, नैतिक दुविधाएँ और भावनात्मक उतार-चढ़ाव शामिल होते हैं.

आंतरिक वातावरण उपन्यास की गहराई को बढ़ाता है और पाठकों को पात्रों के मनोविज्ञान से जोड़ता है. यह केवल घटनाओं का क्रम नहीं होता, बल्कि उनके पीछे की संवेदनाओं और मूल्यों को दर्शाता है. कथा के उतार-चढ़ाव, पात्रों के विकास और पाठकों की भावनात्मक

भागीदारी में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है. उपन्यास का संदेश और विषयवस्तु प्रभावशाली बनाने में आंतरिक वातावरण सहायक होता है, जिससे पाठक कथा से गहरे स्तर पर जुड़ पाते हैं.

साहित्य में वातावरण-चित्रण का विशेष महत्व होता है, क्योंकि यह पाठक को उपन्यास की घटनाओं और पात्रों के मनोभावों से जोड़ता है. वातावरण का जीवंत चित्रण कथा को प्रभावी बनाता है और पाठक को उस समय और स्थान में उपस्थित होने का अनुभव कराता है. भीष्म साहनी का साहित्यिक योगदान हिन्दी साहित्य में अत्यंत मूल्यवान माना जाता है. उनके उपन्यासों में समाज की ज्वलंत समस्याओं, ऐतिहासिक घटनाओं और मानवीय संवेदनाओं को प्रमुखता से चित्रित किया गया है.

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' भारत विभाजन के समय के साम्प्रदायिक तनाव और उसकी भयावहता को व्यक्त करता है. इस उपन्यास में भीष्म साहनी ने वातावरणचित्रण की अद्भुत क्षमता का परिचय दिया है. उन्होंने न केवल बाहय वातावरण बल्कि आन्तरिक वातावरण को भी प्रभावी रूप से उकेरा है. इस उपन्यास में कई ऐसे प्रसंग हैं, जहाँ पाठक को वातावरण की जीवंतता का अनुभव होता है और वह घटनाओं को अपनी आँखों के सामने घटित होते हुए महसूस करता है. आन्तरिक वातावरण केवल घटनाओं को ही नहीं, बल्कि पात्रों की मन:स्थिति, उनके मानसिक संघर्ष और उनके भीतर उठने वाली उथल-पुथल को भी प्रकट करता है.

आन्तरिक वातावरण का चित्रण किसी भी उपन्यास की प्रभावशीलता को बढ़ाने का कार्य करता है. यह उपन्यास के कथानक को गति प्रदान करता है और पाठक को पात्रों के मानसिक संघर्ष से जोड़ता है. 'तमस' में भीष्म साहनी ने साम्प्रदायिक तनाव के माहौल को अत्यंत सूक्ष्मता और संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया है. उपन्यास के आरंभ में ही उन्होंने आन्तरिक वातावरण की सृष्टि बड़े ही सुन्दर ढंग से की है:

"आले में रखे दीये ने फिर से झपकी ली. ऊपर दीवारों में, छत के पास से दो ईंटें निकली हुई थीं. जब-जब वहाँ से हवा का झोंका आता, दीये की बत्ती झपक जाती और कोठरी की दीवारों पर साये से डोल जाते. थोड़ी देर बाद बत्ती अपने-आप सीधी हो जाती और उसमें उठनेवाली धुएँ की लकीर आले को चाटती हुई फिर से ऊपर की ओर सीधे रुक जाने लगती. नत्थू का साँस धोंकनी की तरह चल रहा था और उसे लगा जैसे उसकी साँस के ही कारण दीये की बत्ती झपकने लगी है."

इस उद्धरण में वातावरण की सजीवता पाठक को तुरंत अपनी ओर खींच लेती है. दृश्य का चित्रण इस प्रकार किया गया है कि पाठक को लगता है कि वह स्वयं उस स्थान पर उपस्थित है. दीये की लौ, उसकी झपकी, हवा के झोंके से उसका डोलना और कोठरी की दीवारों पर पड़ने वाले साए- यह सब मिलकर न केवल दृश्य को सजीव बनाते हैं, बल्कि उस समय की अनिश्तितता, भय और बेचैनी को भी प्रकट करते हैं.

साम्प्रदायिक तनाव से ग्रस्त वातावरण और उस समय के सामान्य लोगों की मानसिक दशा का भीष्म साहनी ने बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है. जब दंगे शुरू होते हैं, तो सामान्य नागरिकों के मन में असुरक्षा, भय और अनिश्चितता का वातावरण छा जाता है. उपन्यास के पात्र हरनामसिंह, बन्तो, उनका बेटा इकबालसिंह और बेटी जसवीर कौर- ये चारों इस साम्प्रदायिक तनाव के शिकार बनते हैं. उनकी मानसिक स्थिति और उनकी उलझनें इस प्रकार वर्णित हैं:

'हरनामसिंह दूकान के चबूतरे पर लोट गया, टाट के नीचे से कमाई के पैसे निकाले, फिर अन्दर आया, बक्से में से पूँजी के पैसे निकाले, फिर नोटों को अलग से छाँट लिया और रेचकारी वहीं छोड़ दी. नोटों का पुलन्दा अन्दर की बण्डी के जेब में रख दिया. फिर

कोठरी के अन्दर दीवार पर टंगी बन्दूक ली और उसे कन्धे से लटका लिया. उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या माल ले जाए और क्या नहीं ले जाए. दूकान के रजिस्टर ले लूं? पर उन्हें ढूँढ़ने-निकालने का वक्त नहीं था. बन्तो की भी यही हालत थी. अपने जेवर उठा लूँ? खाने के लिए कुछ थोड़ा-बहुत बना लूं. दो रोटियां सेंक लूं? रास्ते में कहाँ कुछ खाने को मिलेगा? अपने कपड़े बदल लूं? बाहर जाओ तो कपड़े उजले पहनकर जाना चाहिए. पर बन्तो की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था, क्या उठाये क्या छोड़ दे.'

यह अंश बताता है कि साम्प्रदायिक दंगों का प्रभाव केवल बाहरी स्तर पर नहीं होता, बल्कि वह व्यक्ति के आंतरिक मानसिक संतुलन को भी हिला देता है. हरनामसिंह और बन्तो दोनों किंकर्तव्यविमूढ़ हैं कि वे क्या करें और क्या न करें. इस परिस्थिति में उनके मन में चल रहे संघर्ष और दुविधा का बहुत ही स्वाभाविक वर्णन किया गया है. यह मानसिक उलझन और विचारों का संघर्ष ही आन्तरिक वातावरण की सृष्टि करता है. यह आन्तरिक तनाव केवल पात्रों तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि पाठक भी इसे महसूस करता है और स्वयं को उसी स्थिति में पाता है.

'तमस' उपन्यास केवल एक कहानी नहीं है, बल्कि यह एक ऐतिहासिक साक्ष्य भी है, जो भारत विभाजन के समय की त्रासदी और मानवीय संवेदनाओं को दर्शाता है. भीष्म साहनी ने आन्तरिक वातावरण का उपयोग केवल बाहरी घटनाओं को चित्रित करने के लिए नहीं किया, बल्कि पात्रों की मानसिक दशा को व्यक्त करने के लिए भी किया है. उपन्यास में चित्रित आन्तरिक वातावरण न केवल पाठकों को गहराई से प्रभावित करता है, बल्कि उन्हें उस समय और परिस्थिति के बारे में सोचने पर भी मजबूर करता है.

साहित्य में वातावरणचित्रण की महत्ता को 'तमस' उपन्यास में अत्यंत प्रभावी रूप से देखा जा सकता है. भीष्म साहनी ने इसे इस तरह से प्रस्तुत किया है कि पाठक घटनाओं से केवल अवगत नहीं होता, बल्कि उन्हें महसूस भी करता है. पात्रों की मानसिक स्थिति और उनके भीतर उठने वाले विचारों के संघर्ष को जिस संवेदनशीलता और यथार्थपरकता से प्रस्तुत किया गया है, वह 'तमस' को हिन्दी साहित्य का एक अमूल्य रत्न बनाता है. इस उपन्यास के माध्यम से हम न केवल विभाजन के समय के साम्प्रदायिक तनाव को समझ सकते हैं, बल्कि यह भी महसूस कर सकते हैं कि उस समय जी रहे लोगों ने किस तरह की परिस्थितियों का सामना किया होगा.

12.3.2 बाह्य वातावरण

उपन्यास का बाह्य वातावरण उस समय, स्थान, समाज और परिस्थितियों को दर्शाता है जिसमें कथा विकसित होती है. इसमें भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक तत्व शामिल होते हैं, जो पात्रों और घटनाओं को प्रभावित करते हैं. बाह्य वातावरण में स्थान जैसे गांव, शहर या जंगल, समय जैसे प्राचीन या आधुनिक युग, समाज की रीति-रिवाज और राजनीतिक पृष्ठभूमि का समावेश होता है. यह कथा को विश्वसनीय बनाता है और पात्रों के व्यवहार तथा विचारधारा को आकार देता है. इसके अलावा, संवाद और भाषा शैली भी बाह्य वातावरण से प्रभावित होती है. उपन्यास जिस विचारधारा या संदेश को प्रस्तुत करता है, वह बाह्य वातावरण के प्रभाव से अधिक प्रभावी बनता है. इस प्रकार, बाह्य वातावरण केवल पृष्ठभूमि नहीं होता, बल्कि यह उपन्यास की आत्मा को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

इस उपन्यास में बाह्य वातावरण की चर्चा विशेष रूप से की गई है, जिसमें प्रकृति-चित्रण, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों को दर्शाया गया है. इन सबका वर्णन उपन्यासकार ने अत्यंत प्रभावशाली रूप से किया है, जिससे पाठक विभाजन की त्रासदी को जीवंत रूप में अनुभव करता है.

गाँव के सामान्य जन-जीवन का चित्रण : एक उपन्यास का अंश देखिए -

'वातावरण में स्थिरता थी. सुबह की घटना से पैदा होने वाला तनाव कुछ दब गया था, कुछ बिखर गया था. सड़कों पर चहल-पहल थी. खुदाबख्श की दुकान के सामने, गली के सिरे पर, कमेटी का कारिंदा सीढ़ी लगाकर दीवार में लगे लैम्प की चिमनी साफ कर रहा था और लैम्प में तेल डाल रहा था. नगर का कार्य-कलाप फिर से जैसे किसी संगीत की लय पर चलने लगा हो. जब इब्राहीम इत्रफरोश कंधों और पीठ पर तरह-तरह की बोतलें लटकाए, एक गली से दूसरी गली इत्र-फुलेल की आवाज़ लगाता अपनी स्थिर चाल से गुजरता, तो लगता नगर की इस धुन पर उसके पाँव उठ रहे हैं. इसी धुन पर औरतें अपने घड़े लेकर गली के नल पर जातीं, इसी धुन की लय पर सड़कों पर ताँगे चलते, इसी धुन पर बच्चे स्कूल जाते. लगता, शहर का सारा व्यापार किसी मीठी, सहज धुन पर चल रहा है. लगता, इसकी एक कड़ी टूटेगी तो साज़ के सारे तार टूट जाएँगे. या यों कहें कि शहर की सभी क्रियाएँ मिलकर किसी सतत संगीत का निर्माण करती हैं, जो शहर के दिल की धड़कन के साथ-साथ बजता रहता है. शहर में लोग जवान होते हैं तो इसी लय पर, बूढ़े होते हैं तो इसी लय पर. इसी पर पीढ़ियाँ अपना जीवन व्यतीत करती चली जाती हैं. आप इसे संगीत कह लीजिए या नाजुक-सा संतुलन, जिसमें व्यक्तियों के आपसी रिश्ते... जन-समूहों के आपसी रिश्ते विशेष धारा पर स्थिर हो चुके हैं.

उपर्युक्त अंश में गाँव या छोटे नगर के जन-जीवन का अत्यंत मनोहारी चित्रण किया गया है. यह चित्रण केवल दृश्यात्मक नहीं है, बल्कि इसमें एक गहरी लयात्मकता भी समाई हुई है, जो समाज के संतुलन और निरंतरता को दर्शाती है.

सामाजिक सामंजस्य और लयबद्धता : गाँव के जीवन को किसी संगीत की लय से जोड़ा गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वहाँ के दैनिक कार्य-व्यापार में एक सहज प्रवाह है. चाहे वह खुदाबख्श की दुकान के सामने लैम्प साफ करने वाला कारिंदा हो, इब्राहीम इत्रफरोश की स्थिर चाल हो, औरतों का घड़ा लेकर नल पर जाना हो या बच्चों का स्कूल जाना-हर गतिविधि जैसे किसी अदृश्य संगीत की धुन पर चल रही है. यह लय केवल व्यक्तिगत कार्यों में नहीं, बल्कि पूरे समाज की संरचना में व्याप्त है. यह लय उस संतुलन की प्रतीक है, जो वर्षो से कायम है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी इसी प्रवाह में जीवन व्यतीत करती चली जाती हैं.

स्थिरता और सामूहिकता का भाव : इस अंश में 'नाजुक-सा संतुलन' शब्दों का प्रयोग कर लेखक ने संकेत दिया है कि यह सामंजस्य, जो जन-समूहों के आपसी रिश्तों और क्रियाकलापों से बना है, अत्यंत संवेदनशील और नाजुक भी है. इसे बनाए रखना आवश्यक है, क्योंकि यदि इस लय की कोई कड़ी टूटती है, तो पूरे समाज की संरचना प्रभावित हो सकती है. यह विचार सामाजिक ताने-बाने की स्थिरता पर प्रकाश डालता है.

चित्रात्मक भाषा और शैली : रचनाकार ने अत्यंत सुंदर और सजीव भाषा का प्रयोग किया है, जिससे दृश्य आँखों के सामने जीवंत हो उठते हैं. 'इत्रफरोश की बोतलें', 'घड़ों के साथ चलती औरतें', 'सड़कों पर चलते टाँगे' ये सभी दृश्य एक गतिशील छवि प्रस्तुत करते हैं. साथ ही, 'किसी संगीत की लय', 'शहर के दिल की धड़कन के साथ-साथ बजता हुआ संगीत' जैसे रूपकों के माध्यम से गाँव की आत्मा को शब्दों में बाँधने का प्रयास किया गया है.

इस अंश में ग्रामीण जीवन की सहजता, सौंदर्य, सामूहिकता और उसकी लयबद्धता को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है. यह हमें याद दिलाता है कि किसी समाज की स्थिरता केवल बाहरी गतिविधियों से नहीं, बल्कि वहाँ के लोगों के आपसी रिश्तों और सामंजस्य पर निर्भर करती है. यदि यह लय बनी रहती है, तो समाज आगे बढ़ता है, और यदि यह टूटती है, तो संतुलन बिगड़ सकता है.

प्रकृति-चित्रण : इसी क्रम में उपन्यास के प्रकृति-चित्रण का एक अंश देखिए-

"टीले के ऊपर पहुँचकर दोनों ने अपने घोड़े रोक लिए. सामने दूर तक चौड़ी घाटी फैली थी, जो पहाड़ों के दामन तक चली गई थी. लगता था, दूर क्षितिज पर सतरंगी धूल उड़ रही थी. विशाल मैदान, कहीं-कहीं छोटी-छोटी पहाड़ियाँ, और उस पर स्वच्छ नीला आकाश, जिसकी पारदर्शी ऊँचाइयों में चीलें तैर रही थीं. बाईं ओर ऊँचा पहाड़ था, जिसे नीली आभा ने ढक रखा था. पहाड़ की ऊँचाई पश्चिम की ओर ढलते-ढलते इतनी कम हो गई थी कि मैदानों को छूने लगी थी. दाईं ओर दूरियों के धुंधलके में लालीमाय पहाड़ियों की धूमिल-सी आकृतियाँ नज़र आ रही थीं."

उपर्युक्त अंश में प्रकृति का अत्यंत सजीव और मनोहारी चित्रण किया गया है. लेखक ने शब्दों के माध्यम से एक ऐसा दृश्य उकेरा है, जिससे पाठक के मन में घाटी, पहाड़, मैदान और आकाश का एक स्पष्ट चित्र बन जाता है.

प्राकृतिक सौंदर्य का सजीव वर्णन : यह अंश प्राकृतिक दृश्यों की भव्यता को दर्शाता है. 'चौड़ी घाटी', 'पहाड़ों के दामन तक चली गई थी', 'सतरंगी धूल', 'स्वच्छ नीला आकाश', और 'चीलें तैर रही थीं' जैसे विवरण पाठकों के मन-मस्तिष्क में एक चित्र खींचते हैं. विशेष रूप से 'नीली आभा ढके हुए पहाड़' और 'लोलीमा पहाड़ियों की धूमिल आकृतियाँ' जैसे वाक्य प्रकृति के रंगों और उनकी बदलती छवियों को दर्शाते हैं.

भौगोलिक संतुलन और विस्तार : इस वर्णन में तीन भौगोलिक दिशाओं बाईं ओर ऊँचा पहाड़, दाईं ओर धुंधली पहाड़ियाँ, और सामने फैला हुआ विस्तृत मैदान का उल्लेख कर दृश्य को व्यापकता दी गई है. इससे यह अनुभूति होती है कि दृश्य केवल स्थिर नहीं, बल्कि एक गतिशील परिवेश से भरा हुआ है, जहाँ विभिन्न तत्व अपने विशेष स्वरुप में मौजूद हैं.

भावनात्मक प्रभाव और कल्पनाशीलता : यह दृश्य पाठक के मन में एक रोमांचक और रहस्यमयी अनुभूति उत्पन्न करता है. 'सतरंगी धूल उड़ रही थी जैसे वाक्य एक अद्‌भुत कल्पनाशीलता को दर्शाते हैं, जिससे ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति अपने स्वयं के रंगों से सजीव हो रही हो. साथ ही, चीलें तैर रही थीं' वाक्य एक गतिशीलता को दर्शाता है, जिससे दृश्य और अधिक वास्तविक प्रतीत होता है.

यह अंश प्राकृतिक सौंदर्य, विस्तार और कल्पना की समृद्धि का उत्कृष्ट उदाहरण है. इसमें दृश्यात्मक वर्णन और सूक्ष्मता का जो संतुलन है, वह इसे एक प्रभावशाली और सरस रचना बनाता है. लेखक ने शब्दों के माध्यम से न केवल स्थान का चित्रण किया है, बल्कि उसके भीतर छिपे रहस्य, शांति और विशालता को भी व्यक्त किया है.

सामाजिक परिस्थितियाँ : 'तमस' उपन्यास में लेखक ने समाज के विविध पक्षों का करुण और मर्मस्पर्शी चित्रण किया है. इसमें तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों को बड़ी कुशलता से निरुपित किया गया है. इस उपन्यास में दिखाया गया है कि साम्प्रदायिकता की आग में जलते समय सबसे अधिक शोषित और पीड़ित वे लोग होते हैं, जो पहले से ही समाज के हाशिए पर हैं. गरीब और बेकसूर लोग, जैसे नत्थू, जरनैल, मिलखी, हरनाम सिंह, बन्तो, इत्रफरोश आदि, साम्प्रदायिक दंगों के शिकार बनते हैं. इसके विपरीत, अमीर वर्ग पूरी तरह सुरक्षित रहता है. समाज के इस वर्ग को साम्प्रदायिकता की आग छू तक नहीं पाती.

कांग्रेस के सदस्यों ने समाज-सेवा का बीड़ा उठा रखा है, लेकिन यह सेवा केवल दिखावे के लिए है. वे अपने स्वार्थ को सर्वोपरि रखते हैं और वास्तविक समस्याओं के समाधान से दूर रहते हैं. जो सच्चे देशभक्त हैं और समाज में शांति बनाए रखना चाहते हैं, उन्हें अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है. उन्हें 'कौम का गद्दार' करार दे दिया जाता है और तिरस्कार

झेलना पड़ता है. वहीं, जो असल में 'कौम के गद्दार' होते हैं, वे समाज में सम्मानित बने घूमते हैं.

इस उपन्यास में यह भी दिखाया गया है कि साम्प्रदायिकता के नाम पर दंगे-फसाद भड़काने वाले ही बाद में अमन-चैन के नारे लगाते हैं और खुद को शांति-दूत साबित करने की कोशिश करते हैं. यह स्थिति आज भी समाज में देखने को मिलती है, जहाँ साम्प्रदायिकता और वर्गभेद की विषमता बनी हुई है. लेखक ने 'तमस' में इस सामाजिक असमानता और राजनीतिक स्वार्थ का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया है. यह उपन्यास समाज-व्यवस्था पर करारा व्यंग्य करता है और एक कड़वे सच को उजागर करता है, जिसे झुठलाया नहीं जा सकता.

इस तरह यह समाज की विषमता को दर्शाता है. आज भी समाज में यह विषमता देखने को मिलती है, जहाँ गरीब और कमजोर वर्ग संघर्ष करता है और उच्च वर्ग अपनी स्थिति सुरक्षित रखता है.

धार्मिक परिस्थितियाँ : 'तमस' उपन्यास में धार्मिक परिस्थितियाँ मुख्य प्रतिपाद्य के रूप में उभरती हैं. इसमें धर्म के नाम पर होने वाले भीषण रक्तपात, लोगों की धर्म संबंधी मिथ्या धारणाएँ और अंधविश्वास का यथार्थ चित्रण किया गया है. यह उपन्यास दर्शाता है कि कैसे धर्म मनुष्य को प्रेम और सद्भाव की ओर ले जाने के बजाय घृणा और क्रूरता का कारण बन जाता है.

साहनीजी ने धार्मिक उन्माद और दंगों की विभीषिका को इतनी मार्मिकता से चित्रित किया है कि पाठक स्वयं को उन घटनाओं के बीच खड़ा महसूस करता है. निर्दोष लोगों का मारा जाना, घरों का जलाया जाना, स्त्रियों और बच्चों की चीखें-इन सबका वर्णन हृदय को झकझोर देता है.

भीषण रक्तपात के बाद उत्पन्न वातावरण की भयावहता और वीभत्सता उपन्यास के शब्दों में स्पष्ट दिखती है. चारों ओर जलते हुए मकान, खून से सनी गलियाँ और शवों के बीच पसरा सन्नाटा, साम्प्रदायिकता की भयावह सच्चाई को उजागर करता है. लेखक ने यह दिखाया है कि धर्म का दुरुपयोग समाज को किस तरह विनाश की ओर धकेल सकता है. उपन्यास का एक अंश देखिए –

"जब रोशनी फैलने लगी तो चील और कौवे, ढेरों-के-ढेर आसमान में उड़ने लगे. अनेक गिद्ध भी मँडराते हुए आ गए. स्कूल के बाहर खड़े एक रुंड-मूंड पेड़ पर दस-पंद्रह गिद्ध आकर बैठ गए थे. छोटे-छोटे सिर, बड़ी-बड़ी पीली चोंच. कुछ गिद्ध कुएँ की जगत पर भी आ बैठे थे, जहाँ लाशें फूलने लगी थीं और फूल-फूलकर कुएँ के मुँह तक पहुँचने लगी थीं. घरों की मुंडेरों पर भी जगह-जगह गिद्ध आकर बैठ गए थे. गलियाँ सुनसान पड़ी थीं, बिखरी लाशें गाँव की निस्तब्धता को और भी गहरा बना रही थीं. अब गाँव की गलियों में कोई धीरे से भी चलता तो उसके पैरों की चाप गूँजती थी. बलवाई लूटपाट का सामान लेकर लौट गए थे, बहुत-से मारे गए थे. गुरुद्वारे से कुएँ की ओर जाने वाले रास्ते पर जगह-जगह औरतों के परांदे, चुन्नियाँ, चूड़ियाँ गिरी पड़ी थीं. गुरुद्वारे के निकट विशेष रूप से हाथों में से टूटकर गिरी चूड़ियों के टुकड़े जगह-जगह बिखरे पड़े थे. गलियों में टूटे खाली संदूक, कनस्तर, खाटें, लूटपाट की कहानी कह रहे थे. मकानों के किवाड़ कहीं अधखुले तो कहीं टूटे पड़े थे. जगह-जगह उस आँधी के निशान थे, जो रातभर चलती रही थी."

इस अंश में बलवा और दंगे के बाद के भयावह दृश्य का सजीव चित्रण किया गया है. लेखक ने वातावरण की निस्तब्धता, विध्वंस और वीभत्सता को गिद्धों, चीलों और कौवों की उपस्थिति से और अधिक प्रभावशाली बना दिया है. लाशों का फूलना, टूटे किवाड़, बिखरी

चूड़ियाँ, परांदे और लूटपाट के निशान साम्प्रदायिक हिंसा की विभीषिका को दर्शाते हैं. गलियों की सुनसान और भयावह स्थिति पाठक को अंदर तक झकझोर देती है. यह दृश्य समाज की अमानवीयता, क्रूरता और उस दर्दनाक सच्चाई को उजागर करता है, जिसे कोई भी सभ्य समाज स्वीकार नहीं करना चाहता.

इस तरह यह उपन्यास धार्मिक उन्माद और उसकी विनाशकारी प्रवृत्तियों को उजागर करता है.

राजनीतिक परिस्थितियाँ : राजनीतिक परिस्थितियों के अंतर्गत लेखक ने तत्कालीन राजनीति और राजनेताओं के दंभ का पर्दाफाश किया है. उस समय भारत पर अंग्रेज सरकार का ही शासन था, इसलिए अंग्रेजों की कूटनीति 'फूट डालो और राज करो' का खुलेआम चित्रण हुआ है. अंग्रेजों को भारतीयों की समानता में नहीं, बल्कि विषमता में ही रुचि थी. वे चाहते थे कि भारतीय आपस में बंटे रहें, ताकि वे आसानी से शासन कर सकें. ब्रिटिश प्रशासन की नीति भारतीय समाज को धार्मिक, सांप्रदायिक और जातीय आधार पर बाँटने की थी, जिससे आपसी मनमुटाव और वैमनस्यता बढ़े और वे अपने शासन को निर्बाध रूप से चला सकें.

उपन्यास में एक स्थान पर रिचर्ड के इस कथन – 'अगर प्रजा आपस में लड़े तो शासक को किस बात का खतरा है' – से स्पष्ट होता है कि ब्रिटिश शासन की नीति यही थी कि किसी भी तरह से शहर में दंगा-फसाद करवा दिया जाए, ताकि वे आराम से देश पर अपना नियंत्रण बनाए रख सकें. उनकी यही नीति थी कि भारतीय समाज को इतना कमजोर कर दिया जाए कि वे एकजुट होकर स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा न ले सकें. इस नीति को कार्यान्वित करने में कुछ भारतीय भी सहयोगी बने, जिन्होंने स्वार्थवश अंग्रेजों का साथ दिया और अपने ही देशवासियों को आपस में लड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ी.

इसके अलावा, कुछ ऐसे नासमझ और कट्टरपंथी लोग भी थे, जो हिंदू-मुस्लिम को एक-दूसरे का दुश्मन समझते थे और अंग्रेजों को अपना हमदर्द मानते थे. यह स्थिति समाज में फैले अंधविश्वास, पूर्वाग्रह और राजनीतिक स्वार्थों को दर्शाती है. अमन-चैन की बातें करने वालों को दुत्कारा जाता था और समाज सेवा के नाम पर केवल अपना स्वार्थ सिद्ध किया जाता था. समाज सुधारकों और शांति स्थापित करने की बात करने वालों को 'कौम का गद्दार' कहा जाता था, जबकि असली गद्दार वे थे, जो अंग्रेजों के हाथों की कठपुतली बने हुए थे.

देश में भीषण रक्तपात और आगजनी होने के बाद सरकार केवल दिखावटी कदम उठाती थी. पहले तो अंग्रेज प्रशासन खुद दंगे भड़काता और फिर स्थिति को काबू में लाने के नाम पर शहर में कर्फ्यू लगाकर शांति स्थापित करने के प्रयास करता. यह अंग्रेजों की दोहरी नीतियों पर एक करारा व्यंग्य है.

जब पाकिस्तान की माँग की जाती है, तब महात्मा गांधी कहते हैं, **'मेरे रहते भारत के टुकड़े नहीं होंगे, पाकिस्तान मेरी लाश पर बनेगा.'** लेकिन वास्तविकता यह थी कि देश के भीतर दोहरे विचार पनप रहे थे. एक ओर **'बोल भारत माता की जय !'** और **'महात्मा गाँधी की जय !'** के नारे गूँजते थे, तो दूसरी ओर **'पाकिस्तान जिंदाबाद !'** और **'कायदे आ़जम सजदाबाद !'** के नारे भी सुनाई देते थे. यह विरोधाभास समाज की विभाजित मानसिकता को दर्शाता है.

इस प्रकार, 'तमस' उपन्यास में तत्कालीन राजनीति, अंग्रेजों की विभाजनकारी नीतियों और भारतीय समाज में फैले मतभेदों का यथार्थ और प्रभावी चित्रण किया गया है. लेखक ने दर्शाया है कि कैसे राजनीतिक स्वार्थों ने एक पूरे समाज को दंगों और रक्तपात की आग

में झोंक दिया, और कैसे इस दोहरी राजनीति ने देश को अराजकता की ओर धकेल दिया.

इस तरह उपन्यास का आंतरिक वातावरण उस समय की मानसिकता, सामाजिक ताने-बाने और व्यक्तिगत संघर्षों को दर्शाता है. इसमें पात्रों की मन:स्थिति, उनके भय, असुरक्षा, लालसा और सामाजिक जिम्मेदारियों का सूक्ष्म चित्रण मिलता है. नत्थू और उसके जैसे अन्य पात्रों के माध्यम से लेखक मानवीय पीड़ा और समाज में फैले तनाव को उजागर करता है. प्रेम, भय, घृणा और आशा जैसे भाव इस वातावरण को गहराई प्रदान करते हैं.

बाह्य वातावरण में विभाजन के समय की राजनीतिक अस्थिरता, दंगे, धार्मिक उन्माद और हिंसा का व्यापक चित्रण किया गया है. गलियों में फैला सन्नाटा, आगजनी, रक्तपात और भागते-छुपते लोग उस दौर की भयावहता को प्रकट करते हैं. लेखक ने जगह-जगह ध्वस्त इमारतों, लाशों और खौफ के वातावरण का वर्णन कर उस समय के ऐतिहासिक यथार्थ को मूर्त रूप दिया है.

'तमस' का देशकाल और वातावरण दोनों ही उपन्यास को एक ऐतिहासिक प्रामाणिकता देते हैं. यह केवल विभाजन की त्रासदी नहीं, बल्कि मानव मन की गहराइयों में झाँकने का प्रयास है. उपन्यास हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि साम्प्रदायिकता और राजनीतिक षड्यंत्रों का प्रभाव समाज पर कितना गहरा पड़ता है. भीष्म साहनी ने अपने सजीव और प्रभावी वर्णन से उस समय के भयावह वातावरण को पाठकों के सामने जीवंत कर दिया है.

12.4 'तमस' का देशकाल और वातावरण की विशिष्टता

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' भारतीय विभाजन की त्रासदी और सांप्रदायिकता की भयावहता को सजीव रूप में प्रस्तुत करता है. यह उपन्यास सन् 1947 ई. के विभाजन की पृष्ठभूमि में पंजाब के एक छोटे शहर में व्याप्त अराजकता, हिंसा और दंगों का जीवंत चित्रण करता है. इसमें तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों के साथ-साथ आंतरिक और बाह्य वातावरण का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण मिलता है.

(अ) **देशकाल की विशिष्टता** : उपन्यास का देशकाल स्वतंत्रता से ठीक पहले, सन् 1947 ई. के विभाजन की त्रासदी से जुड़ा है. यह वह समय था जब भारत राजनीतिक अस्थिरता, सांप्रदायिक तनाव और ब्रिटिश शासन की 'फूट डालो और राज करो' नीति का शिकार था. तमस में दर्शाया गया वातावरण विभाजन से पूर्व और विभाजन के समय की सामाजिक व्यवस्था, सांप्रदायिक भेदभाव और राजनीतिक षड्यंत्रों को उद्घाटित करता है.

(1) **तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियाँ** : साहनी ने समाज में व्याप्त विषमता, साम्प्रदायिकता और वर्गभेद को स्पष्ट रूप से चित्रित किया है. जहाँ एक ओर नत्थू, हरनाम सिंह, बन्तो, जरनैल, मिलखी जैसे निम्न और मध्यम वर्ग के लोग सांप्रदायिकता का शिकार बनते हैं, वहीं अमीर वर्ग सुरक्षित रहता है. समाज का यह विद्रूप चेहरा आज भी प्रासंगिक प्रतीत होता है.

(2) **तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियाँ** : इस उपन्यास में ब्रिटिश हुकूमत की चालों और उनकी Divide and Rule नीति का पर्दाफाश किया गया है. अंग्रेज अधिकारी रिचर्ड कहता है – 'अगर प्रजा आपस में लड़े तो शासक को किस बात का खतरा है?' यह वाक्य स्पष्ट करता है कि अंग्रेजों की नीति भारतीयों को आपस में लड़ाकर अपने शासन को मजबूत बनाए रखने की थी. इसके साथ ही, स्वार्थी राजनीतिक दल और उनके नेता केवल दिखावे के लिए शांति और समाज सेवा की बातें करते हैं.

(3) **धार्मिक परिस्थितियाँ** : धर्म के नाम पर मनुष्य की मनुष्य के प्रति घृणा और हिंसा का जो चित्रण तमस में हुआ है, वह अत्यंत मर्मस्पर्शी है. दंगों में निर्दोषों का मारा

जाना, महिलाओं पर अत्याचार, घरों को जलाया जाना और निर्दयी हत्याएँ इस बात का प्रमाण हैं कि धर्म के नाम पर कैसे मनुष्य अमानवीय बन जाता है. यह उपन्यास यह भी दिखाता है कि धार्मिक उन्माद की आग में सबसे अधिक गरीब और निर्दोष लोग जलते हैं.

(ब) **वातावरण की विशिष्टता** : साहनी ने 'तमस' में वातावरण-चित्रण को दो स्तरों पर विभाजित किया है – आंतरिक वातावरण और बाहय वातावरण.

(1) आंतरिक वातावरण : आंतरिक वातावरण में लेखक पात्रों की मानसिक दशा, उनके भय, असमंजस, आशंका और संघर्ष को अत्यंत गहराई से उकेरते हैं. उपन्यास की शुरुआत ही आंतरिक वातावरण की सजीवता को दर्शाती है – "आले में रखे दीये ने फिर से झपकी ली. ऊपर दीवारों में, छत के पास से दो ईंटें निकली हुई थीं. जब-जब वहाँ से हवा का झोंका आता, दीये की बत्ती झपक जाती और कोठरी की दीवारों पर साये से डोल जाते."

इस प्रकार के वर्णन पाठकों को उस वातावरण में खींच लाते हैं जहाँ पात्र जी रहे होते हैं. नत्थू, हरनाम सिंह, बन्तो आदि के मनोवैज्ञानिक चित्रण के माध्यम से विभाजन के समय के आम जनजीवन की वास्तविकता को उभारा गया है.

(2) बाह्य वातावरण : बाह्य वातावरण में प्राकृतिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण मिलता है. गाँव और शहर के जीवन, प्रकृति, बाजार, गलियों, लोगों की गतिविधियों आदि का इतना सजीव चित्रण किया गया है कि पाठक स्वयं को उसी स्थान पर खड़ा महसूस करता है.

(**3**) **सामाजिक एवं सांप्रदायिक वातावरण** : हरनाम सिंह दुकान के चबूतरे पर लोट गया, टाट के नीचे से कमाई के पैसे निकाले... पर बन्तो की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था, क्या उठाए क्या छोड़ दे.

यह दृश्य उन लोगों की मन:स्थिति को दर्शाता है जो अपने ही घरों को छोड़ने के लिए मजबूर थे. विभाजन के दौरान लाखों लोगों को ऐसे ही अनिश्चितता और भय से गुजरना पड़ा था.

(**4**) **प्राकृतिक वातावरण** : टीले के ऊपर पहुँचकर दोनों ने अपने घोड़े रोक लिए. सामने दूर तक चौड़ी घाटी फैली थी जो पहाड़ों के दामन तक चली गई थी. लगता था, दूर क्षितिज पर सतरंगी धूल उड़ रही है.

यह दृश्य प्रकृति के सौंदर्य को व्यक्त करने के साथ-साथ पात्रों की मन:स्थिति का संकेत भी देता है.

(5) रक्तपात और विभाजन की भयावहता : "जब रोशनी फैलने लगी तो चील और कव्वे, ढेरों-के-ढेरों आसमान में उड़ने लगे... गलियों में टूटे खाली सन्दूक, कनस्तर, खाटें, लूटपाट की कहानी कह रहे थे."

इस वीभत्स चित्रण के माध्यम से लेखक विभाजन की अमानवीयता को पाठकों के सामने लाते हैं.

भीष्म साहनी का 'तमस' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि विभाजन की त्रासदी का दस्तावेज़ है. इसमें दर्शाया गया देशकाल और वातावरण हमें सन् 1947 ई. की उस भयावह सच्चाई से रुबरु कराता है, जिसने लाखों लोगों को विस्थापन, दर्द और यातना दी. आंतरिक और बाह्य वातावरण का सजीव चित्रण इस उपन्यास को ऐतिहासिक और भावनात्मक रूप

से अत्यंत प्रभावी बनाता है. 'तमस' की विशेषता इसी में है कि यह केवल अतीत की घटनाओं को नहीं दर्शाता, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी एक चेतावनी देता है कि सांप्रदायिकता और नफरत की राजनीति किस तरह आम जनजीवन को नष्ट कर सकती है.

12.5 सारबिंदु

- 'तमस' का कथानक भारत के विभाजन के पूर्व की साम्प्रदायिक अशांति पर आधारित है.
- उपन्यास में सन् 1947 ई. के विभाजन के ठीक पहले की राजनीतिक, सामाजिक और धार्मिक स्थितियों को दर्शाया गया है.
- इसमें अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो नीति को स्पष्ट रूप से दिखाया गया है.
- पात्रों की मानसिक स्थितियों और उनके संघर्षो का सूक्ष्म चित्रण किया गया है.
- भय, असुरक्षा, किंकर्तव्यविमूढ़ता और असमंजस को सजीव रूप में प्रस्तुत किया गया है.
- उदाहरण - हरनाम सिंह और बन्तो की दुविधा कि वे क्या लेकर जाएँ और क्या छोड़ें.
- सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों का यथार्थपरक चित्रण किया गया है.
- विभाजन के समय की उथल-पुथल और हिंसा को प्रभावी भाषा में उकेरा गया है.
- गाँव, शहर और बाजार के दृश्य बहुत ही जीवन्त तरीके से प्रस्तुत किए गए हैं.
- उपन्यास में प्रकृति का वर्णन भी प्रभावशाली ढंग से किया गया है, जो कथा के मूड को उभारने में सहायक है.
- उदाहरण - 'नीले आकाश में तैरती चीलें, लालिमा पहाड़ियाँ' आदि.
- साम्प्रदायिक दंगों में आम आदमी की पीड़ा को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है.
- गरीब और मध्यमवर्गीय लोग (जैसे नत्थू, मिलखी, हरनाम सिंह) हिंसा के शिकार बनते हैं, जबकि अमीर वर्ग सुरक्षित रहता है.
- काँग्रेस के कार्यकर्ता केवल दिखावे की समाज सेवा करते हैं.
- धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा और अंधविश्वास की मानसिकता का गहरा चित्रण किया गया है.
- धार्मिक संघर्षो के कारण निर्दोष लोगों की हत्याएँ और महिलाओं पर अत्याचार दिखाए गए हैं.
- अंग्रेजों की नीतियाँ और भारतीय नेताओं की भूमिका पर तीखा व्यंग्य किया गया है.
- उपन्यास में यह दिखाया गया है कि कैसे जनता को आपस में लड़वाकर अंग्रेज अपनी सत्ता बनाए रखना चाहते थे.
- महात्मा गांधी के विचार और विभाजन के विरोध को भी चित्रित किया गया है.
- लाशों से भरे गाँव, टूटी चूड़ियाँ, उजड़े घर, गिद्धों और चीलों का मंडराना - इन विवरणों से भयावहता को गहराई से महसूस किया जा सकता है.
- बलवाई लूट-पाट का सामान लेकर लौट जाते हैं, जबकि निर्दोष लोग मारे जाते हैं.
- साम्प्रदायिकता की आग में जलता समाज, खोखली राजनीति और स्वार्थी लोग इन सब पर लेखक ने कटाक्ष किया है.

- अमन-चैन की बातें करने वालों को ही गद्दार कहा जाता है, जबकि असली षड्यंत्रकारी सम्मानित बने रहते हैं.

12.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **बोध प्रश्न**
- **विस्तृत उत्तरीय प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास के देशकाल की विशेषताएँ क्या हैं? उपन्यास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए बताइए कि यह कथा भारत के विभाजन की त्रासदी को किस प्रकार प्रस्तुत करती है?

(2) भीष्म साहनी ने 'तमस' में आंतरिक और बाह्य वातावरण का चित्रण किस प्रकार किया है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए कि यह वातावरण कथा की संवेदनशीलता और यथार्थपरकता को किस प्रकार बढ़ाता है?

(3) सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों का तमस में किस प्रकार चित्रण किया गया है? उपन्यास के पात्रों के माध्यम से लेखक ने उस समय की वास्तविकता को किस प्रकार प्रकट किया है?

(4) उपन्यास में प्रकृति-चित्रण की क्या भूमिका है? क्या यह केवल कथा के सौंदर्य को बढ़ाने का साधन है, या फिर यह कथानक और पात्रों की मनोदशा को भी प्रतिबिंबित करता है? उदाहरण सहित उत्तर दीजिए.

(5) 'तमस' में विभाजन के दौरान सहसा, भय और असुरक्षा की भावना को किस प्रकार व्यक्त किया गया है? लेखक ने कैसे यह दिखाया है कि इन परिस्थितियों का सबसे अधिक प्रभाव गरीब और मध्यम वर्ग पर पड़ा?

- **लघु उत्तरीय प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि क्या है?

(2) उपन्यास में आंतरिक वातावरण किस प्रकार निर्मित किया गया है?

(3) बाह्य वातावरण के अंतर्गत कौन-कौन से तत्वों का चित्रण किया गया है?

(4) उपन्यास में सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण कैसे किया गया है?

(5) 'तमस' में धार्मिक परिस्थितियाँ किस प्रकार प्रदर्शित की गई हैं?

(6) राजनीतिक परिस्थितियों का चित्रण करते हुए अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' नीति का उदाहरण दीजिए.

(7) उपन्यास में प्रकृति-चित्रण का क्या महत्व है?

(8) हरनाम सिंह और बन्तो की मानसिक स्थिति किस प्रकार विभाजन की त्रासदी को दर्शाती है ?

(9) साम्प्रदायिकता के कारण आम जनता पर पड़ने वाले प्रभावों को तमस में कैसे दर्शाया गया है?

(10) उपन्यास में वातावरण-चित्रण कथा की प्रभावशीलता को किस प्रकार बढ़ाता है?

- **टिप्पणी लिखिए.**

(1) 'तमस' उपन्यास में आंतरिक वातावरण की विशेषताओं पर टिप्पणी कीजिए.

(2) उपन्यास में बाह्य वातावरण के चित्रण का महत्व स्पष्ट कीजिए.

(3) 'तमस' में तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों पर टिप्पणी कीजिए.

(4) उपन्यास में अंग्रेजों की 'फूट डालो और राज करो' नीति पर टिप्पणी कीजिए.

(5) भीष्म साहनी द्वारा तमस में किए गए प्रकृति-चित्रण की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए.

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास का लेखक कौन है?

(अ) प्रेमचंद (ब) भीष्म साहनी

(स) यशपाल (द) अमृता प्रीतम

(2) 'तमस' उपन्यास की पृष्ठभूमि किस ऐतिहासिक घटना पर आधारित है?

(अ) 1857 की क्रांति (ब) जलियाँवाला बाग हत्याकांड

(स) भारत-पाक विभाजन (द) चंपारण सत्याग्रह

(3) 'तमस' उपन्यास में आंतरिक वातावरण किससे संबंधित है?

(अ) प्रकृति-चित्रण

(ब) सामाजिक परिस्थितियाँ

(स) घटनाओं और पात्रों की मानसिक दशा

(द) राजनीतिक घटनाएँ

(4) 'तमस' उपन्यास में बाह्य वातावरण में किसका चित्रण किया गया है?

(अ) सामाजिक परिस्थितियाँ (ब) धार्मिक परिस्थितियाँ

(स) राजनीतिक परिस्थितियाँ (द) उपरोक्त सभी

(5) हरनाम सिंह और बन्तो उपन्यास में किस परिस्थिति के शिकार होते हैं?

(अ) गरीबी (ब) जातीय भेदभाव

(स) साम्प्रदायिक दंगे (द) बेरोजगारी

(6) भीष्म साहनी ने 'तमस' में किस अंग्रेज अधिकारी के माध्यम से ब्रिटिश कूटनीति को उजागर किया है?

(अ) जॉन स्मिथ (ब) रिचर्ड

(स) विलियम हेनरी (द) चार्ल्स एंड्रयूज

(7) 'तमस' उपन्यास में किस वर्ग को साम्प्रदायिकता की आग सबसे अधिक झेलनी पड़ी?

(अ) गरीब और मध्यम वर्ग (ब) अमीर वर्ग

(स) राजनेता (द) अंग्रेज अधिकारी

(8) 'तमस' में प्रकृति-चित्रण का उद्देश्य क्या है?

(अ) कथा के सौंदर्य को बढ़ाना

(ब) पात्रों की मानसिक स्थिति को दर्शाना

(स) सामाजिक परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करना

(द) उपरोक्त सभी

(9) 'तमस' में कौन-सा पात्र इत्र बेचने का कार्य करता है?

(अ) नत्थू (ब) मिलखी

(स) इब्राहीम (द) हरनाम सिंह

(10) उपन्यास में कौन-सा पात्र मुसलमानों के लिए काम करता हुआ दिखाया गया है, लेकिन बाद में उसका इस्तेमाल हिंसा भड़काने के लिए किया जाता है?

(अ) मिलखी (ब) नत्थू

(स) जसवीर कौर (द) हरनाम सिंह

(11) भीष्म साहनी ने 'तमस' में विभाजन से प्रभावित कौन-से समुदायों को प्रमुखता से दर्शाया है?

(अ) हिंदू और सिख (ब) मुसलमान और ईसाई

(स) पारसी और जैन (द) बौद्ध और जैन

(12) 'तमस' में गुरुद्वारे के पास कौन-से दृश्य दिखाए गए हैं जो विभाजन की त्रासदी को प्रकट करते हैं?

(अ) टूटी हुई खाटें और संदूक (ब) बिखरे हुए परांदे और चूड़ियाँ

(स) लाशों से भरा कुआँ (द) उपरोक्त सभी

(13) 'तमस' में अंग्रेजी सरकार ने शांति स्थापित करने के लिए क्या उपाय किया?

(अ) सभी दंगाइयों को गिरफ्तार किया (ब) शहर में कर्फ्यू लगाया

(स) नई सरकार गठित की (द) हिंदू-मुस्लिमों को अलग-अलग कर दिया

(14) तमस उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

(अ) भारत के स्वतंत्रता संग्राम का गुणगान करना

(ब) साम्प्रदायिक दंगों और विभाजन की भयावहता को उजागर करना

(स) ब्रिटिश हुकूमत की प्रशंसा करना

(द) प्रेम और भाईचारे का संदेश देना

उत्तर 1. (ब) भीष्म साहनी 2. (स) भारत-पाक विभाजन 3. (स) घटनाओं और पात्रों की मानसिक दशा 4. (द) उपरोक्त सभी 5. (स) साम्प्रदायिक दंगे 6. (ब) रिचर्ड 7. (अ) गरीब और मध्यम वर्ग 8. (द) उपरोक्त सभी 9. (स) इब्राहीम 10. (ब) नत्थू 11. (अ) हिंदू और सिख 12. (द) उपरोक्त सभी 13. (ब) शहर में कर्फ्यू लगाया 14. (ब) साम्प्रदायिक दंगों और विभाजन की भयावहता को उजागर करना

12.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- **'तमस'** : भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- **उपन्यास : कला और सिद्धांत** - (संपादक: विनोद तिवारी, अजय आनंद), अनन्य प्रकाशन, दिल्ली-110032, वर्ष: 2016
- **कालजयी उपन्यास** - ममता देवी, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 2018
- **समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष** : डॉ. अर्जुन चव्हाण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 2012

- **समकालीन हिंदी उपन्यास : दशा और दिशा** - डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, वर्षः 2018
- **समकालीन हिंदी उपन्यास : समाज और संवेदना संपादक** - डॉ. वी. के. अब्दुल जलील, सह-संपादकः डॉ. पी. रवि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2017
- **भारत-विभाजन और हिंदी उपन्यास** : हरियश, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली-110015, वर्षः 1986
- **भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना** - राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर (संपादक), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 1982
- **शैली और शैली विश्लेषण** - डॉ. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2014
- **हिंदी उपन्यास का विकास** - मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्षः 2014
- **हिंदी उपन्यास का इतिहास** - गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2016
- **हिंदी उपन्यास : सामाजिक चेतना** - डॉ. रजनीकांत एस. शाह, संस्कृति, अहमदाबाद-380001, वर्षः 1990
- **शोध पत्रिका** - आलोचन दृष्टि आजाद नगर, बिंदकी फतेहपुर उ. प्र.
- **वेबसाइट लिंक** - https://www.hindikunj.com/2024/11/tamas-upanyas-ki-samiksha-bhisham-sahni.html

इकाई 13 'तमस' : भाषा-शैली

रूपरेखा

13.1 उद्देश्य

13.2 प्रस्तावना

13.3 तमस उपन्यास की भाषा-शैली

13.3.1 तमस उपन्यास की भाषा

13.3.1.1 देशज व स्थानीय बोलियों से प्रभावित भाषा

13.3.1.2 परिष्कृत एवं मानक हिंदी का स्वरूप

13.3.1.3 अरबी-फारसी शब्दावली से युक्त उर्दू शैली

13.3.1.4 देवनागरी लिपि में प्रयुक्त अंग्रेजी के शब्द एवं वाक्यांश

13.3.2 शब्द सौंदर्य

13.3.2.1 हिंदी के विशुद्ध तत्सम शब्द

13.3.2.2 हिंदी के तद्‌भव शब्द

13.3.2.3 देशज शब्दों का प्रयोग

13.3.2.4 पंजाबी शब्द

13.3.2.5 उर्दू शब्दों का प्रयोग

13.3.2.6 अंग्रेजी शब्द

13.3.2.7 मुहावरों का प्रयोग

13.3.3 शिल्प सौंदर्य

13.3.3.1 नाटकीय शैली

13.3.3.2 वर्णनात्मक शैली

13.3.3.3 विश्लेषणात्मक शैली

13.3.3.4 फोटोग्राफिक शैली

13.4 'तमस' उपन्यास की भाषा-शैली का वैशिष्ट्य

13.5 सारबिंदु

13.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

13.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

13.1 उद्देश्य

- उपन्यास में प्रयुक्त विभिन्न भाषा-शैलियों की विशिष्टताओं को समझना.
- देशज व स्थानीय बोलियों के प्रभाव को विश्लेषित करना.
- परिष्कृत हिंदी के उपयोग और उसकी प्रभावशीलता को समझना.
- अरबी-फारसी शब्दावली और उर्दू शैली के प्रयोग का विश्लेषण करना.
- अंग्रेजी शब्दों व वाक्यांशों के प्रयोग और उनकी भूमिका को स्पष्ट करना.
- तत्सम, तद्‌भव, देशज, पंजाबी, उर्दू और अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग का अध्ययन करना.
- उपन्यास में प्रयुक्त मुहावरों के प्रभाव और उनकी भाषायी सुंदरता को समझना.
- संवादों की नाटकीयता और कथा-विकास में उनकी भूमिका को समझना.
- कथानक को प्रभावी बनाने में वर्णनात्मक शैली की भूमिका का विश्लेषण करना.

- पात्रों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और कथा की गहराई को समझना.
- घटनाओं और दृश्यों को सजीव बनाने में फोटोग्राफिक शैली की भूमिका को देखना.
- भाषा-शैली में क्षेत्रीय और सांस्कृतिक प्रभावों को समझना.
- भाषा और शैली के समन्वय से उपन्यास में उत्पन्न साहित्यिक सौंदर्य को समझना.
- विभाजन काल की पृष्ठभूमि में प्रयुक्त भाषा-शैली के ऐतिहासिक महत्व को जानना.
- भीष्म साहनी की भाषा-शैली के प्रति दृष्टिकोण और उनकी लेखन कला को समझना.

13.2 प्रस्तावना

'तमस' उपन्यास भीष्म साहनी द्वारा रचित एक कालजयी कृति है, जिसमें विभाजन पूर्व भारत के साम्प्रदायिक दंगों और समाज में व्याप्त उथल-पुथल का यथार्थपरक चित्रण किया गया है. यह उपन्यास केवल एक कथा नहीं है, बल्कि इतिहास के उस भयावह दौर का दर्पण है, जब धर्म और राजनीति की आड़ में मानवता को कुचला जा रहा था. भाषा और शैली की दृष्टि से यह उपन्यास अत्यंत प्रभावशाली और विविधता से परिपूर्ण है, जिसमें लेखक ने अपनी रचनात्मक दक्षता का परिचय दिया है. इस उपन्यास की भाषा-शैली इतनी जीवंत और प्रभावशाली है कि पाठक को घटनाओं के केंद्र में खड़ा कर देती है.

भीष्म साहनी की भाषा सहज, प्रवाहमयी और जनमानस के करीब है, जिससे पाठक उपन्यास से गहराई से जुड़ जाता है. इस उपन्यास में देशज और स्थानीय बोलियों का व्यापक प्रयोग किया गया है, जिससे पात्रों की भाषा और संवाद स्वाभाविक लगते हैं. उपन्यास की भाषा में पंजाबी, हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी के शब्दों का संयोजन देखा जा सकता है, जो इसे और भी वास्तविक बनाता है. लेखक ने स्थान, काल और पात्रों के अनुरुप भाषा का प्रयोग किया है, जिससे उपन्यास की प्रमाणिकता बढ़ जाती है. ग्रामीण और कस्बाई पात्रों की भाषा में क्षेत्रीय शब्दों और बोलचाल की सहजता का समावेश किया गया है, वहीं परिष्कृत हिंदी का प्रयोग भी आवश्यकतानुसार हुआ है.

इस उपन्यास में अरबी-फारसी शब्दावली का भी प्रयोग किया गया है, जिससे मुस्लिम पात्रों की भाषा में स्वाभाविकता बनी रहती है. उर्दू शैली के शब्द और वाक्य विन्यास उपन्यास की विषयवस्तु को और अधिक प्रभावशाली बनाते हैं. इसके अतिरिक्त, देवनागरी लिपि में अंग्रेजी शब्दों और वाक्यांशों का प्रयोग भी देखा जा सकता है, जो उस समय के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों को उजागर करता है. विभिन्न शब्द-प्रयोगों से उपन्यास की भाषा में संप्रेषणीयता और जीवंतता बनी रहती है. तत्सम, तद्भव, देशज, उर्दू और अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से भाषा में गहराई आती है, जो इसे अधिक यथार्थपरक बनाता है.

शिल्प की दृष्टि से यह उपन्यास अत्यंत समृद्ध है. संवादों में नाटकीयता का समावेश इसे अधिक सजीव बनाता है. पात्रों के बीच होने वाले संवाद न केवल कथा को गति प्रदान करते हैं, बल्कि उनके मानसिक संघर्ष को भी प्रकट करते हैं. विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग कर लेखक ने पात्रों के भीतर चल रहे मानसिक द्वंद्व को प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया है. हरनाम सिंह, नत्थू, लीज़ा और शाहनवाज के मनोभावों का सजीव चित्रण विश्लेषणात्मक शैली के माध्यम से किया गया है, जिससे उपन्यास की संवेदनशीलता और गहराई बढ़ जाती है.

वर्णनात्मक शैली के माध्यम से लेखक ने उपन्यास के वातावरण, स्थान और घटनाओं को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है. प्रकृति का सौंदर्य, दंगों की विभीषिका, वीरान गलियों और उजड़े घरों का मार्मिक वर्णन पाठकों को झकझोर कर रख देता है. उपन्यास में कई प्रसंग ऐसे हैं, जहाँ फोटोग्राफिक शैली का प्रयोग हुआ है. दृश्यात्मकता इस कृति की

प्रमुख विशेषता है, जिससे घटनाएँ चलचित्र की भांति पाठकों के सामने उभरती हैं. 'चाहे वह दंगों के भयावह दृश्य हों, लाशों से भरी गलियाँ हों या भयभीत लोगों के चेहरे' इन सबका चित्रण इतना सजीव है कि पाठक उन परिस्थितियों का साक्षी बन जाता है.

'तमस' की भाषा-शैली इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता है. लेखक ने भाषा, संवाद और शैली के माध्यम से उपन्यास के भावनात्मक पक्ष को उभारने का सफल प्रयास किया है. भाषा की सहजता, शैलीगत विविधता और पात्रों के अनुरुप भाषा का प्रयोग इसे अत्यंत प्रभावशाली बनाता है. भीष्म साहनी ने इस उपन्यास के माध्यम से भाषा और शैली के प्रयोग की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत किया है, जिससे यह कृति कालजयी बन गई है.

13.3 'तमस' उपन्यास की भाषा-शैली

इसके अंतर्गत 'तमस' उपन्यास की भाषा, शब्द-सौन्दर्य और शिल्प सौन्दर्य की दृष्टि से निम्नलिखित अध्ययन समीचीन है –

13.3.1 'तमस' उपन्यास की भाषा

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' अपने कथ्य और यथार्थवादी प्रस्तुति के साथ-साथ अपनी भाषा के कारण भी अद्वितीय बनता है. किसी भी साहित्यिक रचना की प्रभावशीलता उसकी भाषा पर निर्भर करती है, और 'तमस' में भाषा का प्रयोग इतनी सजीवता और स्वाभाविकता से किया गया है कि वह पाठकों को घटनाओं और पात्रों के अत्यंत निकट ले आती है.

इस उपन्यास में भाषा के दो स्तर स्पष्ट रुप से देखे जा सकते हैं – एक, लेखक की अपनी वर्णनात्मक भाषा और दूसरी, पात्रों द्वारा प्रयुक्त भाषा. लेखक की भाषा सहज, प्रवाहमयी और सजीव है, जो उपन्यास की संवेदनशीलता को और भी प्रभावी बनाती है. भीष्म साहनी ने भाषा के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है.

छात्रों की भाषा उनके सामाजिक परिवेश, वर्ग और शिक्षा स्तर के अनुसार भिन्न है. उच्च वर्ग और शिक्षित पात्रों की भाषा परिष्कृत और सुसंस्कृत है, जबकि मजदूर वर्ग और ग्रामीण पात्रों की भाषा में ठेठ स्थानीय शब्दावली और बोलचाल की शैली देखी जा सकती है. उदाहरण के लिए, नत्थू जैसे पात्र की भाषा में सरलता और सीधेपन का भाव स्पष्ट झलकता है, जबकि राजनीतिक नेताओं और अधिकारियों की भाषा में औपचारिकता और कूटनीति का समावेश है.

भीष्म साहनी की भाषा शैली में कहीं व्यंग्य तो कहीं करुणा का अद्भुत संतुलन देखने को मिलता है. वे शब्दों के माध्यम से समाज की विसंगतियों को उभारते हैं और पाठकों के मन में एक गहरी संवेदनशीलता उत्पन्न करते हैं. उपन्यास की भाषा प्रभावशाली, स्वाभाविक और मर्मस्पर्शी है, जो इसे एक कालजयी कृति बनाती है.

'तमस' उपन्यास की भाषा का विश्लेषण करते समय हमें कथा-वर्णन और संवादों में विभिन्न भाषिक शैलियों के निम्नलिखित रुप देखने को मिलते हैं –

(1) देशज व स्थानीय बोलियों से प्रभावित भाषा

(2) परिष्कृत एवं मानक हिंदी का स्वरुप

(3) अरबी-फारसी शब्दावली से युक्त उर्दू शैली

(4) देवनागरी लिपि में प्रयुक्त अंग्रेजी के शब्द एवं वाक्यांश

13.3.1.1 देशज व स्थानीय बोलियों से प्रभावित भाषा

'तमस' उपन्यास का घटनाक्रम पंजाब के नूरपुर तहसील में आधारित है, जहाँ विभिन्न समुदायों सिख, हिंदू और मुस्लिम के संवादों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है. भीष्म साहनी ने पात्रों की भाषा को उनके परिवेश और सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुरूप ढालते हुए आँचलिक पंजाबी शब्दावली का कुशलता से प्रयोग किया है. यह भाषा न केवल संवादों को स्वाभाविक बनाती है, बल्कि पात्रों की मानसिकता और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को भी उभारती है.

हरनाम सिंह, बंतो और राजो के प्रसंगों में इस भाषा का विशेष रूप से प्रभावशाली प्रयोग हुआ है. राजो के संवादों में भी पंजाबी भाषा का मिश्रण मिलता है, जिससे उसकी भावनाओं और सामाजिक परिवेश को गहराई मिलती है. इस प्रकार, आँचलिक भाषा का प्रयोग उपन्यास को यथार्थपरक और सजीव बना देता है. उदाहरण के लिए,

हरनाम सिंह गोद में रखे हाथ जोड़ देता और अपने ईश्वर को याद करते हुए कहता

'जिसके सिर ऊपर तूं स्वामी, सो दुःख कैसा पावे?'

'हे मालिक! जिसके सिर पर तेरा हाथ है, वह दुःख क्यों कर पाएगा?'

'सुन भागे भारिये, असां कदे किसे दा बुरा नहीं चेतेआ, बुरा नहीं कीता. इथों दे लोकी वी साडे नाल भरावां वांग रहि हन. तेरियां अखां सामने करीमखान दस वार कह गइया हैः चुपचाप बैठे रहो, तुहाड़े वल कोई अख चुक के वी नहीं वेखणगा. करीमखान तों वड्डा मोतबर इथों कौन है? इक्को इक इथे सिक्ख घर है. के गिरांवालियां नूं साडे ते हत्थ चुकदियां गैरत नहीं आवेगी?'

'सुन भागे भारिये, हमें किसी का कुछ देना नहीं है, हमने कभी किसी का बुरा नहीं सोचा, न ही कोई बुरा किया. यहाँ के लोग भी हमारे साथ भाईचारे की तरह ही रहे हैं. तेरी आँखों के सामने करीमखान कम से कम दस बार कह गया हैः 'चुपचाप बैठे रहो, तुम्हारी ओर कोई आँख उठाकर भी नहीं देखेगा. करीमखान से बड़ा सम्मानित व्यक्ति यहाँ और कौन है? पूरे गाँव में एक ही सिक्ख घर है. क्या गाँववालों को शर्म नहीं आएगी कि वे निहत्थे बूढ़ों पर हाथ उठाएँ?'

उपरोक्त संवाद में हरनाम सिंह के विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए पंजाबी मिश्रित हिंदी का उपयोग किया गया है, जिससे भाषा अधिक स्वाभाविक और यथार्थपरक बनती है.

संवादों में पंजाबी भाषा के शब्दों और मुहावरों का प्रयोग पात्रों की स्थानीयता और मानसिकता को दर्शाने में सहायक होता है. सुन भागे भारिये, असां कदे किसे दा बुरा नहीं चेतेआ जैसे वाक्य, हरनाम सिंह के शांत और न्यायप्रिय स्वभाव को उजागर करते हैं. साथ ही, करीममान का उल्लेख गाँव में आपसी विश्वास और भाईचारे को भी दर्शाता है.

इन संवादों में न केवल भावनात्मक गहराई है, बल्कि भाषा का प्रवाह भी कथानक की गंभीरता को प्रकट करता है. इससे स्पष्ट होता है कि भीष्म साहनी ने भाषा का प्रयोग केवल संवाद भर के लिए नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और सामाजिक यथार्थ को दर्शाने के लिए किया है.

13.3.1.2 परिष्कृत एवं मानक हिंदी का स्वरूप

'तमस' उपन्यास में परिष्कृत एवं मानक हिंदी का प्रयोग मुख्यतः धार्मिक संदर्भो या गंभीर विचार-विमर्श के दौरान किया गया है. ऐसे स्थलों पर भाषा अधिक व्यवस्थित, स्पष्ट और औपचारिक प्रतीत होती है, जिससे संवादों को गंभीरता और गहराई मिलती है.

यह भाषा मुख्यतः उन प्रसंगों में देखी जाती है जहाँ पात्र किसी धार्मिक ग्रंथ का उल्लेख

कर रहे होते हैं या किसी महत्वपूर्ण सामाजिक या राजनीतिक समस्या पर विचार कर रहे होते हैं. उपन्यास में इस भाषा का प्रयोग सीमित है, क्योंकि अधिकांश संवाद पात्रों के सामाजिक परिवेश के अनुरूप स्थानीय भाषा में ही रखे गए हैं. फिर भी उदाहरणस्वरूप उपरोक्त वाक्यों को ले सकते हैं –

"सचमुच ऐसा प्रतीत होने लगा कि जैसे शांति का लौकिक प्रभाव वातावरण में फैलने लगा है, चारों ओर शांति व्याप्त हो रही है, और इन मुक्त कंठों से निकलने वाली शांति की ध्वनि घर-घर तक पहुँच रही थी. 'अंतिम आहुति' में सचमुच सभी को अपार आनंद का अनुभव हो रहा था. मंत्रोच्चारण के पश्चात एक प्रार्थना गीत गाया जाता, जिसमें समस्त चर-अचर जगत के सुख की कामना की जाती. ताली बजाकर वानप्रस्थी जी गा रहे थे

"सब पर दया करो भगवान, सब पर कृपा करो भगवान..."

उपरोक्त अंश तमस उपन्यास की भाषा और भावनात्मक गहराई को प्रभावी ढंग से प्रकट करता है. इसमें धार्मिक और आध्यात्मिक वातावरण का चित्रण किया गया है, जहाँ शांति और सामूहिक प्रार्थना का प्रभाव स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है. भाषा परिष्कृत एवं संस्कारित हिंदी में है, जिससे गंभीरता और भक्ति-भाव प्रकट होता है.

शांति का लौकिक प्रभाव, चर-अचर जगत जैसे शब्द उपन्यास की काव्यात्मक अभिव्यक्ति को दर्शाते हैं. संवाद प्रवाहमयी और संप्रेषणीय हैं, जो दृश्य को सजीव बना देते हैं. संपूर्ण अंश में आध्यात्मिकता और मानवीय एकता की भावना झलकती है, जो उपन्यास के भावनात्मक प्रभाव को और प्रबल करती है.

13.3.1.3 अरबी-फारसी शब्दावली से युक्त उर्दू शैली

भीष्म साहनी की भाषा शैली में विविधता देखने को मिलती है. जहाँ एक ओर शुद्ध हिंदी और संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग किया गया है, वहीं अरबी-फारसी मिश्रित उर्दू भाषा के अनेक शब्द भी उपन्यास में प्रयुक्त हुए हैं. यह भाषा विशेष रूप से मुस्लिम पात्रों के संवादों में देखने को मिलती है, जिससे उनका सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश वास्तविक प्रतीत होता है. इस शैली का प्रयोग पात्रों की प्रामाणिकता बनाए रखने और उपन्यास को यथार्थवादी स्वरूप देने में सहायक सिद्ध होता है. जैसे –

"सुनो बरख़ुरदार, जहाँ मैंने किश्ती में छेद किया था और तुम बिगड़ने लगे थे, दरअसल उस गाँव का हाकिम बड़ा जालिम है. वह अपनी ऐश-इशरत के लिए गरीब लोगों की किश्तियाँ छीन लेता है. मैंने सोचा कि इस नाव में छेद कर दूँ ताकि हाकिम के आदमी इसे न उठाएँ, उसे वहीं छोड़ दें और पत्तन वाले का रोज़गार बना रहे." मूसा चुपचाप सुनता रहा.

"पर आपने उस बेगुनाह बच्चे को क्यों मारा?"

"सुनो, सुनो, अभी बताता हूँ. वह बच्चा हराम की औलाद था, हलाल की नहीं. जिस आदमी की वह संतान है, वह बड़ा जालिम और नापाक है. मैंने उस बच्चे को इसलिए कत्ल कर दिया कि वह बड़ा होकर जाहिल बनता और बेगुनाह लोगों पर जुल्म करता. अब बताओ, मैंने अच्छा किया या बुरा?"

उपन्यास 'तमस' के इस अंश में भीष्म साहनी ने उर्दू मिश्रित हिंदी भाषा का प्रभावशाली प्रयोग किया है, जिससे संवाद अधिक यथार्थपरक और स्वाभाविक प्रतीत होते हैं. बरख़ुरदार, हाकिम, जालिम, ऐश-इशरत, हराम, हलाल, कत्ल, जाहिल, और जुल्म जैसे अरबी-फारसी शब्द मुस्लिम पात्रों की भाषा-शैली को प्रामाणिक बनाते हैं.

इस अंश में पात्र के विचारों और मानसिकता को गहराई से उभारा गया है. एक विकृत तर्क के आधार पर वह अपने अपराध को न्यायोचित ठहराने का प्रयास कर रहा है, जो सामाजिक

और नैतिक पतन को दर्शाता है. संवाद शैली पात्र की मानसिकता को उभारने में सफल रही है. यह हिस्सा उपन्यास की विचारधारा को गहराई से प्रतिबिंबित करता है, जहाँ सांप्रदायिकता, कट्टरता और नैतिक विडंबनाओं पर प्रकाश डाला गया है.

13.3.1.4 देवनागरी लिपि में प्रयुक्त अंग्रेजी के शब्द एवं वाक्यांश

भीष्म साहनी ने 'तमस' उपन्यास में अंग्रेजी भाषा के प्रयोग को भी यथार्थपरक रूप देने के लिए देवनागरी लिपि में प्रस्तुत किया है. उपन्यास में कुछ अंग्रेजी पात्र, विशेष रूप से ब्रिटिश अधिकारी और प्रशासनिक लोग, हिंदी में संवाद करते हैं, लेकिन कई बार वे अपनी भाषा में भी बोलते हैं. इन अंग्रेजी वाक्यों को साहनी जी ने देवनागरी में लिखा है, जिससे पाठकों को उनके उच्चारण और संवाद शैली का वास्तविक अनुभव हो सके. उदाहरण स्वरूप

'यू हिंद, बाबू?'

'यस, मैडम', बाबू ने तनिक झेंपकर कहा. लीज़ा अपनी सूझ पर खिल उठी.

'आई गेस राइट.'

'यस, मैडम.'

'यू आर नो हिंद, यू टोल्ड अ लाई.'

'नो, मैडम, आई एम अ हिंदू, अ ब्राह्मण हिंदू.'

'ओ नो, देन व्हेयर इज़ योर जनेऊ?'

'नो, मैडम, आई एम अ हिंदू.'

'टेक ऑफ योर कोट, बाबू,' लीज़ा ने कहा.

'ओह, मैडम.' बाबू फिर झेंप गया.

'टेक ऑफ, टेक ऑफ, हरी!'

इस अंशों में भीष्म साहनी ने अंग्रेजी भाषा के प्रभाव को प्रकट करने के लिए अंग्रेजी संवादों को देवनागरी लिपि में प्रस्तुत किया है, जिससे अंग्रेजी बोलने वाले पात्रों की स्वाभाविकता और औपनिवेशिक माहौल को सजीवता मिलती है. लीज़ा और बाबू रोशनलाल के संवादों से अंग्रेजों और भारतीयों के बीच की भाषायी और सांस्कृतिक दूरी स्पष्ट होती है.

लीज़ा का संदेह और बाबू की झेंप संवादों में व्यंग्य और हास्य का पुट जोड़ते हैं. 'यू आर नो हिंद, यू टोल्ड अ लाई' और 'व्हेयर इज योर जनेऊ?' जैसे संवाद ब्रिटिश मानसिकता और भारतीय पहचान को लेकर व्याप्त भ्रांतियों को उजागर करते हैं. इस भाषा-शैली से पात्रों की मनोवैज्ञानिक स्थिति भी स्पष्ट होती है बाबू का संकोच और लीज़ा का आत्मविश्वास.

साहनीजी की यह शैली उपन्यास को यथार्थपरक और प्रासंगिक बनाती है, जिससे पाठक उस समय की औपनिवेशिक व्यवस्था को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं.

13.3.2 शब्द सौंदर्य

साहनी जी के शब्द-शिल्प-सौंदर्य के अंतर्गत हिंदी के तत्सम और तद्भव शब्द, देशज शब्द, पंजाबी शब्द, उर्दू शब्द, अंग्रेजी शब्द, मुहावरों आदि का समावेश किया गया है.

13.3.2.1 हिंदी के विशुद्ध तत्सम शब्द

साहनी जी ने 'तमस' उपन्यास में हिंदी के विशुद्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग अत्यंत सावधानी और संतुलन के साथ किया है. तत्सम शब्द वे शब्द होते हैं, जो सीधे संस्कृत से लिए गए होते हैं और जिनका स्वरूप बिना किसी परिवर्तन के हिंदी में प्रयुक्त होता है. इन शब्दों

का उपयोग उपन्यास में विशेषतः धार्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और विचारशील संवादों में देखने को मिलता है.

उपन्यास में प्रयुक्त प्रमुख तत्सम शब्दों में मंत्रोच्चारण, पुण्यात्मा, दुःस्वप्न, अंतरंग, कंठ, कंठस्थ, विसर्जन, अंतःप्रेरणा, विशिष्ट, सत्संग, सभासद, विचलित, कृतज्ञ, परिप्रेक्ष्य, निश्चेष्ट, आहुति, प्रवचन, भावोद्वेलित, उत्तेजित, संपन्न, प्रातः आदि प्रमुख हैं.

इन शब्दों के प्रयोग से भाषा की गंभीरता, औपचारिकता और प्रभावशीलता बनी रहती है. साथ ही, वे उपन्यास की कथावस्तु को अधिक प्रामाणिकता प्रदान करते हैं और पाठकों को कथानक की गहराई तक पहुँचाने में सहायक होते हैं.

13.3.2.2 हिंदी के तद्भव शब्द

साहनी जी ने 'तमस' उपन्यास में परिवेशगत स्वाभाविकता बनाए रखने के लिए तद्भव शब्दों का व्यापक रूप से उपयोग किया है. तद्भव शब्द वे शब्द होते हैं जो प्राकृत एवं अपभ्रंश के माध्यम से संस्कृत से विकसित हुए हैं और आम बोलचाल की भाषा में सहज रूप से प्रयुक्त होते हैं. इनके प्रयोग से भाषा में सरलता, प्रवाह और संवाद की जीवंतता बनी रहती है.

उपन्यास में प्रयुक्त तद्भव शब्दों में - दीया, मुँह, धुएँ, साँस, मसान, घोड़ा, मिट्टी, सुअर, लड़ाई, कुटिया, घरौंदा, रोटी, आग, पानी, बच्चा, झगड़ा, सड़क, बखान आदि प्रमुख हैं. इन शब्दों के माध्यम से पात्रों के संवाद अधिक स्वाभाविक और यथार्थपरक प्रतीत होते हैं, जिससे उपन्यास की भाषिक सजीवता बनी रहती है.

13.3.2.3 देशज शब्दों का प्रयोग

देशज शब्द वे शब्द होते हैं, जो किसी विशिष्ट क्षेत्र, लोकजीवन या जनसाधारण में प्रचलित होते हैं और जिनका प्रयोग सामान्यतः बोलचाल की भाषा में अधिक किया जाता है. इन शब्दों की विशेषता यह होती है कि वे कथानक को अधिक जीवंत और प्रभावी बना देते हैं. 'तमस' उपन्यास में साहनी जी ने ऐसे शब्दों का पर्याप्त प्रयोग किया है, जिससे भाषा सहज, प्रवाहमयी और पात्रों के अनुकूल बन सकी है.

उपन्यास में प्रयुक्त प्रमुख देशज शब्द हैं - थूथनी, छकड़ा, किकियाना, तोंद, झींकना, चरमराना आदि. ये शब्द भले ही कुछ पाठकों के लिए अपरिचित हो सकते हैं, किंतु इनसे भाषा में एक विशेष आँचलिकता और स्वाभाविकता का संचार होता है. इन शब्दों के माध्यम से न केवल पात्रों की मानसिकता बल्कि उनके सांस्कृतिक और भौगोलिक परिवेश का भी स्पष्ट चित्रण किया गया है, जिससे उपन्यास की भाषा अधिक प्रभावशाली और सजीव बन गई है.

13.3.2.4 पंजाबी शब्द

भीष्म साहनी का 'तमस' उपन्यास पश्चिमी पंजाब की पृष्ठभूमि पर आधारित है, इसलिए इसमें पंजाबी भाषा और उसके शब्दों का स्वाभाविक रूप से प्रयोग हुआ है. पंजाबी शब्दों के प्रयोग से कथा अधिक प्रामाणिक और प्रभावशाली बन गई है. इससे न केवल पात्रों की स्थानीयता और सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि स्पष्ट होती है, बल्कि भाषा में एक विशेष आँचलिकता और वास्तविकता भी आ जाती है.

उपन्यास में कई पंजाबी शब्द प्रयुक्त हुए हैं, जैसे अंख, देखणगा, साँडे, आण, रोकणा, सरबद्ध, दा रब्ब राखा, सत श्री अकाल, करमावालियाँ, भाड़ा, भड़द, पुछसन, भैण, चहवां, ओखा, वेला, विचों, कड्ढ, कोल आदि. इन शब्दों का प्रयोग संवादों और वर्णन दोनों में हुआ है, जिससे उपन्यास का परिवेश और भी अधिक जीवंत एवं सजीव प्रतीत होता है. साहनी जी ने पंजाबी भाषा के प्रयोग से उपन्यास को वास्तविकता के करीब ला दिया है, जिससे

पाठक कथा के वातावरण से आसानी से जुड़ पाते हैं.

13.3.2.5 उर्दू शब्दों का प्रयोग

भीष्म साहनी के 'तमस' उपन्यास में उर्दू शब्दों का भरपूर प्रयोग देखने को मिलता है. यह स्वाभाविक भी है क्योंकि उपन्यास की कथा पंजाब के सांप्रदायिक तनाव के समय की पृष्ठभूमि पर आधारित है, जहाँ हिंदू, मुस्लिम और सिख समुदाय के लोग परस्पर संवाद करते हैं. उर्दू भाषा का प्रभाव मुसलमान पात्रों की बातचीत में तो स्पष्ट रूप से झलकता ही है, किंतु हिंदू पात्रों की भाषा में भी कई उर्दू शब्द देखने को मिलते हैं. इससे यह स्पष्ट होता है कि विभाजन-पूर्व भारत में भाषाई आदान-प्रदान किस तरह गहराई से जुड़ा हुआ था.

उपन्यास में प्रयुक्त उर्दू शब्दों में मुगालता, मजबूर, दरयाफ्त, तजबीज, तकरीर, नुमाइंदा, तौबा-इस्तगफ़ार, बुजुर्गवार, सफ़ेदरीश, इश्तिआल, पेशतर, हुज्जतबाज़ी, महकमा, बाख़बर, सरपरस्त, आमदरफ्त, अदावत, जद्दोजहद, तसबीह, जलाल, ज़ियारत, हुजूम, नमूदार, एहतियात, इल्हाम, इत्तला, सरगर्मी, नश्तर, बदहवास, हमसाया, एतबार, गुमराह, सरअंजाम, सियासत, सदारत, बाजाब्ता, मुन्तख़िब, अजहद, फ़िरकावाराना, अनासिर, मुश्तरका, मुत्तफ़िक्का, तबादला, तब्दीली, तफ़रीह आदि शामिल हैं.

इन शब्दों का प्रयोग उपन्यास को अधिक प्रामाणिक बनाता है और विभाजन काल की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को भी दर्शाता है. साहनी जी ने इन शब्दों के माध्यम से पात्रों के सामाजिक परिवेश, मानसिकता और परिस्थितियों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है.

13.3.2.6 अंग्रेजी शब्द

भीष्म साहनी के तमस उपन्यास में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हुआ है. उपन्यास की कथा विभाजन-पूर्व भारत की पृष्ठभूमि में रची गई है, जहाँ ब्रिटिश शासन का प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखाई देता है. इस कारण प्रशासन, शिक्षा, समाज और राजनीतिक गतिविधियों से जुड़े कई अंग्रेजी शब्द उपन्यास में प्रयुक्त हुए हैं.

विशेष रूप से, अंग्रेजी अधिकारी और भारतीय पात्रों के संवादों में मास्टर, मिनट, कम्युनिस्ट कमेटी, स्कूल, मीटिंग, लिस्ट, कमिश्नर, पिकनिक, स्पोर्ट, सेक्रेटरी, डाइनिंग रुम, कैंटोनमेंट, सुप्रिंटेंडेंट, अटेंशन, कॉलेज, फर्स्ट ईयर, प्रिंसिपल, साइकिल, मेंबर, टेलीफोन, डिप्टी, असिस्टेंट, सिटी पोस्ट मास्टर, डॉक्टर, लीडर, पार्टी, आइटम, हॉल, हेल्थ ऑफिसर, प्रेसिडेंट, म्यूजियम, डिसइन्फेक्टेंट आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है.

इन शब्दों के प्रयोग से उपन्यास का भाषायी स्वरूप अधिक यथार्थपरक और प्रभावशाली बन गया है. इससे ब्रिटिश शासनकाल की सामाजिक एवं प्रशासनिक स्थिति का सजीव चित्रण होता है और भाषा में स्वाभाविकता बनी रहती है.

13.3.2.7 मुहावरों का प्रयोग

भीष्म साहनी ने 'तमस' में भाषा को अधिक सजीव, प्रवाहमय और प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न मुहावरों का प्रयोग किया है. इन मुहावरों से न केवल पात्रों की मन:स्थिति स्पष्ट होती है, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को भी मजबूती मिलती है.

उपन्यास में प्रयुक्त प्रमुख मुहावरों में जान सांसत में होना, हाथ-पैर फूलना, पौ-बारह होना, .जहर का घूंट पीना, आग-बबूला होना, सुरख़ाब के पर लगना, चेहरा पीला पड़ना, आस्तीन का साँप होना, समंदर में रहकर मगर से बैर करना, चैन की साँस लेना, बत्तीसी निपोरना, तू-तू-मैं-मैं करना, उधेड़बुन में रहना, मारे-मारे फिरना, लोहा लेना, आँखों में खून उतरना, सन्नाटा छा जाना आदि शामिल हैं.

इन मुहावरों के प्रयोग से पात्रों के संवाद अधिक स्वाभाविक और प्रभावशाली बन गए हैं. इनसे कथा में भावनात्मक गहराई उत्पन्न होती है और घटनाओं का प्रभाव पाठकों पर अधिक पड़ता है. भीष्म साहनी की भाषा-शैली में इन मुहावरों का समावेश उपन्यास को अधिक यथार्थपरक और जीवंत बना देता है, जिससे पाठक विभाजनकालीन भारत की त्रासदी को और गहराई से अनुभव कर सकते हैं.

भीष्म साहनी जी की भाषा-शैली में तत्सम, तद्भव, देशज, पंजाबी, उर्दू और अंग्रेजी शब्दों के साथ-साथ मुहावरों का भी प्रभावी प्रयोग हुआ है. इन तत्वों के समावेश से तमस की भाषा अधिक प्रभावशाली, सहज और यथार्थपरक बन गई है. मुहावरों और विविध भाषायी प्रयोगों से कथा को स्वाभाविक प्रवाह मिला है, जिससे पात्रों की भावनाएँ और परिस्थितियाँ जीवंत रुप में उभरकर सामने आती हैं, और पाठक उस दौर की त्रासदी को गहराई से महसूस कर पाते हैं.

13.3.3 शिल्प सौंदर्य

'तमस' उपन्यास में औपन्यासिक दृष्टि से निम्नलिखित चार शैलियाँ प्रयुक्त हुई हैं –

13.3.3.1 नाटकीय शैली

'तमस' उपन्यास के संवादों में नाटकीय शैली का प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखाई देता है. पात्रों के संवाद उनके मानसिक द्वंद्व, सामाजिक परिस्थितियों और तत्कालीन माहौल को प्रभावी रुप से व्यक्त करते हैं. रिचर्ड, शाहनवाज और नत्थू के संवादों में गहरी संवेदनशीलता और मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व झलकता है. नत्थू की पत्नी का सायास आचरण और उसकी चिंताओं को भी नाटकीय शैली में प्रस्तुत किया गया है. इसी प्रकार, हरनाम सिंह और बंतो के बीच होने वाले संवादों में भावनात्मक उथल-पुथल दिखाई देती है. संवाद पात्रों की मानसिक स्थिति, सामाजिक तनाव और विभाजन की विभीषिका को प्रभावशाली ढंग से उभारते हैं, जिससे उपन्यास की कथात्मकता और गहराई बढ़ जाती है.

हरनाम सिंह बलवाइयों से बचने के लिए घर छोड़कर अपनी पत्नी बन्तो को लेकर निकल पड़ता है. आश्रय की खोज में किसी परिचित के यहाँ दस्तक देना कितना नाटकीय लगता है

"तभी वे गाँव के बाहर ही पहले घर के सामने रुक गए. दरवाजा बंद था. न जाने किसका घर था. कौन लोग दरवाजे के पीछे रहते थे. दरवाजा खुलेगा तो किस्मत जाने क्या गुल खिलाएगी. हरनाम सिंह ने हाथ ऊपर उठाया, क्षणभर के लिए उसका हाथ ठिठका रहा, फिर उसने दस्तक दी."

यही प्रसंग तब और भी अधिक नाटकीय हो जाता है जब वह घर मुसलमान का ही निकलता है.

डॉ. ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश' 'तमस' की नाटकीयता के बारे में लिखते हैं - 'तमस' में संवाद-बाहुल्य तो है ही, किंतु अधिक उल्लेखनीय है उनका नाटकीय भूमिका में होना. एक ही समय में उत्तेजित भी करते हैं, उत्तेजना उपशमित भी करते हैं, बैर भी जगाते हैं और दोस्ती भी. गति भी देते हैं और गति को बाधित कर पुनः वेग का निमित्त भी बनते हैं.

'तमस' उपन्यास की नाटकीयता को स्पष्ट करने वाला यह अंश कथानक की संवेदनशीलता और संवादों की गहराई को दर्शाता है. हरनाम सिंह का आश्रय की खोज में किसी अनजान दरवाजे पर दस्तक देना, उसका ठिठकना और फिर उस घर का मुसलमान का निकलना, घटनाक्रम को और भी नाटकीय बना देता है. यह न केवल विभाजनकालीन असुरक्षा और भय को दर्शाता है, बल्कि मानवीय रिश्तों की जटिलता को भी उजागर करता है. डॉ. ओमप्रकाश शर्मा 'प्रकाश'

का कथन उपन्यास में संवादों की बहुआयामी भूमिका को रेखांकित करता है, जो कथानक को गति देने, भावनाओं को उभारने और कथा को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक होते हैं.

13.3.3.2 वर्णनात्मक शैली

भीष्म साहनी ने 'तमस' में वर्णनात्मक शैली का प्रभावी प्रयोग किया है, जिससे उपन्यास के दृश्य जीवंत प्रतीत होते हैं. प्रत्येक वर्णन में नवीनता और यथार्थपरकता है. चाहे दंगों की भयावहता हो, पात्रों के मनोभाव हों या सामाजिक परिस्थितियाँ, साहनी जी का वर्णनात्मक कौशल घटनाओं को सजीव बना देता है. साहनी जी की इस शैली का एक उदाहरण द्रष्टव्य है –

"यों देखा जाए तो यह गाँव बड़ा सुंदर था. अमन-चैन के दिनों में कोई यहाँ आए तो इसकी खूबसूरती पर मुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता था. लगता, भगवान ने अपने हाथ से बनाया है. छोटी-सी नदी के ऊपर एक छोटी-सी पहाड़ी पर घोड़े की नाल की शक्ल में यह गाँव बसा था. नदी के नीले जलप्रवाह के पार लुकाटों के घने बाग थे, जहाँ अनेक झरने बहते थे. इन दिनों लुकाट पक रहे थे और तोतों के झुंड पेड़ों में बसे हुए थे. इन दिनों नदी का रंग भी आसमान की तरह नीला लग रहा था. जमीन की मिट्टी लालीमय या कालिमायुक्त थी. गाँव के बाहर खेतों का प्रसार उस पहाड़ी तक चला गया था, जो इस प्रदेश की पीठ पर खड़ी थी. हर घड़ी पहाड़ी का रंग बदलता रहता था - कभी वह झीनी-सी नीली चादर ओढ़ लेती, कभी उसका चेहरा तपे तांबे जैसा दमकने लगता, कभी उसके कंधों पर सुरमई घटाएँ खेलने लगतीं, कभी उस पर हरियाली बिछ जाती. इस पहाड़ी के भी दामन में झरने ही झरने थे, और घने बड़े और अंजीर के पेड़ थे. इसी प्रकृति-स्थल की गोद में इस गाँव के सभी लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी रहते चले आए थे."

इस अंश में भीष्म साहनी ने अत्यंत चित्रात्मक और संवेदनशील वर्णन प्रस्तुत किया है, जिससे गाँव का सौंदर्य जीवंत हो उठता है. प्रकृति का सूक्ष्म अवलोकन, रंगों और परिवेश के बदलाव का प्रभावी चित्रण, तथा नदी, पहाड़ी, झरनों और बागों का सजीव विवरण इसे विशेष बनाता है. भाषा सहज, प्रवाहमयी और काव्यात्मक है, जो पाठक के मन में दृश्य को उकेर देती है. यह अंश केवल प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन नहीं करता, बल्कि गाँव की शांति, स्थायित्व और उसकी सांस्कृतिक जड़ों को भी दर्शाता है.

13.3.3.3 विश्लेषणात्मक शैली

'तमस' उपन्यास में विश्लेषणात्मक शैली का प्रभावशाली प्रयोग किया गया है, जिससे साम्प्रदायिक तनाव के बीच जी रहे लोगों की मानसिक स्थिति, भय और द्वंद्व को गहराई से दर्शाया गया है. लीज़ा के मानसिक तनाव, नत्थू के अंतर्द्वंद्व और हरनाम सिंह के मानसिक उद्वेलन जैसे प्रसंगों को सूक्ष्मता से विश्लेषित किया गया है. लेखक ने पात्रों की मनोवैज्ञानिक जटिलताओं को गहराई से उकेरा है, जिससे पाठक उनके भीतर चल रहे संघर्ष को अनुभव कर पाता है. यह शैली कथा को अधिक प्रभावी और यथार्थपरक बनाती है. हरनाम सिंह की इस मानसिक स्थिति का चित्रण विश्लेषणात्मक शैली द्वारा एकदम सजीव बन पड़ा है –

"बंदूक दे चुकने के बाद हरनाम सिंह को इस बात का ध्यान आया कि देने से पहले उसमें से गोलियाँ तो निकाल लेता. भरी हुई बंदूक उसके हाथ में दे दी. पर फिर सिर झटक दिया. जहाँ जिंदगी ही अनिश्चय में डोल रही है, वहाँ क्या फर्क पड़ता है कि बंदूक में से गोलियाँ निकाल भी लीं या नहीं निकालीं. निकाल लेता तो मौत का एक और मनसूबा कम हो जाता, नहीं निकालीं तो मौत के हजार मनसूबों में एक और मनसूबा जा मिला. हरनाम सिंह ने ठंडी साँस भरी, इतनी गहरी कि बन्तो को लगा नीचे खड़ी औरत और उसकी बहू ने भी सुन ली होगी.

मियानी में फिर अँधेरा छा गया.

क्या से क्या हो गया था! कल इस वक्त बन्तो अपने घर में संदूक में से कपड़े सहेज रही थी, आज पति-पत्नी चूहों की तरह इस अंधेरी मियानी में घुसे बैठे थे. कल वह और करीम माँ इन फसादों को बुरा-भला कह रहे थे, उन लोगों को बुरा-भला कह रहे थे जिनकी आँखों से 'नींद' उड़ गई थी, मानो जो कुछ हो रहा था, वह उनके बाहर कहीं हो रहा था, जिस पर वे तटस्थता से बहस कर सकते थे, अपनी टिप्पणियाँ दे सकते थे. और अब वे स्वयं फसादों के एक ही झोंके से कहाँ-से-कहाँ पटक दिए गए थे.

सहसा यह सोचकर उसका दिल डूब गया कि बंदूक हाथ से निकल गई थी, कि अब वह उसे वापस नहीं मिलेगी. यह मैं क्या कर बैठा? अपने हाथों से अपने हाथ काट लिए. बंदूक तो मेरे लिए अंधे की लाठी के समान थी. अब वह मुझे कहाँ मिलेगी? सोचते ही हरनाम सिंह का पसीना छूट गया. उसे अपने से भी अधिक अपनी पत्नी की स्थिति शोचनीय लगी. अब मैं उसे अपने साथ ले जाऊँगा तो किस बूते पर? अब तो लोग पत्थर मार-मारकर हमें... मानव-प्रेम की बरसों की कमाई हरनाम सिंह यथार्थ के एक ही ठोकर में खो बैठा था.

इस अंश में भीष्म साहनी ने हरनाम सिंह के भीतर चल रहे मानसिक द्वंद्व को विश्लेषणात्मक शैली में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है. बंदूक खोने का पछतावा, जीवन की अनिश्चितता और दंगों की विभीषिका उसे भीतर तक हिला देती है. कल तक जो फसाद उसे बाहरी समस्या लग रहे थे, आज वही उसकी अपनी जीवन-यात्रा को तहस-नहस कर चुके हैं. बन्तो की सुरक्षा को लेकर उसकी चिंता, आत्मरक्षा के साधन छिनने का भय और अपने ही आदर्शों से लड़ते हुए यथार्थ के कठोर सत्य को स्वीकारना, इस अंश को गहन, मार्मिक और यथार्थपरक बना देता है.

13.3.3.4 फोटोग्राफिक शैली

'तमस' उपन्यास में भीष्म साहनी ने फोटोग्राफिक शैली का कुशलता से प्रयोग किया है, जिससे कई दृश्य एक चलचित्र की भाँति जीवंत हो उठते हैं. यह शैली विशेष रूप से मार्मिक प्रसंगों को प्रभावशाली बनाने में सहायक रही है. लेखक ने घटनाओं का इतना सूक्ष्म और यथार्थपरक चित्रण किया है कि पाठक स्वयं को उन परिस्थितियों के बीच खड़ा हुआ महसूस करता है.

विशेष रूप से दंगों के भयावह दृश्य, लाशों के बीच पसरा हुआ सन्नाटा, जलते हुए मकानों से उठता धुआँ और घबराए हुए लोगों के हाव-भाव इस शैली में इतनी स्पष्टता से उकेरे गए हैं कि वे आँखों के सामने दृश्य-रूप में उभर आते हैं. नत्थू के भीतर चल रहा डर, हरनाम सिंह और बन्तो की असहायता, और शाहनवाज का अंतर्द्वंद्व इन सभी प्रसंगों में यह शैली कथा की संवेदनशीलता को और गहरा कर देती है. लेखक का यह कौशल उपन्यास की प्रभावशीलता को कई गुना बढ़ा देता है.

इस तरह भीष्म साहनी का 'तमस' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि साम्प्रदायिक दंगों की त्रासदी का यथार्थपरक चित्रण है, जिसमें विभिन्न शैलीगत विशेषताओं का कुशल प्रयोग किया गया है. नाटकीय, विश्लेषणात्मक, वर्णनात्मक और फोटोग्राफिक शैली ने इसे अधिक प्रभावी और सजीव बना दिया है. संवादों की नाटकीयता, पात्रों के मानसिक अंतर्द्वंद्व का विश्लेषण, प्राकृतिक और सामाजिक परिवेश का सजीव वर्णन तथा चलचित्र की भाँति उभरते दृश्य सभी मिलकर कथा को गहराई और संवेदनशीलता प्रदान करते हैं. इन शैलियों के माध्यम से लेखक ने उपन्यास की मार्मिकता, यथार्थ और प्रभावशीलता को उच्च स्तर तक पहुँचाया है, जिससे पाठक इतिहास की उस भयावह सच्चाई से सीधे जुड़ जाता है.

13.4 'तमस' उपन्यास की भाषा-शैली का वैशिष्ट्य

भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' की भाषा-शैली सरल, सहज, प्रभावशाली और यथार्थपरक है. उपन्यास की भाषा जनसामान्य की समझ में आने वाली है, जिसमें कहीं भी अनावश्यक अलंकरण या जटिलता नहीं है. लेखक ने भावनाओं और घटनाओं को सीधे, स्पष्ट और सजीव रूप में प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक सहजता से उपन्यास की गंभीरता को महसूस कर पाता है.

संवादों की भाषा पात्रों के सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप है. पंजाबी, उर्दू, हिंदी और स्थानीय बोलियों के शब्दों का प्रयोग पात्रों की वास्तविकता को उभारने के लिए किया गया है. मुस्लिम पात्रों के संवादों में उर्दू शब्दावली का प्रभाव देखा जाता है, तो वहीं हिंदू और सिख पात्रों के संवादों में पंजाबी भाषा के तत्व दिखाई देते हैं. इससे उपन्यास की भाषा और अधिक जीवंत और प्रभावशाली बन जाती है.

लेखक ने भाषा को अत्यंत चित्रात्मक और भावनात्मक बनाया है, जिससे उपन्यास के दृश्य केवल पढ़ने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि पाठक के सामने एक चलचित्र की भांति जीवंत हो उठते हैं. विशेष रूप से दंगों, हिंसा, भय और असुरक्षा के दृश्यों का वर्णन अत्यंत सजीव रूप से किया गया है. जब लेखक किसी पात्र के दर्द, उसके भय या संघर्ष को चित्रित करता है, तो पाठक स्वयं को उस परिस्थिति में खड़ा हुआ महसूस करता है.

वर्णनात्मक भाषा का प्रयोग करते हुए भीष्म साहनी ने विभाजन के दौरान उत्पन्न होने वाली सामाजिक और राजनीतिक उथल-पुथल को अत्यंत यथार्थवादी ढंग से प्रस्तुत किया है. वातावरण का इतना प्रभावी चित्रण किया गया है कि पाठक उपन्यास के माध्यम से उस दौर की भयावह स्थिति को अपनी आँखों के सामने घटित होते हुए महसूस करता है.

'तमस' की भाषा में प्रतीकात्मकता भी देखने को मिलती है. स्वयं तमस शब्द ही अंधकार, हिंसा, अराजकता और मानवता के पतन का प्रतीक है. यह उपन्यास केवल एक ऐतिहासिक कथा नहीं है, बल्कि यह विभाजन के समय के अंधकारमय हालातों और इंसान के भीतर पनप रही संकीर्ण मानसिकता का भी प्रतिनिधित्व करता है. भाषा में प्रयुक्त प्रतीक और रूपक कथा की गहराई को और अधिक बढ़ाते हैं.

संवादप्रधान शैली इस उपन्यास की एक और महत्वपूर्ण विशेषता है. पात्रों के संवाद उनकी मानसिकता और परिस्थितियों को प्रभावी रूप से उभारते हैं. इनमें स्वाभाविकता है, जो उपन्यास की विश्वसनीयता को बढ़ाती है. इन संवादों के माध्यम से भीष्म साहनी ने विभिन्न समुदायों के बीच के मतभेद, उनकी आपसी शंकाएँ और विभाजन के कारण उत्पन्न हुई नफरत को उभारने का सफल प्रयास किया है.

'तमस' की भाषा-शैली में कोई बनावटीपन नहीं है, बल्कि इसे पूरी तरह यथार्थवादी और प्रभावोत्पादक रखा गया है. लेखक ने भाषा को पात्रों और घटनाओं के अनुरूप ढालकर इसे अत्यंत सहज, सशक्त और मार्मिक बना दिया है, जिससे पाठक विभाजन की भयावहता को केवल पढ़ता ही नहीं, बल्कि उसे गहराई से अनुभव भी करता है.

13.5 सारबिंदु

- 'तमस' उपन्यास भीष्म साहनी द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण कृति है, जिसमें भाषा और शैली का प्रयोग अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया गया है.
- उपन्यास की भाषा सरल, सहज एवं जनमानस के निकट है, जिससे पात्रों की भावनाएँ और सामाजिक यथार्थ सहजता से अभिव्यक्त होते हैं.
- इसमें देशज और स्थानीय बोलियों का प्रयोग हुआ है, जिससे संवाद अधिक स्वाभाविक और प्रभावशाली बनते हैं.

- परिष्कृत एवं मानक हिंदी का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया गया है, जिससे उपन्यास की भाषागत विविधता उभरकर सामने आती है.
- मुस्लिम पात्रों के संवादों में अरबी-फारसी शब्दावली का प्रयोग किया गया है, जो उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को प्रमाणिकता प्रदान करता है.
- अंग्रेजी शब्दों और वाक्यांशों का प्रयोग उस समय की सामाजिक परिस्थितियों को दर्शाता है, जिससे उपन्यास की भाषागत वास्तविकता बढ़ती है.
- तत्सम, तद्भव, देशज, पंजाबी, उर्दू और अंग्रेजी शब्दों के संतुलित प्रयोग से भाषा में प्रभावशीलता और संवेदनशीलता बनी रहती है.
- मुहावरों और लोकप्रचलित कहावतों का प्रयोग संवादों को अधिक जीवंत और यथार्थपरक बनाता है.
- नाटकीय शैली का प्रयोग कथा को गति देने और पात्रों के मनोभावों को सशक्त रूप में व्यक्त करने में सहायक है.
- वर्णनात्मक शैली के माध्यम से प्राकृतिक सौंदर्य, सामाजिक परिदृश्य और दंगों की विभीषिका का सजीव चित्रण किया गया है.
- विश्लेषणात्मक शैली के द्वारा पात्रों के मानसिक द्वंद्व, उनकी उलझनों और सामाजिक परिस्थितियों के प्रभाव को गहराई से व्यक्त किया गया है.
- फोटोग्राफिक शैली के कारण कई दृश्य चलचित्र की भांति आँखों के सामने उभरते हैं, जिससे उपन्यास की संवेदनात्मक शक्ति बढ़ जाती है.
- उपन्यास की भाषा-शैली कथानक की पृष्ठभूमि के अनुरूप ढली हुई है, जिससे पात्रों का चरित्र-चित्रण और अधिक सजीव बन जाता है.
- भाषा और शैली का प्रभावशाली प्रयोग इस कृति को केवल एक कथा न बनाकर सामाजिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दस्तावेज में परिवर्तित कर देता है.
- 'तमस' की भाषा-शैली इसकी संवेदनशीलता, यथार्थपरकता और अभिव्यक्ति की क्षमता को बल प्रदान करती है, जिससे यह एक कालजयी रचना बन जाती है.

13.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **बोध प्रश्न**
- **विस्तृत उत्तरीय प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास की भाषा-शैली को विस्तृत रूप से समझाते हुए यह स्पष्ट करें कि किस प्रकार यह उपन्यास अपने पात्रों, परिवेश और सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप भाषा का प्रयोग करता है?

(2) देशज, तद्भव, तत्सम, उर्दू, अंग्रेजी और पंजाबी शब्दों के प्रयोग के संदर्भ में 'तमस' की भाषागत विशेषताओं का वर्णन करें और उदाहरण सहित स्पष्ट करें कि यह प्रयोग उपन्यास की यथार्थता को किस प्रकार सशक्त बनाता है?

(3) तमस में प्रयुक्त नाटकीय, वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक और फोटोग्राफिक शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन करें और यह स्पष्ट करें कि इन शैलियों का उपन्यास की प्रभावशीलता में क्या योगदान है?

(4) भीष्म साहनी ने 'तमस' में संवादों की शैली को किस प्रकार विकसित किया है? उपन्यास के प्रमुख पात्रों के संवादों में प्रयुक्त भाषा और शैली का मूल्यांकन करें और यह स्पष्ट करें कि संवादों के माध्यम से सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को कैसे उभारा गया है ?

(5) 'तमस' की भाषा और शैली के माध्यम से भीष्म साहनी ने सांप्रदायिक तनाव और मानवीय संवेदनाओं को किस प्रकार अभिव्यक्त किया है? उपन्यास के कथानक से संबंधित उदाहरण देते हुए इस पर विचार करें.

- **लघु उत्तरीय प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास की भाषा-शैली की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?

(2) 'तमस' में देशज और स्थानीय बोलियों का प्रयोग क्यों किया गया है?

(3) उपन्यास में अरबी-फारसी और उर्दू शब्दावली का उपयोग किस प्रभाव को उत्पन्न करता है ?

(4) 'तमस' में नाटकीय शैली का प्रयोग किन प्रसंगों में किया गया है?

(5) वर्णनात्मक शैली उपन्यास में किस प्रकार दृश्यात्मक प्रभाव उत्पन्न करती है?

(6) विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किन पात्रों की मानसिक स्थिति को व्यक्त करने के लिए किया गया है?

(7) फोटोग्राफिक शैली किस प्रकार उपन्यास को अधिक सजीव बनाती है?

(8) 'तमस' में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग क्यों किया गया है?

(9) मुहावरों के प्रयोग से उपन्यास की भाषा में क्या प्रभाव उत्पन्न होता है?

(10) भीष्म साहनी ने तमस में संवादों को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए कौन-से तत्व अपनाए हैं?

- **टिप्पणी लिखिए.**

(1) 'तमस' उपन्यास की भाषा-शैली की प्रवाहमयता और प्रभावशीलता पर टिप्पणी लिखिए

(2) उपन्यास में प्रयुक्त देशज, तद्भव और उर्दू शब्दावली की भूमिका पर टिप्पणी करें

(3) 'तमस' में नाटकीय शैली के प्रयोग से कथा में उत्पन्न रोचकता पर टिप्पणी करें

(4) वर्णनात्मक शैली के माध्यम से उपन्यास में सजीव चित्रण पर टिप्पणी कीजिए

(5) विश्लेषणात्मक शैली द्वारा पात्रों की मानसिक स्थिति को उभारने की प्रभावशीलता पर टिप्पणी करें

(6) फोटोग्राफिक शैली द्वारा घटनाओं और दृश्यों को चित्रात्मक बनाने पर टिप्पणी करें

(7) 'तमस' में संवादों की स्वाभाविकता और उनके नाटकीय स्वरूप पर टिप्पणी करें

(8) उपन्यास में मुहावरों और कहावतों के प्रयोग की भाषा पर प्रभाव पर टिप्पणी करें

(9) अंग्रेजी, उर्दू और पंजाबी शब्दों के प्रयोग से भाषा में आए विविधता के स्वरूप पर टिप्पणी करें

(10) भीष्म साहनी की भाषा-शैली के माध्यम से सांप्रदायिकता और सामाजिक यथार्थ को उभारने की कुशलता पर टिप्पणी करें

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास की प्रमुख भाषा-शैली कौन-सी है?

(अ) केवल नाटकीय शैली (ब) केवल वर्णनात्मक शैली

(स) केवल विश्लेषणात्मक शैली (द) उपरोक्त सभी

(2) 'तमस' में कौन-सी भाषा का प्रयोग प्रमुखता से हुआ है?

(अ) संस्कृत (ब) मानक हिंदी

(स) हिंदी मिश्रित उर्दू (द) अंग्रेजी

(3) 'तमस' में संवादों की शैली कैसी है?

(अ) नाटकीय (ब) जटिल

(स) केवल व्याख्यात्मक (द) तर्क-वितर्क आधारित

(4) भीष्म साहनी ने 'तमस' में किस भाषा को अधिक महत्व दिया है?

(अ) संस्कृत (ब) अरबी

(स) देशज हिंदी (द) लैटिन

(5) 'तमस' उपन्यास में प्रयुक्त उर्दू शब्दावली किस प्रभाव को दर्शाती है?

(अ) सांस्कृतिक विविधता (ब) ब्रिटिश शासन का प्रभाव

(स) धार्मिक भेदभाव (द) केवल शुद्ध हिंदी का प्रभाव

(6) 'तमस' में नाटकीय शैली का प्रयोग किन उद्देश्यों से किया गया है?

(अ) कथा को रोचक बनाने के लिए

(ब) घटनाओं को यथार्थपूर्ण दर्शाने के लिए

(स) पात्रों के संवादों को प्रभावशाली बनाने के लिए

(द) उपरोक्त सभी

(7) फोटोग्राफिक शैली से उपन्यास में क्या प्रभाव उत्पन्न होता है?

(अ) घटनाओं का चित्रात्मक वर्णन (ब) भाषा में कठिनाई

(स) केवल संवादों की प्रधानता (द) केवल ऐतिहासिक संदर्भ

(8) 'तमस' में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग क्यों किया गया है?

(अ) पात्रों की भिन्न पृष्ठभूमि को दर्शाने के लिए.

(ब) उपन्यास को आधुनिक बनाने के लिए.

(स) केवल पाठकों को प्रभावित करने के लिए.

(द) अंग्रेजी भाषा को प्रचारित करने के लिए.

(9) विश्लेषणात्मक शैली किस प्रकार प्रभावशाली सिद्ध होती है?

(अ) पात्रों के मानसिक द्वंद्व को स्पष्ट करने में

(ब) केवल दृश्य-चित्रण में

(स) भाषा को कठिन बनाने में

(द) कथानक को धीमा करने में

(10) 'तमस' में पंजाबी शब्दों का प्रयोग किन्हें दर्शाने के लिए किया गया है?

(अ) हिंदू पात्रों को (ब) मुस्लिम पात्रों को

(स) अंग्रेज पात्रों को (द) सिख पात्रों को

(11) 'तमस' उपन्यास में किस प्रकार की शब्दावली का प्रमुखता से प्रयोग किया गया है?

(अ) कठिन संस्कृत शब्दावली (ब) सरल व बोलचाल की भाषा

(स) केवल साहित्यिक हिंदी (द) केवल अंग्रेजी मिश्रित भाषा

(12) नाटकीय शैली का प्रयोग किस प्रकार कथा को प्रभावित करता है?

(अ) घटनाओं को नाटकीय रूप से प्रस्तुत करता है.

(ब) उपन्यास को उबाऊ बना देता है.

(स) केवल संवादों को जटिल बनाता है.

(द) किसी भी प्रभाव को नहीं दर्शाता.

(13) मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में क्या प्रभाव पड़ता है?

(अ) भाषा अधिक जीवंत बनती है

(ब) भाषा कठिन हो जाती है

(स) कथा की गति धीमी हो जाती है

(द) पाठकों के लिए समझना कठिन हो जाता है

(14) 'तमस' उपन्यास की भाषा-शैली का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(अ) सामाजिक और सांप्रदायिक यथार्थ को उजागर करना

(ब) केवल मनोरंजन प्रदान करना

(स) ऐतिहासिक घटनाओं को रोचक बनाना

(द) केवल साहित्यिक सौंदर्य बढ़ाना

उत्तर 1. (द) उपरोक्त सभी 2. (स) हिंदी मिश्रित उर्दू 3. (अ) नाटकीय 4. (स) देशज हिंदी 5. (अ) सांस्कृतिक विविधता 6. (द) उपरोक्त सभी 7. (अ) घटनाओं का चित्रात्मक वर्णन 8. (अ) पात्रों की भिन्न पृष्ठभूमि को दर्शाने के लिए 9. (अ) पात्रों के मानसिक द्वंद्व को स्पष्ट करने में 10. (द) सिख पात्रों को 11. (ब) सरल व बोलचाल की भाषा 12. (अ) घटनाओं को नाटकीय रूप से प्रस्तुत करता है 13. (अ) भाषा अधिक जीवंत बनती है 14. (अ) सामाजिक और सांप्रदायिक यथार्थ को उजागर करना

13.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- **'तमस'** - भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- **उपन्यास : कला और सिद्धांत** - (संपादक: विनोद तिवारी, अजय आनंद), अनन्य प्रकाशन, दिल्ली-110032, वर्ष : 2016
- **कालजयी उपन्यास** - ममता देवी, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष : 2018
- **समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष** - डॉ. अर्जुन चव्हाण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष : 2012
- **समकालीन हिंदी उपन्यास : दशा और दिशा** - डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, वर्ष : 2018
- **समकालीन हिंदी उपन्यास : समाज और संवेदना** - संपादक: डॉ. वी. के. अब्दुल जलील, सह-संपादक: डॉ. पी. रवि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष : 2017

- **भारत-विभाजन और हिंदी उपन्यास** - हरियश, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली-110015, वर्ष : 1986
- **भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना** - राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर (संपादक), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 1982
- **शैली और शैली विश्लेषण** - डॉ. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष : 2014
- **हिंदी उपन्यास का विकास** - मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्षः 2014
- **हिंदी उपन्यास का इतिहास** - गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2016
- **हिंदी उपन्यास : सामाजिक चेतना** - डॉ. रजनीकांत एस. शाह, संस्कृति, अहमदाबाद-380001, वर्ष : 1990
- **शोध पत्रिका** - 'आलोचन दृष्टि' आजाद नगर, विंदकी फतेहपुर उ. प्र.
- **वेबसाइट लिंक** : https://www.hindikunj.com/2024/11/tamas-upanyas-ki-samiksha-bhisham-sahni.html

इकाई 14 'तमस' : उपन्यास का उद्देश्य

रूपरेखा

14.1 उद्देश्य

14.2 प्रस्तावना

14.3 'तमस' उपन्यास के उद्देश्य

14.3.1 सांप्रदायिकता की भयावहता उजागर करना

14.3.2 धार्मिक विश्वास के अन्धकार को रेखांकित करना

14.3.3 विभाजन की त्रासदी को चित्रित करना

14.3.4 राजनीतिक षड्यंत्र और स्वार्थ की पोल खोलना

14.3.5 मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं का चित्रण

14.3.6 ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में योगदान

14.3.7 समाज को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करना

14.4 'तमस' उपन्यास के उद्देश्य का वैशिष्ट्य

14.5 सारबिंदु

14.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

14.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

14.1 उद्देश्य

- भीष्म साहनी के 'तमस' उपन्यास का गहन अध्ययन कर उसके उद्देश्य को समझना.
- उपन्यास में प्रस्तुत सांप्रदायिक तनाव और उसकी पृष्ठभूमि को विश्लेषण करना.
- धार्मिक अंधविश्वासों और कट्टरता के प्रभाव को पहचानना और उनका समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को समझना.
- विभाजन की त्रासदी को मानवीय दृष्टिकोण से देखना और उसके सामाजिक एवं राजनीतिक प्रभावों का मूल्यांकन करना.
- राजनीतिक षड्यंत्रों और सत्ता की महत्वाकांक्षा के कारण उत्पन्न हिंसा और अस्थिरता को समझना.
- ब्रिटिश शासन की फूट डालो और राज करो नीति का प्रभाव और उसकी विभाजन में भूमिका को स्पष्ट करना.
- सत्ता की लालसा में स्वार्थी तत्वों द्वारा जनता को भड़काने और उनके साथ होने वाले छल को उजागर करना.
- मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं को समझते हुए करुणा, प्रेम, और सहानुभूति की महत्ता को स्वीकार करना.
- उपन्यास को ऐतिहासिक संदर्भों में रखकर उसके यथार्थवादी चित्रण का मूल्यांकन करना.
- समाज में व्याप्त सांप्रदायिकता और असहिष्णुता के दुष्परिणामों का अध्ययन करना.
- राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार को समझना और यह देखना कि यह किस प्रकार आम जनता को प्रभावित करता है.
- धार्मिक रुढ़ियों और परंपराओं के नाम पर किए जाने वाले दुष्प्रचार और उसके प्रभावों का विश्लेषण करना.

- 'तमस' उपन्यास में चित्रित घटनाओं को वर्तमान संदर्भों में जोड़कर उनकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना.
- उपन्यास के माध्यम से समाज को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करना और सौहार्द व एकता की आवश्यकता को समझना.
- तमस को केवल एक कथा न मानकर एक ऐतिहासिक और सामाजिक दस्तावेज के रूप में देखना, जिससे भविष्य में ऐसी त्रासदियों से बचा जा सके.

14.2 प्रस्तावना

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' भारतीय उपन्यास साहित्य में एक महत्वपूर्ण कृति है, जो सन् 1947 ई. में भारत विभाजन की त्रासदी और उससे उपजे सांप्रदायिक दंगों का सजीव चित्रण करता है. इस उपन्यास का आधार केवल ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण देना नहीं है, बल्कि उन घटनाओं के मूल कारणों, समाज पर पड़े प्रभावों और मानवीय मूल्यों की पड़ताल करना भी है. इसमें केवल विभाजन की पीड़ा ही नहीं, बल्कि समाज में व्याप्त धार्मिक कट्टरता, राजनीतिक षड्यंत्र और सांप्रदायिकता के दुष्परिणामों को भी गहराई से दर्शाया गया है.

'तमस' का कथानक विभाजन पूर्व के पंजाब में स्थापित है, जहाँ हिंदू, मुस्लिम और सिख समुदायों के बीच शांति और सौहार्द बना हुआ था. लेकिन जब राजनीतिक स्वार्थ और सत्ता की भूख बढ़ती है, तो यही समाज धीरे-धीरे सांप्रदायिक दंगों की चपेट में आ जाता है. यह उपन्यास दिखाता है कि किस तरह एक सामान्य इंसान, जो केवल अपनी रोज़मर्रा की जिंदगी जीना चाहता है, उन परिस्थितियों में फंस जाता है जिनका निर्माण उसने स्वयं नहीं किया. लेखक ने इसमें धर्म और राजनीति के घातक खेल को उजागर किया है, जो अक्सर जनता को विभाजित करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है.

उपन्यास में भीष्म साहनी ने केवल एकतरफा दृष्टिकोण नहीं अपनाया, बल्कि उन्होंने हर वर्ग के लोगों की मनःस्थिति, उनके डर, आक्रोश और पीड़ा को उकेरा है. इसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख और ईसाई समुदायों के लोगों की मानसिकता और उनके व्यक्तिगत संघर्षों को बारीकी से चित्रित किया गया है. इस प्रकार, यह उपन्यास केवल सांप्रदायिक हिंसा को दिखाने का प्रयास नहीं करता, बल्कि उसके पीछे के कारणों की पड़ताल भी करता है और इस बात पर ज़ोर देता है कि विभाजन और सांप्रदायिकता के असली दोषी वे आम लोग नहीं होते जो मरते और मारते हैं, बल्कि वे होते हैं जो इस आग को भड़काते हैं.

'तमस' का अध्ययन हमें न केवल ऐतिहासिक घटनाओं को समझने का अवसर देता है, बल्कि यह भी सिखाता है कि किस तरह धार्मिक उन्माद और राजनीतिक स्वार्थ समाज को विनाश की ओर धकेल सकते हैं. यह उपन्यास हमें आत्मविश्लेषण करने के लिए प्रेरित करता है कि क्या हम अपने भूतकाल से कोई सबक ले पाए हैं या नहीं. यह आज भी प्रासंगिक है क्योंकि सांप्रदायिकता और राजनीतिक स्वार्थ आज भी समाज में विद्यमान हैं.

14.3 'तमस' उपन्यास के उद्देश्य

"प्रयोजनमनुद्दिश्य मंदोऽपि न प्रवर्तते" के अनुसार, विश्व की कोई भी रचना बिना उद्देश्य के पूर्ण नहीं हो सकती. प्रत्येक कलाकृति का कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य होता है. कुछ लोग रचना का उद्देश्य केवल मनोरंजन मानते हैं, लेकिन मनोरंजन के साथ ही किसी महान और विशिष्ट उद्देश्य का प्रतिपादन भी आवश्यक है. तभी कोई रचना उच्च कोटि की कहलाती है.

प्रत्येक रचना का उद्देश्य ऐसा होना चाहिए, जिससे मानव-मन की भावनाएँ परिष्कृत हों और विचार उदात्त बनें. निरुद्देश्य रचनाएँ पाठक के मन को लंबे समय तक प्रभावित नहीं कर

सकतीं. समाज की ज्वलंत समस्याओं को उपन्यास का लक्ष्य बनाया जा सकता है, जिससे मनोरंजन के साथ-साथ उपन्यास के अन्य उद्देश्य भी स्वतः पूर्ण हो जाते हैं. पाठकों को नई बातें जानने का अवसर मिलता है, जिससे वे समाज के प्रति अधिक जागरूक हो सकते हैं.

रचना वही सार्थक होती है, जो पाठकों को कुछ सोचने पर विवश करे और उनके भीतर समाज व जीवन के प्रति एक नई दृष्टि विकसित करे.

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' भारतीय इतिहास के एक काले अध्याय, विभाजन और सांप्रदायिक दंगों की त्रासदी को उजागर करता है. यह उपन्यास सांप्रदायिकता की भयावहता को दर्शाते हुए बताता है कि किस प्रकार धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास समाज को विनाश की ओर ले जाते हैं. इसमें धार्मिक उन्माद और राजनीतिक षड्यंत्रों का विशद चित्रण किया गया है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सत्ता की लालसा कैसे आम जनता को मोहरा बनाकर उसका शोषण करती है. विभाजन की त्रासदी को मानवीय दृष्टिकोण से देखते हुए उपन्यास संवेदनशीलता, करुणा और नैतिकता का संदेश देता है.

इतिहास के साक्ष्य के रूप में यह उपन्यास केवल घटनाओं का वर्णन नहीं करता, बल्कि समाज को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करता है कि किस प्रकार सांप्रदायिकता और राजनीतिक स्वार्थ विनाशकारी होते हैं. 'तमस' एक चेतावनी है कि यदि समाज इन गलतियों से नहीं सीखेगा, तो भविष्य में भी इसी प्रकार की घटनाएँ दोहराई जा सकती हैं. अध्ययन की सुविधा हेतु इसके निम्नलिखित बिन्दु किये जा सकते हैं –

14.3.1 सांप्रदायिकता की भयावहता उजागर करना

'तमस' उपन्यास लिखने का प्रथम और प्रमुख उद्देश्य सांप्रदायिक तनाव का चित्रण करना रहा है. भारत-विभाजन से पूर्व और पश्चात् व्याप्त सांप्रदायिक तनाव की परिस्थितियों और घटनाओं को दोहराना मात्र साहनीजी को अभिप्रेत नहीं है. उनका उद्देश्य आज के युग में जीने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उन भयानक परिस्थितियों से अवगत कराना है, जिनसे होकर हमारा भारत देश गुजरा है. साथ ही, उन्हें उस रक्तरंजित अतीत से परिचित कराना है, जिसे हमारा देश देख चुका है. सांप्रदायिक तनाव से हमारा देश आज भी मुक्त नहीं है, इसलिए 'तमस' उपन्यास का कथानक या विषय पुराना या अप्रासंगिक नहीं कहा जा सकता.

'तमस' में व्यक्त सांप्रदायिक तनाव की प्रासंगिकता के विषय में डॉ. प्रेमकुमार लिखते हैं – 'तमस' में व्यक्त सांप्रदायिकता एकदम अछूती नहीं है, किन्तु इतने भर से आम या फालतू अस्पर्थ्य नहीं कही जा सकती. सांप्रदायिकता का विष जब तक व्याप्त है, तब तक ऐसे प्रयत्नों को व्यर्थ, अप्रासंगिक या अनुपयोगी नहीं कहा जा सकता. 'तमस' में उपन्यासकार सांप्रदायिक विष के मृत्युदायी रूप से पाठक को परिचित कराकर उसे आगाह करने की दिशा में प्रयत्नशील रहा है. अपनी किसी बीमारी और उसकी भयंकरता को जान लेना शरीर की शक्ति व स्फूर्ति के लिए किसी नये टॉनिक या व्यायाम से कम महत्त्वपूर्ण और आवश्यक नहीं है. 'तमस' नया टॉनिक या व्यायाम नहीं है, पर एक बीमारी से, उसकी भयंकरता में, अच्छी तरह परिचित कराते हुए सावधान करने का प्रयत्न अवश्य है.

सांप्रदायिक दंगे-फसादों के फलस्वरूप उत्पन्न भयानक परिस्थितियाँ ही लेखक को बताना है. आज भी समाज में सांप्रदायिक विद्वेष फैलाने वाले लोग कम नहीं हैं. ऐसे लोगों को 'तमस' उपन्यास बेनकाब करता है. उपन्यास में सांप्रदायिकता के शैतानी पंजों को देखकर समाज का कौन-सा व्यक्ति ऐसा होगा, जो धर्म के नाम पर कौमी दावानल फैलाना चाहेगा? 'तमस' में सांप्रदायिक तनाव से सर्जित वातावरण को पढ़कर पाठक के रोंगटे खड़े हो जाते हैं. सांप्रदायिकता की नरकीय आग में देश किस प्रकार झुलस रहा था, इसका जीवंत चित्रण

उपन्यासकार ने किया है.

उपन्यास में एक स्थान पर संवाद के माध्यम से लेखक ने यह स्पष्ट किया है – 'मीरदाद' ने गुस्से में कहा – 'तुम्हें अभी तक यह समझ में नहीं आया कि तुम्हारे यह लोग मरे पड़े हैं. उन्हें अंग्रेजों ने मारा है? ओए, मस्जिद के सामने सुअर फेंका है, वह भी अंग्रेज फेंक गया है ओए?'

'ओ कुछ समझो', मीरदाद ने हाथ झटककर कहा- "अगर हिन्दू-मुसलमान-सिख मिल जाते हैं, उनमें इत्तहाद हो जाता है, तो अंग्रेज की हालत कमजोर पड़ जाती है. अगर हम आपस में लड़ते रहते हैं, तो उसकी हालत मजबूत बनी रहती है."

'जा-जा, सिर पर बादामरोगन की मालिश कर.' मोटे कसाई ने कहा- "हमारा अंग्रेज ने क्या बिगाड़ा है ओए? हिन्दू-मुसलमान की अदावत पुराने जमाने से चली आ रही है. काफिर काफिर है, और जब तक दीन पर ईमान नहीं लाएगा, वह दुश्मन है. काफिर को मारना सबाब है."

यही वे कारण हैं, जो शहरों और गाँवों में सांप्रदायिकता की आग को निरंतर हवा देते हैं. सांप्रदायिक तनाव की इस भयंकरता को हूबहू चित्रित करने में लेखक पूर्णतः सफल हुआ है. यह तनाव उपन्यास में आरंभ से अंत तक छाया हुआ है. इस संबंध में डॉ. कृष्णदेव शर्मा का मत है – 'हिन्दू-मुस्लिम सांप्रदायिक तनाव ही इस उपन्यास की कथा का मूलाधार है और उपन्यास में आरंभ से अंत तक उसके प्रसार एवं उसके वीभत्स परिणामों का सिलसिलेवार वर्णन साहनीजी ने किया है. यहाँ पर साहनीजी का यह उद्देश्य स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार कुछ असामाजिक तत्व केवल अपने निहित स्वार्थों के लिए हिन्दू-मुसलमानों में धार्मिक विद्वेष फैलाकर दंगा भड़काते हैं और फिर जब सांप्रदायिक दंगा हो जाता है तो लोग एकदम अंधे होकर किस प्रकार फिरकापरस्ती के शिकार होकर उसे फैलाते जाते हैं.'

इस प्रकार, साहनीजी का मुख्य उद्देश्य सांप्रदायिक तनाव की भयंकरता को चित्रित करना ही रहा है, जिसमें उन्हें पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है. अपनी भाषा-शैली के माध्यम से उन्होंने इस चित्रण में प्राण फूँक दिए हैं.

14.3.2 धार्मिक विश्वास के अन्धकार को रेखांकित करना

'तमस' उपन्यास में स्थान-स्थान पर धार्मिक अंधविश्वास का प्रभावी चित्रण हुआ है. साहनीजी ने इस उद्देश्य की ओर अप्रत्यक्ष रूप से संकेत किया है. उपन्यास में यह स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है कि किस प्रकार धार्मिक अन्धविश्वास ने समाज को विनाश की ओर धकेल दिया. यह धार्मिक अन्धविश्वास नहीं तो और क्या है कि एक सुअर की लाश मस्जिद के सामने देखकर उत्तेजित मुसलमानों ने प्रतिशोध में एक गाय की हत्या कर दी. इसके परिणामस्वरूप हिन्दू-मुसलमान एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए. देखते ही देखते जगह-जगह लाशें बिछ गईं, लोग घर से बेघर हो गए और पूरे देश की शान्ति सांप्रदायिकता की आग में स्वाहा हो गई. इस पूरी घटना से यह प्रतीत होता है कि मानो मनुष्य के लिए धर्म सब कुछ है और जीवन का मूल्य कुछ भी नहीं.

वर्तमान वैज्ञानिक युग में साँस लेने वाले मनुष्य की यह सबसे बड़ी त्रासदी ही कही जाएगी कि उसने धर्म के केन्द्रीभूत मानव और उसके कल्याण को गौण समझ लिया और धर्म को प्रधानता दे दी. इस अवसर पर उर्दू के सुप्रसिद्ध गीतकार एवं जनवादी शायर स्वर्गीय साहिर लुधियानवी के गीत की पंक्तियाँ अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होती हैं –

'हर मज़हब से ऊँची है कीमत इंसानी जान की.'

'जो लोग व्यक्ति को नहीं बल्कि धर्म को प्रधानता देते हैं और धर्म के नाम पर खून की नदियाँ बहा देते हैं, उन लोगों को यह समझना होगा कि किसी भी धर्म का यह सिद्धांत नहीं हो सकता कि वह मनुष्य की हत्या को प्रोत्साहित करे. इसी संदर्भ में यह कहना उचित होगा.'

'जुदा न करो चलती साँसें जिस्म से, हरेक साँस चलती अमानत खुदा की.'

खुदा साँस लेता है हर जिन्दगी में, हरेक जिन्दगी है जमानत खुदा की.

लेखक यह दिखाना चाहता है कि धर्म के वास्तविक अर्थ को लोग समझते ही नहीं और नाहक ही वे एक-दूसरे के दुश्मन बनकर एक-दूसरे के खून के प्यासे हो जाते हैं. वास्तव में किसी भी धर्म का यह उद्देश्य नहीं होता कि वह नफरत फैलाए, लेकिन धर्मांधता और अंधविश्वास के कारण समाज में विभाजन और वैमनस्य की स्थिति उत्पन्न हो जाती है.

इसके अतिरिक्त, उपन्यास में समाज में व्याप्त अन्य अंधविश्वासों का भी चित्रण मिलता है. उदाहरणस्वरूप, नत्थू के प्रसंग में देखा जा सकता है कि लोग टोने-टोटकों को लेकर कितने संकुचित विचार रखते थे. लेखक स्वयं इसका वर्णन इस प्रकार करता है

कुछ कदम आगे बढ़ने पर उसके पैर को ठोकर लगी. उसे लगा जैसे उसके पाँव से टकराकर कोई चीज बिखर गई है. फिर वह समझ गया और समझते ही उसका शरीर झनझना उठा. एक घर के सामने कोई औरत 'टोना' कर गई थी. कुछ थिगलियों में लिपटे कंकड़ और गुंधे आटे का पुतला और उसमें खोंसी हुई लकड़ी की खपचियाँ थीं. कोई बदनसीब औरत अपना क्लेश किसी दूसरे के घर पर डालने के लिए 'टोना' कर गई थी. नत्थू ने इसे अपशकुन समझा. ऐसी रात बिताने के बाद 'टोने' पर पैर आ जाने से उसे गहरी खीज उठी, पर दूसरे ही क्षण वह सँभल गया. आमतौर पर ये 'टोने' बच्चों पर से ग्रह टालने के लिए किए जाते हैं जबकि नत्थू के कोई औलाद नहीं थी. वह आश्वस्त सा फिर आगे बढ़ गया.

इस प्रकार के अंधविश्वास पहले भी प्रचलित थे और आज भी समाज के पिछड़े इलाकों में देखे जा सकते हैं. इसके अतिरिक्त, उपन्यास में धार्मिक अंधविश्वास की चरम सीमा तब देखने को मिलती है, जब कुछ मुसलमान युवक हरनाम सिंह के बेटे इकबाल सिंह का जबरन धर्म परिवर्तन कर देते हैं. वे उसकी दाढ़ी कटवा देते हैं, उसे माँस खिलाते हैं और उसके वस्त्र बदलकर उसे सिख से मुसलमान बना देते हैं. लेखक ने इस घटना का वर्णन इस प्रकार किया है –

"शाम ढलते-ढलते इकबाल सिंह के शरीर पर से सिखी की सब अलामतें दूर कर दी गई थीं और मुसलमानी की सभी अलामतें उतर आई थीं. पुरानी अलामतें हटाकर नयी अलामतें लाने की देर थी कि इंसान बदल गया था. अब वह दुश्मन नहीं था, दोस्त था, काफिर नहीं था, मुसलमान था. मुसलमानों के सभी दरवाजे उसके लिए खुल गए थे."

यह धारणा कि पुरानी धार्मिक अलामतें मिटा देने और नई अलामतें थोप देने मात्र से किसी व्यक्ति का धर्म परिवर्तन हो जाता है, अपने आप में एक बहुत बड़ा अंधविश्वास है. लेखक ने अत्यंत मार्मिक शब्दों में इस कटु सत्य को उद्‌घाटित किया है कि धर्म की परिभाषा को संकुचित कर दिया गया है और इसे केवल बाहरी प्रतीकों तक सीमित कर दिया गया है.

अतः यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि लेखक ने धार्मिक अंधविश्वास के चित्रण में पूर्ण सफलता प्राप्त की है. उन्होंने इस बात को उजागर किया है कि किस प्रकार धार्मिक आडंबर, अंधविश्वास और राजनीति में होने वाले छल-छद्मों के कारण सांप्रदायिक तनाव उत्पन्न होते हैं और समाज में भयावह स्थितियाँ निर्मित होती हैं. यही इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य भी है.

14.3.3 विभाजन की त्रासदी को चित्रित करना

भीष्म साहनी का प्रसिद्ध उपन्यास 'तमस' भारत के विभाजन की त्रासदी का एक सजीव दस्तावेज़ है. इस उपन्यास में लेखक ने विभाजन से पूर्व और विभाजन के समय समाज में व्याप्त सांप्रदायिक उन्माद, हिंसा और मानवीय मूल्यों के विघटन का अत्यंत प्रभावी चित्रण किया है. 'तमस' न केवल विभाजन की भयावहता को उजागर करता है, बल्कि यह भी दिखाता है कि किस प्रकार राजनीतिक स्वार्थ और धार्मिक कट्टरता ने मानवता को तार-तार कर दिया.

इस उपन्यास का कथानक सन् 1947 ई. के विभाजन से पूर्व के भारत पर केंद्रित है, जब सांप्रदायिक तनाव अपने चरम पर था. उपन्यास की शुरुआत नत्थू नामक एक दलित चर्मकार से होती है, जिसे एक अंग्रेज अधिकारी रिचर्ड के इशारे पर एक सुअर मारने का काम सौंपा जाता है. बाद में इसी सुअर की लाश को मस्जिद के सामने फेंक दिया जाता है, जिससे पूरे शहर में सांप्रदायिक दंगे भड़क उठते हैं. यह घटना बताती है कि किस प्रकार अंग्रेजों ने अपनी 'फूट डालो और राज करो' की नीति के तहत भारतीय समाज में वैमनस्यता फैलाने का कार्य किया.

विभाजन के दौरान हुई हिंसा का वर्णन उपन्यास में अत्यंत मार्मिक रूप में किया गया है. हिंदू, मुस्लिम और सिख समुदायों के बीच व्याप्त कटुता को दर्शाया गया है. लोग धर्म के नाम पर एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए थे. निर्दोष लोगों की हत्या, घरों को जलाना, महिलाओं पर अत्याचार, और भय व आतंक से घरों से पलायन यह सब विभाजन की त्रासदी को दर्शाने वाले दृश्य हैं.

सांप्रदायिक उन्माद में लोग किस तरह अपना विवेक खो बैठते हैं, इसका उदाहरण हरनाम सिंह के परिवार की दुर्दशा से मिलता है. उसका बेटा इकबाल सिंह जबरन मुसलमान बना दिया जाता है. उसकी पहचान बदल दी जाती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि धर्म के नाम पर कैसी अमानवीयता फैली हुई थी. इसी प्रकार, शहर में लाशों के ढेर और लोगों के घर जलने के दृश्य विभाजन के समय की हिंसा और क्रूरता का सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं.

यह उपन्यास यह भी दिखाता है कि विभाजन केवल धार्मिक कारणों से नहीं हुआ, बल्कि इसके पीछे गहरी राजनीतिक साजिशें भी थीं. राजनीतिक दलों और धार्मिक नेताओं ने अपने-अपने स्वार्थों के लिए आम जनता को हिंसा के लिए उकसाया. मीरदाद का संवाद इस षड्यंत्र को उजागर करता है - "अगर हिन्दू-मुसलमान-सिख मिल जाते हैं, उनमें इत्तेहाद हो जाता है, तो अंग्रेज की हालत कमजोर पड़ जाती है. अगर हम आपस में लड़ते रहते हैं तो उसकी हालत मजबूत बनी रहती है." यह कथन इस सच्चाई को दर्शाता है कि अंग्रेजों ने कैसे धार्मिक उन्माद को भड़काने का कार्य किया ताकि उनकी सत्ता बनी रहे.

विभाजन केवल एक राजनीतिक घटना नहीं थी, बल्कि इसने लाखों लोगों के जीवन को तहस-नहस कर दिया. वर्षों से साथ रहने वाले पड़ोसी और मित्र अचानक दुश्मन बन गए. विश्वास की जगह संदेह ने ले ली, प्रेम की जगह घृणा ने और भाईचारे की जगह शत्रुता ने. इस पृष्ठभूमि में, भीष्म साहनी ने उन पात्रों के माध्यम से यह दर्शाया है कि विभाजन ने किस प्रकार मानवीय मूल्यों का ह्रास किया.

यह उपन्यास विभाजन की त्रासदी को अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है. यह उपन्यास हमें उस रक्तरंजित अतीत से अवगत कराता है, जिससे होकर हमारा देश गुजरा है. यह केवल इतिहास की घटना नहीं है, बल्कि आज भी यह प्रासंगिक बनी हुई है, क्योंकि सांप्रदायिक तनाव और धार्मिक कट्टरता आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं. यह हमें यह संदेश देता है कि यदि हम इतिहास से सीख नहीं लेंगे, तो हम फिर से उसी अंधकार में चले जाएंगे, जिससे बचने के लिए हमने इतनी बड़ी कीमत चुकाई थी.

14.3.4 राजनीतिक षड्यंत्र और स्वार्थ की पोल खोलना

साम्प्रदायिक तनाव के चित्रण के बाद जो साहनीजी का अन्य महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है और जिसे 'तमस' में विस्तारपूर्वक वर्णित किया गया है, वह है राजनीतिक भ्रष्टाचार का चित्रण. लेखक ने दिखाया है कि किस प्रकार राजनीति में व्याप्त स्वार्थ, छल-कपट और षड्यंत्रों ने देश को अराजकता और विनाश की ओर धकेल दिया.

राजनीति में सबसे पहले जो चेहरा उभरता है, वह है रिचर्ड का. रिचर्ड एक ऐसा प्रशासक है जो विशेष रूप से इतिहास का विद्यार्थी है. वह भारत में दंगे-फसाद करवाकर चुपचाप रोम के क्रूर शासक नीरो की भाँति सहर्ष तमाशा देखता है. जब उससे शांति स्थापित करने के लिए कहा जाता है तो वह कहता है कि हम हिन्दुस्तानियों के धार्मिक मामलों में कुछ नहीं कर सकते. उसकी यह जानने में रुचि है कि भारत के लोगों में कहाँ विषमता पाई जाती है. वह अपनी पत्नी लीज़ा से कहता है कि अगर प्रजा आपस में लड़े तो शासक को किस बात का खतरा हो सकता है, क्योंकि न यह देश उसका है और न ही इस देश के लोग उसके हैं.

जिस कुएँ में औरतें कूद मरी हैं, वह स्थल उसके लिए मात्र एक पिकनिक स्थल बनकर रह जाता है. लीज़ा जब कहती है- "इतने गाँव तो जल गये रिचर्ड, अभी तुम्हें काम है? अब तुम्हें और क्या काम करना है ?" तो रिचर्ड उत्तर देता है कि सिविल सर्विस हमें तटस्थ बना देती है. यदि हम बात-बात पर भावुक होने लगे तो प्रशासन एक दिन भी नहीं चल सकता. इस पर लीज़ा फिर प्रश्न करती है, "यदि 103 गाँव जल जायें तो भी नहीं?" इस पर रिचर्ड का ठंडा उत्तर होता है, "हाँ, तो भी नहीं, क्योंकि यह देश और इस देश के लोग मेरे अपने नहीं हैं."

रिचर्ड के इस चरित्र के विषय में डॉ. विवेकी राय लिखते हैं - "वास्तव में कृति में रिचर्ड एक अत्यन्त ही प्रामाणिक और महत्त्वपूर्ण पात्र के रूप में चित्रित हुआ है. उसी के परिप्रेक्ष्य में समूची 'तमस' स्थितियों की व्यवस्था की जा सकती है तथा लेखक ने स्वयं रिचर्ड की व्याख्या के लिए उसकी पत्नी के रूप में लीज़ा का चित्रण उससे भी अधिक संश्लिष्ट मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रस्तुत किया है. उपन्यास का अन्त इन्हीं प्रशासक दंपति के प्रसंग से होता है और अंतिम वाक्य जो लीज़ा के मुँह से निकलता है, ऐसा लगता है कि व्यंग्य का एक बहुत वजनी गोला है और उससे अंग्रेजों की 'लड़ाओ और राज करो' की परंपरित भेद-नीति पर सीधा प्रहार हो जाता है."

यह तो हुई अंग्रेज अफसर की बात. दूसरी ओर कांग्रेस के सदस्य हैं, जिनमें हिन्दू-मुसलमान सभी शामिल हैं. समाज-सेवा के नाम पर प्रभात फेरी का आयोजन मात्र एक खिलवाड़ बनकर रह गया है. तामीरी काम करने में उन्हें शर्म आती है. एक-दूसरे को नीचा दिखाने और खिल्ली उड़ाने में इन लोगों ने कोई कसर बाकी नहीं रखी है. इन नेताओं के लिए समाज सेवा का अर्थ केवल अपने स्वार्थ की पूर्ति करना है.

एक विशेष चरित्र है मुराद अली का. वह अंग्रेजों से मिला हुआ है और अपने ही देश में साम्प्रदायिक तनाव फैलाता है, जो आगे चलकर भीषण रक्तपात का कारण बनता है. जब शहर जल रहा होता है और निर्दोष लोग मर रहे होते हैं, तब मुराद अली अपने निजी स्वार्थों में लिप्त रहता है. परन्तु जैसे ही माहौल शांत होने लगता है, वह अमन कमेटी की बस में सबसे पहली सीट पर बैठकर अमन के नारे लगाने लगता है. इससे यह स्पष्ट होता है कि राजनीति में कई लोग केवल अपने लाभ के लिए परिस्थितियों का उपयोग करते हैं.

साहनीजी ने 'तमस' में राजनीति में फैले हुए भ्रष्टाचार को बखूबी उद्घाटित किया

है. इस प्रकार अंग्रेज सरकार, उनसे मिले कुछ हिन्दुस्तानी, कांग्रेसी सदस्य और मुस्लिम लीग के लोगों के कुरूप चेहरे को लेखक ने बेनकाब कर दिया है. यह उपन्यास केवल विभाजन की त्रासदी का चित्रण नहीं करता, बल्कि यह भी दर्शाता है कि किस प्रकार राजनीतिक स्वार्थों ने इस त्रासदी को जन्म दिया.

14.3.5 मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं का चित्रण

भीष्म साहनी द्वारा रचित उपन्यास 'तमस' अपनी अनेक विशेषताओं के साथ ही अपनी मार्मिकताओं के लिए सराहनीय है. यों तो 'तमस' उपन्यास का प्रमुख प्रतिपाद्य ही मार्मिक है. यह कहा जाए तो भी अत्युक्ति न होगी कि 'तमस' आदि से अंत तक मार्मिक है. कहने की आवश्यकता नहीं कि कुछ प्रसंगों की योजना तो साहनीजी ने इस तरह की है कि पढ़ते समय पाठक का दिल दहल जाता है और उसे महसूस होता है कि वह उस भयानक अतीत में पहुँच गया है, जब भारत का विभाजन हुआ था या फिर वर्तमान में वह वैसे ही किसी खौफनाक माहौल में आज भी जी रहा है.

हम समझते हैं कि यही लेखक और उसकी कृति की सबसे बड़ी सफलता है. कई प्रसंगों को पढ़ते समय हम सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि क्या वास्तव में उस समय ऐसा हुआ था? क्या एक ही देश और जाति के लोग आपस में इतने कट्टर दुश्मन बन गए थे कि एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए? क्या उस वक्त हिंदू-मुसलमान एक-दूसरे से इतने आतंकित हो चुके थे कि उन्होंने एक इलाके में साथ रहना छोड़ दिया? ये सारे सवाल 'तमस' को पढ़कर हमारे जेहन में उठते हैं, जिनके जवाब ढूँढ़ पाना मुश्किल है. इन समस्याओं के हल तो स्वयं साहनीजी भी नहीं दे पाए हैं, क्योंकि इक्कीसवीं सदी में कदम रखने वाले भारत को ये समस्याएँ आज भी दीमक की तरह खोखला कर रही हैं और कमजोर बना रही हैं.

ये सांप्रदायिक समस्याएँ आज भी खत्म नहीं हुई हैं. जिस तरह से बुझती हुई आग को थोड़ी सी हवा दे दी जाए तो वह फिर से भड़क उठती है, उसी तरह सांप्रदायिकता की आग भी है, जो समय-समय पर छोटे-मोटे कारणों से भड़क उठती है और देश की सुख-शांति में बाधा उपस्थित करती है.

'तमस' का प्रारंभिक रूप ही हमारे सामने ऐसा आता है, जो पढ़ते ही हमारे मर्म को छू लेता है. सहसा का यह भयानक रूप हमें भीतर तक झकझोर कर रख देता है, और फिर साहनीजी की भाषा-शैली और देशकाल का सजीव वर्णन करने की क्षमता ऐसी है कि पाठक की आँखों के सामने वह दृश्य हू-ब-हू खड़ा हो जाता है. इस कारण से प्रसंग की मार्मिकता और अधिक बढ़ जाती है.

नत्थू की गरीबी और असहायता का लाभ उठाया गया है. सुअर मारने के लिए मुरादअली ने उसे पाँच रुपये दिए हैं. नत्थू यह काम नहीं करना चाहता था, लेकिन पाँच रुपये का लोभ और मुरादअली का भय उसे सुअर की सहसा करने पर विवश करते हैं. पाँच रुपये का लोभ इसलिए है कि वह आर्थिक दृष्टि से कमजोर है, और मुरादअली का भय इसलिए है कि वह उसके मातहत काम करता है, इसलिए मुरादअली जो कहेगा, वह नत्थू को मानना होगा.

लेखक के शब्दों में यह हिंसा का चित्र और भी अधिक मार्मिक हो गया है –

नत्थू के अन्दर आ जाने से सुअर ने अपना नथुना फुलाया. नत्थू को लगा जैसे सुअर का नथुना ज्यादा लाल हो रहा है. उस पर फेंकी हुई पत्थर की सिल सुअर के पीछे कुछ दूरी पर पड़ी थी. दीये की टिमटिमाती लौ ने फिर झपकी ली और अस्थिर रोशनी में नत्थू को लगा, सुअर फिर से हिला है और चलने लगा है. वह आँखें फाड़फाड़ कर उसकी ओर

देखने लगा. सुअर सचमुच हिला था. वह सचमुच ही बोझिल, स्थिर गति से आगे की ओर, नत्थू की ओर बढ़ने लगा था. दो-एक कदम, दाएँ-बाएँ झूलकर चलने के बाद एक अजीब-सी आवाज सुअर के मुँह से निकली. नत्थू फिर से छुरा उठाकर फर्श पर पैरों के बल बैठ गया. सुअर ने दो-तीन कदम और अधिक आगे बढ़ाए. उसका नथुना अपने पैरों की ओर और अधिक झुक गया और नत्थू के पास पहुँचते न पहुँचते वह एक ओर को लुढ़ककर गिर गया. उसकी टाँगों में एक बार जोर का कंपन हुआ, मगर कुछ क्षणों में ही वे हवा में उठी रह गईं. सुअर ढेर हो चुका था. ('तमस', पृ. 14-15)

इस प्रसंग की मार्मिकता और सजीवता उपर्युक्त शब्दावली से स्पष्ट हो जाती है कि किस तरह एक गरीब आदमी को पैसों का लोभ देकर और डरा-धमकाकर एक निरीह प्राणी की हत्या करवाई गई. यह दृश्य केवल नत्थू की मजबूरी और आर्थिक शोषण की कहानी नहीं कहता, बल्कि यह उस व्यापक षड्यंत्र की ओर संकेत करता है, जिसमें धर्म, राजनीति और सत्ता के खेल में आम आदमी की विवशता को कठपुतली बना दिया जाता है.

इस प्रसंग के बाद हमें मार्मिकता वहाँ दिखाई देती है, जहाँ कांग्रेस के कुछ सदस्य मुस्लिमों के इलाके में तामीरी काम कर रहे हैं. मुस्लिम उनके इस काम से खुश हैं, उनकी प्रशंसा करते हैं. सदस्यों में आपस में छेड़छाड़ होती है. तभी कुछ खलबली मच जाती है. लोग इधर-उधर भागने-दौड़ने लगते हैं. पता चलता है कि केलों की मस्जिद की सीढ़ियों पर कोई सुअर की लाश फेंक गया है.

सभी लोग घबरा गए, और लुक-छिपकर अपने-अपने घरों को जाने लगे. जिसने सुना, वही कलेजा थाम कर रह गया. यों तो एक सुअर को ही मारकर मस्जिद की सीढ़ियों पर फेंका गया है, लेकिन इसके पीछे अब आदमियों की जानें लेना, इतना खूनखराबा करना कहाँ तक उचित है? लेकिन यह बात मुसलमान नहीं समझते. उन्हें यह अपने धर्म का अपमान लगता है और कोई भी आदमी अपने धर्म का अपमान सहन नहीं कर सकता.

हर आदमी के मन में एक डर, एक खौफ समा गया है और उसके सामने एक सवाल विषैले नाग की तरह फन फैलाए खड़ा है कि "अब क्या होगा?" इस प्रसंग की मार्मिकता को भी हर युग में जीने वाला हर पाठक महसूस कर सकता है. लेखक की शब्द-शैली में देखें -

'बस उधर मत जाओ.'

'कुछ बताओ तो, हुआ क्या है?'

इस प्रश्न के साथ ही 'तमस' की कथा आगे बढ़ती है, और पाठक को उस अंधेरे इतिहास में धकेल देती है, जहाँ इंसानियत और धर्म के नाम पर खून की नदियाँ बहती हैं। भीष्म साहनी की यह कृति केवल अतीत का दस्तावेज नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए एक चेतावनी भी है. यह हमें सिखाती है कि हमें अपनी संवेदनाओं को मरने नहीं देना चाहिए और मानवीय मूल्यों को हर हाल में बचाए रखना चाहिए.

14.3.6 ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में योगदान

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' भारतीय इतिहास के उस काले अध्याय को उजागर करता है, जिसमें सांप्रदायिकता, सहसा, राजनीति और मानवीय त्रासदी का गहरा प्रभाव दिखाई देता है. यह केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है. उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन की पृष्ठभूमि में लिखा गया है और इस ऐतिहासिक घटना के सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभावों को उजागर करता है.

'तमस' सन् 1947 ई. के विभाजन से पहले की परिस्थितियों को सजीव रूप से प्रस्तुत करता है. इसमें सांप्रदायिकता की आग को भड़काने के लिए किस तरह योजनाबद्ध रूप से षड्यंत्र रचे गए, इसका प्रामाणिक चित्रण मिलता है. नत्थू के माध्यम से दिखाया गया है कि कैसे एक मासूम व्यक्ति को अपने निजी स्वार्थ या भय के कारण हिंसा के षड्यंत्र का हिस्सा बना दिया जाता है. मस्जिद की सीढ़ियों पर सुअर की लाश फेंकना एक ऐसी घटना है, जो सांप्रदायिक दंगों की चिंगारी बनती है. यह ऐतिहासिक रूप से भी सच है कि विभाजन के दौरान इसी प्रकार की साजिशों से बड़े पैमाने पर दंगे भड़के थे.

भीष्म साहनी स्वयं विभाजन के प्रत्यक्षदर्शी थे. 'तमस' उनके अपने अनुभवों और समाज में देखी गई वास्तविक घटनाओं का दस्तावेज है. इस उपन्यास में उन्होंने उस समय की भयावह स्थिति का सजीव चित्रण किया है. आम लोगों का भय, संदेह, पलायन, धर्म के नाम पर की गई हत्याएँ, बलात्कार, घरों का जलाया जाना-यह सब उस त्रासदी का हिस्सा था, जिसे लाखों लोगों ने झेला. यह उपन्यास उन सभी घटनाओं को सहेजकर एक ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत करता है.

'तमस' यह स्पष्ट करता है कि सांप्रदायिकता केवल धार्मिक टकराव नहीं है, बल्कि यह एक योजनाबद्ध राजनीतिक हथियार भी है. उपन्यास में राजनेताओं और प्रशासन की निष्क्रियता को दर्शाया गया है कि कैसे वे केवल अपने स्वार्थ और सत्ता की लालसा में समाज को विभाजित करने में कोई संकोच नहीं करते. मुरलीधर जैसे नेताओं के माध्यम से यह दिखाया गया है कि किस तरह दंगों को भड़काने और अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंकने के लिए साम्प्रदायिकता का उपयोग किया जाता है.

'तमस' केवल विभाजन के राजनीतिक कारणों को ही नहीं दिखाता, बल्कि इसका एक मानवीय पक्ष भी प्रस्तुत करता है. हिन्दू-मुस्लिम समुदायों के बीच संदेह और भय किस तरह पनपता है, कैसे पड़ोसी एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं, यह उपन्यास में गहराई से दर्शाया गया है. गुरुदत्त और बख्शी जैसे पात्र हमें बताते हैं कि सभी लोग सहसा नहीं चाहते, लेकिन जब साम्प्रदायिकता की आग भड़कती है, तो वे भी इसकी चपेट में आ जाते हैं.

भीष्म साहनी ने 'तमस' को केवल अतीत को दिखाने के लिए नहीं लिखा, बल्कि यह एक चेतावनी भी है कि इतिहास से सीख लेकर हम भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न होने दें. उपन्यास की शुरुआत में ही यह कथन दिया गया है - "जो इतिहास को भुला देते हैं, वे उसे दोहराने का शाप भुगतते हैं." यह उपन्यास वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों को यह समझाने का प्रयास करता है कि सांप्रदायिकता से केवल विनाश होता है और हमें इसे हर हाल में रोकना चाहिए.

'तमस' केवल एक साहित्यिक रचना नहीं, बल्कि विभाजन की त्रासदी का जीवंत दस्तावेज है. यह ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में उस समय की सच्चाई को उजागर करता है, जब धर्म, राजनीति और सत्ता के नाम पर निर्दोष लोगों की बलि दी गई. यह उपन्यास आज भी प्रासंगिक है क्योंकि सांप्रदायिकता की समस्या आज भी हमारे समाज में विद्यमान है. 'तमस' हमें यह सिखाता है कि इतिहास से सीख लेकर हमें अपने समाज को इन त्रासदियों से बचाना चाहिए और मानवीय मूल्यों को बनाए रखना चाहिए.

14.3.7 समाज को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करना

भीष्म साहनी का उपन्यास 'तमस' केवल विभाजन की त्रासदी का दस्तावेज भर नहीं है, बल्कि यह समाज को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करने वाली एक महत्वपूर्ण कृति भी है. यह उपन्यास केवल एक ऐतिहासिक घटना का चित्रण नहीं करता, बल्कि समाज की उन

गहरी जड़ों तक पहुँचता है, जहाँ सांप्रदायिकता, घृणा, स्वार्थ और हिंसा पनपती हैं. 'तमस' का उद्देश्य केवल विभाजन की घटनाओं का चित्रण करना नहीं, बल्कि यह दिखाना भी है कि किस तरह सामाजिक ताना-बाना आपसी अविश्वास, कट्टरता और राजनीतिक स्वार्थों की भेंट चढ़ जाता है.

उपन्यास समाज के हर वर्ग को आत्मविश्लेषण करने के लिए प्रेरित करता है. आम नागरिकों को यह सोचने पर मजबूर करता है कि वे कब और कैसे साम्प्रदायिकता के शिकार बन जाते हैं. नत्थू का चरित्र इस बात का प्रतीक है कि गरीब और मजबूर लोग कैसे बड़ी साजिशों का मोहरा बनते हैं. वह केवल पाँच रुपये के लिए सुअर मारने को विवश होता है, लेकिन यही घटना भयंकर दंगे का कारण बनती है. यहाँ यह सवाल उठता है कि क्या नत्थू दोषी है, या वह व्यवस्था जो उसे इतना लाचार बना देती है कि वह विवेकहीन कार्य करने को मजबूर हो जाता है? यह प्रसंग समाज को आत्मविश्लेषण करने के लिए प्रेरित करता है कि आर्थिक विषमता और सामाजिक अन्याय कैसे अशांति और हिंसा को जन्म देते हैं.

राजनीतिक नेतृत्व और प्रशासन की भूमिका पर भी यह उपन्यास गहरा प्रश्न उठाता है. रिचर्ड जैसा अंग्रेज अधिकारी अपने स्वार्थ के लिए हिन्दू-मुसलमानों के बीच बढ़ते तनाव को देखकर भी मूकदर्शक बना रहता है. वह जानबूझकर इस आग को बुझाने के बजाय इसे और भड़कने देता है, क्योंकि इससे उसकी सत्ता मजबूत होती है. वहीं, भारतीय राजनेता भी स्वार्थ में अंधे होकर समाज में जहर घोलने से पीछे नहीं हटते. मुरलीधर और मुरादअली जैसे पात्र इस बात का प्रमाण हैं कि किस तरह सत्ता और राजनीतिक लाभ के लिए लोग समाज को विभाजित करने से भी संकोच नहीं करते. यह उपन्यास पाठकों को सोचने पर मजबूर करता है कि क्या आज भी राजनीति समाज को बाँटने का काम नहीं कर रही ?

उपन्यास का सबसे मार्मिक पक्ष यह है कि इसमें दिखाया गया है कि कैसे पड़ोसी, जो वर्षों से साथ रहते आए थे, अचानक एक-दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं. किसी एक व्यक्ति की गलती पूरे समुदाय पर थोपी जाती है, और फिर बदले की भावना जन्म लेती है. यह उपन्यास हमें आत्मविश्लेषण करने को प्रेरित करता है कि क्या धर्म और जाति का नाम लेकर की जाने वाली हिंसा वास्तव में हमें कुछ देती है, या केवल विनाश लाती है?

'तमस' का उद्देश्य हमें यह समझाना भी है कि इतिहास से सबक लिया जाए. यह उपन्यास हमें आत्ममंथन के लिए बाध्य करता है कि क्या हमने वास्तव में अपने अतीत से कुछ सीखा है, या हम आज भी उन्हीं गलतियों को दोहरा रहे हैं? भीष्म साहनी हमें यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि क्या धर्म, जाति और संप्रदाय के नाम पर होने वाली हिंसा को हम कभी रोक पाएँगे, या यह सिलसिला यूँ ही चलता रहेगा?

इस प्रकार 'तमस' समाज को आत्मविश्लेषण करने, अपनी कमजोरियों को पहचानने और उनसे सीख लेने के लिए प्रेरित करता है. यह केवल एक कथा नहीं, बल्कि एक दर्पण है, जिसमें समाज अपनी वास्तविकता को देख सकता है और अपनी भूलों को सुधारने की कोशिश कर सकता है.

इस तरह से कह सकते हैं कि 'तमस' केवल विभाजन की त्रासदी का चित्रण नहीं है, बल्कि यह सांप्रदायिकता, धार्मिक अंधविश्वास, राजनीतिक षड्यंत्र और मानवीय संवेदनाओं की गहरी पड़ताल करने वाला उपन्यास है. इसमें लेखक ने न केवल सांप्रदायिक दंगों की भयावहता को उजागर किया है, बल्कि यह भी दिखाया है कि कैसे राजनीतिक स्वार्थ और धार्मिक कट्टरता समाज को विभाजित कर देती है.

यह उपन्यास इतिहास का दस्तावेज़ बनकर पाठकों को आत्मविश्लेषण करने के लिए प्रेरित करता है, ताकि वे अपने अतीत से सीख लेकर भविष्य में ऐसी त्रासदियों को दोहराने

से बचें. इसमें मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे पाठक पीड़ितों के दर्द को महसूस कर सकते हैं. 'तमस' केवल अतीत की कहानी नहीं है, बल्कि यह आज भी प्रासंगिक है और समाज को शांति, सहिष्णुता और एकता के मार्ग पर चलने का संदेश देता है.

14.4 'तमस' उपन्यास के उद्देश्य का वैशिष्ट्य

भीष्म साहनी द्वारा रचित 'तमस' केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि भारतीय समाज और इतिहास का दर्पण है, जो विभाजन की त्रासदी और सांप्रदायिकता के भयावह परिणामों को उजागर करता है. यह उपन्यास केवल घटनाओं का विवरण नहीं देता, बल्कि उन गहरे सामाजिक और राजनीतिक कारणों को भी सामने लाता है, जो दंगों और सहसा को जन्म देते हैं. यह पाठक को न केवल अतीत से परिचित कराता है, बल्कि वर्तमान में भी सोचने पर मजबूर करता है कि क्या समाज ने इतिहास से कुछ सीखा है या नहीं.

उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य सांप्रदायिकता की भयावहता को उजागर करना है. इसमें दिखाया गया है कि कैसे धर्म के नाम पर भड़काई गई हिंसा इंसान को उसकी मूल पहचान से दूर कर देती है और वह केवल एक समुदाय का हिस्सा बनकर रह जाता है. नत्थू द्वारा सुअर मारने की घटना एक छोटी-सी साजिश लग सकती है, लेकिन इसका असर पूरे समाज पर पड़ता है और सांप्रदायिक दंगे भड़क उठते हैं. यह इस बात को रेखांकित करता है कि कैसे एक साधारण-सी घटना भी समाज को विघटित करने के लिए पर्याप्त होती है, यदि उसे सही दिशा में नियंत्रित न किया जाए.

इस उपन्यास में धार्मिक विश्वासों के अंधकारमय पहलू को भी रेखांकित किया गया है. इसमें दिखाया गया है कि लोग अपने धर्म और आस्था की रक्षा के नाम पर किस हद तक जा सकते हैं और कैसे धार्मिक कट्टरता समाज में विनाश का कारण बन सकती है. यह प्रश्न उठता है कि क्या धर्म का वास्तविक उद्देश्य मानवता की सेवा करना है, या वह केवल एक ऐसा माध्यम बन गया है जिसे स्वार्थी तत्व अपने लाभ के लिए इस्तेमाल करते हैं?

विभाजन की त्रासदी को चित्रित करते हुए उपन्यास यह भी दिखाता है कि कैसे राजनीतिक षड्यंत्र और स्वार्थ समाज को हिंसा की आग में झोंक सकते हैं. ब्रिटिश शासक रिचर्ड के चरित्र के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार फूट डालो और राज करो की नीति अपनाकर सत्ता को बनाए रखा जाता है. इसके साथ ही भारतीय राजनेताओं की भूमिका को भी कटघरे में खड़ा किया गया है, जो सत्ता की राजनीति में इतने लिप्त हो जाते हैं कि आम जनता की तकलीफें और भय उन्हें दिखाई ही नहीं देता.

मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं के चित्रण के माध्यम से भीष्म साहनी ने यह संदेश दिया है कि धर्म और राजनीति की दीवारों से परे इंसानियत सबसे महत्वपूर्ण है. यह उपन्यास समाज को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करता है और यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम आज भी उन्हीं गलतियों को दोहरा रहे हैं, जिनकी वजह से हमारा इतिहास त्रासदी से भरा पड़ा है. 'तमस' हमें यह चेतावनी देता है कि यदि समाज ने समय रहते चेतना नहीं दिखाई, तो अतीत का अंधकार भविष्य को भी अपनी चपेट में ले सकता है.

14.5 सारबिंदु

- 'तमस' उपन्यास भीष्म साहनी द्वारा लिखा गया है, जो सन् 1947 ई. के भारत विभाजन की त्रासदी को दर्शाता है.
- यह उपन्यास सांप्रदायिक दंगों की भयावहता को उजागर करता है और उनके पीछे की

साजिशों को सामने लाता है.

- धार्मिक अंधविश्वासों और कट्टरता को रेखांकित कर यह दिखाता है कि कैसे समाज में नफरत फैलती है.
- विभाजन की त्रासदी को मानवीय संवेदनाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है, जिससे पीड़ितों की पीड़ा का अनुभव किया जा सके.
- राजनीतिक षड्यंत्रों और स्वार्थी नेताओं की भूमिका को दिखाकर सत्ता के लालच का पर्दाफाश किया गया है.
- ब्रिटिश हुकूमत की 'फूट डालो और राज करो' नीति को प्रभावी ढंग से चित्रित किया गया है.
- यह उपन्यास बताता है कि कैसे आम जनता सत्ता के खेल में मोहरा बन जाती है।
- मानवीय मूल्यों, करुणा और संवेदनशीलता का चित्रण कर यह दर्शाता है कि हर हाल में इंसानियत बची रहनी चाहिए.
- ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में 'तमस' विभाजन की सच्चाई को उजागर करता है और दस्तावेजी साक्ष्य के रूप में काम करता है.
- समाज को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित कर यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या धर्म के नाम पर हिंसा उचित है.
- उपन्यास में सांप्रदायिक तनाव का गहराई से चित्रण किया गया है, जिससे समाज में नफरत फैलाने वाली ताकतों की पहचान की जा सके.
- राजनीतिक भ्रष्टाचार को उजागर कर यह दिखाता है कि कैसे स्वार्थी तत्व अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए समाज को तोड़ने का कार्य करते हैं.
- धार्मिक अंधविश्वासों का वर्णन कर यह दर्शाता है कि कैसे रुढ़ियों और परंपराओं का इस्तेमाल जनता को भड़काने के लिए किया जाता है.
- यह उपन्यास अपने यथार्थवादी चित्रण और संवेदनशील कथानक के कारण पाठकों को गहराई से प्रभावित करता है.
- 'तमस' केवल एक कथा नहीं, बल्कि ऐतिहासिक घटनाओं और समाज के कड़वे सच को उजागर करने वाला महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज है.

14.6 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **बोध प्रश्न**
- **विस्तृत उत्तरीय प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास में सांप्रदायिकता की भयावहता को उजागर करने के लिए भीष्म साहनी ने किन घटनाओं का सहारा लिया है? उपन्यास से उदाहरण सहित स्पष्ट करें.

(2) 'तमस' उपन्यास में धार्मिक विश्वास के अंधकार को रेखांकित करने की प्रवृत्ति किस प्रकार देखने को मिलती है? क्या यह समाज के यथार्थ को प्रतिबिंबित करता है? तर्क सहित उत्तर दें.

(3) 'तमस' उपन्यास विभाजन की त्रासदी को किस रूप में प्रस्तुत करता है? इसमें किन-किन पात्रों और घटनाओं के माध्यम से विभाजन की पीड़ा को दर्शाया गया है?

(4) राजनीतिक षड्यंत्र और स्वार्थ किस प्रकार 'तमस' के प्रमुख उद्देश्यों में से एक हैं?

उपन्यास में रिचर्ड, मुरादअली और अन्य पात्रों के माध्यम से इस पहलू का विश्लेषण करें.

(5) 'तमस' केवल एक साहित्यिक कृति न होकर एक ऐतिहासिक साक्ष्य भी है. इस कथन की समीक्षा कीजिए और स्पष्ट कीजिए कि उपन्यास के माध्यम से भीष्म साहनी ने इतिहास और समाज के किस पहलू को उजागर किया है.

- **लघु स्तरीय प्रश्न.**

(1) भीष्म साहनी ने 'तमस' उपन्यास की रचना किस ऐतिहासिक घटना के संदर्भ में की थी?

(2) 'तमस' उपन्यास का मुख्य पात्र नत्थू कौन था और वह किस परिस्थिति में फँस गया?

(3) रिचर्ड कौन था और वह किस प्रकार उपन्यास में औपनिवेशिक राजनीति का प्रतीक बनता है?

(4) मुरादअली का चरित्र किस प्रकार सांप्रदायिक तनाव को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है?

(5) 'तमस' उपन्यास में कौन-सा प्रमुख सांप्रदायिक घटना विवाद का कारण बनती है?

(6) उपन्यास में कांग्रेस और मुस्लिम लीग की भूमिका को किस प्रकार चित्रित किया गया है?

(7) 'तमस' उपन्यास का शीर्षक 'तमस' क्यों रखा गया है और इसका क्या प्रतीकात्मक अर्थ है?

(8) भीष्म साहनी ने 'तमस' उपन्यास के माध्यम से भारतीय समाज को कौन-सा प्रमुख संदेश देने का प्रयास किया है?

(9) उपन्यास में मानवीय संवेदनाओं को दर्शाने वाला सबसे प्रभावशाली प्रसंग कौन-सा है?

(10) 'तमस' को ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में क्यों देखा जाता है?

- **टिप्पणी लिखिए.**

(1) 'तमस' उपन्यास में सांप्रदायिकता की भयावहता किस प्रकार उजागर होती है? विवेचना करें.

(2) धार्मिक विश्वास के अंधकार को रेखांकित करने में भीष्म साहनी कितने सफल रहे हैं? तर्कसंगत टिप्पणी करें.

(3) 'तमस' में विभाजन की त्रासदी को किस प्रकार चित्रित किया गया है? अपनी टिप्पणी दें.

(4) राजनीतिक षड्यंत्र और स्वार्थ की पोल खोलने में उपन्यास की क्या भूमिका है? स्पष्ट करें.

(5) मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं के चित्रण की दृष्टि से तमस कितना प्रभावशाली उपन्यास है? टिप्पणी करें.

(6) 'तमस' को एक ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में कैसे देखा जा सकता है? अपने विचार प्रस्तुत करें.

(7) क्या 'तमस' भारतीय समाज को आत्मविश्लेषण के लिए प्रेरित करता है? अपने विचार व्यक्त करें.

(8) 'तमस' में रिचर्ड और मुरादअली के चरित्र किस प्रकार औपनिवेशिक एवं सांप्रदायिक राजनीति को दर्शाते हैं? टिप्पणी करें.

(9) भीष्म साहनी की भाषा-शैली उपन्यास की मार्मिकता को किस प्रकार बढ़ाती है? समीक्षा करें.

(10) 'तमस' की प्रसंगिकता आज के समय में कितनी प्रबल है? तर्क सहित टिप्पणी करें.

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न.**

(1) 'तमस' उपन्यास को किस पुरस्कार से सम्मानित किया गया था?

(अ) ज्ञानपीठ पुरस्कार (ब) साहित्य अकादमी पुरस्कार

(स) पद्मश्री पुरस्कार (द) सरस्वती सम्मान

(2) नत्थू के चरित्र को किस सामाजिक समस्या से जोड़ा जा सकता है?

(अ) गरीबी और असहायता (ब) धार्मिक कट्टरता

(स) राजनैतिक षड्यंत्र (द) शोषण और अत्याचार

(3) 'तमस' उपन्यास का अंत किस प्रकार होता है?

(अ) सांप्रदायिक दंगों के शांत होने के साथ

(ब) नत्थू की मृत्यु के साथ

(स) भारत-पाकिस्तान विभाजन के साथ

(द) रिचर्ड की विदाई के साथ

(4) 'तमस' उपन्यास का प्रमुख संदेश क्या है?

(अ) इतिहास को भूलना नहीं चाहिए (ब) सांप्रदायिकता समाज के लिए घातक है

(स) राजनीतिक स्वार्थ से बचना चाहिए (द) उपरोक्त सभी

(5) 'तमस' उपन्यास का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

(अ) स्वतंत्रता संग्राम का महिमामंडन

(ब) सांप्रदायिकता की भयावहता उजागर करना

(स) प्रेम और सौहार्द को बढ़ावा देना

(द) वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करना

(6) भीष्म साहनी ने 'तमस' उपन्यास के माध्यम से समाज को किसके प्रति जागरूक करने का प्रयास किया है?

(अ) जातिवाद के प्रभाव (ब) धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास

(स) औद्योगीकरण की चुनौतियाँ (द) नारी सशक्तिकरण

(7) 'तमस' उपन्यास में विभाजन की त्रासदी किस प्रकार व्यक्त की गई है?

(अ) ऐतिहासिक घटनाओं के दस्तावेज़ीकरण के माध्यम से

(ब) काल्पनिक घटनाओं के माध्यम से

(स) व्यक्तिगत प्रेम कहानियों के माध्यम से

(द) ग्रामीण जीवन के चित्रण के माध्यम से

(8) 'तमस' उपन्यास में राजनीतिक षड्यंत्र किस तरह उजागर किया गया है?

(अ) सांप्रदायिक दंगों को भड़काने वाले नेताओं के माध्यम से

(ब) चुनावी राजनीति के माध्यम से

(स) किसानों के संघर्ष के माध्यम से

(द) न्याय व्यवस्था की खामियों के माध्यम से

(9) भीष्म साहनी के अनुसार 'तमस' का उद्देश्य क्या है?

(अ) ऐतिहासिक घटनाओं की खोजबीन करना

(ब) अतीत से सीख लेकर भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकना

(स) केवल एक उपन्यास के रूप में पाठकों का मनोरंजन करना

(द) धार्मिक आस्थाओं को बढ़ावा देना

(10) 'तमस' उपन्यास के माध्यम से लेखक ने किस मानवीय पहलू को उजागर किया है?

(अ) प्रेम और करुणा

(ब) लोभ और भय के कारण लिए गए गलत निर्णय

(स) शिक्षित समाज का निर्माण

(द) विज्ञान और तकनीकी का विकास

(11) 'तमस' उपन्यास को ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में क्यों महत्वपूर्ण माना जाता है?

(अ) यह भारत की स्वतंत्रता की कहानी को दर्शाता है.

(ब) यह विभाजन के समय की वास्तविक परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करता है.

(स) यह भारतीय संस्कृति का गौरव गान करता है.

(द) यह राजनीतिक सुधारों पर केंद्रित है.

(12) 'तमस' उपन्यास समाज को किसके लिए प्रेरित करता है?

(अ) आत्मविश्लेषण और सामाजिक सुधार के लिए

(ब) धार्मिक रीति-रिवाजों के पालन के लिए

(स) राजनीतिक गतिविधियों में भागीदारी के लिए

(द) अतीत को भूलकर आगे बढ़ने के लिए

उत्तरः 1. (ब) साहित्य अकादमी पुरस्कार 2. (अ) गरीबी और असहायता 3. (द) रिचर्ड की विदाई के साथ 4. (द) उपरोक्त सभी 5. (ब) सांप्रदायिकता की भयावहता उजागर करना 6. (ब) धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास 7. (अ) ऐतिहासिक घटनाओं के दस्तावे़जीकरण के माध्यम से 8. (अ) सांप्रदायिक दंगों को भड़काने वाले नेताओं के माध्यम से 9. (ब) अतीत से सीख लेकर भविष्य में ऐसी घटनाओं को रोकना 10. (ब) लोभ और भय के कारण लिए गए गलत निर्णय 11. (ब) यह विभाजन के समय की वास्तविक परिस्थितियों को प्रतिबिंबित करता है 12. (अ) आत्मविश्लेषण और सामाजिक सुधार के लिए

14.7 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- **'तमस'** : भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- **उपन्यास : कला और सिद्धांत** - (संपादकः विनोद तिवारी, अजय आनंद), अनन्य प्रकाशन, दिल्ली-110032, वर्षः 2016
- **कालजयी उपन्यास** - ममता देवी, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2018
- **समकालीन उपन्यासों का वैचारिक पक्ष** - डॉ. अर्जुन चव्हाण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्षः 2012
- **समकालीन हिंदी उपन्यास - दशा और दिशा** : डॉ. पशुपतिनाथ उपाध्याय, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, वर्षः 2018

- **समकालीन हिंदी उपन्यास : समाज और संवेदना** - संपादक: डॉ. वी. के. अब्दुल जलील, सह-संपादक: डॉ. पी. रवि, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 2017
- **भारत-विभाजन और हिंदी उपन्यास** - हरियश, अनन्य प्रकाशन, नई दिल्ली-110015, वर्ष: 1986
- **भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना** - राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर (संपादक), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 1982
- **शैली और शैली विश्लेषण** - डॉ. पाण्डेय शशिभूषण शीतांशु, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 2014
- **हिंदी उपन्यास का विकास** - मधुरेश, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, वर्ष: 2014
- **हिंदी उपन्यास का इतिहास** - गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-110002, वर्ष: 2016
- **हिंदी उपन्यास : सामाजिक चेतना** - डॉ. रजनीकांत एस. शाह, संस्कृति, अहमदाबाद-380001, वर्ष: 1990
- **शोध पत्रिका** - 'आलोचन दृष्टि' आजाद नगर, बिंदकी फतेहपुर उ. प्र.
- **वेबसाइट लिंक** : https://www.hindikun..com/2024/11/tamas-upanyas-ki-samiksha-bhisham-sahni.html

Dr. Babasaheb Ambedkar Open University
(Established by Government of Gujarat)

"Jyotirmay" Parisar,
Dr. BAOU Marg, Sarkhej-Gandhinagar Highway, Chharodi Ahmedabad - 382481
Email : hindi@baou.edu.in । Website : www.baou.edu.in

बी. ए. (ऑनर्स)
हिंदी मेजर

HNDMJ-102

हिंदी उपन्यास

कृपया यह प्रतिपुष्टि (Feedback) फॉर्म भरकर उपर्युक्त पते पर 'हिंदी विभाग, स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़' के नाम अवश्य भेज दें. आपकी अमूल्य राय आपको दी जाने वाली स्वाध्याय सामग्री की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक होगी. यदि आप चाहें तो अपनी पहचान गुप्त रख सकते हैं, यानी नीचे 'नाम' और 'एनरोलमेंट नंबर' देना आवश्यक नहीं है. अन्य सभी कॉलम अवश्य भरें.

नाम : ________________ **एनरोलमेंट नंबर :** ________________

लिंग : स्त्री ☐ **पुरुष** ☐ **ट्रांसजेंडर** ☐ **आयु वर्ग : 18-30** ☐ **31-40** ☐ **41-50** ☐ **50 से ऊपर** ☐

नागरिकता : प्रदेश ________________ **देश** ________________

प्रवेश वर्ष : ________________ **आजिविका के लिए कार्यरत : हाँ** ☐ **नही** ☐

कृपया अपनी राय नीचे दिए गए बिंदुओं के सामने सही खाने में सही (✓) का निशान लगाकर दें.

{अ–अच्छा, सा–सामान्य, ख–खराब}	इकाई 1			इकाई 2			इकाई 3			इकाई 4		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है.												
भाषा सरल है.												
विषय अच्छी तरह समझाती है.												
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.												
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.												
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.												
परीक्षोपयोगी प्रश्न पर्याप्त हैं.												
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.												

आपकी सलाह या सूचना (यदि कोई हो तो) ________________

____

____

____

____

	इकाई 5			इकाई 6			इकाई 7			इकाई 8		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है.												
भाषा सरल है.												
विषय अच्छी तरह समझाती है.												
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.												
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.												
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.												
परीक्षोपयोगी प्रश्न पर्याप्त हैं.												
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.												

	इकाई 9			इकाई 10			इकाई 11			इकाई 12		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है.												
भाषा सरल है.												
विषय अच्छी तरह समझाती है.												
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.												
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.												
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.												
परीक्षोपयोगी प्रश्न पर्याप्त हैं.												
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.												

आपकी सलाह या सूचना (यदि कोई हो तो) ____________________

	इकाई 13			इकाई 14		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है.						
भाषा सरल है.						
विषय अच्छी तरह समझाती है.						
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.						
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.						
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.						
परीक्षोपयोगी प्रश्न पर्याप्त हैं.						
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.						

आपकी सलाह या सूचना (यदि कोई हो तो) ____

BAOU
Education for All

યુનિવર્સિટી ગીત

સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ
સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ
સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ

શિક્ષણ, સંસ્કૃતિ, સદ્‌ભાવ, દિવ્યબોધનું ધામ
ડૉ. બાબાસાહેબ આંબેડકર ઓપન યુનિવર્સિટી નામ;
સૌને સૌની પાંખ મળે, ને સૌને સૌનું આભ,
દશે દિશામાં સ્મિત વહે હો દશે દિશે શુભ-લાભ.

અભણ રહી અજ્ઞાનના શાને, અંધકારને પીવો ?
કહે બુદ્ધ આંબેડકર કહે, તું થા તારો દીવો;
શારદીય અજવાળા પહોંચ્યાં ગુર્જર ગામે ગામ
ધ્રુવ તારકની જેમ ઝળહળે એકલવ્યની શાન.

સરસ્વતીના મયૂર તમારે ફળિયે આવી ગહેકે
અંધકારને હડસેલીને ઉજાસના ફૂલ મહેંકે;
બંધન નહીં કો સ્થાન સમયના જવું ન ઘરથી દૂર
ઘર આવી મા હરે શારદા દૈન્ય તિમિરના પૂર.

સંસ્કારોની સુગંધ મહેંકે, મન મંદિરને ધામે
સુખની ટપાલ પહોંચે સૌને પોતાને સરનામે;
સમાજ કેરે દરિયે હાંકી શિક્ષણ કેરું વહાણ,
આવો કરીયે આપણ સૌ
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
દિવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ

•

DR. BABASAHEB AMBEDKAR OPEN UNIVERSITY
(Established by Government of Gujarat)
'Jyotirmay' Parisar,
Sarkhej-Gandhinagar Highway, Chharodi, Ahmedabad-382 481
Website : www.baou.edu.in | Email : office.scs@baou.edu.in

978- 93- 5598- 844- 7